श्री धर्म प्रवर्त्तन सारग्रंथ

तथा

क्षायक भावतत्व विलास, श्रद्धाप्रकरण, नवपदजीनी पूजा
अध्यात्म चोवीशी, चैत्यवंदनो, स्तुतियो, स्तवनो
सज्जायो, अने गुरुभक्तिना रास सहित.

कर्त्ता विजापुरनिवासी,

शा. सुरचंदभाइ स्वरूपचंद.

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता.

शा. रतनचंद लाधाजी

तथा

शा. झवेरभाइ भगवानदास.

प्रगणे पेटलाद-मु० काविठा.

अमदावाद.

श्री "लक्ष्मि" प्रिन्टिंग प्रेसमां
शा. मणीलाल उगरचंदे छाप्युं.

संवत १९६६ वीर संवत २४३६ सने १९१०.

किंमत रु. ०-६-०.

प्रस्तावना.

सर्व धर्मनो विचार करतां सर्वोत्तम जैन धर्म सत्य छे एम निश्चय थयो छे जैन धर्ममां श्वेतांबर दिगंबर ए बे शाखाउं छे असलथी श्वेतांबर आम्नायनां सूत्रो चाल्यां आवे छे माटे श्वेतांबर शास्त्रोनी प्रामाणिकता सिद्ध छे. दिगंबरो पण पहेलां सूत्रो मानता हता पाछळथी तेउं मानता नथी एम जणाय छे. श्वेतांबर मार्गमां व्यवहार अने निश्चय ए बे नयो कह्या छे. दरेक नयनुं स्वरूप अत्यंत सूक्ष्म छे. माटे शास्त्रकारोनी आज्ञा प्रमाणे बे नयने जाणवा खप करवो श्वेतांबर मार्गमां हरिभद्रसूरि–यशोविजय उपाध्याय विगेरे महान् पुरुषो थइ गया छे.

जैन धर्मनी प्रवृत्ति केवी रीते करवी ते संबंधी तेउंए पुस्तकोमां सारुं अजवाळुं कर्युं छे. पूर्वाचार्योए धर्मनी प्रवृत्तिनी शुद्धता थवा माटे नयो पूर्वक धर्म तत्त्वनुं वर्णन कर्युं छे. माटे अत्रे पण तेउंनी वाणी अनुसार अशुद्ध मार्गने बतावी शुद्ध धर्म बताववा प्रयत्न कर्यो छे. प्रथम धर्म प्रवर्तनसार ग्रंथ दाखल कर्यो छे. तेमां व्यवहार नयना भेद बतावीने धर्मनी व्याख्या करी छे. तेमां मोटा भागे श्री देवचंद्रजी अने श्रीमान् यशोविजय उपाध्यायजीना भाषा ग्रंथोनी साक्षी आपी विवेचन कर्युंछे, वली अमारी मान्यता पूर्वाचार्योनी परंपरा सहित छे एम सिद्ध कर्युंछे. पूर्वाचार्योनां वचन अनुसरीने चालवुं अने तेमनां वचनने भगवान्नां वचन सरखां मानवां जोइए. एवी मान्यता नी सिद्धिमां अमारो मत सर्वने अभिमत थाउं! साधुना व्यवहारमां सामर्थ्य रह्युं छे आवश्यक धर्म व्यवहार ते होवाथी

तेने अमोए कल्पव्यवहार नाम आप्युं छे तेमां अन्य अमारो उद्देश नथी. शास्त्रोमां "जितकल्प–वृहत्कल्प विगेरे नामथी प्रसिद्ध छे. अने तेमां साधुना आचारनुं विवेचन छे. साधुनो आचार पापनो क्षय करे छे. आश्रवनो नाश करे छे. संवरनी पुष्टि करे छे. माटे तेमां अद्भूत सामर्थ्य रह्युं छे. तेथी कल्पव्यवहार एवुं अमोए "गुणधेय" नाम आप्युं छे. आ ग्रंथमां ज्ञानार्णव––समयसार वगेरे ग्रंथोनी साक्षीउ आपवामां आवेली छे. 'तेथी एम न समजवुं के अमो तेउना अनुयायी छीए ज्ञानार्णव वगेरेमां श्वेतांवर सिद्धांतोना आधारे जे वाक्यो मळतां आवे छे तेटलांज अमो मानीए छीए. वाकी श्वेतांवर सिद्धांतोथी जे विरुद्ध प्ररुपणा छे एवी दिगंवर ग्रंथोनी वातने अमो मानता नथी कारण के उत्सूत्र वात मानवी नहीं. आ ग्रंथमां साधुना आचारोनी उत्कृष्टता वतावी छे. तेनुं कारण के जे वस्तु वतावची ते उत्कृष्ट वतावची. जो एम न वतावबामां आवे तो. आचारोनुं ढीलाशपणुं थइ जाय. आ आशय विना साधुउना आचार विगेरेनी टीका करवानो अंश मात्र पण वीजो आशय नथी.साधुवर्गने अमो अमारा पुज्य गुरु तरीके जोइए छीए तेमनामां शुद्ध द्रव्य व्यवहारनो विशेषतः प्रकाश थाउ एटलुंज इच्छिए छीए आ ग्रंथना समाप्ति पत्रमां सिद्धनुं स्वरुप देखाड्युं छे ते वांचवाथी वाचकोने अतिशय लाभ थशे.

पश्चात् पत्र १२६ थी क्षायिकभाव तत्वविलास पद्य ग्रंथ लखवामां आव्यो छे. तेमज पत्र १६२ थी श्रद्धाप्रकरणनी ढाळो लखवामां आवी छे, ते श्रद्धा प्राप्त थवानो हेतु छे.

पत्र १८७ थी नवपदजीनी पूजा शरु थाय छे ते पण वाचकोने आनंद आपशे. पत्र २०४ थी अध्यात्म चोवीशी छपाववामां आवी छे ते पण अत्यंत उपयोगी ग्रंथ छे. पत्र २२८ थी चैत्यवंदन अधिकार छे. पत्र २३६ थी स्तवन अधिकार छे. पत्र २६८ थी सज्झाय अधिकार छे पत्र २९१ थी गुरुभक्तिनो रास शरु थाय छे.

आ प्रमाणे गद्यमां अने पद्यमां ग्रंथो सिद्धान्तानुं सार बतावावामां आव्या छे तेमां वीतराग आज्ञा विरुद्ध जे कंइ लखायुं होय तेनो मिच्छामिदुक्कडं दउं छुं जे मुनिवरो वा श्रावक विद्वानो ग्रंथ संबंधे भूलनो सुधारो शास्त्र साक्षी पूर्वक बतावशे तो तेमनो उपकार मानवामां आवशे.

अध्यात्म शैली अने द्रव्यानुंयोगनी शैली पूर्वक आ ग्रंथ लखायो होवाथी ततूतत् संबंधी शैलीना अभ्यासिउने आ ग्रंथ उपयोगी थइ पडशे एवी आशा राखवामां आवे छे.

आ ग्रंथ छपाववा माटे धन व्यय सहायमां तेमज आ ग्रंथ तपासवामां जेउए मदद करी छे तेमनो उपकार मानुं छुं.

जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक सिद्धांत शैलीनी मान्यता (श्रद्धा) आ लेखकने छे तेथी प्रसंगे कोइ अन्य धर्मना सिद्धांतो उपर आक्षेप थयेलो क्वचित् देखाय तो अन्य धर्मीउए न्याय दृष्टिथी सत्य तत्वनो तोल करी सत्यतत्त्व ग्रहण करवुं एज.

लेखक श्रावक–सूरचंदभाइ सरुपचंद.
मु. विजापुर (विद्यापुर)
गुजरात.

आ ज्ञान शीतळविलास भाग २ जो नामनुं आ पुस्तक छपावता पेहेलां खरच माटे अगाउथी पैसा आपनार भाइओ गुणना जाण गुणना रागी धर्मस्नेही गृहस्थोनां नाम नीचे प्रमाणे छे.

२००) भाइ मूळचंदभाइ सरूपचंदना वीलना ट्रस्टमांथी ट्रस्टी-
ओए आप्या.

२००) कावीठाना झवेरभाइ भगवानदास तथा शा. रतनचंद
लाधाजी जण बेना.

उपरनी मददथी आ पुस्तकनी १००० नकल छपावी छे. आ बीजा भागनी चोपडी तथा प्रथमनी छपाएल भाग १ नी— चोपडी नीचेना ठेकाणेथी मळी शकशे.

१ विजापुर—शा. सुरचंदभाइ स्वरुपचंद.
२ अमदावाद—शा. हीराचंदभाइ ककलभाइ ठे. फतासानी
पोळ जैन कन्याशाळा.
३ काविठा प्रगणे पेटलाद—शा. रतनचंदभाइ लाधाजी तथा
झवेरभाइ भगवानदास.
४ पालेज—शा. म्हाह्याभाइ पीतांबरदास तथा शा. अमरचंद क-
चराभाइ प्रगणे भरुच बंदर
५ सुरत—शा. ताराचंद हीमचंद. ठे. गोपीपुरा मध्ये.
६ पादरा—वकील मोहनलाल हीमचंद वडोदरा ताबे पादरा.

आ ग्रंथमां दृष्टिदोषथी अथवा लखित दोषथी अथवा छापनारनी भुलथी न समजी शकायतो शुद्धिपत्रक प्रमाणे सुधारी तपासीने वांचशो.

ज्ञाननी आशातना न थाय अने घणा माणसो लाभ लइ शके ए हेतुथी आ पुस्तकनी कींमत मात्र ०–६–० छ आना राखी छे. अने ए रीते जे रकम उत्पन्न थशे ते ज्ञान खातामां वपराशे. साधु साध्वीने तेमज जैन पुस्तकालयोने विनामूल्ये आपवामां आवशे.

अनुक्रमणिका.

प्रथम धर्मप्रवर्त्तन सार ग्रंथनी अनुक्रमणिका.

बीजा क्षायक भाव तत्वविलास ग्रंथनी अनुक्रमणिका.





॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

अथ श्री धर्मप्रवर्त्तन सार ग्रंथ.

॥ डुहा ॥

वंदु गुरु चरणे सदा, गुरुमुख अमिय झरंत ॥
धर्मलाभ दीए देशना, ज्युं जलधर वरसंत ॥ १ ॥
ते झीले चित पात्रमें, श्रोता मन थिर अंग ॥
ज्ञानामृत रस आतमा, पीवे निर्मल गंग ॥ २ ॥
धर्म वर्त्तना सार ए, जिहां निश्चय व्यवहार ॥
गुरुकृपाथी पामीए, स्याद्वाद निरधार ॥ ३ ॥

॥ अत्र भाषा लिख्यते ॥

हवे आ ग्रंथनुं नाम धर्म प्रवर्त्तन सारछे, तेना बे भेदछे. मिथ्यात्व सहित धर्मप्रवर्त्तन तथा सम्यक्त्वसहित धर्मप्रवर्त्तन, अहीं कोइ कहेशे के धर्मप्रवर्त्तनमां मिथ्यात्वनो भेद शा माटे करवो पड्यो? तेनो उत्तर मिथ्यात्व छतां पण देशविरतिपणुं तथा सर्वविरतिपणुं जीव व्यवहारथी ग्रहेछे, वळी क्रियानो पात्र, ज्ञाननो रूपी, ध्याना-

वलंवी होयछे, ते योगदृष्टि सज्झायोथी जोइ लेजो. प्रथमनी चार सज्झोयो मिथ्यात्वसहित प्रवर्त्तनमां छे, अने पांचमी थीरादृष्टिथी ते आठमी परा दृष्टि सुधी चार सज्झायो समकित धर्मप्रवर्त्तनमांछे, वळी मुक्तिना मार्गमां छे ते माटे अमारे भेद वेंहेंचवो पड्यो. पेहेली दृष्टिनी सज्झाये कह्युंछे के,

दृष्टि थिरादिक चारमां, मुगति प्रयाण न भाजेरे॥
रयणि सयन जेम श्रम हरे, सुरनर सुख तेम
छाजेरे॥ वी० ॥५॥

अर्थः—दृष्टि के० समकितनी आठ दृष्टि कही छे, तेमां प्रथमनी चार दृष्टि, तेनां नाम. मित्रा, तारा, बळा, अने दिप्ता ए चार दृष्टि समकितरूप नथी, परंतु व्यवहारे कारण छे ते कारणने विषे कार्यपणानो उपचार करीने समकितमां गणीछे. हवे पाछळनी चार दृष्टिनां नाम, स्थिरा, कान्ता, प्रभा, अने परा ए चार दृष्टि समकित रूप छे वळी, इहां बोध एटले जाणपणुं ते पण वस्तुगते वस्तुपणुं सद्दहेछे श्रद्धा ज्ञान पूर्वक स्थिरछे, ए चार चार मळीने आठ दृष्टि कही, तेमां स्थिरादिक चारमां केहेतां स्थिरा पांचमी अने आदि शब्दे छट्ठी, सातमी, अने आठमी, ए पाछळनी चार दृष्टिए वर्त्ततो एवो जे प्राणी, ते एक वखते बे क्रियानो कर्त्ताछे. एक उदयिक भावनी अने बीजी क्षयोपशम भावनी, तेमां प्रथम उदयिक भावनी एटले

उदयिक भाव ते पूर्वकृत कर्मबंधनो उदय, ते कहेछे. गति चार, कषाय चार, वेद त्रण, लेश्या छ, मिथ्यात्व, अज्ञान असिद्धत्व अने अविरति ए उदयिक भावना एकवीस भेद कह्या. ते समुदाये परिपूर्ण पेहेले गुणठाणे लाधे. अने उपरनां गुणठाणाए ओछा ओछा लाधे. उदयिक भाव अयोगी चौदमा गुणठाणा पर्यंत सर्वे गुणठाणे लाधे अने जे जे प्रकृतिनो उदय थाय तेमां चेतन व्यापकपणुं करे, संकल्प विकल्प करे तो समये समये सात आठ कर्म छठ्ठा सातमा गुणठाणा सुधी बांधे, उपरांत सात बांधे. दशमा गुणठाणे छ कर्म बांधे. वळी जीवनी शक्ति मरोडी नांखे. कह्युंछे के "शक्ति मरोडे जीवनी, उदय महा बळवान" हवे ए उदयिक भावनी क्रियामां भांगा कहे छे. भविने अनादि सांत भांगो लागे, अने अभविने अनादि अनंत भांगो लागे. ए उदयिक भावनी क्रिया कही. हवे क्षयोपशमभावनी क्रिया कहेछे, ते पांचमी थिरा दृष्टि पाम्या त्यांथी अंतर्दृष्टिए प्राप्त छे अने थिरादृष्टिनी प्राप्ति ग्रंथिभेद कर्यो त्यांथी थइ. हवे ते क्रिया क्षयोपशम भावनी क्षय उपशम पूर्वक चोथा गुणठाणाथी प्राप्त थइ तेना भेद कहे छे. सामान्य उपयोग ते दर्शन गुणनो, अने विशेषोपयोग ते ज्ञान गुणनो, वळी क्षयोपशम भावनुं समकित, तथा देशविरति अने सर्व विरति चारित्र, वळी क्षयोपशम भावनी दानादि पांच लब्धि ए क्षयोपशम भावना भेद छे, तेमांथी लब्धि गुणने किंचित् गवेखे छे.

दान एटले जे समये समकितादि आत्मिक गुणनी प्रगटता आत्माथी थइ तेज समये ते दानरूप गुण आत्माए ग्रहण कर्यों ए दान लब्धि पेहेली कही. हवे बीजी लाभ लब्धि कहे छे. लाभ एटले जे समकितादि आत्मिक गुणनी प्रगटता आत्माथी थइ कथुं, ते लाभ पूर्वे न हतो ते इहां आत्मा पाम्यो ए बीजी लाभ लब्धि कही. हवे वळी तेना प्रथम समयेंज ते लब्धि गुणनो भोग पण आत्माज करे छे, वळी उपभोग पण बीजा समयथी आरंभीने यावत् केवळज्ञाननी प्राप्ति जे समये थाय तेना आगला समय सुधी आत्मा करे छे. ए चार लब्धि कही. हवे पांचमी वीर्य गुण लब्धि कहे छे. ते उपर चार लब्धि गवेखी तेमां स्फुर्णा आपवानुं सामर्थ्य सादि सांत भांगे अनुभव रीते अंतर्गत स्वरूप रमण करवुं, वळी स्वस्वरूप ग्रहण करवुं तेमां व्यापकपणुं करवुं, ते शक्तिने वीर्य गुण लब्धि कहीए, ए पांच लब्धि क्षयोपशम भावनी. ते क्रिया आत्मिक जाणवी. ए क्रियानो कर्त्ता उपरना गुणठाणे चढे अने नीचेना गुणठाणाने छोडे. यावत् मोहनीय कर्मना क्षयोपशमने दशमा गुणठाणाने अंते छेदी यथाख्यात चारित्र क्षीणमोह बारमा गुणठाणे प्रगट करे, अने ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अने अंतराय ए त्रण कर्मना क्षयोपशमने बारमा गुणठाणाना अंते छेदी केवळज्ञान, केवलदर्शन अने क्षायकभावनी दानादिक पांच लब्धि एम सात गुण प्रगट करी क्षायकभावनी नव लब्धि गुणनी पूर्णता पामे. तें माटे मूळ गाथा-

मांज कह्युं छे के "मुगतिप्रयाण न जाजेरे" एटले पांचमी थिरादृष्टि पाम्या त्यांथी क्षयोपशम जावनी अंतर्वृत्तिये क्रिया करतां मुक्तिना प्रयाणनो जंग न थाय, एटले आत्म सत्ताये रहेलां घाति कर्मदळ तेथी मुक्त थवुं, एटले निर्जरवुं. फरीने कर्म वांधे नहीं. त्यां मुक्तिनुं प्रयाण थयुं, एम कहीए. "रयणि सयन जेम श्रमहरे," के० यथा दृष्टांते जेम कोइ पुरुषने इच्छित नगरे जवुं छे, परंतु वळवीर्य शक्तिनी स्फुरता न थइ, अने थाकी गयो, तो इच्छित नगरे पहोंची न शके, त्यारे रस्तामां रात रहेवुं पमे, विसामा करवा पमे अने त्यां शयन करे, एटले थाक उतरी जाय, अने प्रजात समये पाछी प्रयाण करवानी शक्ति आवे एटले सुखे सुखे प्रयाण थइ शके, तेम इहां इच्छित नगर ते मुक्तिपुरीए जवुं छे, परंतु वीर्य शक्ति स्फुरताना अजावे श्रेणी न मांमी शके, तो पहोंची न शके. त्यारे वचमां विसामा रूप देवताना अने मनुष्यना अप्रतिपाति क्षयोपशम समकितनी अपेक्षाए उत्कृष्टा सात आठ जव करवा पमे. वळी क्षायक समकितनी अपेक्षाए त्रण चार जव करवा पमे अने समकितीने वे गतिनोज सुखमय संसार छे. माटें "सुरनर सुख तेम छाजेरे" कह्युं. अने दुःखमय नरक तिर्यंचनी वे गतिथी मुक्त थया. एटले तुटया. तेमां छेल्ला जवे तो मुक्ति नगरे पहोंचवानी स्फुर्णा शक्ति मनुष्यना जवे जरुर पामे अने सिद्धि वरे. ए पांचमी गाथानो अर्थ कह्यो.

वळी धर्म प्रवर्त्तनना वीजा वे नेद छे; व्यवहार धर्म प्रवर्त्तन अने निश्चय धर्म प्रवर्त्तन तेमां प्रथम व्यवहार धर्म प्रवर्त्तननी उंळखाण करावे छे. एटले व्यवहारनयना नेदनी व्हेंचण करीशुं तेमां केटलाएक नेद मिथ्यात्व पक्षी छे अने केटलाएक नेद समकित पक्षी छे. ते सर्वेनी उंळखाण थशे. कह्युं छे. नय चक्रसार ग्रंथेः

संग्रह गृहीत वस्तु नेदांतरेण विन्नजनं व्यवहरणं प्रवर्त्तनं वा व्यवहारः सद्विविधः शुद्धो शुद्धश्च शुद्धोद्वि-विधः वस्तुगत व्यवहारः धर्मास्तिकायादि द्रव्याणां स्वस्व-चलन सहकारादि जीवस्य लोकालोकादि ज्ञानादिरूपः स्वसंपूर्ण परमात्मन्नावसाधनरूपो गुणसाधकावस्थारूपः गुण श्रेण्या रोहादि साधन शुद्ध व्यवहारः अशुद्धोपि द्विविधः सद्नूता सद्नूत नेदात् सद्नूत व्यवहारो ज्ञानादिगुणः परस्परं निन्नः असद्नूत व्यवहारः कषायात्मादि मनुष्योहं देवोहं सोपिद्विविधः संश्लेषिता शुद्धव्यवहारः शरीर मम अहंशरीरी असंश्लेषिता सद्नूत व्यवहारः पुत्र कलत्रादि तौच उपचरिता नुपचरित व्यवहार नेदात् द्विविधौ तथाच विशेषावश्यके व्यवहरणं व्यवहारः ए सतेण व्यवहार एव सामान्नं व्यवहार परोव्वजउ विसेसउं तेणव्यवहारः व्यव-हरणं व्यवहारः व्यवहरतिसइतिवाव्यवहारः विशेषतो व्य-वहीयते निराक्रियते सामान्यं तेनेतिव्यवहारः लोकव्यवहार परोवा विशेषतो यस्मात्तेन व्यवहारः न व्यवहारा स्वस्वधर्म प्रवर्त्ति तेनेक्तते सामान्यमिति स्वगुण प्रवृत्ति रूप व्यवहार

स्यैव वस्तुत्वं तमंतरेण तदभावात् सद्विविधः विभजन १ प्रवृत्ति २ भेदात् प्रवृत्ति व्यवहार स्त्रिविधः वस्तु प्रवृत्तिः १ साधन प्रवृत्तिः २ लौकिक प्रवृत्तिश्च ३ साधन प्रवृत्ति स्त्रेधा लोकोत्तर १ लोकिका २ कुप्रा वचनिक ३ भेदात् इति व्यवहारनयश्री विशेषावश्यके ॥

अर्थः—संग्रह ग्रहित वस्तु के० संग्रहनये ग्रहित जे वस्तु भेदांतरेण के० तेने भेद भेदांतरे, विभजनं के० व्हेंचवुं तेने व्यवहार कहीए. एटले संग्रहनये छे ते सामान्य विशेष सर्वने सामान्यपणे ग्रहेछे एटले पिंरूपणे ग्रहे पण व्यक्तव्यपणे न ग्रहे. जेम द्रव्य एवुं सामान्य नाम कह्युं, तेमां सर्वे द्रव्यनुं ग्रहण थयुं, ते संग्रह नय. तेने भेदांतरे व्हेंचे ते व्यवहार नय. एटले द्रव्यना वे भेद. जीवद्रव्य अने अजीवद्रव्य. अजीवना वे भेद, रूपी अने अरूपी. रूपी ते पुद्गल तेना वे भेद. परमाणु अने खंध. खंधना बे भेद. जीव सहित अने जीव रहित. तेमां जीव सहितना वे भेद, सूक्ष्म अने वादर. इहां वर्गणानो विचार छे. त्यां वादरवर्गणाना चार भेद उदारीक (१), वैक्रिय (२), आहारक (३), अने तेजस (४), हवे सूक्ष्म वर्गणाना चार भेद कहे छे. भाषा (१), श्वासोश्वास (२), मन (३), अने कार्मण (४), ते कार्मणना आठ भेद, ज्ञानावरणीय (१), दर्शनावरणीय (२), वेदनीय (३), मोहनीय (४) आयुष (५), नाम (६), गोत्र (७), अने अंतराय (८), ए आठने कर्मवर्गणा कहीए तेना उत्तरभेद एकसोने अठ्ठावन छे, ते

कर्मग्रंथथी जोइ लेजो. हवे पर्यायना बे भेद एक कर्म-भावी अने बीजो स्वभावी.

हवे जीवना पांचसे त्रेसठ भेद कहे छे. तेना मूळ चार भेद. मनुष्यगति (१), तिर्यंचगति (२), नरकगति (३), अने देवगति (४), ए चारना प्रत्येक भेदनो विचार. तेमां प्रथम मनुष्यना भेद वर्णवे छे. तेना त्रण भेद. कर्मभूमि (१), अकर्मभूमि (२), अने अंतरद्वीप (३), तेमां कर्मभू-मिना पंदर भेद छे, पांच भरत (५), पांच ऐरवत (५), अने पांच महाविदेह (५) ए रीते पंदर भेद थाय. वळी अकर्मभूमिना त्रीस भेद छे. पांच हेमवंत (५), पांच ऐर-एयवत, (५), पांच रम्यक (५), पांच देवकुरु (५), पांच हरिवर्ष (५), पांच उत्तरकुरु (५), ए रीते त्रीस भेद अकर्म भूमिना कह्या. हवे अंतरद्वीपना छप्पन भेद कहे छे आ जंबुद्वीपने विषे लघु हिमवंत अने शिखरि ए बे पर्वत आवेला छे. तेमांथी बे पूर्वे अने बे पश्चिमे एम लवण समु द्रमां अंतराले एक एक पर्वतनी चार चार दाढाओ नीक-ळेली छे, ते बे पर्वतनी मळीने आठ दाढाओ थइ ते दरेक दाढा उपर सात सात क्षेत्र छे ए रीते आठ दाढाओना मळीने छप्पन्न अंतरद्वीप छे. ए सघळां भेगां करतां एकसोने एक मनुष्य क्षेत्र थयां तेना बे भेद एक समूर्छिम अने बीजा गर्भज तेमां गर्भजना बे भेद एक पर्याप्ता अने बीजा अपर्याप्ता. अने समुर्छिमतो पर्याप्ति पूरी करे नहीं, अप-र्याप्ता अवस्थायेज मरे माटे तेनो एकज भेद एटले एक

सो ने एक गर्न्नज पर्याप्ता, एकसोने एक गर्न्नज अपर्याप्ता अने एकसोने एक समूर्छीम अपर्याप्ता. ए रीते मनुष्य गतिना त्रणसेंने त्रण न्नेद थया. हवे तिर्यंच गतिना न्नेद कहे छे. तेना पांच न्नेद (१) एकेंद्रि, (२) बेइंद्रि, (३) तेइंद्रि, (४) चौरिंद्रि, (५) पंचेंद्रि. तेमां एकेंद्रिना पांच न्नेद. (१) पृथ्वीकाय, (२) अपकाय, (३) तेउकाय, (४) वाउकाय, अने (५) वनस्पति काय. तेमां प्रथमना चार न्नेदछे, तेना प्रत्येके बे बे न्नेद; एक सूक्ष्म अने बीजो बादर ए बेना गणतां आठ न्नेद थया. हवे वनस्पतिकायना बे न्नेद, प्रत्येक अने साधारण, तेमां साधारणना बे न्नेद. सूक्ष्म साधारण अने बादर साधारण, सूक्ष्म साधारण ते सूक्ष्म निगोद अने बादर साधारण ते कंदमूळादि बादर निगोद. ए बे साधारण वनस्पतिकायना न्नेद अने एक प्रत्येक वनस्पतिकायनो न्नेद मळी त्रण न्नेद वनस्पतिकायना थया. ते न्नेगा करतां अगिआर न्नेद थया. तेना प्रत्येके बे बे न्नेद, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एटले एकेंद्रिना बावीस न्नेद थया. हवे बेइंद्रि, तेइंद्रि अने चौरिंद्र ए त्रणने विकलेंद्रि कहीए तेना प्रत्येके बे बे न्नेद. एक पर्याप्ता अने बीजो अपर्याप्ता, एम छ न्नेद विकलेंद्रिना थया ते मेळवतां अठ्ठावीस न्नेद थया.

हवे तिर्यंच पंचेंद्रिना न्नेद कहे छे. तेना बे न्नेद सन्नि तथा असन्नि. सन्नि ते गर्न्नज तेने मन संज्ञा छे. असन्नि ते मन संज्ञा रहित छे. वळी ते माटी पाणीना संयोगे

ऊपजे छे, ते बेना प्रत्येके पांच पांच भेद कहे छे. थळचर, जळचर, खेचर, ऊरपरि अने भुजपरि ए पांच डु दश भेद थया, तेना प्रत्येके बे बे भेद, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता गणतां तिर्यंच पंचेंद्रिना वीश भेद थया. तेमां चौरेंद्रि सुधीना अठ्ठावीश भेद मेळवीए त्यारे तिर्यंचनी जातिना अमृतालीस भेद थाय ते कह्या.

हवे नारकीना सात भेद कहे छे. [१] घमा, [२] वंशा, [३] सेला, [४] अंजण, [५] रिठा, [६] मघा, [७] माघवती ए सात भेदना प्रत्येके बबे भेद एक पर्याप्ता अने वीजा अपर्याप्ता. एम चौद भेद नारकीना थया.

हवे देवगतिना भेद कहे छे. भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषि अने वैमानिक, तेमां भुवनपतिना पचीस भेद छे, दश निकायना दश अने परमाधामी पंदर मळी पचीश भेद थया. हवे व्यंतर निकायना भेद कहे छे. तेमां व्यंतर तथा वाण व्यंतरना सोळ भेद अने तिर्यग् जृंभकना दश भेद मळीने छवीस भेद थया. हवे ज्योतिषीना भेद कहे छे. तेना मूळ बे भेद एक स्थिर अने वीजा अथिर ए बेना प्रत्येके पांच पांच भेदछे, चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, अने तारा, ए पांच डु दश ज्योतिषीना थया. हवे वैमानिकना भेद कहे छे. तेमां किल्बिषियाना त्रण भेद. लोकांतिकना नव भेद, अने बार देवलोकना बार भेद, ए चोवीस भेद कल्पवासी देवना कह्या. हवे अकल्पवासी देवना भेद कहे छे. नवग्रैवेयकना नव भेद अने अनुत्तर विमानना पांच

भेद मळी चौद भेद थया तेमां कल्पवासी देवना चोवीस भेद मेळवतां अडत्रीस भेद वैमानिकना थया. ए चार निकायना भेगा करीए त्यारे देवगतिना नवाणुं भेद थाय तेना प्रत्येके बे बे भेद एक पर्याप्ता अने बीजा अपर्याप्ता गणतां देवगतिना एकसोने अठ्ठाणुं भेद थाय, ते कह्या. ए चारे गतिना मळीने संसारी जीवना पांचसेंने त्रेसठ ५६३ भेद वर्णवी देखाड्या.

हवे अजीवना पांचसेंने साठ भेद कहे छे. तेना मूळ पांच भेद छे. (१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) काळ (५) अने पुद्गलास्तिकाय. तेमां धर्मास्तिकायना आठ भेद. (१) खंध, (२) देश, (३) प्रदेश, (४) द्रव्यथी, (५) क्षेत्रथी, (६) काळथी, (७) भावथी, अने (८) गुणथी ए आठ भेद धर्मास्तिकायना कह्या. तेज रीते अधर्मास्तिकायना आठ भेद अने आकाशास्तिकायना आठ भेद ए त्रण द्रव्यना मळीने चोवीस भेद थाय. हवे काळना छ भेद कहे छे वर्त्तमान समय (१), द्रव्यथी (२), क्षेत्रथी (३), काळथी (४), भावथी (५), अने गुणथी (६), ए काळ द्रव्यना छ भेद कह्या. ते सर्व भेगा करीए त्यारे अरूपी अजीवना त्रीस भेद, चार द्रव्यना मळीने थाय ते कह्या.

हवे पुद्गलास्तिकायना भेद कहे छे. वर्णना (५) भेद. (१) रातो, (२) धोळो, (३) लीलो, (४) पीळो, अने (५) श्याम. हवे रसना पांच भेद. (१) कडवो, (२) कषायलो

(૩) खाटो (४) तीखो, अने (५) मधुरो. हवे गंधना वे ज्नेद (१) सुरज्नि, (२) अने डुरज्नि. हवे फरसना आठ ज्नेद कहे छे. (१) शीत, (२) उष्ण, (३) रुक्ष, (४) स्निग्ध, (५) ज्नारे, (६) हळवो, (७) सुकोमळ, अने (८) वरसट. हवे संस्थानना पांच ज्नेद कहे छे. (१) लांबु, (२) गोळ, (३) त्रिकोण (४) चोखुण, (५) वळीयाकारे ए संस्थानना ज्नेद कह्या. ए रीते वर्ण, रस, गंध, स्पर्श अने संस्थानना सर्व मळी पचीस ज्नेद थया. हवे ज्नेद गणवानी समज देखाडे छे. एटले राता वर्णनी जे वस्तु छे. तेमां रस पांच, गंध वे, फरस आठ, अने संस्थान पांच एम वीस ज्नेद एक वर्णमां लाधे, तेमज पांच वर्णमां गणीए एटले वर्णना सो ज्नेद थाय. हवे रसना ज्नेद कहे छे. तेमां कटुक रसनी जे वस्तु छे तेमां वर्ण पांच, गंध वे, फरस आठ, अने संस्थान पांच. ए वीस ज्नेद एक रसमां लाधे, तेम पांचे रसमां गणीए त्यारे रसना सो ज्नेद थाय. हवे संस्थानना ज्नेद कहे छे. एटले जे लांवा संस्थाननी वस्तु छे. तेमां वर्ण पांच, गंध वे, रस पांच अने फरस आठ ए वीस ज्नेद एक संस्थानमां लाधे. तेम सर्व संस्थानमां गणीए एटले पांच संस्थानना मळीने सो ज्नेद थाय हवे गंधना ज्नेद कहे छे. एटले जे सुरज्नि गंधनी वस्तु छे तेमां वर्ण पांच, रस पांच, फरस आठ, अने संस्थान पांच एम त्रेवीस ज्नेद एक गंधमां लाधे, तेमज वे गंधना गणीए त्यारे त्रेवीस डु छेताळीस ज्नेद थाय. हवे फरसना ज्नेद कहे छे. एटले शीत फरसनी जे वस्तु छे तेमां वर्ण पांच, रस

પાંચ, ગંધ બે, અને સંસ્થાન પાંચ, વળી ઉપર શીત સ્પર્શની વિવક્ષા કરી છે, તેનો પ્રતિપક્ષી ઉષ્ણ સ્પર્શ ન હોય બાકીના છ સ્પર્શ લાધે તે સર્વે ભેગા કરતાં ત્રેવીસ ભેદ એક સ્પર્શમાં થાય તેમજ આઠે સ્પર્શના ગણીએ ત્યારે એકસોને ચોરાશી ભેદ આઠ ફરસના મળીને થાય.

ઉપર બતાવ્યા પ્રમાણે પાંચ વર્ણના સો, પાંચ રસના સો, પાંચ સંસ્થાનના સો, બે ગંધના બેતાલીસ અને આઠ ફરસના એકસો ચોરાસી મળી કુલ પાંચસેં ત્રીસ ભેદ પુદ્ગલાસ્તિકાયના થાય તે કહ્યા. તેમાં અજીવ અરૂપી ચાર દ્રવ્યના ત્રીસ ભેદ ભેગા કરીએ ત્યારે અજીવના પાંચસેંને સાઠ ભેદ થાય તે કહ્યા.

હવે જીવના ભેદની વ્હેંચણ કહે છે. જીવના બે ભેદ સિદ્ધ (૧), અને સંસારી (૨). સિદ્ધ તે કર્મ આવરણ દોષ રહિત. કેવલજ્ઞાન, કેવલદર્શનાદિ ગુણ પ્રગટરૂપ અખંડ, અમર, અવ્યાબાધાનંદ મય, લોકને અંતે વિરાજમાન સ્વરૂપ ભોગી તે સિદ્ધ જીવ કહીએ. તે સિદ્ધતા સર્વ જીવનો મૂળ ધર્મ છે પણ જેણે પોતાનું વીર્ય ફોરવ્યું તે સિદ્ધ ભગવાન થયા, નહીં ફોરવ્યું તે સંસારમાં પ્રવર્ત્તે છે. હવે સિદ્ધના ભેદ કહે છે. પ્રથમ સમયના, અપર સમયના વળી અનંતર સિદ્ધ, પરંપરસિદ્ધ, આદિસિદ્ધ, અનાદિસિદ્ધ, અનેકસિદ્ધ, લઘુ અવગાહના સિદ્ધ, ગુરુ અવગાહના સિદ્ધ અને મધ્યસ્થ અવગાહના સિદ્ધ, ઇત્યાદિ સિદ્ધ ભગવાનના ભેદ જાણવા.

हवे संसारी जीवना नेद गुणठाणानी अपेक्षाये कहे छे. तेना बे नेद. अयोगी अने सयोगी अयोगी ते सैलेशि नावे थया वळी, मनादि त्रणे योगनो रोध थयो ते चौदमा गुणठाणाना, बाकीना सयोगी, तेना बे नेद. सयोगी केवळी अने सयोगी छद्मस्थ. सयोगी केवळी ते तेरमा गुणठाणाना, तेमणे चार घाति कर्मनो क्षय कर्यो छे, वळी अनंत चतुष्टय प्रगट करी छे, तेमने अरिहंत नगवंत कहीए. बाकीना सयोगी छद्मस्थ. तेना बे नेद. अमोही अने समोही. अमोही ते मोहनीय कर्मनो क्षय कर्यो छे जेमणे वळी, क्षायक नावनुं यथाख्यात चारित्र पाम्या छे. वीतराग नावे थया ते अमोही बारमा गुणठाणाना, बाकीना समोही. तेना बे नेद उपशांत मोही अने उदीत मोही. उपशांत मोही ते मोहनीय कर्मनी सर्व प्रकृतियो उपशमावी छे जेणे वळी उपशम नावनुं यथाख्यात चारित्र पाम्या छे. ते उपशांत मोही अगिआरमा गुणठाणाना बाकीना उदीत मोही तेना बे नेद. सूक्ष्म मोही अने बादर मोही. सूक्ष्म मोही ते लोनाअणुं उदयमां छे जेने, वळी सूक्ष्म संपराय चोथा चारित्र वंत ते दशमा गुणठाणाना, बाकीना बादर मोही तेना बे नेद. अवेदी अने सवेदी. अवेदी ते वेद विकार क्षय पाम्यो छे जेनो ते नवमा गुणठाणाना बाकीना सवेदी. तेना बे नेद श्रेणीवंत अने श्रेणी रहित. श्रेणीवंत ते आठमा गुणठाणाना शुक्ल ध्यान ध्याता, बाकीना श्रेणीरहित, तेना बे नेद. अप्रमत अने प्रमत्त. अप्रमत्त ते आत्मोपयो-

गी सातमा गुणठाणाना. बाकीना प्रमत्त, तेना बे ज्नेद वि-
रति अने अविरति, तेमां विरतिना बे ज्नेद. सर्व विरति
अने देश विरति ते सर्व थकी संसार त्याग कर्यो ढे जेणे
ते ढ्ठा गुणठाणे साधु, अने देशविरति ते पांचमा गुणठाणे
श्रावक, बाकीना अविरति तेना बे ज्नेद. समकिति अने
मिथ्यात्वी, समकिति ते चोथा गुणठाणाना बाकीना मिथ्या-
त्वी, तेना बे ज्नेद. ग्रंथिज्नेदी अने ग्रंथि अज्नेदि. ग्रंथि ज्नेदी
ते समकित पामी पाढा पमया, मिथ्यात्वें गया तेमणे ग्रंथि
ज्नेद करेलो ढे. हवे फरीथी क्रवो न पमे, चमते ज्नावे स-
मकित गुणठाणे आवे ते ग्रंथि ज्नेदी, बाकीना अज्नेदी तेना
बे ज्नेद. ज्नव्य अने अज्नव्य ज्नव्य ते काळ लब्धि पामी
यथाप्रवृत्ति आदि त्रण करण करी कर्म स्थिति घटामी
अपूर्व करणे अपूर्व वीर्य फोरवी ग्रंथि ज्नेद करी समकित
पामे वळी वीर्यनी, ज्ञाननी, उपयोगनी ध्याननी अधिकता
पामे. तो कर्मनो नाश करी कर्म रहित थइ सिद्धि वरे
योग्यतावाळो ढे माटे. वळी केटलाएक ज्नव्य तो कारण
सामग्रीना अज्नावे समकित पामे नहीं पण ज्नव्य जीवमां
योग्यता धर्मनी ढती ढे ते माटे ज्नव्य कहीए. ते जीवो
अज्नव्यथी अनंत गणा अधिक ढे अने जे अज्नव्य जीव
ढे तेनी सत्ता तो ज्नव्य जीव सरखी ढे. गुण, पर्याय लक्षण
सर्वे बराबर ढे पण मिथ्यात्व गुणठाणाथी त्रणं काळमां
समकित गुणठाणे ए आववानो नथी अने मिथ्यात्व तज-
वानो नथी तेनुं कारण के ज्नव्य स्वज्नाव एनामां नथी ते

कारण सामग्री पामे तो पण पलटाय नहीं वळी श्रुत अभ्यास करे अने पंच महाव्रत आदरे छे, पण आत्म धर्मनी यथार्थ श्रद्धाना अभावे समकित पामे नहीं. अने मिथ्यात्व छोडे नहीं माटे अभव्य जीवो छे ते सिद्धि पद पामवाने अयोग्य छे ते अभव्य जीवोनी संख्यां चोथे अनंते छे ए भेद व्हेंच्या तेने व्हेंचण रूप व्यवहार नय कहीए.

हवे वीजो भेद "प्रवर्त्तनं वा व्यवहार" के० प्रवर्त्तन व्यवहार सद्विविध के० तेना वे भेद शुद्धोशुद्धश्च के० शुद्ध व्यवहार अने अशुद्ध व्यवहार ए वे भेद कह्या. तेमां ग्रंथकारे प्रथम शुद्ध व्यवहारना भेद कह्या छे, पछी अशुद्ध व्यवहारना भेद कह्या छे पण इहांतो अमे पहेलां अशुद्ध व्यवहारना भेदनी विवक्षा करी पछी शुद्ध व्यवहारना भेद कहीशुं. अशुद्ध व्यवहार ते अशुद्ध प्रवर्त्तन ते कहे छे. अशुद्धोपि द्विविध के० तेना वे भेद. सद्भूतासद्भूतभेदात् के० सद्भूत व्यवहार अने असद्भूत व्यवहार. तेमां सद्भूत व्यवहार ते, "ज्ञानादि गुण परस्परं भिन्न" के० ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य अने उपयोग आदि अनंता गुण आत्मामां अभेद भावे रह्या छे ते गुणने आत्माथी निर्पेक्ष पणे भिन्न गणेखे तेने अशुद्ध सद्भूत व्यवहार कह्यो, हवे वीजो भेद असद्भूत व्यवहार ते, "कषायात्मादि मनुष्योहंदेवोहं" के० हुं क्रोधी हुं मानी हुं कपटी, हुं लोभी, अने हुं विषयी इत्यादि. वळी हुं मनुष्य हुं देवता इत्यादि कहेवुं, मानवुं एटले जे गतिमां

गयो ते गतिरूप पोते थयो वळी ते गति हेतुपणे परिणमतां ग्रह्यां ते गति विपाकी जे कर्म ते उदयरूप परभाव छे, वळी पचीसे कषायनारूपे पोते थाय छे. ते पण उदयिक भाव छे. तेने परभाव कहीए. ते परभावने अने जीवने यथार्थ ज्ञान विना भेद ज्ञान शुन्य एक करी माने छे. तेने अशुद्ध असद्भूत व्यवहार कहीए. "सो पिद्विविधः" के० तेना पण बे भेद. तेमां पेहेलो भेद ते "संश्लेषित" एटले शरीरं मम अहं शरीरी के० शरीर ते जीव अने जीव ते शरीर एम शरीरनो अने जीवनो एकपणो माने ते संश्लेषित व्यवहार कहीए. दृष्टांतः—जेम नाकना मेलमां माखी लपटाय छे बंधाय छे, ते माखी नाकना मेलथी प्राये जूदी न थाय ते दृष्टांते ए व्यवहारी जीव कायाथी जूदो छुं एम न समजे ए पेहेलो भेद कह्यो. हवे बीजो भेद असंश्लेषित ते पूत्र कलत्रादि के० पुत्र पुत्री, वळी कलत्र ते स्त्री अने आदि शब्दथी धनदोलत घरबार, मेहेलात, राजऋद्धि, स्वजन, कुटुंब ए सर्वेने मारुं कहेवुं पोतानुं मानवुं तेने असंश्लेषित व्यवहार कहीए. एटले शरीरने पोतानुं कह्युं ते आयुष्यना अंत सुधी छोड्युं छुटे नहीं माटे संश्लेषित कह्युं अने पुत्र कलत्र आदि धनदोलत सर्वेने पोतानुं कह्युं, पण पोताथी जूदुं छे. अळगुं छे माटे असंश्लेषित कह्युं. हवे एनुं रहस्य बतावे छे. जे ए अशुद्ध व्यवहारना भेद भेदांतर कर्या तेमां सद्भूत व्यवहारे "ज्ञानादि गुण परस्परं भिन्न" कृत्रिम रीते जणताए गवेखीने कह्युं ते जीवथी भिन्न ज्ञा-

नादिक गुण निरपेक्षिपणे कह्या, अने स्वन्नाविक गुणनी अ-
पेक्षा न राखी, माटे ए न्नेद अन्नेद पक्षनो विरोधी ठे
अपेक्षिक नथी, ते कारणे मिथ्यात्वमां न्नळे ठे वळी अस-
द्न्नूत व्यवहारे " कषायात्मादि मनुष्योहं देवोहं " कह्युं
ते कषायोने आत्मा कह्यो. वळी चार गति विपाकी कर्म,
गतिहेतुपणे परिणमतां ग्रह्यां तेने आत्मा कह्यो, तेणे जम्ने
जीव मान्यो; ते मिथ्यात्व ठे वळी संश्लेषित व्यवहारे,
"शरीरं मम अहं शरीर" कह्युं जे शरीर तेज हुं पोते जीव
ठुं वळी अहं के० हुं जीवठुं तेज शरीर एटले, आत्मबुद्धि
कायामां ग्रहण करी, ते मिथ्यात्व थयुं; वळी असंश्लेषित
व्यवहारे पुत्रकलत्रादिने मारूं कह्युं तेणे पुत्र स्त्री धन आदि
वस्तु पोतानी मानी, ते वचन सापक्ष न होय तो मिथ्या-
त्वमां न्नळे ते समजवाने कारणे श्रद्धा शुद्ध करवाना हे-
तुए नीचे शास्त्रोनी साक्षी लखीए ठीए. जसविजयजीकृत
समाधि शतकेः–

उहा.

वाहिर अंतर परम ए, आतम परिणति तीन ॥
देहादिक आतम न्नरम, वाहिरात्म बहु दीन ॥ ७ ॥
नरदेहादिक देखिके, आतम ज्ञाने हीन ॥
इंद्रियवल वहिरातमा, अहंकार मन लीन ॥ ए ॥
अरि पुत्रादिक कल्पना, देहातम अन्निमान ॥
निजपर तनु संवंध मति, तांको होत निदान ॥ ११ ॥
देहादिक आतम व्रमी, कल्पै निज परन्नाव ॥

आतमज्ञानी जग लहे, केवळ शुद्ध स्वन्नाव ॥ १२ ॥
स्वपर विकल्पै वासना, होत अविद्या रूप ॥
तातें बहुरि विकल्पमय, न्नरम जाल अंध कूप ॥ १३ ॥
पुत्रादिककी कल्पना, देहातम भ्रम मूल ॥
ताकूं जम संपति कहै, हहा मोह प्रतिकूल ॥ १४ ॥
या भ्रम मति अब गंमि दौ, देखौ अंतर दृष्टि ॥
मोह दृष्टि जो गेमीये, प्रगटे निजगुण स्रष्टि ॥ १५ ॥
रूपादिक को देखिवो, कहन कहावन कूट ॥
इंद्रिय जोगादिक बले, ए सब लूटा लूट ॥ १६ ॥
रूपेके भ्रम सीपमें, ज्यूं जम करे प्रयास ॥
देहातम भ्रमतें न्नयो, त्यूं तुज कूट अन्यास ॥ १७ ॥

हवे नेमीदास कृत अध्यात्म सार ग्रंथेः—

दुहो ॥

पुद्गलसें रातो रहे, जाणे एह निधान ॥
तस लान्ने लोन्यो रहे, बहिरातम अन्निधान ॥ ५ ॥

हवे आनंदघनजीकृत चोवीशीमां सुमतीनाथजीना स्तवन मध्येः—

आतम बुद्धें कायादिक ग्रह्यो ॥ बहिरातम अघरूप सुज्ञानी॥
कायादिकनो साखी घर रह्यो, अंतर आतम रुप ॥
सुज्ञानी ॥ सुमति० ॥ ३ ॥

इत्यादि अनेक शास्त्रनी साक्षीए, उपर कहेला अशुद्ध व्यवहारना चारे न्नेद मिथ्यात्व प्रवर्त्तनमां न्नळे ठे. तेना ग्राहकने बहिरात्मा कहीए. ते पुरुष धर्म करवा

चाहे, चारित्र लेइ क्रिया करे, व्यवहार नये निर्दोष देखाय पण समकित पामे नहीं, अने तेनी मुक्ति पण थाय नहीं. कह्युं छे केः–

विरया सावज्जाओ ॥ कषाय हीणा महव्वय घराविं ॥
सम्मदिट्ठि विहुणा ॥ कयावि मुख्खं न पावंति ॥ १ ॥

ए गाथानो भाव विचारतां उत्कृष्टा थइने फरे पण अशुद्ध व्यवहारी छे. ज्यां सुधी कायाने जीव मानी रह्यो छे, जीव कायानी जूदाइ जाणी नथी, त्यां सुधी अशुद्ध व्यवहार टळे नहीं. एम सांभळी कोइ पूछे के ते शी रीते टळे? तेनो उत्तर–प्रथम सद्गुरुनी शोध करे तेने शुभोदय कारण सद्गुरु मळे, पण ते गुरु केवा छे? तो कह्युं छे–समयसार नाटक ग्रंथेः–

सवैया एकतीसा.

ज्ञानके उजागर सहज सुखसागर,
सुगुण रतनागर वैरागरस भर्यो है ॥
सरणकी रीत हरे मरणको भैन करे,
करनसो पीठ दे चरण अनुसर्यो है ॥
धरमको मंडन भरमको विहंडन,
ज्युं परम नरम व्हे के ॥
करमसों लर्यो है एसो मुनिराज भुय लोकमें,
विराजमान नीरखी वनारसी नमस्कार कर्यो है ५॥

अर्थः–ज्ञान के उजागर के० आत्मज्ञान ज्योति निर्मळ थइ छे जेने वळी अनुभव भुवनमां सूर्योदय सरखो

प्रकाश थयो छे जेने, तेनुं नाम ज्ञान उजागर कहीए. "सहज सुखसागर" के० स्वस्वरूपमां चेतन रमे त्यां कोइ जातनी बाधा पीडा वेदवा रूपे थती नथी. बाधापीडा परस्वभाव वृत्तिमां व्यापक पणे होय, अने अव्यापक पणे वर्त्ते त्यां अव्याबाध सुख सागर स्वस्वभाव वृत्तिये प्रगटे. "सुगुण रत्नाकर" के० आत्माना अनंता गुण छे, ते गुणोनी खाण ते ए मुनिराज छे. वैरागरस भर्यो है के० त्यागरूप रस तो एक ज्ञानमांज रह्यो छे, ते रसें भरपुर छे अंतःकरण जेनुं एवा "सरणकी रीत हरै के० पार्श्वनाथजीनें कमठे जळ वृष्टि आदि मोटा उपसर्ग कर्या, ते सरखा कदाच वैरभावे उपसर्ग कोइ तिर्यंच अथवा देवता करे तो पण भगवतीजीनुं वचन—असज्झाइया देवा ॥ इत्यादि संभारी चार निकायना देवताने स्मरे पण नहीं. अने उपद्रव टाळ एम कहे पण नहीं. जे मुनिराज छे, ते तो बाह्यमां देवगुरूनुं शरण करे छे. अने अंतरमां पोतीका आत्मानुं शरण करे छे, ते सिवाय अन्य शरण करवानी जे रीत तेनो तो परिहार कर्यो छे. "मरणको भै न करे" के० जे अज्ञानी मिथ्यात्वी छे ते कायाने जीव मानी तेनी साथे पोतापणुं राखे छे. वळी पुत्र कलत्र धन्यादि वस्तु साथे स्नेह बंधन दृढ छे जेने ते पुरुषो मरणथी डरे पण साधु मुनिराजे तो ए सर्वे वस्तुने रोग जाणी पर मानी छोडी छे. वळी कायाथी विरक्त चित्त छे. अने जाणे छे के आत्मा ज्ञानादिक

गुणे करी भावप्राणधारी छे तेनो नाश त्रण कालमां थाय नहीं. शाश्वतपणा माटे. एम मरणादि भय छेदीने निर्भय थया छे. " करनसो पीठ दे " के० पांच इंद्रि अने छट्ठी नोइंद्रि जे मन ए छनुं नाम करण छे: तेना विषय विकारने पूंठ देइ विमुख थया छे एटले जे आत्मदर्शि थया, तेमने विमुख कहेवा. " चरण अनुसर्योहै " के० चारित्र ते चपळता रहित, स्थिरताना परिणाम अने आत्मस्वरूपमां एकत्वपणे रमण, तन्मयता स्वरूप विश्रांति तत्वानुभव तद्रूप चारित्र ग्रह्यो छे जेणे " धरमको मंरुण " के० ए मुनिराज छे ते धर्म स्थंभ छे, एमना आलंवन आधारे चतुर्विध संघ धर्म प्रवृत्ति करे छे वळी उपदेश सांभळी पूछीने निःसंकित थाय छे वळी गुरू महाराजा केवा छे? के षटदर्शन शास्त्रना जाण छे. न्यायतर्कमां कुशळ छे अध्यात्ममां प्रवीणछे, सत्य भाषाछे जेनी, पोते तरेछे, अने बीजाने तारेछे देहधारीछे पण अंतर्वृत्ति जोगे देहातित भावने पाम्याछे ज्ञानध्यान जोगे आत्मा पुष्ट कर्यो छे जेणे, बाह्य अंतर सर्व वस्तुना जाण छे, पंडितोनी पंक्तिमां अग्रेसर सर्वने पूजवा वांदवा योग्य, भव्य जीवने ए मोक्षनो सार्थवाह छे वळी अंतर्वृत्ति योगे अनुभव भुवनमां आत्मधर्मनी रचना मंडाणी छे जेने, तेमने धर्मको मंडन जाणवो. " भरमको विहंडण ज्युं" के० भ्रमिकता जे विकलता अथवा शंका कांक्षा तेनो नाश कर्यो छे, जेम अंधकारनो नाश कर्त्ता सूर्योदय छे, तेम ए ज्ञानी जाणवा. " परम नरम व्है के करमसो

र्यों है " के० बाह्यमां कायादि योगे पुद्गल प्रवृत्ति करवामां थाक्या माटे नरम कह्या, पण अनंत वीर्यना धणी छे. कर्म परिणाम राजा साथे युद्ध करीने पोताना आत्माना असंख्याता प्रदेशरूप खेत्रथी मिथ्यात्वादि केटलीक कर्म प्रकृतिओने जेणे हणी छे, तेमनुं नाम साधु मुनिराज छे. " एसो मुनिराज " के० उपर कह्या इत्यादि गुणे गुणी, संसार समुद्र तरवाने नाव समान " भूय लोकमें " के० अढी द्वीपमां बिराजमान के० सदा विद्यमान होय छे. " नीरखी बनारसी " के० तेमने जोइ नीरखी एटले अंतर्दृष्टि करी साधु गुण गवेख्या ते साधु नीरख्या ते गुणमय चेतनमूर्त्तिने बनारसीदास समयसार नाटक ग्रंथना कर्त्ता एवा जे श्रावक तेमणे " नमस्कार कर्यो है " के० हृदय कमळ उल्लासथी घणो प्रमोद छतां गुण रागे पंचांग प्रणाम ग्रंथ रचना मंडाणमां मंगळाचरणरूपे कर्यो छे इत्यादि गुणे साधु मुनिराजनी ओळखाण करवी, भ्रममां भूला पडवुं नहीं. रत्न साटे काच वोहोरवो नहीं आत्महेतु तो एजछे, तेमनां पासां सेवीए तो दुःखनी परंपराए चउगति संसारभ्रमण ते थकी छुटीए. ए ज्ञानी गुरुराय आपणने उपदेश करे ते समयसार नाटक ग्रंथना मोक्ष द्वारे कह्यो छेः—

सवैया एकतीसा.

भेद ज्ञान आरासों दुफारा करे ज्ञानी जीव,
आतम करम धारा भिन्न भिन्न चरचे ॥

अनुभौ अभ्यास लहै परम धरम गहै
करम भरमको खजानो खोलि खरचै ॥
योंही मोख मुख ध्याव केवल निकट आवै
पूरन प्रकाश पावै पूरन के परचै ॥
भयो निरदोर याहि करनो न कछु और
एसो विश्वनाथ ताहि वनारसी अरचै ॥ १०७ ॥

अर्थः—भेदज्ञान आरासो के० भेदज्ञानरूप कसोटीए कशीने एटले लीक करीने ज्ञानी जीव "दुफारा करे" के० यथा दृष्टांते—जेम चोकसी लोको सोनानी परीक्षा कसोटीना पथ्थर उपर लीक करीने करेछे के एक तोलामां एक वाल वा बे वाल त्रांबुछे अथवा रुपुंछे. वाकीनुं शुद्ध कंचन छे. एम वे भाग जूदा चिंतवे. ए दृष्टांते सम्यकज्ञानी आत्मा परीक्षा करेछे के पोतानी कायामां अंतर्व्यापकपणे रहेलो पोतीको आत्मा ते द्रव्यथी त्रिकाळ वृत्तिये अखंड अविनाशी छे वळी क्षेत्रथी असंख्यात प्रदेशी छे काळथी अनादि अनंत छे अने भावथी ज्ञान दर्शनादि अनंत गुणमय उपयोगी छे. साक्षात् सिद्ध परमात्मा ते पोतेज छे. कर्म संयोगे कायामां वश्योछे. कायामां परिणम्योछे. पण कायाथी जूदो छे. शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श ए पुद्गलना पर्यायछे. तेने इंद्रियद्वारे सगांगीपणाना भूषणे करीने पोते अनुभवेछे, ए सर्वे पुद्गलनो अचेतन स्वभावछे. अने अंतर्व्यापकपणे अनुभववावाळो ते चेतनछे. एम जीवनी अने पुद्गलनी भिन्नता एटले जू-

दाझ ज्ञानरूप कसोटीये थाय, तेने भेदज्ञान कहीए "आतम करमधारा भिन्न भिन्न चरचै" के० हवे आत्मधाराने आत्मा थकी प्रगट थयेली अनुभव ज्ञानधारा तेने उपादेय जाणी ग्रही स्व स्वरूपे परिणमावे अने कर्मधारा के० कर्म थकी प्रगट थयेली ने काया वचन अने मन तेने हेय जाणीने तजे "अनुभौ अभ्यास लहै" के० हवे त्यां शुद्धात्म स्वरूपनो अनुभव अभ्यास परसंग रहित पणा माटे उपयोगनी विशुद्धिये वृद्धिपणुं पामे, "परम धरम गहै" कहेतां इहां क्षपक श्रेणी मांहे अने शुक्लध्यानना पेहेला पायाना ध्याता थाय त्यां परम नाम उत्कृष्ट धर्म ग्रहे "करम भरमको खजानो खोली खरचै" के० इहां भ्रमिकतारूप मोहनीय कर्मनी प्रकृतिना परमाणुं दळनो अनंतो खजानो आत्म प्रदेशे रहेलो तेने खोली एटले उदयमां लावीने खरचे एटले शुद्ध परिणतिना लग्न कार्यमां दशमा गुणठाणा अंते खरचे एटले विखेरी नांखे निर्जरे त्यां मोहनी कर्मनी सत्ता आत्म प्रदेशथी छुटे. वळी रागद्वेष अशुद्ध परिणतिनो पण छेद थाय, त्यां यथाख्यात चारित्र क्षीण मोह गुणठाणे पामे इहां शुद्ध परिणतिनुं पाणीग्रहण पण थाय, ओंही के० इहां मोक्ष के० मोक्षने एटले कर्मथी मूकाववाने "मुख ध्यावै" के० मुख्य वृत्तिये शुक्ल ध्याननो बीजो पायो ध्यावे, त्यां ज्ञानावरणीय तथा दर्शनावरणीय अने अंतराय ए त्रण कर्मनो सत्ताथी उछेद थाय, त्यां "केवळ निकट आवै" के० केवळज्ञान

केवळदर्शन तेरमा गुणठाणे पामे. " पूरण प्रकाश पावै " के० इहां परिपूर्ण प्रकाश पामे एटले लोकने अने अलोकने जीवने अने अजीवने रूपीने अने अरूपीने वळी उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव युक्त त्रणे काळनी वर्त्तनाने एक समये जाणे. " पूरणके परचै " के० परिपूर्ण आत्मज्ञानना परिचय थकी " नयो निरदोर आहि " के० इहां चौगति नवभ्रमणनी दोरनो अंत आव्यो एटले तेथी मुक्त थया. " करनो न कछु ओैर " के० एक शुद्धात्म स्वरूपनो अनुनव पोतीका स्वनावे थाय छे ते सिवाय तेमने वीजुं कांइ पण कृत्य करवानुं वाकी रहे नहीं. " एसो " के० उपर गवेख्या तेवा विश्वनाथ के० जगतना नाथ ए सर्वेज्ञ देव आपणे वांदवा, पूजवा, ध्यान करवा योग्य " तांही " के० तेमने " वनारसी अरचै " के० वनारसी दास श्रावक पूजेछे.

ए उपर कह्यो ते उपदेश पाम्यां शुद्ध व्यवहार आवे शुद्धोद्विविधः के० तेना वे नेद, तेमां पेहेलो नेद वस्तुगत व्यवहार. धर्मास्ति कायादि द्रव्याणां स्वस्वचलण सहकारादि जीवस्य लोको लोकादि ज्ञानादिरूप " के० सर्व द्रव्यनी स्वरूप रूप शुद्ध प्रवृत्ति जेम धर्मास्तिकायनो चलण सहायता, अधर्मास्तिकायनी स्थिर सहायता, आकाशनी अवगाहकता, काळनी वर्त्तना, पुद्गळनी मिलन, विखरण, सम्रण पम्रणता, जीवनी लोका लोक आदि जाणवुं, देखवुं ते केवळज्ञान, केवळदर्शनता इत्यादिकने

वस्तुगत व्यवहार कहीए, वळी शुद्ध जीवादि द्रव्यमां अनंता गुण अनंता पर्याय छे ते सर्वे स्वस्वभावने भजेछे एटले गुण गुण प्रत्ये भिन्न व्यक्ति छे पर्याय पर्याय प्रत्ये भिन्न व्यक्ति छे एटले एक द्रव्यमां अनंत भेदे व्यक्ति पामीए ते सर्वने वस्तुगत व्यवहार कहीए. ए पेहेलो भेद कह्यो.

हवे "स्व संपूर्ण परमात्म भाव साधनरूप, गुण साधकावस्थारूप गुण श्रेण्यारोहादि साधन शुद्ध व्यवहार" के० पोतिकुं मूळ रूप जोइए तो शुद्ध द्रव्यास्तिक नये पूर्ण परमात्म भाव तादृश देखाय छे. अनादि सिद्ध छे. ते संग्रह नय थयो तेनो एवंभूत नय करवो तेनुं नाम साधन शुद्ध व्यवहार कहीए, ते धर्म क्यारे प्रगटे के प्रथम मन योगने स्थिर करे त्यां ऋजुसूत्र नय पामे ते नयमां यथाप्रवृत्तिकरणे आवे. ते करणना प्रभावे सात कर्मनी घणी स्थिति घटाडे अने एक कोडाकोडी सागरोपममां एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग न्यून एटली राखे त्यारे अपूर्व वीर्य शक्ति चेतन पामे तेनुं नाम बीजुं अपूर्व करण कहीए, ते वीर्य योगे ए करण अंते ग्रंथिभेद करे अने अनिवृत्ति करणे समकित पामे त्यां शब्द नय कहिये.

जा गंठी ता पढमं गंठि समइच्छओ भवेबीअं ॥
अनिअट्टि करणं पुण, संमत्त पुरखडे जीवे ॥ १ ॥

हवे आत्मानो उत्सर्ग धर्म नीपजाववा माटे उपयोगनी विशुद्धिए स्वरूप रमण करतां स्वरूप अनुभवतां गुण-

ठाणे चढे. अने आठमा गुणठाणेथी क्षपकश्रेणी मांडी शुक्लध्यान योगे घातिकर्म श्रेणिगत हणी तेरमा गुणठाणे अनंत चतुष्टय पामे, त्यां सुधी साधन शुद्ध व्यवहार कहीए. वळी समभिरुढ नय पण त्यां कहीए. हवे आयुषना छेडे योगरोध करी अयोगी चौदमा गुणठाणा अंते अघाति कर्म हणी कार्मण वर्गणा रहित थइ पोतानी कायामां त्रीजो भाग पोलाणनो छे ते घटाडी वे भाग प्रमाण आत्मप्रदेशनो निविडघन करी एक समये समश्रेणिए वीजा आकाश प्रदेशने नहीं फरसतां लोकाग्र भागे सिद्ध क्षेत्रमां सादि अनंत भांगे स्थिर रहे तेमने सिद्ध भगवान कहीए. वळी त्यां एवंभूत नय पण कहीए. इहां साधन शुद्ध व्यवहारनी पूर्णता थइ ए वीजो भेद कह्यो.

हवे उपचरितानुपचरित व्यवहार भेदात् द्विविधो के० उपचरित व्यवहार अने अनुपचरित व्यवहार ए वे भेद कहेछे एटले शरीर जे पोतानी काया तथा पुत्रादिक, धनादिक वस्तु आत्मानी नथी. तेने उपचारे पोतानी कहीए. वळी साधुने शिष्यादिक तथा श्रावक, श्राविका तथा उपकरण वळी पुस्तक पोथी, पोतानी काया, पोतीको गच्छ इत्यादि परवस्तुछे तेने पोतानी कहेवी ते सर्वेने उपचरित व्यवहार कहीए.

हवे वीजो भेद ते जीवनुं अने कायानुं परिणामिक भावे एकपणुं थयुंछे पण वस्तु भिन्नछे. कायाथी जीव जूदोछे. अने जीवथी काया जूदीछे, जीवतो अरूपीछे. का-

यादिक वस्तु रूपीछे. जीवनो गुण ज्ञायकताछे अने पुद्गलनो गुण सऋण, पऋण, विध्वंसण छे. जीव तो अविनाशीछे, अने पुद्गल विनाशीछे. एम जीवनी अने पुद्गलनी भिन्नता छे, एम समजी जूदाइ करवी तेमां कशोए उपचार नथी तेने अनुपचरित व्यवहार कहीए. तथा च विशेषावश्यके महाभाष्यमां कह्युंछे, जे व्यवहार नयना मूळ बे भेदछे. एक व्हेंचणरूप व्यवहार ते द्रव्यादिक वस्तुने भेद भेदांतर करी व्हेंचवुं तेने व्हेंचणरूप व्यवहारनो पेहेलो भेद कहीए. बीजो प्रवृत्ति व्यवहार, तेना त्रण भेद. वस्तु प्रवृत्ति, साधन प्रवृत्ति, अने लोकिक प्रवृत्ति. तेमां पेहेलो भेद वस्तु प्रवृत्ति एटले जीवनो स्वभाव तो ज्ञान दर्शन चारित्र आदि अनंता गुण पर्यायरूपछे. ते सर्व स्वभाव आवरण योग दूषित थयाछे. ते आवरणनो क्षय साधन योगे बीजा भेदमां थशे, त्यारे चेतन निरावरण थयो कहीए ते पोताना स्वभावे प्रवृत्ति करे. एक समय काळे अनंती प्रवृत्ति थाय, तथा पांच द्रव्यतो अजीव छे. धर्मास्तिकायादि ते सर्वे पोताना स्वभावे प्रवर्त्ते छे, तेने वस्तु प्रवृत्ति कहीए.

हवे बीजो भेद साधन प्रवृत्ति, तेना त्रण भेद लोकोत्तर साधन, लौकिक साधन कुपरावचनीक साधन. तेमां लोकोत्तरसाधन प्रवृत्ति ते अरिहंत भगवाननी आज्ञाए. शुद्ध साधन मार्गे इहलोक संसार पुद्गल भोग आशंसादि दूषण रहित जे रत्नत्रयीनी परिणति परभाव त्याग सहित तेने लोकोत्तर

साधन प्रवृत्ति कहीए. इहां परभावनो त्याग कह्यो. तेने समजवो एटले पोताथी अन्य जे बीजा द्रव्यनो स्वभाव तेज परभाव त्याग कह्यो एटले जीवने परभावनो अनादि संबंध परंपराए चाल्यो आवे छे, ते छुटयो एटले ज्ञानावरणादि आठ मूळ कर्म प्रकृति अने उत्तर एकसो अठावन प्रकृति मिश्रित अनादि संबंधे चेतन हतो ते कर्म खजानो खाली कर्यो. एवी शुद्धता कला प्रगटी तेनुं नाम साधन शुद्ध प्रवृत्ति कहीए

हवे उपर कह्यो जे वस्तुप्रवृत्तिनो पेहलो भेद ते आवरणना अभावे वस्तु स्वभावनुं प्रवर्त्तन अनंता काळ सुधी प्रवर्त्ते ते वस्तु स्वभाव साध्यमां लाववा रूप साधन तेनेज लोकोत्तर साधन कहीए.

हवे बीजो भेद लोकिक साधन ते स्याद्वाद दृष्टि रहित अने मिथ्याभिनिवेष सहित तेने लौकिक साधन कहीए. हवे त्रीजो भेद कुपरावचनीक एटले सूत्र सिद्धांत अनुसार विना जे साधन करवुं कराववुं उपदेश करवो ते सर्वने कुपरावचनीक साधन प्रवृत्ति कहीए, ए साधन प्रवृत्तिना त्रण भेद कह्या. हवे लौकिक प्रवृत्ति ते लोकना स्वस्वदेश अनुकुळ चाले प्रवर्त्ते वळी आ जीविकानो अर्थी, आवता भवे पुन्यनो अर्थी, जशकीर्त्तिनो अर्थी पूजावा मनावानो अर्थी पोतीको मत स्थापन करवो, चलाववो तेनो अर्थी इत्यादि सर्वने लौकिक प्रवृत्ति व्यवहार कहीए, एम व्यवहार नयना भेद जाणवा. ओळखाण करवी. तथा द्वादशसार नयचक्रमां

व्यवहार नयना चार भेद कह्या छे. तथा शांत नयचक्र सारमां व्यवहार नयना सो भेद कह्या छे.ते शास्त्र रहस्यना जाण जीवने ए ग्रंथोथी सद्गुरु गीतार्थ बहुश्रुत भावने पामेला तेमनी पासे विनय पूर्वक जाणवा. ए भेद विशेषावश्यकने अनुसारे कह्या.

हवे द्रव्यगुण पर्यायना रासना अनुसारे कहे छे. सातमी ढाळे-चक्र उपन्युं साररे ॥ ए देशी ॥

सद्भूत व्यवहार ॥ भेद प्रथमतीहां ॥
धर्मधर्मीना भेदथी ए ॥ १ ॥
शुद्ध अशुद्ध द्विभेद शुद्धअशुद्धना
तेह अरथना भेदथी ए ॥ २ ॥

अर्थः-हवे नय समीपे उपनय कहेछे. तेमां सद्भूत व्यवहार ते उपनयनो प्रथम भेद छे, ते धर्म अने धर्मीना भेद देखाडवाथी होय ॥१॥ तेना बे भेद एक शुद्ध सद्भूत व्यवहार ते शुद्ध द्रव्य परद्रव्य संयोगादि अपेक्षा रहित पणा माटे कहीए ते निज स्वभावे निर्मळानंदी उपयोगी ज्ञानी इत्यादि प्रवृत्ति भेदे भेदविवक्षा करे तेथी थाय अने बीजो भेद अशुद्ध सद्भूत व्यवहार ते अशुद्ध द्रव्य पर संगी पणा माटे अथवा आवरण योगे कहीए ते उपाधि संयोगे निज धर्म प्रवृत्ति भेदे भेद विवक्षा करे तेथी थाय.

॥ ढाळ ॥

जेम जग केवल ज्ञान ॥ आतमद्रव्यनुं ॥

मइनाणादिक तेहनुं ए ॥ ३ ॥
गुण पर्याय स्वन्नाव ॥ कारकतन्मनो ॥
अरथ न्नेद छे एहनोए ॥ ४ ॥

अर्थः—जेम जगतमां आत्मद्रव्यनुं केवळज्ञान सूणिए प्रयोग करीए ते शुद्ध सद्न्नूत व्यवहार थयो, वळी मति ज्ञानादि आत्माना गुण एम वोलीए ते अशुद्ध सद्न्नूत व्यवहार थयो ॥३॥ गुण गुणीनो पर्याय पर्यायवंतनो स्वन्नाव स्वन्नाववंतनो कारक, अने तन्मय के० कारकी तेनो जे एक द्रव्यानुं गत न्नेद वोलावीए ते सर्प उपनयनो अर्थ जाणवो. घटस्यरूपं घटस्यरक्तता, घटस्यस्वन्नाव, मृदाघटो निष्पादित इत्यादि न्नेदे अर्थ प्रयोग जाणवो. ॥ ४ ॥

असद्न्नूत व्यवहार ॥ परपरिणति न्नलें ॥
द्रव्यादिक उपचारथीए ॥ ५ ॥
द्रव्यें द्रव्य उपचार ॥ पुद्गल जीवने ॥
जिम कहियें जिन आगम ए ॥ ६ ॥
काली लेस्या न्नाव ॥ श्याम गुणे न्नली ॥
गुण उपचार गुणे कह्योए ॥ ७ ॥
पर्यायें पर्याय ॥ उपचारें वली ॥
हय गय खंध यथा कह्याए ॥ ८ ॥
द्रव्यें गुण उपचार ॥ वली पर्यायनो ॥
गौर देह हुं वोलतांए ॥ ९ ॥

गुणे द्रव्य उपचार ॥ पर्याय द्रव्यनुं ॥
गौर देह जिम आतमाए ॥ १० ॥
गुण पज्जव उपचार ॥ गुणनो पज्जवे ॥
जिम मति तनु तनु मति गुणोए ॥ ११ ॥

अर्थः—परद्रव्यनी परिणति जळे थके द्रव्यादिकने नवविध उपचारथी कहीए ते असद्भूत व्यवहार जाणवो ॥ ५ ॥ हवे द्रव्यें द्रव्यनो उपचार ते जीन आगममां खीरनीरने दृष्टांते जीवने अनादि संबंधे पुद्गल मिश्रित कह्यो छे. माटे जीवने पुद्गल कहीए. ए जीव द्रव्यें पुद्गल द्रव्यनो उपचार थयो. ए पेहेलो भेद ॥ ६ ॥ हवे गुणे गुणोपचार ते अरूपी उपयोगी अलेशी आत्माने कृष्णादि छ लेश्यावंत कहीए छीए ते आतम गुणमां पुद्गल गुण जे लेश्या परिणाम तेनो आरोप थयो ए बीजो भेद ॥७॥ हवे पर्यायें पर्यायनो उपचार ते अमूर्त्त, अरूपी आत्माने घोमा हाथी आदि जे पुद्गल स्कंध तेने जीव पर्याय कहीए छीए ते पर्याय पुद्गल रूपछे तेने जीव पर्याय केहेवा ए उपचार समजवो ए त्रीजो भेद ॥ ८ ॥ हवे द्रव्यें गुणोपचार ते अरूपी आत्मा छे ते छतां हुं गौरवर्णो छुं एम वोलीए ते हुं शब्दे आत्मा अने गौर ते पुद्गलनो गुण जे धोळो वर्ण तेनो उपचार जीव द्रव्यमां कर्यो, ए चोथो भेद थयो. हवे द्रव्यें पर्यायोपचार ते देहाश्रित जीवने शरीरी केहेवो एटले शरीर छे ते पुद्गल द्रव्य पर्याय छे

तेनो उपचार जीव द्रव्यमां थयो. ए पांचमो भेद ॥ ए ॥ हवे गुणे द्रव्योपचार ते देह गौर देखायछे ते आत्मा एम गौरपणो उद्देशीने आत्मविधान करीए एटले ए गौरतारूप पुद्गलनो गुण तेमां आत्मद्रव्यनो उपचार थयो ए छट्ठो भेद. हवे पर्याये द्रव्योपचार ते जेम देहने आत्मा कहीए एटले देह छे ते पुद्गल पर्याय छे तेमां आत्मद्रव्यनो उपचार थयो ए सातमो भेद ॥ १० ॥ हवे गुणे पर्यायोपचार ते जेम मतिज्ञान गुण छे ते इंद्रिनो इंद्रि संयोग छे माटे शरीरज कहीए इहां मतिज्ञानरूप आत्मगुणने विषे शरीर रूप पुद्गलपर्यायनो उपचार कर्यो ए आठमो भेद. हवे पर्यायें गुणोपचार ते जे शरीर छे तेज मतिज्ञान गुण छे तो इहां शरीररूप पुद्गलपर्यायने विषे मतिज्ञान आत्मगुणनो उपचार थयो ए नवमो भेद एम उपचारे असद्भूत व्यवहार नव भेदे कह्यो ॥ ११ ॥

असद्भूत व्यवहार ॥ एम उपचारथी ॥
एह त्रिविध हवे सांभलोए ॥ १२ ॥
असद्भूत निजजाति ॥ जिम परमाणुउ ॥
बहु प्रदेशी भाषियेंए ॥ १३ ॥
तेह विजाति जाणो ॥ जिम मूरत मति ॥
मूरत द्रव्यें उपनीए ॥ १४ ॥
असद्भूत दोउ भांत ॥ जीव अजीवने ॥
विषय ज्ञान जिम भाषियेंए ॥ १५ ॥

उपचरितासद्भूत करियें उपचारो ॥
भेद एक उपचारथीए ॥ १६ ॥

अर्थः—असद्भूत व्यवहार उपर नव भेदे कह्यो ते प्रमाणे उपचारे समजवो हवे एना त्रण भेद कहे छे. ते हे भव्य प्राणि तमे सांभळो. ॥ १२ ॥ स्वजाति असद्भूत व्यवहारे जेम पुद्गल परमाणुं छे, ते बहु प्रदेशी थवानी जाति छे. माटे ते एक परमाणुने पण बहु प्रदेशी उपचारे कहीए. ए पेहेलो भेद ॥ १३ ॥ हवे विजाति असद्भूत व्यवहारे जेम मतिज्ञानने मूर्त्तिवंत कहीए. एटले ज्ञान छे ते आत्मगुण छे तेने विषे मूर्त्तिवंत जे पुद्गलनो गुण तेनो आरोप थयो ए बीजो भेद ॥ १४ ॥ स्वजाति विजाति असद्भूत व्यवहार, जेम जीवाजीव विषय ज्ञान कहीए. इहां जीव छे ते ज्ञाननी स्वजाति छे अने अजीव छे ते ज्ञाननी विजाति छे ए बेहुनो विषय विषयी भाव नामे उपचरित संबंध छे. ए त्रीजो भेद ॥ १५ ॥ एम उपचरित असद्भूत व्यवहारे जीवद्रव्य, जीवगुण, जीवपर्याय, पुद्गलद्रव्य, पुद्गलगुण, पूद्गलपर्याय एम ए बे वस्तुना छ भेद कह्या, ते जीवमां पुद्गलनो अथवा पुद्गलमां जीवनो जेम घटे तेम एकनो उपचार करीए ए रहस्य समजवो.१६

तेह स्वजाति जाणोरे ॥ हुं पुत्रादिक ॥
पुत्रादिक छे माहराए ॥ १७ ॥
विजातिथी ते जाणोरे ॥ वस्त्रादिक मुज ॥

गढदेशादिक उन्नयथीए ॥ १८ ॥
उपनय न्नाख्या एम ॥ अध्यात्मनय ॥
कही परीक्षा जश लहोए ॥ १९ ॥

अर्थः—स्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार जाणो ओळखो, संबंधी कल्पन जे हुं पुत्रादिक इहां हुं मारा एवुं जे पुत्रादिकने विषे कहेवुं एटले पुत्रादिकने शरीर आत्म पर्याय रूपे स्वजाति छे. पण कल्पित छे अन्य छे तेने उपचारे पोताना कहीए. ते पेहेलो न्नेद ॥ १७ ॥ हवे विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार ते वस्त्र आन्नरणादि मारां कहेवां एटले वस्त्र आन्नरणादि वस्तु जीवने परछे. वळी विजाति छे स्वजात नथी, तेने उपचारे पोताना कहीए ए बीजो न्नेद वळी स्वजाति विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार ते गढ, नग्र, देश, राज्य मारुं छे के० गढ, देश, गाम, नग्र, प्रमुखने विषे जीव छे ते स्वजाति छे अने देशादिक राज्यऋद्धि प्रमुख छे, ते विजाति छे ए बेहु वस्तु पोताथी अन्य छे तेनो पोतापणे उपचार ए त्रीजो न्नेद ॥ १८ ॥ ए रीते उपनये त्रण त्रण कह्या. तेमां पुत्रादिक, वस्त्र, गढ, देशादिक वस्तु उपचारे पोतानी कही पण वस्तुगते पर छे पोतानो तो एक शुद्ध चेतन साक्षात् परमात्मा सरखो चिदानंद ज्योतिरूप अरूपी, अमूर्त्ति, अचळ, अखंम, अव्याबाधानंदमयी चिन्ह मूर्त्ति रूप छे तेनी उंळखाण जाणपणुं अध्यात्म नयरूपे

परीक्षा करीए तो शुद्ध निश्चयनय मूळ स्वरूपे प्रगटे तद्रूप जश पामीए ॥ १९ ॥ ढाल सातमी संपूर्ण.

हवे आठमी ढाल कहे छे.

॥ जाय तुज विण घडीरे छ मास ॥ ए देशी ॥

दोय मूल नय भाषीयारे ॥ निश्चयने व्यवहार ॥
निश्चयं द्विविध कह्युंरे ॥ शुद्ध अशुद्ध प्रकाररे ॥ १ ॥
प्राणी परखो आगम भाव ॥ ए आंकणी.

अर्थः—इहां अध्यात्म नय भाषाए तो आगम केहेतां सूत्र सिद्धांतनी मांहेली कोरं मूळ बे नय प्ररूप्यां छे निश्चय नय अने व्यवहार नय, तेमां निश्चय नयना बे भेद कह्याछे. शुद्ध निश्चयनय अने अशुद्ध निश्चयनय. हवे तेनो अर्थ सांभळो. हे भव्य प्राणी! आत्महित अर्थे सूत्र साक्षीए, गुरू वचने, श्रवणयोगे, स्थिर मने हेयज्ञेय उपादेय बुद्धिए शुद्ध द्रव्यास्तिक नय उपयोग लगावी पर्यायास्तिक नय शुद्ध साधन रूप व्यवहार भेळी अशुद्ध निश्चय नय पलटावीने शुद्ध निश्चय नय रूपे थइए त्यां स्वस्वभावे सहज अकृत्रिम अनुभव प्रगटे. ते अनुभव ज्ञानने अनंता चक्षु छे. ते चक्षु ज्योतिए अरूपी आत्मानो मूळ स्वभाव जोइ परखो. ए आगम भाव कह्यो. ॥ १ ॥

जीव केवलादिक यथारे ॥ शुद्ध विषय निरुपाधि
मइनाणादिक आतमारे ॥ अशुद्ध तेह सो-
पाधिरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥

अर्थः–केवळनाण केवळदर्शन आदि अनंता गुण पर्याय रूप यथायोग्य शुद्ध विषयवंत उपाधि संयोगादि दूषण रहितपणे तेने शुद्ध निश्चयनय कहिए अने मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान ए चार ज्ञान अने मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञान ए त्रण अज्ञान मली सात भेदे ज्ञानवंत आत्मा ते सर्वे सोपाधिक छे. परसंयोग संगीछे. सावरण भावछे तेने अशुद्ध निश्चय नय कहीए ए निश्चयनयना वे भेद कह्या. ॥२॥

दोइ भेद व्यवहारनाजी ॥ सद्भूता सद्भूत ॥
एक विषय सद्भूतछेजी ॥ पर विषया सद्-
भूतरे ॥ प्रा० ॥ ३॥

अर्थः–हवे व्यवहारनयना वे भेद कहे छे सद्भूत अने असद्भूत तेमां एक निज द्रव्याश्रितवर्त्ति भेदज्ञानी परवस्तु विभाग व्हेंचण रूप ते सद्भूत व्यवहार नामे पेहेलो भेद कह्यो. हवे वीजो भेद ते परवस्तुनो विषयी एटले मन वचन अने काया ए त्रणे जोगे प्रवर्त्ते. पांच इंद्रि त्रण वळ श्वासोश्वास अने आयुष ए दश द्रव्य प्राणने जीव समजे. पांच इंद्रिना त्रेविस विषय सेवे तेमां रागद्वेष भले तेने असद्भूत व्यवहार कहीए ए वे भेद व्यवहार नयना कह्या. ॥ ३ ॥

उपचरितानुपचरितथीजी ॥ पेहेलो दोय प्रकार ॥
सोपाधिक गुण गुणी भेदेरे ॥ जे अनिमित्त
उपचाररे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

अर्थः—हवे सद्भूत व्यवहारना बे भेद कहे छे एक उपचरित सद्भूत अने बीजो अनुपचरित सद्भूत. तेमां प्रथम भेद ते सोपाधिक गुण गुणीनो भेद देखाडे. जेम जीवस्य मतिज्ञानं ए उपाधि तेहीज इहां उपचरित सद्भूतनो प्रथम भेद ते कह्यो.

निरुपाधिक गुण गुणी भेदेरे॥ अनुपचरित सद्भूत॥
केवळज्ञानादिक गुणारे ॥ आतमना अद्भूतरे ॥
प्रा० ॥ ५ ॥

अर्थः—हवे बीजो भेद निरूपाधिक गुण गुणी भेदे जाणवो. यथा जीवस्य केवल ज्ञानं, केवळ दर्शनं एटले आत्मानो वस्तु गते अनंतो धर्मछे, ते धर्मने अद्भूत कह्यो. ते अलख, अगोचर, अगम, अनुपम, अव्याबाह, अविनाशी , अमल, विमल, ज्योतिवंत इत्यादि जे अनंतु अद्भूत स्वरूपछे तेमां कशोए उपचार उपाधि नथी तेने अनुपचरित सद्भूतनो बीजो भेद कह्यो ॥ ५ ॥

असद्भूत व्यवहारनाजी ॥ एमज भेदछे दोय ॥
प्रथम असंश्लेषित योगेंजी ॥ देवदत्त धन जोयरे॥
प्रा० ॥ ६ ॥

अर्थः—हवे असद्भूत व्यवहारना उपर कह्या तेज रीते बे भेद कहेछे. एक उपचरित असद्भूत अने बीजो अनुपचरित असद्भूत. तेमां प्रथम भेद ते असंश्लेषित योगे कल्पित संबंधे होय. जेम देवदत्तनुं धन, इहां धन

ते देवदत्तने संबंध स्वस्वामित्व भावरूप कल्पित छे, ते माटे उपचार थयो वळी देवदत्त अने धन ते बेहु एक द्रव्य जाति नथी ते माटे असद्भूत एम भावना करवी. ते उपचरित असद्भूतनो पेहेलो भेद ते कह्यो ॥ ६ ॥

संश्लेषित योगें बीजारे ॥ जेम आतमनुं देह ॥
नय उपनय नयचक्रमां रे ॥ कह्या मूल नय एहरे ॥
प्रा० ॥ ७ ॥

अर्थः—हवे बीजो भेद अनुपचरित असद्भूत व्यवहार ते संश्लेषित योगे कर्म संबंधे जाणवो. जेम आत्मानुं शरीर एटले आत्मानो अने शरीरनो संबंध कोइ धन संबंधनी पेरे कल्पित नथी. वीपरित भावनाए निवर्त्ते नहीं. जाव जीव संबंधीछे. ते माटे ए अनुपचरित अने भिन्न विषय माटे असद्भूत जाणवो. ए रीते नय तथा उपनय ए बेहु नयचक्रमां मूल नय सहित कह्याछे.॥ ७ ॥

ए व्यवहारनय द्रव्य गुण पर्यायना रासना अनुसारे कह्यो. हवे आगमसारमां व्यवहार नयना छ भेद कह्या छे. ते कहे छे तेमां पेहेलो भेद शुद्ध व्यवहार, ते उपयोगी पणे जाणीए. वळी ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुण ते निश्चय नय एकत्व रूपछे पण उपदेश योगे भव्य जीवने समजाववा जूदा जूदा भेद कह्या. वळी आत्माने शुद्ध करवो. आगला गुणठाणानो छोडवो अने उपरना गुणठाणानो ग्रहवो तेने शुद्ध व्यवहार कहीए.

हवे बीजो अशुद्ध व्यवहार ते जीवमां मिथ्यात्व अ-

ज्ञान रागद्वेष मोहादि लाग्या छे तेथी अशुद्धपणुं छे, तेनेज अशुद्ध व्यवहार कहीए.

हवे त्रीजो भेद शुभ व्यवहार ते पुन्यनुं कारण नवां शुभ कर्म लेवानो हेतु पुन्यना अर्थीने मोक्ष मार्गथी विमुख तप व्रत, नियम कष्ट आदें द्रव्य क्रियानो कर्त्ता विष, गरल, अन्यो अन्य ए त्रण अनुष्ठाननी मुख्यता इहां प्रायें होय. इत्या दिकने शुभ व्यवहार कहीए. कह्युं छे केः—

नत्थि मग्गो मुख्खो, वव्वहारो पुन्न कारणो वुत्तो ॥
पढमो संवर रुवो, आसवहे उतओ बीउ ॥ ७ ॥

अर्थः—निश्चय नयनो मार्ग ज्ञानसत्तारूप ते मोक्षनुं कारण छे एटले मोक्ष छे. अने व्यवहार क्रिया नय ते पुन्यनुं कारण कह्यो. पेहेलो निश्चय नय संवर छे अने निश्चय संवर निश्चय नय ते एक ज छे जूदा नथी बीजो व्यवहार नय ते आश्रव नवां कर्म लेवानो हेतु छे. एटले शुभ पुन्य कर्मनो आश्रव थाय छे अने अशुभ व्यवहारे अशुभ कर्मनो आश्रव थाय छे ॥ ७ ॥

हवे चोथो अशुभ व्यवहार ते यतना रहित थकां पर प्राण हणवा ते प्राणातिपात ॥ १ ॥ असत्य वचनीक ते मृषावाद ॥ २ ॥ माग्या विना पर वस्तु लेवी ते अदत्ता दान ॥ ३ ॥ स्त्री पुरुष संयोग वेद विषयनुं सेववुं ते मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह रक्षण करवुं तेमां मूर्छित थवुं ते परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध करवो ॥ ६ ॥ मान मद मोटाइ करवी ॥ ७ ॥ कपट केळववुं ते माया ॥ ८ ॥ लोभमां लाग्या रहेवुं ॥ ९ ॥

अनुकुळनो स्नेह ते राग ॥१०॥ प्रतिकुळनो खेद ईर्ष्या ते द्वेष ॥ ११ ॥ लढवुं वढवुं युद्ध करवुं ते कलह ॥ १२ ॥ कोईने छतुं अछतुं कलंकनुं देवुं ते अभ्याख्यान ॥१३॥ एकने बीजानी चाडी करवी ते पैशुन्य ॥ १४ ॥ शाता वेदनीयमां रीझ राजीपो, अशाता वेदनीयमां कुराजीपो ते रति अरति ॥ १५ ॥ पारकी निंदा करवी ते परपरिवाद ॥ १६ ॥ कपट साथे जूठुं बोलवुं ते माया मृषावाद ॥ १७ ॥ अजाणपणे वीपरित श्रद्धा ते मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ एम अढारे पापस्थानकने सेववां. वळी इंगालादिक पांच कर्म, दंतादिक पांच वाणिज्य, यंत्रादिक पांच सामान्य. ए पंदर कर्मादान ते पण पापना दातार छे, कह्युं छे. वंदिता सूत्रेः—

इंगालि वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं
वाणिज्जं चेवय दंत, लख्खरस केस विस विसयं ॥
एवं खु जंत पिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥
सरदह तलाय सोसं, असइ पोसंच वजिज्जा ॥२३॥

ए पंदर कर्मादान बे गाथाथी जाणवां, वळी रात्रि भोजन करवुं, अभक्ष्य अनंत कायनुं भक्षण करवुं, तथा अन्यदर्शनीनो संस्तव—परिचय, प्रशंसा करवी वळी वासी, बोळो, द्विदळ, अणगळ पाणी, इत्यादिकनुं भक्षण आदि करवुं ते सर्वने अशुभ व्यवहार कह्यो.

हवे पांचमो उपचरित व्यवहार ते जेटलो संयोगिक भावने वस्तु आत्माथी जूदी छे पण जीवें मिथ्यात्व अज्ञा-

नपणे आपणी करी जाणी छे ते परवस्तुनो पोतापणे उपचार तेज उपचरित व्यवहार कह्यो. हवे छठ्ठो अनुपचरित व्यवहार ते शरीरादि पांच इंद्रि मन वचन ते परवस्तु यद्यपि जीवथी जूदी छे तोपण परिणामिक भावे लोळीपणुं एकठा मळी रह्युं छे एम अपेक्षा सहित तेने आपणी करी जाणे, तेने अनुपचरित व्यवहार कह्यो. ए व्यवहार नयना छ भेद आगमसारना अनुसारे कह्या इत्यादि व्यवहारनयनी उळखाण जाणपणुं करवुं. प्रवर्त्तवुं, तेथी धर्म पामीए. तेनो परमार्थ भेद ज्ञान जोग छे, तेनी हवे विविक्षा करे छे.

व्हेंचणरूप व्यवहारे जीवद्रव्य, पुद्‌गलद्रव्य, जीव गुण, पुद्‌गलगुण, जीवपर्याय, पुद्‌गलपर्याय, एम भेद व्हेंची जूदा जूदा करे तेथी वस्तु उळखाय, स्वपर समजाय त्यारे धर्म पोताना स्वरूपमां समजे. पछी तेमां प्रवर्त्ते ते प्रवर्त्तन व्यवहार. तेथी मिथ्यात्व टळे तेनी साथे अशुद्ध व्यवहारने छोडे तीहां शुद्ध व्यवहार आवे वळी विशुद्ध ज्ञान आवे ते वस्तुनी शुद्ध परिणति देखाडे. ते वस्तुगत शुद्ध व्यवहार पछी वस्तु धर्म शुद्ध करवापणे साधन पामे. ते साधन शुद्ध व्यवहार तेमां पूर्वकृत कर्णनी उदयिकता आवे ते उपचरित व्यवहार तेमां व्यापकणुं न करे अने रूपातित ध्याननो ध्याता थाय ते अनुपचरित व्यवहार एम व्यवहारनी शैलिये रूपातित, योगातित जे सिद्ध ते रूपें पोते थाय, ते व्यवहार समकित धर्म प्रवर्तनमां अने लौकिक साधन तथा कुपरावचनीक साधन तथा लौकिक प्र-

वृत्तिए मिथ्यात्व प्रवर्त्तनमां छे. वळी अशुद्ध व्यवहारना भेद सद्भूत, असद्भूत, संश्लेषित असंश्लेषित पूर्वे कह्या ते पण मिथ्यात्व प्रवर्त्तनमां छे ए भेद नय चक्रसारना अनुसारे कह्या तेनो ए परमार्थ समजवो. हवे द्रव्यगुण पर्यायना रासना अनुसारे भेद कह्या. तेने ठसाववाने माटे पुनरपि भावार्थ कहे छे.

एक निज चेतन धर्म प्रवर्तन परद्रव्य संयोगादि अपेक्षा रहितपणे ते सद्भूत व्यवहार केवळज्ञानी आत्मा ते शुद्ध सद्भूत मतिज्ञानादि आत्मा ते अशुद्ध सद्भूत, गुणपर्याय स्वभाव तन्मयी एक द्रव्यानुगत भेद बोलीए ते सद्भूतनो भेद अर्थ छे, परद्रव्यनी परिणति निज द्रव्यमां भळे तिहां असद्भूत व्यवहार जाणीए ते असद्भूत व्यवहारनो नव प्रकारे उपचार जीव पुद्गल योगें थाय. द्रव्ये द्रव्योपचार, ॥१॥ गुणेगुणोपचार, ॥ २ ॥ पर्यायेपर्यायोपचार ॥ ३ ॥ द्रव्येगुणोपचार ॥ ४ ॥ द्रव्ये पर्यायोपचार ॥ ५ ॥ गुणेद्रव्योपचार ॥ ६ ॥ पर्यायेंद्रव्योपचार ॥ ७ ॥ गुणेपर्यायोपचार ॥ ८ ॥ पर्यायेगुणोपचार ॥ ९ ॥ एम जीवनो पुद्गलमां अने पुद्गलनो जीवमां जेम घटे तेम एकनो उपचार करीए तेथी समजवामां आवे के उपचारे पोतानी वस्तु मानीए छीए पण पोतानी नथी. परवस्तु परपणे छे. अने निजवस्तु निजपणे छे एम उपचरित व्यवहारनुं ज्ञान थतां स्वपर भिन्नता थाय. चेतन अचेतन मिश्रित छे ते जूदो देखाय. जडसत्ता, चेतनसत्ता जूदी जूदी समजाय

त्यां मिथ्यात्वनो नाश थाय. अने समकितनी प्राप्ति थाय. अनुक्रमे मुक्ति पण थाय वळी विभाग पर्याय जे विभाव पर्याय समलता योगे जीवादि द्रव्यमां छे. ते उपचारे मानीए पण वस्तुए नहीं. वळी मति आदि ज्ञान आत्मानां कहेवां ते उपचारे कहीए वस्तुगते केवळज्ञानी छे वळी ज्ञाननो स्वपर विषय ते पण उपचार छे. वस्तुगते निजविषयी स्वअनुभवी छे. द्रष्टांतः—जेम अरीसामां प्रतिबिंब अन्यनो पडे छे पण कांइ अरीसो अन्यमां पेसतो नथी अरीसामां अन्य प्रतिबिंबित थयुं ते उपचार सरखुं छे वस्तुयें नथी तेने उपचार कहीए वळी पुत्रादि वस्तु छे ते उपचारे पोतानी मानीए वस्त्रादि वस्तु ते उपचारे पोतानी मानीए गढ, देश, राज्यऋद्धि ते उपचारे पोतानां कहीए. सर्वे संयोगिक भावे मळ्युं छे. ते वियोगे नाश थशे इत्यादि वस्तु घणी छे. तेनो जेटलो संबंध ते उपचार एम आत्माने उळखीये त्यारे समजवामां आवे माटे हे भव्यजीवो! तमे आत्माने उळखो तो तमारुं चेतनपणुं तमारे खप लागे. अचेतनमां चेतनपणानी बुद्धि छे, ते टळी जाय तद्रूप जश पामो.

वळी आगमनी मांहे मूळ निश्चय अने व्यवहार बे नय प्ररूप्या छे. तेमां निश्चय नयना बे प्रकार कह्या छे, जीवमां केवळज्ञानादि अनंता गुण पर्यायनी अभेदता.ते शुद्ध निश्चयनय. वळी मतिज्ञानादिकने आत्मा कहेवो ते अशुद्ध निश्चय नय ए बे भेद निश्चयना कह्या. हवे व्यवहार नयना

बे भेद कहे छे. एक सद्भूत अने बीजो असद्भूत तेमां पर संग रहित उपयोगे तो निजद्रव्यगत विषयी भाव ते सद्भूत, परद्रव्य संयोगे पर विषयता ते असद्भूत व्यवहार, तेमां सद्भूतना बे भेद एक उपचरित अने बीजो अनुपचरित. तेमां पहेलो भेद ते "जीवस्यमतिज्ञानं" एटले उपाधि योग जीवगुण कहीए ते उपचरित सद्भूतनो पेहेलो भेद. हवे बीजो भेद ते "जीवस्य केवलज्ञानं" केवळ दर्शनं एटले जेमां उपाधि नथी ते गुण आत्मानो छे एम कहेवुं ते अनुपचरित सद्भूत. ए बे भेद सद्भूतना कह्या. तेज रीते असद्भूतना बे भेद कहे छे.

एक उपचरित असद्भूत, बीजो अनुपचरित असद्भूत. तेमां पेहेलो भेद ते असंश्लेषित योगे कल्पित संबंधे होय एटले धनादि वस्तु पोतानी कहेवी. ते उपचरित अने भिन्न विषय माटे असद्भूत. हवे बीजो भेद ते संश्लेषित योगे कहीए. जेम आत्मानुं शरीर ते कांइ आयुष्य छतां छोडयुं छुटे नहीं माटे अनुपचरित, अने भिन्न विषय माटे असद्भूत ए बीजो भेद कह्यो. एम दृष्टि पसारीने जुए तो जीवस्वरुप हाथमां आवे पण रूपी नथी ते देखाडीए. ज्यां ज्ञाननी मुख्यता छे त्यां व्यवहारनी गुणता छेज. एटले उपाधिना टाळनार विशुद्धिनो कर्त्ता ज्ञान योग छे. माटे जे ज्ञानी पुरुषो छे, तेतो एक ज्ञानमांज निश्चय अने व्यवहार बेउ नय समजे छे. एटले भेद ज्ञान छे ते शुद्ध व्यवहार छे अने अभेद ज्ञान छे ते शुद्ध निश्च-

થકે.અને જ્ઞાન રહિત વ્યવહાર કહીએ તે મિથ્યાત્વધર્મ પ્રવર્त्त-नमां छे ए व्यवहार नय कह्यो तेमां भेदज्ञान योग छतां समकित धर्म प्रवर्त्तन कहीए अने अभेद ज्ञान योगे निश्चय धर्म प्रवर्त्तन कहीए. तेनी मुक्ति कहीए. अभेद ज्ञानछे ते कार्य रूप छे अने भेद ज्ञान छे ते कारणरूप छे. भेदज्ञानना अभावे जे साधन करवुं तेने अकारण कहीए.

हवे कल्प व्यवहार अने ज्ञान व्यवहार ए बे भेद कहेछे ए बे व्यवहार ग्राही तेज साधु एटले कल्प छे ते व्यवहारनयनो अपेक्षी छे अने ज्ञान छे ते निश्चयनयनो अपेक्षी छे ए बे भेद ते साधुना आचार कहीए. तेमां कल्प छे ते बाह्य आचारी छे अने ज्ञान छे ते अंतर आचारी छे तेमां कारण योगे कल्पने डुखवे तो साधुपणुं जाय नहीं. अने ज्ञानने डुखवे ते वखते साधुपणुं रहे नहीं. नाश पामे. वळी कल्प छे ते याग प्रवृत्तिनो ग्राहक छे. अने ज्ञान छे ते उपयोग प्रवृत्तिनो ग्राहक छे. वळी कल्प छे ते निमित्तकारणमां छे अने ज्ञान छे ते उपादानकारणमां छे. कल्पनी आदि नैगम नये छे. अने ज्ञाननी आदि शब्द नये छे ए बेहु भेदनो आराधक तेनेज साधु कहीए. तेमां प्रथम कल्प व्यवहारनी गवेषणा कल्पसूत्रथी दश भेदे कहे छे.

तेमां पेहेलो अचेलक कल्प ते पेहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना साधुने धवळ वस्त्र छे, नहीं रंगेलुं, नहीं धोएलुं जेवुं सेवके आपेलुं होय तेवुं तेमां साढा त्रण हाथ लांबो चोळपट्टो ढींचण प्रमाणे नीचो तेना उपर कंदोरो वळी

साम्रा चार हाथ लांबो कपमो, तेना उपर माबे खन्ने कांवळी अने मावा हाथे दांमो तथा मावा हाथे जोळी वळी बत्रीश आंगळनो उंचो,तेमां चोवीस आंगळनी दांमी, दश आंगळनी दशीउं अने अष्टमंगळ आळेखेलो वनातनो पाटो, ते थकी गुंथेली दशीउं ते प्रमाणे लुगमांनो ककमो तेना उपर कांवळीउं तेना उपर दोरो त्रण आंटे वांधवो एवो वत्रीस आंगळनो उंघो वळी पोतानी एक वेंत अने चार आंगळनी चोखूणे सरखी मुहपत्ति इत्यादि मानोपेत लिंग साधुनुं कह्युं तेने अचेलक कहीए. वळी वावीस तीर्थंकरना साधु साध्वी छे, ते तो मोटा मूलनां पंचरंगनां मानोपेत नहीं एवां वस्त्र राखे माटे तेमने सचेलक कहीए. ए अचेलक कल्प कह्यो.

हवे वीजो उद्देशिक कल्प ते वावीस तीर्थंकरना वखतमां कोइ साधु साधवी निमित्ते कोइ गृहस्थे भात पाणी, औषध, भैषज्य, वस्त्रपात्रादि नीपजाव्यां होय ते जेना निमित्ते नीपजाव्यां छे, ते साधु साध्वीने लेवां कल्पे नहीं पण वीजा साधु साध्वीने कल्पे, तेमने आधाकर्मी दोष न लागे, अने पेहेला छेल्ला तीर्थे एक साधु साध्वी निमित्ते जे आधाकर्मी आहारादि नीपजाव्युं छे ते साधु साध्वी समुदायने लेवो कल्पे नहीं ए उद्देशिक कल्प कह्यो.

हवे त्रीजो सज्झयातर पिंमनो कल्प ते–जे उपाश्रयादि मकानमां साधु साध्वी उतरे, तेमां रहे तेनो जे मालिक होय तेने सज्झयातरी कहीए तेना घरनो वस्त्र पात्र

आहारादि चोवीसे तीर्थंकरना साधु साध्वीने लेवा कल्पे नहीं ए सज्झयातरीक कल्प कह्यो.

हवे चोथो राज्यपिंड कल्प ते राजाना घरनो आहारादि लेवो बावीश तीर्थंकरना साधु साध्वीने कल्पे.प्रथमना अने छेल्ला तीर्थे लेवो न कल्पे ए राजपिंड कल्प कह्यो. हवे पांचमो कृतिकर्म कल्प ते वांदवुं त्यां श्री जैन शासनने विषे पुरुष प्रधान धर्म प्रवर्त्ते छे ते कारणे साध्वी सो वर्षनी दीक्षित होय तोपण एक दिवसना दिक्षित साधुने वांदे ए पांचमो कल्प कह्यो. हवे छठ्ठो व्रत कल्प ते बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वी दीक्षा अवसरे चार महाव्रत उच्चरे एटले स्त्रीने परिग्रहमां गणीए त्यारे चोथुं पांचमुं ए बेनुं एकज थाय ते अपेक्षाए चार महाव्रतधारी कह्या अने पेहेला छेल्ला तीर्थे स्त्री जूदी अने परिग्रह जूदो एम चोथा व्रतमां स्त्रीनो त्याग अने पांचमा व्रतमां परिग्रहनो त्याग ए अपेक्षाए पांच महाव्रत उच्चरे. वळी पेहेला छेल्ला तीर्थे छठुं रात्रीभोजनव्रत मूळगुणमां गणाय छे अने बावीश तीर्थंकरना साधु साध्वीने उत्तरगुणमां गणाय छे ए छठ्ठो कल्प कह्यो.

हवे सातमो ज्येष्ट कल्प ते पेहेला छेल्ला तीर्थे वडी दिक्षाना दिवसथी नाना मोटापणुं गणायछे. अने बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वीने दिक्षाना दिवसथी नाना मोटा पणुं गणाय छे तेमां पितापुत्र राजा प्रधान मा. दीकरी मोटाभाइ नानाभाइ इत्यादि साथे दिक्षा लेवे तो लोक रीते पिता मोटा अने पुत्र नाना, राजा मोटा अने प्रधान

नाना, माता मोटां अने दीकरी नानां एम गणाय छे ए सातमो कल्प कह्यो.

हवे आठमो प्रतिक्रमण कल्प ते वावीस तीर्थंकरना साधु साध्वी जे अवसरे पोताने पाप लाग्युं अतिचार लाग्या जाणे तेज वखते देवसि अने राइ ए बे प्रतिक्रमण करे, नहीं तो न करे, अने पेहेला छेल्ला तीर्थे साधु साध्वी निरंतर प्रभाते राइ अने संध्याए देवसी अर्द्धमासे पाक्षिक. चारमासे चउमासि अने वार मासे संवत्सरि एम पांच प्रतिक्रमण करे ए आठमो कल्प कह्यो.

हवे नवमो मास कल्प ते वावीस तीर्थंकरना साधु साध्वीने मास मास प्रत्ये विहार करवानो नियम नथी. ज्यां लाभ देखे त्यां घणा काळ पर्यंत एक क्षेत्रे रहे अने पेहेला छेल्ला तीर्थना साधु साध्वी तो वर्षाकाले चार मास रहे वाकी एक मास रहे एटले आठ मासना आठ अने चोमासानो एक एम एक संवत्सरमां नव कल्पी विहार करे ए नवमो कल्प कह्यो.

हवे दशमो पर्यूषण कल्प ते संवत्सरी संबंधीना पांच वानां अवश्य करवां ते कहे छे. संवत्सरी प्रतिक्रमण करवुं ॥ १ ॥ केशनो लोच करवो ॥२॥ अट्टमनो तप करवो ॥३॥ तथा ज्यां रह्या होय ते नगरमां चैत्य प्रवाडी करवी ॥४॥ सर्व संघमां मांहो मांहे खमत खामणां करवां ॥५॥ इत्यादि ज्ञात्र जाणवो ए दशमो कल्प कह्यो.

हवे ज्ञान व्यवहार कहे छे ज्ञान कहेतां आत्मज्ञान

योगे साधुपद छे. कह्युं छेः— उत्तराध्ययन सूत्रे.

नाणेणय मुणि होदि न मुणि वन्न वासेण ॥

अर्थः—जे ज्ञानी तेज मुनि तेमने साधु कहीए पण ज्ञानना अभावे वनवासमां रहेतां अने क्रिया करतां पण मुनिपद नथी. एम कह्युं. वळी कह्युं छे, आनंदघनजी कृत चोवीसीमां बारमा वासुपुज्य स्वामीना स्तवनमां.

आतमज्ञानी श्रमण कहावे, बीजा तो द्रव्य लिंगीरे॥

जेणे आत्माने जाण्यो ओळख्यो तेज ज्ञानी अने तेज साधु ते विना जे बीजा तेमने द्रव्यलिंगी कहेतां वेष धारी कहीए. पण साधु न कहीए साधु तो ए छे के जेणे आत्माने कायाथी जूदो जाण्यो छे अनुभव्योछे जड सत्ता चेतन सत्ता जूदी जूदी जाणी छे ते छे. अहीं कोइ कहेशे के तमे आत्माने जाणे तेने ज्ञानी कहो छो तो शुं? व्याकरण प्रमुख भणेला सूत्र सिद्धांत वांचे अर्थ करे श्रोताने समजावे ते ज्ञानी नहीं? तेनो उत्तर श्री ठाणांग सूत्रे पेहेले ठाणे कह्युं छे,—

एगजाणे सव्वं जाणइ,एग न जाणे सव्वं न जाणइ॥

वळी आचारांग सूत्रे—

एगंजाणइसे सव्वं जाणइ.जे सव्वंजाणइसेएगंजाणइ

अर्थः—एक पोताना आत्माने जेणे जाण्यो छेः ओळख्यो छे अनुभवे करी दृष्टि प्रत्यक्ष कर्यो छे. ते पुरुषने समस्त जाण कह्यो. हवे कंइ पण जाणवानुं अधुरुं नथी. ए

पहेला पदनो अर्थ—हवे बीजा पदनो अर्थ कहे छे जीवना पांचसें ने त्रेसठ भेद, अजीवना पांचसेनेसाठ भेद इत्यादि जाणे ते गणितानुयोग, ज्ञाता सूत्र आदि धर्मकथानुयोग, व्यवहार चारित्र क्रिया ते चरणकरणानुयोग, धर्मास्ति-कायादि पांच अजीव ते द्रव्यानुयोग द्वीप समुद्र नरक देवलोक क्षेत्र समास इत्यादि अनेक वातो जाणे छे पंडित नाम धरावे छे पण सिद्धनो साधर्मी पोतीको आत्मा निरं-जन निराकार छे तेने कायाथी जूदो अनुभव्यो नथी त्यां सुधी " सव्वंनजाणइ " के० कांइ जाणतो नथी एम कह्युं एटले अज्ञानी कही बोलाव्यो

ए ठाणांगजीना पाठनो अर्थ कह्यो. हवे आचारांग-जीना पाठनो अर्थ कहे छे जे पुरुषे एक पोताना आत्माने जाण्यो छे तेणे समस्त जाण्युं ए पेहेला पदनो अर्थ कह्यो हवे जे पुरुषे आत्मानुं मूळ स्वरुप जाण्युं छे, ज्ञान दर्शन चारित्र तप वीर्य उपयोग इत्यादि अनंतागुण, अरूपी, अमूर्त्ति, अटळ अवगाहना, अव्यावाध इत्यादि अनंता पर्याय. अस्ति नास्ति नित्यानित्य, एक अनेक, सत्यअसत्य, व्यक्त अव्यक्त भेद अभेद भव्य अभव्य इत्यादि अनंता स्वभाव तेस्याद्वादपक्षमयी अनुभव्यो छे आत्मा जेणे वळी निज द्रव्यार्थीक पर्यायार्थीकनुं ज्ञान छे जेने वळी न्यांये करी, निक्षेपे करी, प्रमाणे करी सप्तभंगी, षट्कारक, सामान्य विशेष इत्यादि पोताना आत्मानुं विस्तार ज्ञान छे जेने तेने सव्वं जाणइ के० सर्व जाण कहीए वली तेनेज एक

पोताना आत्मानो जाण पण कहीए एम सूत्रमां परमात्मानुं तथा गणधर महाराजानुं वचन छे. तेने विचारी जुओ. एटले ज्ञानीनी ओळखाण थशे. ते ज्ञानीने साधु केहेवा. वळी कह्युं छे अध्यात्मसार ग्रंथे पंदरमा योगाधिकारे,—

पाप करण मात्राद्धि न मौनं विचिकित्स्या ॥
अनन्य परमात्मास्यात्ज्ञान योगी भवेन्मुनिः॥३६॥

अर्थः—हिंसा, मृषा, चोरी, मैथुन, परिग्रह, रात्रिभोजन ए छए पापरूप छे. वळी आश्रव बंधनुं कारण छे एम जाणी विरति करीए एटले तजीए. पण पोताना आत्माने जाण्यो नथी त्यां सुधी "न मौनं विचिकित्स्या" कहेतां ए मुनि नथी. मुनिपद तो एथी जुदुंछे, "अनन्य परमात्मास्यात्" कहेतां कथंचित् एटले कर्मोपाधिनी अपेक्षा न करीए तो पोतीको आत्मा तेज परमात्मा छे. ज्ञानयोगी के० तेने जे जाणे अनुभवे ते ज्ञानी ज्ञानयोगी स्वस्वरूप खेल खेले स्वस्वरूपमां उपयोगे रमे तेने भावेन्मुनि केहेतां मुनि कहीए. वळी कह्युं छे समाधि शतके,—

दुहो—केवल आतम बोधहै। परमारथ शिव पंथ॥
तामें जिनकुं मगनता। सोइ भाव निगरंथ२

अर्थः—केवळ कहेतां एक आत्म वोध जे आत्मज्ञान छे तेज परमार्थ कहेतां उत्कृष्ट अर्थ जे निज स्वरूप प्रत्यक्ष अनुभवज्ञान ते शिव कहेतां ज्यां उपद्रव नथी, विघ्नकर्त्ता

नथी एवो मुक्तिनो मार्ग कहीए. तामें कहेतां ते मुक्तिना मार्गमां जिनकुं के० जे पुरुषने मग्नता कहेतां आनंदता छे, सोइ के० तेमने भाव निर्ग्रंथ कहेतां भाव साधु कहीए. एम घणा शास्त्रोनो भाव जोतां आत्मज्ञानी तेज साधु छे. इहां मति बोल्यो ज्यां कल्प व्यवहार छे ते साधु नहीं तेनो उत्तर–कह्युं छे. भगवति सूत्रे प्रथम शतके बीजे उ०

असंज्य भविय दव्व देवाण जहन्नेणं भवणवासीसुं उक्कोसेणं उवरिम गेविज्जेसुं ॥

अर्थः–जे पुरुषो समकित पाम्या नथी अने व्यवहार चारित्र ग्रहण कर्युं छे. तेमने असंयति कह्या छे, तेमनी गति जघन्यथी भवनपति अने उत्कृष्टी नवमा ग्रैवेयके कही छे. पण संयति कह्या नथी. माटे आत्मज्ञानी छे. तेमनेज संयति कहीओ. अहीं कोइ कहेशे के एम जोतां तो कल्प व्यवहार वगर खपनो ठर्यो. तेनो उत्तर–हे भाइ! विण खपनो होत तो शुं करवा प्ररुपत? पण जे पुरुषोये आत्मा ने जाण्यो ओळख्यो नथी ते मिथ्यादृष्टि छे, समकित पाम्या नथी अने व्यवहार क्रिया करे छे. तेमां धर्म माने छे. वळी परंपराए मुक्ति माने छे. पण धर्मतो आत्मामां रह्यो छे, ते आत्माने ओळख्यां पामीओ. एम जाणता नथी.ते पुरुषोने कल्प व्यवहारथी प्रायें आत्महित नथी पण जे ज्ञानी पुरुषो छे. तेमने तो निमित्त कारणरुप कल्प व्यवहार खपनो छे. ए ज्ञान व्यवहार कह्यो. इहां कोइ कहेशे जे आत्मज्ञानतो निश्चयमां छे तेने व्यवहार

केम कह्यो छे ? तेनो उत्तर छे भाइ आत्मज्ञान आव्यां समकित पामीए चारित्र पामीए उपयोगे अनुभव पामीए. संवर निर्जरा पामीए, अप्रमत्तादि गुणठाणे चढीए; श्रेणी मांडीए रागद्वेष मोह रहित थइए. केवळज्ञान केवळदर्शन, आदें क्षायकलब्धि पामीए योगातित जे सिद्ध तद्रूप थइए इत्यादि साधनदशा आत्मज्ञानमां छे त्यां सुधी व्यवहार कहीए. साधननी पूर्णताए निश्चय कहीए. ए ज्ञान व्यवहार कह्यो. अहींआं व्यवहारनो अधिकार संपूर्ण थयो.

हवे भवाभिनंदी जीवनां लक्षण कहे छे.

कह्यो छे श्री हरिभद्रसूरी पूज्ये

॥ श्लोकः ॥

क्षुद्रो लोभरतिर्दीनो, ॥ मत्सरी भयवान शठः ॥
अज्ञो भवाभिनंदी च, ॥ निष्फलारंभ साधकः ॥१॥

अर्थः—प्रथम क्षुद्रो शब्द छे ते सामान्य वाची छे, तेना अर्थना घणा भेद थाय छे, ते कारणे इहां अमे क्षुद्रो शब्दना चार भेद करीए छीए; क्षुद्रो अंगभिर (१) क्षुद्रो कृपण, (२) क्षुद्रो तुच्छ, (३) क्षुद्रोक्रूर, (४) लोभ, कहेतां लोभ, (५) रति कहेतां विषय ते रति, (६) दीनो कहेतां दीन, (७) मत्सरी कहेतां मत्सर, (८) भयवान कहेतां भय भ्रांत, (९) शठ कहेतां कपट, (१०) अज्ञो कहेतां अज्ञानी मिथ्यात्वी, (११) ए अगीयार लक्षणे सहित होय तेने भवाभिनंदी कहीए; हवे ए बोलो कह्या तेनुं विवेचन करे

छे, प्रथम लक्षण, अगंभिर, एटले अंतर्गत गुणना अभावे पारकां छिद्र खोळतो फरे. कदाच सामामां किंचित् दूषण होय तो तेने मोटुं करीने देखाडे, वळी दूषण न होय तो द्वेष बुद्धिए अछता दूषणनो आरोप मुके, वळी पोताना अवगुणने ढांके, अने पोतामां नही गुण छतां गुणीपणानो मरोड राखे, गर्व करे, वडेरानो विनय न साचवे, अविनय करे, तेने भवाभिनंदी कहीए. (१)

हवे वीजुं लक्षण, कृपण, एटले छती वस्तुए पोते वापरे नही, भोगवे नही, दीन दुःखीयांने अनूकंपा बुद्धिए अने सुपात्र जे अतिथी मुनि तेमने भक्तिए करीने दान आपे नही, एक धननोज संचय मूर्छीत थको करे. भूमीमां दाटे, ए जीवो अंते मरीने भवांतरे, एज धननी मूर्च्छाए, सर्पनो, वा नोळीयानो, उंदरनो, कुतरानो, गीरोळीनो इत्यादिनो भव पामी पूर्व भवनी संज्ञाए ए धन जीहां दाटेलुं गुप्त होय, तेना उपर फर्या करे. तीहांने तीहांज रहे, एटले जे कृपण होय ते वहुधा मूर्च्छीत होय; तेने भवांतरे एम तिर्यंचनी गति प्राप्त थाय, तेनुं कारण कृपणता तेने भवाभिनंदी कहीए. (२) हवे त्रीजुं लक्षण तुच्छ एटले अल्पमती बुद्धि छे जेनी एवो, सारांशनो अग्राहक, देशविरति अथवा, सर्व विरति थइने धर्मकरणी करे, तेनो विवरो एम छे के, आ भव आश्रीने मिष्ट भोजनना अर्थें वस्त्र पात्रादि अर्थें पुजावा मनावा वहुमान पामवा अर्थें यश कीर्ति अर्थें, वली रोग व्याधि प्रगट थयो

तेनी शांन्ति थशे, एवी बुद्धिए जे तप, जप, क्रिया करे. वली लोचादि कष्ट सहे तेनुं नाम विषयानुष्टान छे,अने परजव आश्रीने देवेंद्र, नरेंद्रादि पद अने ते पदनी ऐश्वर्यादिक, पुद्गलिक, ऋद्धिनी ठकुराइ तेनुं इंद्रिनोइंद्रिजनित जे विषय सुख पुन्यना उदयथी पामीए, तेनी आसंसाए जे तप, व्रत कष्ट क्रिया करे छे, दुःख सहे छे ते गरलानुष्टान छे अने प्रणिध्यानादिकने अन्नावे साध्य शून्य दृष्टिए सापेक्षता विना देखादेखीए शून्य मने समूर्छिमनीपरे क्रिया करे, ते अन्योन्यानुष्टान छे. ए करणी आश्रीने कह्युं. हवे उपदेश आश्रीने कहे छे. एटले प्ररुपणा करे के मुनीए अणसण आदे तप कर्यो, तेथी देवलोकादि ऋद्धि पाम्या, वळी अमुक श्रावके पडिमा प्रमुख वही तेथी पाम्या, माटे तमे पण करशो तो पामशो, एम लालच आपी आशा वळगाडी, अंध परंपराने धंधे उपर कह्या त्रण अनुष्टान ते रीते प्रवृत्ति करावे पण पहेली ते विरति के पहेलुं ते बोधिबीज? एटले तत्वना बोधनी प्राप्तिनो हेतु जे उपदेश ते वस्तुगते वस्तुपणानी प्ररुपणा ते न करे, वळी देवगुरुने धर्म ए त्रण तत्वनी यथास्थित उंलखाण करावी, व्यवहार समकितनी श्रद्धा पूर्वक प्राप्ति पण न करावे अने मिथ्यात्वी थका विरतिपणानी परंपरामां घाले. वली एम पण उपदेश न करे के जे पर आशंसा दूषण टालीने निराशी जावे धर्म करशे, तेज समकितादि गुण प्रगट करवानो, वळी पून्यानुबंधी पुन्य उपार्जवानो लाज्ञ पामशे. पूर्वे पण जेणे आ-

शंसा दूषणे वर्जीत थइने निराशी भावे धर्म कर्यो छे ते पाम्या छे. आशंसाए करतां तो पुन्य मागतां पाप आवे अने देवलोक मागतां नर्क तिर्यंचनी गति मले, वली धर्मध्यान करतां आर्त्तध्यान थाय. वळी महोपाध्याय यशोविजयजी जसविलासमां कहे छे के जे क्रिया करे छे अने तेना फळनी ममता धरे छे, तेना गळामां फांसी आइ कहेतां आवी परी, ते वचननो विचार, "जैन कहो क्युं होवे," ए पदथी करी लेजो अने पुद्गलीक विनाशिक सुखनी आशाने छेदी, ज्ञानघटमां लावी निजपर भिन्नता करवी, निजगुण रागी थवुं; वळी उपर त्रण अनुष्टान गवेख्यां तेने तजवां, अने तद्हेतु अने अमृत ए वे अनुष्टाननो आदर करवो, एज उचित छे. एम दीर्घदृष्टिए सारांशने न चिंतवे, अने तुच्छ दृष्टिए संसारीक सुखने इच्छतो वर्त्ते तेने भवाभिनंदी कहीए. (३) हवे चोथुं लक्षण क्रूर एटले महा दुष्ट भयंकर, माठा अध्यवसायवाळो, अती संक्लिष्ट, निध्वंस परिणामी आर्त्त, रौद्र, ध्याननो ध्याता, रुडा भूंडा संजोगीक भावे संबंध मिल्या तेमां रुडा मनोज्ञ (मनने गमता) एवा पदार्थनो सदा संजोगचिंतवे,वळी भुंडाअमनोज्ञ(अणगमता) पदार्थनो विजोग चिंतवे, मनोज्ञ संयोग संबंधमां तल्लालीन थइ आसक्त थको वर्ते अने ते मनोज्ञ संबंधनी हाणी थवाथी, आक्रंद करे, उंचे स्वरे रुदन करे, घणो उद्वेग पामे, नाम देइने रुवे, छाती कुटे, माथाना केस तोडे, वळी

आवता कालनी चिंता एटले हवे हुं शुं करीश, मारो निर्वाह केम चालशे, हुं शुं खाइश, निर्धन थइ गयो, दारिद्र अवस्था आवी, अथवा हुं निराश थइ गयो, मारे कोइनो आधार नथी, मारुं रखोपूं कोण करशे, मने शाता अशातानी खबर कोण पुछशे, अशातानी वखते रोगादि कारणे, मारी पासे, बेशीने पाणी कोण पाशे, खावा कोण आपशे, मारी आसनावासना कोण करशे, अथवा आ कुमाणसनो समागम मारे छे ते क्यारे टळशे, मारो ने एनो बुटकबारो क्यारे थशे, वळी आ मारी रोग व्याधि अथवा दारिद्र अवस्था क्यारे टळशे, इत्यादि विचार एकत्व परिणामरूप करवो ते. आर्त्तध्यान छे, वळी संयतिपदे नियाणुं करवुं ते पण आर्त्तध्यानमां छे. हवे रौद्रध्यान ते जीवनी हिंसा एटले जीवना द्रव्यभाव, प्राणनो घात करे, विटंबना करे अने खुशीपणुं माने, राजी थाय, वली हिंसक जीवोनां वखाण करे, तेना वळनी प्रशंसा, अनुमोदना करे, वळी जूठुं बोले, कपट केळवे अने मनमां खुशी थाय, के मारा जूठपणानी कोइने खबर पडती नथी, हुं केवो हुंशीयार छुं, वळी एकनी चाडी बीजाने करे, खोटा वादविवाद, झगडा करतो करावतो फरे, पारकी निंदा करे, चोरी करे, ठगाइ करे गांठ वाळेली वस्तु छोडी ले अने मनमां खुशी थाय, वळी चिंतवे के हुं केवो जोरावर छुं ते पारको माल खाउं छुं, मुज सरखो कोण छे, वली नव प्रकारनो परिग्रह धन, क्षेत्र खळुं, घर, दुकान, पुत्र, कलत्र, जानवर, गाय, भेंस,

वळद, हाथी, घोमा आदे चौपगां इत्यादि परिग्रह वधारवानी घणी इच्छा राखे, वळी धन्यादि वस्तु जूमीने विषे दाटे अने विचारे के कोइए दीठुं तो नही होय. वळी लेणांदेणां करे अने विचारे के आपशे के नही आपे, एम परिग्रहनुं रक्षण करवामां जेणे मन परोव्युं छे, ते रौद्रध्याननो ध्याता छे. वळी संयति नाम धरावी जे मूळ गुणथी हीण होय एटले परिग्रह गुप्तपणे राखे, वली दोरा, धागा करे, वैदकपणुं करे, अनेक जेदे वनस्पतिनां मूळ कढावे, वळी जठी घाली मात्राओ मारी अती हिंसक थाय, वली संसारीपणानां पोतानां सगां संबंधीनी चिंता करे. अविरतिपणे काम जोग करेला, विषय सेवेला तेने रुचिए संजारे, इत्यादि आर्त्तध्यान, रौद्रध्याननो ध्याता जे क्रूर तेने अशुज कहीए. ते क्रूरपणो पोतानो टाळी उपशम, क्षयउपशमजावे शांत थइ धर्मध्याननो ध्याता शुज प्रवृत्तिए न थाय अने उपर कही तेम अशुज प्रवृत्तिए, वर्त्ते तेने जवाजिनंदी कहीए. (४) हवे पांचमुं लक्षण लोज ते जेम जेम वस्तुनी प्राप्ति थाय, तेम तेम लोज वधतो जाय; तृष्णा न छीपे, दृष्टांत. जेम अग्नि बलती होय तेमां काष्टनो पुरती करीए, तेथी अग्नि वृद्धि पामे, पण शान्ति न थाय, ए दृष्टांत पूर्वक जेम जेम वस्तु मीले तेम तेम तृष्णा दिस थाय, अने अपूर्णता नजरे आवे, तेना उपर आठमा सुजूम चक्रवर्तिनी कथा कहे छे. आ अवसर्पिणी काले अढारमा, उगणीसमा तीर्थंकरने आंतरे सुजूम चक्रवर्ति

थया, ते पोतानी मातानी कुखने विषे गर्भपणे हता ते अवसरे परसुरामे पोताना बळे सुभूमना कृतवीर्य राजाने संग्राममां, जाज्वल्यमान, परसु लेइने हण्या अने तेमना राज्यपर पोते बेठो; कारण के राज्य तो पराक्रमने स्वाधीन छे एवी रीते परसुरामे, हस्तिनापुरनगरने दबाववाथी कृतवीर्य राजानी गर्भिणी स्त्री वाघवाळा वनमांथी जेम हरणी नाशी जाय तेम नाशीने एकाकीपणे अरण्यमां भ्रमतां भ्रमतां तापसोना आश्रममां गइ त्यां तपस्वीओए निधाननी पेठे तेणीने क्रूर परसुरामथी बचाववा माटे भोंयरामां राखी. तेणीने चौद महास्वप्नोथी सूचितपुत्र गर्भस्थितिनी पूर्णताये थयो अने भोंयरामां रहेतां मोटा पण थया. माताये भोंयरामां जन्मवाथी पुत्रनुं सुभूम नाम पाड्युं; पछी ज्यां ज्यां क्षत्रिय पुत्र हतो त्यां त्यां देहधारी कोपाग्नि सरखो, परसुरामनो कुठार पहोंची वळ्यो अर्थात् सघळा क्षत्रियोने तेणे मारी नाख्यापछी एक दहाडो ते परसुराम, आ तापसोना आश्रममां गयो त्यारे त्यां तेनो परसु(कुहाडो) जाज्वल्यमान थयो थको, धुवाडो जेम अग्निने सूचवे तेम क्षत्रियने सूचववा लाग्यो, त्यारे तेणे तपस्वियोने पूछ्युं के शुं अहीं कोइ क्षत्रिय छे त्यारे तेओ कहेवा लाग्या के तापस थएला अमो क्षत्रिय छीये पछी दावानल जेम पर्वतना तटने तृण रहित करे तेम ते परसुरामे सातवार पृथ्वीने क्षत्रिय रहित करी एवी रीते मारी नाखेला क्षत्रियोनी दाढोथी परसुरामे एक आखो थाल भर्यो. पछी ते परसुरामे एक दहाडो निमी-

त्तिआउने वोलावी पूछ्युं के मारुं मृत्यु कोनाथी थशे का-रणके घणा साथे वैर करनाराउने परथी पोतानुं मृत्यु थवानी शंका होय छे त्यारे तेउंए कह्युं के जे माणस सिं-हासनपर वेसीने दुधपाकरुप थएली आ दाढोने पी जशे ते माणसथी तारुं मृत्यु थशे, ते सांजली परसुरामे एक दानशाळा मंकावी तथा त्यां अगाकीमां सिंहासन राखी तेपर ते दाढोनो थाल रखाव्यो, हवे ते सुजूम पण आं-गणामां रहेला वृक्षनी पेठे हमेशां ऋषियोथी लालनपालन करातो थको वृद्धि पामवा लाग्यो हवे एक दहाको कुवाना देककानी पेठे वीजी जगोए नही जनार एवा, ते सुजूमे पोतानी माताने पूछ्युं के शुं आ आवकीज पृथ्वी छे? के कंइ अधिक छे त्यारे तेनी माताये कह्युं के हे वत्स! पृथ्वी तो अनंती छे आ आश्रम तो तेमां एक मां-खीना पग जेटलो छे. वली आ पृथ्वीमां हस्तिनापुर नामे एक प्रख्यात नगर छे त्यां कृतवीर्य नामे महा वलवान् तारो पिता राजा हतो ते तारा पिताने परसुरामे मारीने पोते राज्यपर वेठो छे वली तेणें तमाम पृथ्वी क्षत्रिय विनानी करी छे, अने तेना जयथी आपणे अहीं रहीयें छीये ते सांजली तत्काल क्रोधातुर थइने सुजूम हस्तिना-पुर गयो कारण के क्षत्रिय तेज दुर्द्धर होय छे त्यां एकदम ते दानशाळामां गयो अने त्यां रहेला सिंहासनपर चकीने दूधपाकरुप थएली ते दाढोने ते खाइ गयो, त्यारे ब्राह्म-णोआ रक्षको युद्ध करवा माटे उव्या त्यां सुजूमे मेघ

सरखा नादवालो वाघ जेम हरिणने मारे तेम तेउने मार्या ते सांजली परसुराम पण गुस्से थइने जाणे कालना पासथी खेंचायो होय नहीं तेम त्यां आवी लाग्यो अने तेणे सुजूम उपर पोतानी परसु मुकी, पण अग्निनो तणखो जेम पाणीमां नष्ट थाय तेम ते परसु नष्ट थयो ते वखते सुजूमे पण पोता पासे हथियार न होवाथी ते दाढोवालो थाल उपाड्यो अने ते थाल तुर्तज चक्ररुपे थयो कारण के पुण्य संपदाथी शुं नथी थतुं? एवी रीते ते आठमा चक्रीये ते चक्रथी परसुरामनुं मस्तक, कमलनी पेठे छेदी नाख्युं जेम परसुरामे सातवार पृथ्वी क्षत्रिय रहित करी हती, तेम आ सुजूमे एकवीसवार पृथ्वी ब्राह्मण विनानी करी तथा पाछलथी तेणे छ खंड पृथ्वी साधी. वली वैताढ्यनी गुफाओ खोली अने जरतना उत्तर खंडमां दाखल थइ म्लेछोने तेणे जीत्या एवी रीते चारे दिशामां जमीने घंटी जेम चणाने पीसे तेम तेणे सुजटो मारीने पृथ्विने जीती छ खंडनुं राज्य मेलव्युं चौद रत्न नव निधान पचवीस हजार देवो सेवामां इत्यादि चक्रवर्तीपणानी ऋद्धिये पूर्ण थतां, पण लोजनी दसा तेनी अटकी नहीं, अपूर्णताज नजरे आवी. ते चिंतवे छे के मारा जेवा तो जरत आदे चक्रवर्तिउ पूर्वे घणा थया तेमां हुं पण एक वधारे. एमनाथी मारी कंइ अधिकता कहेवाय नहीं पछी लोको मोटाइ न बोले, मारी मोटाइ तो क्यारे थाय के बीजा धातकिना छ खंड साधु त्यारे जगतमां मारो यश विस्तरे, एटले मारा जेवो कोइ पूर्वे थयो नथी अने वली

थशे पण नहि; अने दुनिया महा चक्री कहीने बोले, त्यारे मारी मोटप कहेवाय, वळी मारी आज्ञा कोण न माने, जीहां जाउ तीहां हुं एकलोज पृथ्वीने ऊंधी करी नाखुं; वळी मोटा पहाड पर्वतने एक हाथे उपाडीने फेंकी देउं. नुजा बळे समुद्र तरी पेली पार (सामा कांठे) नीकलुं. एटलुं तो मारी नुजामां वळ छे, एम अठ्ठावीस धनुष्यनी कायावाळो पोताना बळ पराक्रमनी अधिकता जोइने मदोन्मत थयो थको लोन्नरूपीआ सागरमा तणातो थको ऋद्धिनी अपूर्णता न्नावतो थको जगतने तरणा प्राय गणतो थको बीजा छ खंडमां, जइ चक्र प्रवर्त्तावी आज्ञा मनावुं एम निश्चे पोताना मन साथे ठराव कर्यो, चौरासी लाख हाथी, चौरासी लाख घोडा, चौरासी लाख रथ, छन्नुं क्रोड पायदळ, एक लाखने बाणुं हजार अंतेउरी, सेनापति, प्रधान, आदे चउद रत्न, नव निधान, इत्यादि ऋद्धिए युक्त थको पोते प्रयाण करे छे. ऋद्धि गवेखी ते सर्वे चरमरत्न वहाणमां न्नरीने पोते बेठो वहाण लवण समुद्रना मार्गे अनुकुळ पवनयोगे वेगे चाल्युं जाय छे, ए वहाणना रखोपामां पचीस हजार तो देवो वहाणना उपाडनार छे, पुन्य खवाइ गयुं, ए चक्रीनुं साठ हजार वरसनुं आयुष्य हतुं, तेनो अंत (छेडो) आव्यो, देवो चिंतवे छे के हुं एक नहीं उपाडु तो बीजा घणाए छे, एम सौनो साथे मनोरथ थयो, सर्व देवोए मेली दीधुं वहाण समुद्रमां डुब्युं अने सर्व ऋद्धिनो नाश थइ गयो, शु-

जूम मरीने सातमी नरके गयो, एम लोजनी नरनो लोजरूप खाडो सदा अपूर्ण छे, एम जाणी लोजदशाने धिक्कारी निर्लोजी थइ जेम कपील ब्राह्मण केवळी थया, एम निर्लोजताने न ग्रहे; अने लोज सागरमां डुबी सागर जळ पीतां पण तृषा न जाजे, तेने जवाजिनंदी कहीए. (५)

हवे छठ्ठं लक्षण रति एटले शातावेदनीना हेतु ते पांच इंद्रीना अनुकुळ विषय, शब्द, रूप, गंध, रस अने स्पर्श; शब्द ते श्रोत इंद्रि, जे कान तेनो विषय एटले रागरागणी, सुस्वरनो जोगी, वळी नरघा, शरणाइ, ताल, तंबुरा इत्यादि वार्जीत्रना शब्दनो जोगी, रूप (वर्ण) ते रातो, धोळो, लीलो, पीळो अने श्याम, ए पांच वर्ण वळी संस्थानादि लिंग आकार चेष्टा ए चक्षुनो विषय जाणवो. वळी गंध ते, सुरजी आदि नाकनो विषय, तेल फुलेल चंपो, केवडो, मोगरो, गुलाब, इत्यादि तेनो जोगी. रस ते करूवो कषायलो, तीखो, खाटो, अने मधुरो ए पांच रस तेनो जोगी. रसना एटले जीव्हा जाणवी. वळी स्पर्श ते, शीत, उष्ण, सुंवाळो, बरसट, स्निग्ध, रुक्ष, हळवो अने जारे ए आठ स्पर्श जोगी ते स्पर्श इंद्रि एटले काया. वळी वेदचीन्ह, स्त्री, पुरुष अने नपुंषक, ए वेदना जोग विषयनो सकामी तेमांज आशक्त एम पांच इंद्रिना विषय जोगमां जे, रति विश्रामनो कर्त्ता वळी हुं ने मारुं एटले हुं ते कायाएज जीव छुं एम जाणे पण जीव कायाथी जूदाइ न जाणे; वळी धन दोलत, राजऋद्धि सज्जन कुंटुंब ए मारुं

एम मानतो थको, तेना संगे कलह करतो थको ऋद्धिनी मोटपमां गर्वीत थको, जे क्लेशानंदी, विषयानंदी तेने ज्ञवाज्निनंदी कहीए. (६)

हवे सातमुं लक्षण दीन एटले कंगाल, ते कंगाल शा माटे थाय तो मोहनी प्रवळताए, विकल्प घणा उठे, परंतु पापोदय जोगे पुरा न थाय, वळी किंचित् प्राप्ति होय तेनी हानि थाय. ते कारणे दीनपणुं ज्ञावे, वळी रोगादि कारणे, पोताने अशाता प्रगटे तेथी दीनताने ज्ञावे; पण एम न चिंतवे के ए वस्तुनी प्राप्ति तो पुन्य जोगे होय. वळी निरोगतापणुं ते शातावेदनीना उदयथी होय, ते पुन्य खवाइ गयुं अने पापनो उदय वर्ते बे, तेमां तुं दिलगीरी शा माटे करे बे, पूर्वे उपार्जेलुं ते उदयिक ज्ञावे प्राप्त थयुं बे तेने समता ज्ञावे सहन करवुं एज ज्ञानीनुं लक्षण बे; एम साहसीक थइने न चिंतवे अने दीनता करे तेने ज्ञवाज्निनंदी कहीए. (७)

हवे आठमुं लक्षण मत्सर एटले अपलक्षणनुं स्थानक, मस्ताइये करीने मस्तान थयेलो उन्मादे ज्ञरेलो, गुणवंत उपर द्वेषनो, इर्ष्यानो कर्त्ता, निर्गुणीनो पक्षी, वली अदेखाइए निर्गुणी थको अहं (हुं) गुणी बुं एम माने, वली परने दुःखी देखीने राजी थाय अने सुखी देखीने दाजे, अंतरमां वळे, एम मत्सर ज्ञावे वर्ते तेने ज्ञवाज्निनंदी कहीए; (८)

हवे नवमुं लक्षण ज्ञयज्रांत एटले परवस्तुने पोतानी

मानी छे जेणे तेनो सदाय काळ जयमा जाय; कारण के पर-वस्तुनो स्वजाव विनाशी छे अने ते पुन्यजोगे मळी प्राप्त थइ ते छतां पुन्ये स्थिर थइने रहे पण पापोदय जोगे तेनी हानी थाय, रखोपु करतां पण न रहे त्यारे पोतानी मान-वावाळा प्राणी उद्वेग पामे. संताप करे, दिलगीरी करे, पण एम न समजे के संजोगनी पाछळ विजोगनो जय रह्यो छे, सुखनी पाछळ दुःखनो जय रह्यो छे; आ संसार एज जयनुं कारण दुःखनुं कारण छे. माटे संसारी वस्तुथी विर-क्तता जावीए, ए उपाधि संजोगने पर मानीए एम न समजे अने रखोपुं करतां थकां आखो जव जयमांने ज-यमां कहाडे, तेहने जवाजिनंदी कहीए. (९)

हवे दशमुं लक्षण कपट एटले मुखशुं मीठा अने हृदये दुष्ट, मुखथी बोले ते जुदुं अने मनथी चिंतवे ते जुदुं, कायानी चेष्टा जुदी, एम कपट, फंद, माया एटले मच्छी लोको जळमां जाळ नाखे, तेथी पण आ कपटजाळ अती बुरी छे. कारण के एतो तिर्यंच, जळचर जीवो ज-ळमां विनोद, क्रिमा करता एवा तेम पशुने जाळमां फ-सावी दे छे, अने आ कपटी तो वगर जाळे, माह्या चतुर मनुष्यने वातनी वातमां फसावे छे, माटे अति बुरो, अवि-श्वासनुं स्थानक एवो कपटी तेने जवाजिनंदी कहीए. (१०)

हवे अगीयारमुं लक्षण अज्ञानी मिथ्यात्वी एटले निजपर बुद्धि जीहां सुधी थइ नथी अने निजंपरनो जेद जास्यो नथी, जमसत्ता, चेतनसत्ता, जुदी जुदी जांणी नथी

तीहां सुधी अज्ञानी कहेवो, हवे मिथ्यात्वपणुं गवेखे छे. हठ कदाग्रह अजाणपणे पकडयो तेने मेले नही. खरा-खोटानी परीक्षा नही, खोटु जाणीने खरु करवानो हठ ममत्व, जीन वचनमां शंका अने अजाणपणे विपरीत श्रद्धा, तेनुं नाम मिथ्यात्व छे.

सवैया तेवीसा.

मिथ्यात असत्य भेद पंच दाखुं,
खर पुछ पकडयुं नवी छोडे;
सत्य असत्यनो भेद न समजे,
सोनुं रुपुं एक भावमां जोडे,
खोटुं जाणीने खरुं करवा चाहे,
हठ ममत्वना पंथमां दोडे;
जीन वचने शंकाने अजाण ते,
आस्ता ज्ञान ए बेउ गुण तोडे. ॥१॥

सवैया एकतीसा.

विपरित एही श्रद्धा, दश समुदाय वधा,
एज छे मिथ्यात वेरी, रोळे भव चक्र मै;
अनंत परावर्तनो, मालीक ए मोह पुत्र,
घात करे सर्वथी ने, घाले काया देह मै;
मोह मदीराने पावे, चेतन जडता ध्यावे,
नाचे संसार गतीये, पडे पाप पंक मै;

आशा तो अधुरी सदा तृष्णा गीरे न कदा,
आ भव परभवनी न छूटे नंत कालमै. ॥२॥
कुदेव तेही देव माने कुगुरुने गुरु माने,
कुधर्म धर्म माने लोकिक मिथ्या भाव है.
देवने आशाए माने आशाए सेवे गुरुने,
धर्मनुं फळ मागे लोकोत्तर मिथ्यात्व है;
शुभाशुभ करणीनो अहंकृता निपेक्ष,
ईश्वरने कर्त्ता कहे द्रव्य मिथ्यात भाव है.
रागने द्वेष बेहु; परिणति अशुध्द कहुं,
अनादि विकार एही, भावथी मिथ्यात्व है. ॥३॥
मिथ्यात्व ठाणामां बांधे, मिथ्यात्व दूजे न बांधे,
कोडा कोडी सीत्तेर, सागर स्थिती कही है,
मिथ्यात्व उदेमां आवे, ठाण सातमु कहावे,
उपर उदे न होवे, समकित सही है;
मिथ्यात्व सत्ताए रेवे, एकादश ठाणे केवे,
सत्ता खुटे बारमें अमर पद सही है;
जनम मरण टळे अरिहंत ठाणे चले,
अनंत चतुषची मले सिध्द दूर नाहि है. ॥४॥

इहां कहेवानुं एटलुं छे के आतम प्रदेशे मिथ्यात्व मोहनीनी त्रण कर्म प्रकृतिनो अभाव थतां क्षायक सम-

कितनी प्राप्तिए सिद्ध गति दूर नथी, संसार गति भ्रमण चक्रनो मुख्य हेतु एक मिथ्यात्व छे. एम उपर कह्या प्रमाणे अगीयार बोले करीने सहित होय तेने भवाभिनंदी कहीए, वळी पुद्गलानंदी पण कहीए, ते पुरुष विधिपूर्वक शुभ क्रियानो प्रारंभ करे; ते पण निष्फल जाणवो, कार्यनो साधक थाय नहि. ११ इहां भवाभिनंदीनो अधिकार समाप्त थयो.

हवे निश्चय नयनी मुख्यताए, धर्मप्रवर्तन कहे छे. एटले निश्चयनयमां दृष्टि करवा योग्य (प्रवेश करवाने योग्य) कोण छे तो जे आत्मानंदी पुरुषोत्तम छे, तेज निश्चयनयमां दृष्टि करवा योग्य छे. हवे तेमनां लक्षण कहे छे, तेमां प्रथम लक्षण गंभिर होय, एटले हुं अल्प गुणवाळो छुं. एम घणा गुणे युक्त छे, तोपण पोतानी, ओछासने जोवावाला होय एटले जीहां सुधी क्षायक लब्धिनी पूर्णता निष्पन्न न थाय, तीहां सुधी पोतानी ओछास देखे एटले उपशम भाव, क्षय उपशम भावनी प्रगटताने न जुवे. प्रगटताने जोतां, महा पुरुषने पण मोह अंग आपे एटले खलना पामे छे. अने ओछासने जोतां, वृद्धि पामे तेनुं कारण ए छे के ओछासने जोवुं ए चारित्ररायने पोतानुं अंग छे, ते कारणे ओछासने जोतां निर्मोह वृत्ति थाय अने निर्मोह वृत्तिये गुण संपदा वृद्धि पामे. एम गुण रागी, गुणनां लोभी घणा गुणवंता पण मोटपनी झालके झलकाय नहीं तेमने आत्मानंदी कहीए. १

हवे बीजुं लक्षण अकृपण एटले उती वस्तुए कृपणता न करे. पोते भोगवे. वापरे दीन दुःखीआने, अनुकंपा बुद्धिए अने सुपात्र एवा अतिथि मुनिने भक्तिए करी दान आपे, वली अधिक शक्ति होय तो स्वामी वत्सल, प्रभावना आदे करे, पूजा भणावे, आंगी रचावे, जीन मंदिर करावे, जीन बिंब भरावे, उजमणुं करे, ज्ञान, पुस्तको लखावे, भणताने सहाय आपे, संघ कहाडे, जीर्णोद्धार ते जीर्ण जीनमंदिर समरावे, साधु, साध्वी, श्रावक, श्रावीका, ए चतुर्विध संघने धर्मकरणी करवा हेते उपासरा करावे, इत्यादि शुभ मार्गे मोकळा मने चित्त उत्साहे पैसानो व्यय करे, पण उते पैसे मूर्छित थको कृपणता न करे, तेम उंडी शक्तिए अभिमानी थको व्यय पण न करे, पापे पेदा करवुं अभिमाने व्यय करवो तेने प्रश्न व्याकरण दशमा अंगमां मंद मतिआ कह्या छे. माटे विवेक पोतानी शक्ति जोइने वापरे. ए गृहस्थीपणामां अकृपणता लक्षण कह्युं, हवे संयतिपदे जे क्षय उपशम भावनी लब्धिए धनाढय थयेला बहुश्रुत भावने पामेला तेमने पण भव्य जीव प्रत्ये उपदेश करवाना अवसरे अथवा समागम थये वस्तुगते वस्तुपणानो उपदेश, द्रव्यगुण पर्यायनी वली स्वभावनी उळखाण पूर्वक जड चेतननी विभाग व्हेंचण पूर्वक, हेय, ज्ञेय, उपादेय बुद्धिने पमाडवा हेते नय निक्षेप, पक्षप्रमाण इत्यादि विस्तार बुद्धिए हेतु दृष्टांत युक्तिए करीने, वचन भालो अने युक्ति कटार मारी अनादि मिथ्यात्वने छेदी

बोधिबीजनी प्राप्ति तद्रुप समकित ते अमुल्य रत्ननुं दान देवुं ते संयतिपदे उचित छे एम छती शक्तिए कृपणता न करे तेमने आत्मानंदी कहीए. (१)

हवे त्रीजुं लक्षण दीर्घ दृष्टिवंत एटले घणीज मोटी विस्तार बुद्धि छे जेमनी एवा परम सारांश जैन आज्ञा ग्राहक तद् हेतु एटले जे एक पोतीको आत्मा तेहीज साचो ज्ञानादि अनंता गुण अने अव्याबाधादि अनंता पर्याय मय साक्षात् परमात्मा सरखो शक्ति भावे अनादि सिद्ध छे. तेने व्यक्ति भावे प्रगट करवा अर्थे मोक्ष नीपजाववा माटे जे सहज समाधिए ध्यान करवुं रमण करवुं तेने तद्हेतु अनुष्टान कहीए. हवे अमृत ते मन वचन अने काया ए त्रिकरण योगनी ऐक्यता,हर्ष,उत्साह,प्रमोद सहित, निरामय साधन ए रीते स्थिर शंकादि चपळता रहित सिद्ध भगवानना स्वजाति स्वभाविक गुणे करी उपयोग प्रभु गुणे जोमीने एटले गुण गुणगत स्वभावे गुण गुण प्रत्ये भिन्न भिन्न उपयोग जोमी तन्मयपणे अनुभविने अभेद स्वरूपे परिणमावे त्यां कार्यनी पूर्णता पामे एटले कोइ देशथी पामे अने कोइ सर्वथी पामे, देशथी पामे ते चोथे गुणठाणे समकित पामे अने सर्वथी पामे ते तेरमे गुणठाणे अरिहंत पदे अनंत चतुष्टयी पामे एम कार्यनी साधकता नीपजे तेने अमृत अनुष्टान कहीए एम तद्हेतु अने अमृत ए बे अनुष्टाने वर्त्तता एवा दीर्घदृष्टिवंतने आत्मानंदी कहीए. (२)

हवे चोथुं लक्षण उपशम, क्षय उपशम भावे, शान्त एटले उपशम ते मोहनी कर्मनी प्रकृतिउनो सत्ताए आत्मप्रदेशे उपशम होवाथी उदयिकताना अभावे प्रदेशे अथवा विपाके विघ्न, पराभव नहीं होवाथी आत्माने उपशम भावे शान्त कहीए. वली वीतराग कहीए, ए तेना बे भेद. एक देशथी अने बीजो सर्वथी, देशथी तो एक मिथ्यात्व एटले सिद्धांतना मते, त्रण पूज्य न करे. माटे एक अने चार अनंतानुबंधी कषायनी चोकडी, मळी पांच प्रकृतिनो उपशम चोथा गुणठाणे थाय, तीहां उपशमभावनुं समकित पामे, अने सर्वथी तो चार चोकडीना सोळ कषाय अने हास्यादी षट, त्रण वेद, ए नव नोकषाय, एटले कषाय तो नही, पण कषायने प्रगट करवानुं कारण माटे नोकषाय कहीए; एम बेहु मळी पचीस कषाय अने एक मिथ्यात्वमोहनी, बीजी मिश्रमोहनी, त्रीजी समकितिमोहनी, ए त्रण मळी अट्ठावीस प्रकृतिनो उपशम, अगीयारमा उपशान्तमोह गुणठाणे थाय, तीहां उपशमभावनुं, यथाख्यात चारित्र पामे, ए बे भेदनी स्थिति अंतर अंतर मुहूर्त्तनी छे; ए उपशमभावे शान्तना बे भेद कह्या, हवे क्षयउपशमभावे शान्त गवेखे छे. ते चारे घातिकर्मनी प्रकृतियोनो क्षय उपशम होवाथी संपजे; तेना विचीत्र भेद छे, परंतु समुदाये बे भेद, एक अज्ञानयोग अने अज्ञानयोगनिश्रा, बीजो ज्ञानयोग अने ज्ञानयोगनिश्रा, अज्ञानयोग ते, समकितना अभावे प्रथम गुणठाणे क्षयउ-

पशमभावनी वृद्धिए जाणपणुं वृद्धि पामे, वळी निश्रा ते दीपक समकितनी द्रव्य चारित्रनी तपनी निश्रा पामे, यावत् स्वर्गसुखनो विभागी थाय, पण यथार्थ श्रद्धाना अभावे, ग्रंथिभेद करे नही अने समकित पण पामे नही एटले स्वअपेक्षाए हित न थयो, परंतु योग्य जीवने वोधि वीज पमाडवाना वळी मोक्षे पोचाडवाना हेतु छे, माटे शान्त ए पहेलो भेद कह्यो, हवे वीजो भेद ज्ञानयोग ते, ग्रंथिभेद कीधां, चोथा गुणठाणाथी ज्ञानयोग कहीए अने निश्रा ते समकितनी, चारित्रनी, तपनी, वीर्यनी, एटले क्षयउपशमभावनी पांच लब्धिनी निश्रा कहीए, तेनो विवरो एम छे के समकित आश्रीने चोथु, पांचमुं अने छठुं सातमुं ए चार गुणठाणे क्षयउपशमभाव लाधे छे, वळी चारित्र आश्रीने पांचमुं, छठुं, सातमुं, आठमुं अने नवमुं दशमुं, ए छ गुणठाणे क्षयउपशमभाव लाधे अने ज्ञान आश्री वळी दानादि पांच लब्धि आश्रीने, चोथुं, पांचमुं, छठुं, सातमुं, आठमुं, नवमुं, दशमुं, अगीयारमुं अने वारमुं ए नव गुणठाणे क्षयउपशमभाव लाधे, ए क्षयउपशमभावे शान्तना भेद गुणठाणे गवेखीने कह्या, हवे तेनी स्थिति चोथा गुणठाणानी अपेक्षाए, काळ आश्रीने, छासठ सागरोपम झाझेरी अने भव आश्रीने सात आठ भवनी जाणवी, अने पांचमा वळी छट्ठा सातमा गुणठाणानी भेगी, देशे उणी, पूर्व क्रोडनी जाणवी; ए उत्कृष्टि स्थिति कही अने जघन्यथी वळी सातमा ठाण उपरांत अंतर अंतर मूहुर्त्तनीछे

ए ज्ञानयोग चोथा गुणठाणाथी बारमा गुणठाणाना अंत सुधी क्षय उपशम भावे कह्यो. तेना ग्राहको चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी धर्म ध्यान ध्यावावाळाछे. उपरांत शुक्लध्याननो पहेलो पायो आठमाथी दशमा सुधी ध्यानगत छे; उपरांत बीजो पायो ध्यानगत छे. पहेला पायामां भेद ज्ञान अने भेदाभेद ज्ञान छे, बीजा पायामां अभेद ज्ञान छे; क्षपक श्रेणीना ग्राहको पहेला पायाना ज्ञान ध्याने मोहनो वळी अशुद्ध परिणतिनो दशमा गुणठाणा अंते क्षय करी वीतराग परिणतिए बारमा गुणठाणे यथाख्यात चारित्र पामे अने बीजा पायाना ज्ञान ध्याने ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी अने अंतराय, ए त्रण कर्मनो नाश करी, तेरमे गुणठाणे अरिहंत पदे केवळज्ञान, केवळदर्शन, अने क्षायक भावनी पांच लब्धि पामी क्षायक लब्धिए पूर्ण थाय माटे क्षायक लब्धिनी, प्राप्तिनुं कारण यथास्थित क्षयउपशम भाव चोथा गुणठाणाथी छे, अने चोथुं गुणठाणुं पामवानुं कारण मतिअज्ञान, श्रुत अज्ञान, ए बेहु अज्ञानना क्षय उपशमनी वृद्धिनुं सवळापणे परिणमवुं ते छे, परंतु विभंग नथी. वळी श्रेणी आरोहण करवुं तेनुं कारण मतिश्रुत ज्ञान छे; परंतु अवधि मनःपर्यव नथी एम उपशम, क्षय उपशम, भावे, शांत थया, एवा ज्ञानी तेमने आत्मानंदी कहीए. (४)

हवे पांचमुं लक्षण संतोष, एटले संतोष क्यारे जाणीए के जीहां इच्छा वांछानो संभव नथी निर इच्छाए तृप्त

थया छे तेमने संतोषी कहीए अने इच्छा वांच्छा छे जेने तेने असंतोषी कहीए. कह्युं छे,–

गाथा.

॥ जहा लाहो तहा लोहो ॥ लाहा लोहो विवड्ढइ ॥
दो मास कणाय कज्जं ॥ कोमीएविननठ्ठई ॥ १ ॥

अर्थः—जहा कहेतां जीहां, लाहो कहेतां लाभ एटले धन्य, धान्यादि वस्तुनी प्राप्ति थती जाय वृधि पामती जाय, तहा कहेतां तीहां, लोहो कहेतां लोभ प्रगट थाय अने छगाश नजरे आवे वली घणी तृष्णा थाय. लाहा कहेतां जेम जेम लाभ थतो जाय तेम तेम लोहो कहेतां लोभ, विवड्ढइ कहेतां विशेषे करीने वृद्धि पामे एटले दिप्त थाय, यथा द्रष्टांते, जेम अग्नि वळे छे तेमां काष्टनी पुरती करीए तेथी अग्नि शान्त न थाय, परंतु वृद्धि पामे ए द्रष्टांते, वस्तुना मळवाथी लोभ न उपशमे. दोमास कणयं, कहेतां कपिल ब्राह्मण बेमासा सुवर्णनुं, कज्जं, कहेतां दान लेवा अर्थे राजा पासे गयो तेने राजए साचा बोलो जाणी प्रसन्न थइने कह्युं के, माग, मागे ते आपुं अने तारुं दारिद्रपणुं आजथी दूर करुं, तारे जन्म पर्यंत फरीथी याचना करवी न रहे; त्यारे कपिल ब्राह्मण विचारवा लाग्यो के, केटलु मागुं तो, यावत् कोमी एवी, कहेतां एक क्रोड सोनैया मागुं, एम विचार करतां पण, ननिठ्ठइ कहेतां निष्टार्थ एटलुंज, एम तृप्त न थयो, एटले इच्छा वांच्छानी

पूर्णता न थइ अने ढंढारा नजरे आवी, ते अवसरे लोज्ञ-दशाने बुरी जाणी, स्नेह लत्तावेली मूळने उपाडवाथी ए, कपिलनामा ब्राह्मण महा पुरुषोत्तमने, पोतीको सहज स्वज्ञाव प्रगट थयो अने ज्ञानज्ञानुं घटंतर वृत्तिए उदय पाम्यो, लाज्ञ होवाना कारणे पोते पोताथी बोध पामी स्वयंबुद्ध थइ कर्मने हणी सिद्धि वर्या; ए कथा उत्तरा-ध्ययनजीना आठमा अध्ययने सविस्तारे छे. एम धन कंचनादि वस्तुने अलच्छी माने छे, तृष्णा त्रुटी छे पोता-पणानों ममत्व गयो छे, कदाच संसारमां रह्या छे अने ए लक्ष्मीनुं रखोपुं करे छे, तेने निर्वाह प्रयोजन जाणे छे, बाधकता समजे छे, विरक्त चित्त छे, छोडवानी ज्ञावना ज्ञावे छे, छोडवानो अवसर इच्छे छे, वळी नीजात्म सत्ताए ज्ञानादि गुण अव्याबाधादि पर्याय, पोतीका असंख्यात प्रदेशो, प्रदेश प्रदेश प्रत्ये, अनंता अनंता, तद्रूप क्षायक लब्धि, निर्मळ, निरंजन, अचळ, अविनाशी ज्ञावनी वस्तु-गते रही छे, तेने लक्ष्मी माने छे, वळी तेना अर्थी छे, खपी छे, व्यक्तिज्ञावे प्रगट करवाना उद्यमी छे, ब्राह्य-ऋद्धिनी वृद्धि अथवा हानि होवाथी, राग द्वेष न करे, अने समज्ञावे वर्ते. कदाच उद्वेग करे तो उत्कृष्ट पंदर दिवसना अनुमाने करे, नहितो तरतज ए वस्तु अस्थिर छे, कोइने त्यां स्थिर थइने रही नथी. संजोगे आवीने प्राप्त थइ अने विजोगे नाश थयो, एम हानि वृद्धि थाय तेनी साथे पोतापणो मानवो ते ज्ञानीने उपचार मात्र छे

एम जाणी उद्वेगने उपशमावी, समभावे वर्ते, तेवा संतोषीने आत्मानंदी कहीएं. (५)

हवे छठुं लक्षण आत्मरति एटले आत्मगुणमांज प्रीतिरंग लाग्यो छे जेने,एटले रंग केवो लाग्यो छे के कंचननो पित वर्ण छे, चांदीनो धोळो वर्ण छे, परवाळानो रक्तवर्णछे, ए रंगने उतारीए, पलटावीए, तो पलटाय नहि. कारण के स्वभाविक रंग छे, तेम आत्मानो जेवो स्वभाव तेवो रंग, चोथुं गुणठाणुं प्राप्त थतां अंशे अंशे चढतो गयो अने जेटलो स्वभाविक गुण प्रगट थयो एटलो उपाधि रंग उतरतो गयो. एम करतां करतां अनुक्रमे परिपूर्ण रंगतो राग द्वेष अने मोहना अभावे, क्षिण मोह बारमुं वीतराग गुणठाणुं पाम्यां कहीए, एटला सुधी न पहोंचे तेने तद्भवे मुक्ति न मले, पण क्षायक समकितनी अपेक्षाए त्रीजे भवे अने छेवटे चोथे भवे ए जीवो मोक्षगामी छे, वळी क्षय, उपशम समकित, अप्रतिपातिनी अपेक्षाए सातमा आठमा भवे ए जीवो मोक्षगामी छे. वळी प्रतिपाति क्षयउपशम, अने उपशम समकितनी अपेक्षाए अर्ध पुद्गल परावर्त्तनी मांहेली कोरे ए जीवो मोक्षगामी छे. एथी अधिक काळ तो ग्रंथिभेदी जीवो संसारमां न रहे; वळी रंग न उतरवानुं कह्युं ते, जेणे ग्रंथि भेद करेलो छे, ते ग्रंथि त्रण काळमां सजड थाय नहि अने मिथ्यात्वगुणठाणे जतां पण ए जीवो, द्रव्य समकिती छे, उपर मिथ्यात्वनुं दळ फरी वळ्युं छे, ते विशुद्ध भावे उतरी जवाथी चोथे गुण-

ठाणे ज्ञाव समकितीपणे, जलदीथी आवशे, ए जीवने फरीथी करण करवां नथी, माटे चोथा गुणठाणानी प्राप्ति थइ तेने ए अपेक्षाए अपलटण रंग कह्यो छे, वळी आत्मरति पुरुषोत्तम संसारमां रह्या छे. कायामां वस्या छे, परंतु अळगा छे. यथा दृष्टांते, जेम सरोवरना जलमां कमळ रह्युं छे, श्रीफळना काचलामां गोळो रह्यो छे, ए दृष्टांते अलिप्त थका न्यारा छे, मोहीत थका पांच इंद्रीना ज्ञोग सुखमां रमे नहीं, ज्ञान दृष्टिए स्वरूप रमणिपणे वर्ते, ते आत्मरतिने आत्मानंदी कहीए. (६)

हवे सातमुं लक्षण साहसिक एटले धैर्यवान, वीर्यवान, सत्ववान, ए लक्षणे ज्ञानी आत्मा कायामां रह्यो थको, सुखसंपदा अने दुःख आपदा, संयोगिकज्ञावे पूर्व कर्मनी उदयीकताए, प्राप्त थये अदिनवृत्तिए वर्ते; दीनता न ज्ञावे, कारण के सुखसंपदा ते तनधन राजऋद्धि तेने तेमणे अनित्य, अशाश्वति जाणी छे. वळी सज्जन कुटुंब बाहिर मेलावडो छे, तेनुं सगपण स्वार्थ सरे त्यां लगे छे. जुवो के, ब्रह्मदत्तनी माता चुलणीए पोतानो स्वार्थ नहि सरवाथी पुत्रने लाखना मेहेलमां सुवा मोकलीने सळगावी दीधो, एतो एनुं आयुष्य हतुं तो जीवतो रह्यो, पण माएतो मारवानोज उपाय कर्यो. वळी श्रेणिकराजाने पोतानो पुत्र कोणिक तेनो स्वार्थ नही सरवाथी राजना लोज्ने पिताने पांजरामां घाली रोज पांचसो कोरडा मारे अने अंते ए बेहुने कमोते मरवानो वखत आव्यो, वळी परदेशी राजानी

सूरिकांता नामे स्त्री तेनो स्वार्थ नही सरवाथी केर खवरावी पतिने मार्यो. वली ऋषज्ञदेवस्वामीना बे पुत्रो ज्ञरत अने बाहुबल तेमां वमा ज्ञरतनो स्वार्थ नहि सरवाथी, बाहुबल ढोटाज्ञाइ उपर चक्र मेल्युं, एतो गोत्रमां न लागवानी आमन्याए बाधा नहि करतां पाछुं आव्युं. नही तो चक्रनो धर्म मस्तक छेदवानो छे, माटे एणे तो मारवानोज उपाय कर्यो; वळी सोमिल ससरे पोतानो स्वार्थ नहि सरवाथी गजसुकुमार जमाइना मस्तक उपर माटीनी पाळ बांधी अग्नि ज्ञरीने बाल्यो, इत्यादि संसार सगपणनां अनेक दृष्टांतो छे, ते विचारतां बाहिर मेलावमानो, वळी तन, धनादि ऋद्धिनो स्नेह राग तंतु बंधननो बंधपास तोमी, छोमीने पोते साहसिक थका अदीनपणे वर्ते, वळी दुःख आपदा जे रोगादि व्याधि प्रगट थयां सनतकुमार महा मुनिश्वरनो द्रष्टांत विचारी अनुज्ञवीने, वळी तन ममता टाळीने पूर्वकृत कर्मनां फळ जाणीने ज्ञेद ज्ञान घटमां लावीने कायाथी आत्माने अलगो करीने तन्मय परिणाम पामीने तद्गत ज्ञावने गवेखीने, परमशमताना उपयोगे सेहेता थका वर्ते, वळी मनुष्यना तिर्यंचना, देवना करेला उपसर्ग उपजे तीहां दृढप्रहारीनो अथवा मेतारय मुनिनो द्रष्टांत गवेखीने ज्ञावे पोतपोताना ज्ञानध्यानमां वर्ते, वळी एम चिंतवे के छेदनज्ञेदन तामन, वधबंधनादि करे छे, ते पुद्गल पुद्गलने करे छे तेमने लागे नही. वळी पुद्गल क्षणज्ञंगुर छे, तेनो नाश थशे ते तारुं पोतानुं नथी, एतो

तारे जाफानुं घर छे, तुं ए पुद्गलनुं परिणमन वीर्य फोरवीने तजी दे एटले इंद्रियद्वारे आत्मानी चेतना परिणाम पामी छे, तेने पलटावीने स्वरूपे सहजजावे परिणमावे तो, कायाना सुख दुःखनो विजागी पण चेतन पोत न थाय अने ध्यानगत सिद्धना अव्याबाध सुखनो, अंशे जोगी थाय, वळी विशेषे वीर्य स्फुरणा पामे तो क्षपकश्रेणी मांफी, कर्मने हणी, अकर्मी थइने सिद्धि वरे. एवा साहसिक पुरुषोत्तमने आत्मानंदी कहीए. (७)

हवे आठमुं लक्षण गिरुउते घणा गुणवंतो एटले गंजिर पर उपकारनो कर्त्ता अपूर्व दर्शन छे जेनुं परमलाजनुं कारण एटले जे उपद्रव करतो आवे तेना तननो ताप दूर करे तो जे विनय पूर्वक दर्शन पामे.तेनो तो ताप रहेज शेनो, वली वचनने श्रवण करे तेना मननी व्याधि जे कलुषता ते नाश पामे वली मनन चिंतवन करे, तेने संतोष सुख प्रगटे तद्गत जावे परिणाम पामे क्षय पामे, तेने चतुरगति संसार ज्रमणनो अंत छेफो आवे अने निर्वाणपद पामे एम अनंतो उपकार करता मनोवांछित पुरवाने जावकल्पवृक्ष समान याचकनी जूख जागे तेमने गिरुउ कहीए. एटले इष्ट फळदाता छे. ते इष्टना बे जेद. एक व्यवहारइष्ट अने बीजुं निश्चयइष्ट जे व्यवहार इष्ट मागे तेने वैराग्यनो उपदेश करी संसारनुं अनित्यपणुं वली असारपणुं देखाफी संसार त्याग करावी दिक्षा आपी पंच महाव्रत आदे चरणसित्तरि अने पफिलेहण आदि करण

सित्तरि मली एकसोने चालीश भेदे चरणकरणानुंयोगनुं जाणपणुं करावी समजावी विधिपूर्वक प्रवर्त्तावी स्वर्गे मोकले तेने व्यवहारे इष्ट फलदाता कहीए अने निश्चयइष्ट मागे तेने द्रव्यानुंयोगनुं जाणपणुं करावे एटले धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काळ पुद्गलास्तिकाय अने जीवास्तिकाय ए षट्द्रव्यनी वाख्या करी गुणपर्याय, स्वभाव लक्षण ओळखावी पांच अजीव अचेतन द्रव्यथी एक पोतीको चेतन द्रव्यभिन्न (नोखो) पाडी, हेय, ज्ञेय, उपादेय ए त्रिभंगी समजावी, पांच अजीव, अचेतन द्रव्यनो हेय कहेतां त्याग करावी एक पोतीको आत्मा, सिद्धनो साधर्मि मोक्षमयी मोक्षमां रहेवावालो एज उपादेय कहेतां आदरवा योग्य छे. एम दृढता करावे, श्रद्धा प्रतित करावे तीहां गुणने ओळखतो गुणनो राग प्रगटे ते रागनो प्रेर्यो थको अंतःकरणे उंडो उतरी खोज करे. अंतर्गत स्मरण चिंतवन करे रमण करे अनुभव करे. पोतीका सहज भावे वीर्य फोरवे. श्रेणी मांडी घनघातिकर्मनो नाश करी अनंत चतुष्टयी पामी योग रोध करी अघातिकर्म हणी सिद्धि वरे तेने निश्चयथी इष्ट फलदाता कहीए. ए महा उपगारी, करुणासागर, स्पृहा रहित, तत्वचिंतक, तत्वगवेषि, तत्वरमणी पोते तरे अने गिरुउ बीजाने तारे तेमने आत्मानंदी कहीए. (७)

हवे नवमुं लक्षण निर्भय एटले परवस्तुने विषे पोतापणो एकांते मानवानी बुद्धि, सम्यक्ज्ञान सम्यक

दर्शननी प्राप्ति थतां टळी छे.-तीहांथी निर्ग्नय, वळी तत्व-द्रृष्टिए विचारीए तो जीहां, अप्रतिपाति. क्षय ऊपसम-भाव थाय. एटले हानि न पामे. त्यारे निर्ग्नय दशा मानीए एटले अप्रतिपाति ऊपशम आत्मा क्यारे पामे? तो कोइक जीवो बासठ सागरोपम ऊजेरी संसार काळ-स्थिति बाकी रहे त्यारे पामे अने कोइक जीवो, तेत्रीस सागरोपम ऊजेरी संसारस्थिति काळ बाकी रहे त्यारे पण पामे. वळी कोइक जीवो छेल्ले भवे तो पामेज पण आठ भवथी अधिक संसारस्थिति छे जेने, तेतो अप्रतिपाति क्षय ऊपशम न पामे अने अप्रतिपाति क्षय ऊपशम भाव न आवे तीहां समकितनी साबीती न रहे अने मि-थ्यात्व प्राप्त थाय तीहां हानि कहीए. माटे अप्रतिपाति क्षय ऊपशमने पामेला चोथा गुणठाणाना भावने अचळ थयेला उपरना गुणठाणे चढे अने पडे पण चोथा गुणठा-णाने न छोडे. ते निर्ग्नयवंत पुरुषोत्तमने मुख्यताए आत्मा-नंदी कहीए. (९)

हवे दसमुं लक्षण निष्कपटी एटले कपट करवानुं कारण शुं छे तो एक मान अने बीजो लोभ ए बे छे. ए बे प्रकृतिनी उछास करीए, तीहां कपटनो संभव न आवे. ए मानना बे भेद. एक अप्रशस्तमान, बीजुं प्रशस्तमान? लोभना बे भेद. एक अप्रशस्त लोभ, बीजो प्रशस्त लोभ एम बे प्रकृतिना चार भेद थया तेमां अप्रशस्त, मान अने लोभ छे, ते संसारमां कपट करवानो हेतु छे

अने प्रशस्तमान अने लोभ छे. ते धर्म करणीमां कपट करवानो हेतु छे, माटे प्रशस्त अने अप्रशस्त ए मोहनी कर्मनी प्रकृतिउं छे. ते सर्वे आत्माने अहितकारी छे. वली प्रशस्त छे तेज अप्रशस्त प्रकृति बांधवानो हेतु थाय माटे तजवा योग्य छे. धर्म अर्थी पुरुषने वक्रतानो त्याग करी सरळ भावे वर्त्तवुं एज श्रेय छे, कल्याणकारी छे. एम सरळवृत्तिए थया तेहने आत्मानंदी कहीए (१०)

हवे अगीआरमुं लक्षण अनुभवज्ञान एटले मतिश्रुतज्ञाननुं कार्य एज अनुभवज्ञान छे अने केवळज्ञाननुं कारण एटले हेतु एज अवनुभ ज्ञान छे. वली मतिश्रुतज्ञाननो उत्तर भावी अने केवळज्ञाननो पूर्व भावी एज अनुभवज्ञान छे. दृष्टांत जेम सूर्य छे तेम केवळज्ञान छे अने सूर्योदय थता पहेलां सूर्यमंडळथी रक्तारूप प्रकाशनी सदृश्य निकट वृत्तिए जेम अरुण देखाय छे ते द्रष्टांते अनुभव छे एटले साक्षात् वस्तु स्वरुपनुं जाणवुं ऊपयोग दृष्टिए प्रत्यक्ष करतळवत करवुं. प्रत्यक्ष प्रमाणे निरधार करवो ते अनुभव ज्ञानथी थाय पण जीनागम एटले सूत्रसिद्धांत अने सिद्धांतनी निश्राए ग्रंथो वली अन्य दर्शनीनां सर्वे शास्त्र तेनो व्यापार एटले उद्यम करतां भणतां, वांचतां, जोतां धारतां, निर्णय न थाय कारण के जे शास्त्र छे ते कार्यसिद्धिनी दिशाने बतावे छे. वली वस्तुस्वरूपने अनुकुळ जे बोध तेनी प्रवृत्तिनो विधि तेनुं निमित्तमात्र कथन करे छे. जेमके पूर्व दिशानी सामी पश्चिम दिशा छे. एम सूचवे छे.

वली श्रोता जनोने, जागृत करे छे. परंतु चतुर्गतिसंसार भ्रमण टाळी निर्वाण पद जे निज स्वरुप शुद्ध चेतननुं पामवुं ते, अनुभवगम्य छे एटले इंद्रियज्ञानथी अतिंद्री आत्मस्वरुप स्पर्शीत बोध न थाय अनुभवज्ञाने थाय. माटे १०० सो शास्त्रनी युक्तिउंथी पण अतिंद्रिपरब्रमनुं ज्ञान थतुं नथी. एम महोपाध्याय यशोविजयजी ज्ञानसार ग्रंथे छवीसमा अनुभवाष्टके कहे छे. माटे हे भवभीरु भाइउं तमारें जो मोक्षना सुखनी चाहना होय तो, अनुभव ज्ञाननो खप करो अने इंद्रीउं संगे पोताना आत्मानी चेतना एक्यतापणे खीरनीरना द्रष्टांते पुद्‌गळ मिश्रित अनादि संबंधेछे. तेहने अनुभवरूप चांच एटले ज्ञान योगनी स्फुरणाए करीनें पलटावी घटंतर वृत्तिए स्वस्वरूपे सहज भावे परिणमावो अने मनयोगने अंतःभुवने ज्ञान खीले अने समाधि दोरडे बांधो एटले अनुभवज्ञान ज्योति, अति प्रकाशकर्त्ता, अनुभव भुवने उदय पामशे तीहां पोतानो आत्मा शिवरूप छे. वली मग्न छे. एटले ज्ञानामृते परिपूर्ण भरेलो सागर छे. वली सागरने विषे थळभूमी द्रष्टिगोचर न आवे अने जळ आवे तेम अनुभव सागरने विषे, वर्णादि पुद्‌गळ द्रष्टिगोचर न आवे. वस्तुना तत्वनी गवेषणा उद्योतमय परपाटी ज्ञान आवे एम छे एटले खुल्लो आकाश प्रथुल सपाट उद्योतमय छे, ते ज्ञानामृत सागरमां स्थिर थयेला ते मग्न कहेवाय एटले आत्माना अनंता गुण छे अने गुणगुणनो स्वभाव भिन्न एटले जुदो जुदो छे

ज्ञाननो जाणवापणे, दर्शनना देखवापणे, चारित्रनो स्थिरतापणे, वीर्यनो स्फुरणाशक्तिए एम अनंतागुण पोतपोताना स्वन्नाव धर्मे वर्ते पण एक वीजामां प्रवर्ते नही. तेने सिद्धांती स्थिर कहेछे. मग्न कहेछे वली ए पुरुषोने अव्यावाध सुखनो अंश प्रगट थयो छे ! ध्यानगत परमानंदनी लहेरमां मग्न छे ए सुखनुं वर्णन सर्वज्ञ प्रत्यक्ष हजारो जीव्हाथी कहेवाने पोताना आयुष्यनी पूर्णताए पण अशक्त छे एम महोपाध्याय यशोविजयजी ज्ञानसार ग्रंथे वीजा मग्नाष्टके कहे छे. माटे चतुर्गति भ्रमण टाली जन्म, जरा अने मरणना दुःखथी रहित थइ अजरामर मोक्षपदे अव्यावाध सुख पामवाने एक अद्वितीय अनुन्नवज्ञान एज कारण छे. तेने पाम्यां आत्मानंदी कहीए. (११) कह्युं छे अनुन्नवाष्टके.

श्लोक.

संध्येव दिनरात्रीभ्यां केवलश्रुतयोः पृथक्
बुधैरनुन्नवो दृष्टः केवलार्कारुणोदयः ॥ १ ॥
व्यापारः सर्वशास्त्राणाम् दिक् प्रदर्शनमेव हि
पारं तु प्रापयत्ये कोऽनुन्नवो न्नव वारिधेः ॥ २ ॥
अतींद्रियं परब्रह्म विशुद्धानुन्नवं विना ॥
शास्त्रयुक्ति शतेनापि न गम्यं यद्बुधाजगुः ॥ ३ ॥

मग्नताष्टके.

प्रत्याहृत्ये द्रियव्यूहं समाधाय मनोनिजम् ॥

दधच्चिन्मात्र विश्रांति मग्न इत्यभिधीयते ॥ १ ॥
यस्य ज्ञान सुधासिंधौ परब्रह्मणि मग्नता ॥
विषयांतर संचारस्तस्य हाला हलोपमः ॥ २ ॥
स्वभाव सुख मग्नस्य जगत्तत्वावलोकिनः
कर्तृत्वं नान्यभावानां साक्षित्व मवशिष्यते ॥ ३ ॥
ज्ञान मग्नस्य यच्छर्म तद्वक्तुं नैवशक्यते ॥
नोपमेयं प्रियाश्लेषैर्नापि तच्चंदनद्रवैः ॥ ६ ॥
शमशैत्य पुषोयस्य विप्रुषोऽपि महाकथा ॥
किंस्तु मोज्ञान पीयूषे तत्र सर्वांग मग्नता ॥ ७ ॥
यस्यदृष्टिः कृपावृष्टिर्गिरः शमसुधाकिरः ॥
तस्मैनमः शुभ्र ज्ञान ध्यान मग्नाय योगिने ॥ ८ ॥

इहां आत्मानंदीनो अधिकार समाप्त.

हवे वली निश्चयनयनी मुख्यताए धर्मप्रवर्तन कहे छे,

श्लोक.

अविरोध मनुद्वेगं ॥ शमभावं चलाचलं॥
अहंममत्व परित्यक्तं ॥ अकर्मकर्म उच्यते ॥ १ ॥

अर्थः—निश्चयनयमां दृष्टि करवावाला पुरुषोत्तमनी क्रिया केवी होय ते प्रत्ये गवेषे छे अविरोध कहेतां कोइ जीव साथे विरोध चिंतवे नही वली करे नही. एटले विरोध करवानुं मुख्य कारण जोइए तो एक मान अने बीजुं लोभ ए बे छे. एटले जीहां पोतानुं मान खंडित

थाय, वा लोभमां उछाश थाय, तीहां विरोधनो संभव आवे; ए बे प्रकृतिने जेणे पूंठ दीधी छे. एटले पूंठ दीधी एम क्यारे जाणीए के जे पुरुषो पोताना तद्गत आत्म-स्वरुपना चिंतक छे. सत्ताए रहेली ज्ञानादि अनंता गुण अने अव्यावाधादि अनंता पर्याय तद्रूप ऋद्धिना जाण छे. परंतु क्षायक भावे ए ऋद्धिनी प्रगटताना अभावे पोताना आत्मानी लघुता भावे हानि चिंतवे तीहां मानने असंभवछे. वली देवेंद्र नरेंद्रादि पदनी इंद्रि नोइंद्रिजनित जे विषय सुखनी हेतुभूत एवी तेमना ऐश्वर्यपणानी पुद्-गलीक विनाशिक ऋद्धिनी ठकुराइ तेने जे पुरुषो अल-च्छी माने तीहां लोभनो असंभव छे. वली सर्व जीवरा-शीने सत्ताए सरखा सिद्धना बरोबरीआ स्वजाति जाणीने स्वामीत्व संबंधे मैत्री भावना भावे छे. तेमनुं भलुं चिंतवे छे ते पुरुषोत्तम विरोधि भावथी विमुख छे. तेमने अवि-रोधी कहीए वली ए पुरुषोत्तम केवा छे तो मनुद्वेग कहेतां उद्वेग पामे नही. एटले उद्वेग पामवानुं कारण ए छे के जेणे पोतानी कायाने पोतापणे जीव मान्यो छे. वळी सज्जन कुटुंबादिने पोतानुं मान्युं छे, वळी धन,दोलत, राजम-हेल, राजऋद्धिने मारी मानीछे ते जीवने ए ऋद्धिनी हानि थाय, विनाश थाय, तेथी उद्वेगता आवे, संताप करे, हुं निर्धन थइ गयो दारिद्र अवस्थाने पाम्यो, भिक्षुकवत कं-गाल थइ गयो, आशुं थइ गयुं, एम आर्त्तध्याननो ध्याता थाय, तेने उद्वेग कहीए; परंतु जेणे एक पोतानो आत्मा,

ज्ञान, दर्शनादि गुणे युक्त शाश्वतो; एज मारो एम जाएयुं छे, सद्दह्युं छे, वळी ए शिवाय जे बीजुं अन्य प्राप्त थयुं ते पूर्वकृत कर्मयोगे अने उदय संयोगे मळ्युं, ते बाह्यभाव छे, मारी ने एनी वस्तुगते जुदाइ छे, ए संयोग संबंधने पोतानो मानीने में आ संसार चतुर्गतिभ्रमणचक्रमां भमतां थकां, अनंतां पुद्गल परावर्त्त पूर्वे कीधां, नर्कनिगोदनां अनंतां दुःख, असंख्यातो, अनंतो काळ पर्यंत सह्यां, वळी फरी फरी दुःखनी परंपरा पाम्यो, तेनुं मुळ कारण ए छे के में परने पोतानुं अज्ञानपणे, वळी अणाभोग मिथ्यात्वे अनादि संबंधे मान्युं, बीजुं नथी, वळी शुं जाणीए के हे चेतन मिथ्यात्ववशे तुं तारा ज्ञानदर्शन तद्रूप बोधने गमावीश, अने फरीथी पाछुं परने पोतानुं मानीश, तो चतुर्गति भवचक्रमां भ्रमण करतां थकां अनंतां दुःखनी परंपरा पुनरपी नर्क नीगोदआदि गतिने विषे पामीश अने नर्कना दुःखनो विपाक तो अति कटुक, ते इहां वर्णववा बेसीये तो ग्रंथ गौरव थइ जाय, माटे हे भवभीरु भाइयो तमे सिद्धांतथी वा, सद्गुरुना उपदेशथी जाणी लेजो अने निगोदनुं दुःख तो सातमी नरके एक पाथडो छे अने तेमां पांच नर्कावासा छे. तेमां वचलो, अपेठाण नामा नर्कावासमां सर्वोपरी अनंतगुणी अधिक वेदना छे ते दुःखना वर्ग करीए, तेने वळी अनंतगुणो करीए, एम अनंती रासीए निगोदीयो जीव अव्यक्तव्यपणे, अनादि संबंधे दुःख भोगवे ते दुःखनो विरहकाळ एक समय मात्र पण निगोदमां

नथी अने नर्कमां तो, तीर्थंकर ज्ञगवाननां अवसरे जीव अंतर मुहूर्त्त सातावेदे एटलो दुःखना विरहकाळनो संज्ञव नर्कमां छे, वळी नर्कमां तो कोइक जीव समकित पण पामे माटे निगोदनी अपेक्षाए तो नर्क सारी छे; पण बेहु गतियो दुःखमयी छे. तेनुं मूळ कारण ए छे के पोतानो तत्व न जाण्यो अने परने पोतानुं मान्युं, माटे हे चेतन ! हवे समज अने तुं तारा तत्व उपर दृष्टि कर, ने पर उपरथी पोतापणानी दृष्टि टाळ अने हवे पोताना तत्वने ज्ञुलीश नहि. ने परने विषे पोतापणानी बुद्धि करीश नहि, एम अनुज्ञव युक्त परिपक्व ज्ञानयोगने घटंतर वृत्तिए क्षय उपशम ज्ञावनी सहाय मलवाथी योतिरूप प्रकाश (उद्योत) कर्त्ता, सहजज्ञावे थयो छे जेने, ते पुरुषोत्तम उद्वेग केम पामे. अर्थात् नहि पामे; समज्ञावं कहेतां एक पोताना स्वज्ञावे थया, एटले स्वज्ञावे थया एम क्यारे जाणीए के, शुज्ञाशुज्ञ बंन्ने वस्तुने विषे समदृष्टिए जोनारा एटले शुज्ञाशुज्ञमां दृष्टि नहीं करवावाळा तेनो रहस्य एम छे के जे पुरुषो मोहित छे ते मनोज्ञ रुक्ष पूद्‍गल तेनी अज्ञिलाषा करे छे तेनुं नाम विज्ञाव छे ए विज्ञावनो नाश थयो छे इच्छानो रोध थयो छे जेने एटले निर्मोह वृत्ति थइ छे, उपयोग दृष्टि पोताना सहज ज्ञावमां स्थापी छे. तेने समज्ञाव कहीए.

चळाचळं कहेतां जे मननी चपळता ते नाश पामी छे जे पुरुषोत्तमनी, एटले मन जोग ने अंतरगत, मनन ज्ञुवन छे, तीहां ज्ञानरूप खीले अने समाधीरूप दोरके

बांध्यो छे तेथी निश्चल थया छे; अहं ममत्व कहेतां जे हुंने मारुं, आ संसारमां लागी रह्युं छे, ए मोहनी छाक छे, एटले हुं शब्दे पोतानी काया अने कायाथी बीजो जेटलो संबंध, कंचन कामनी आदे राजरिद्धि, जे प्राप्त थइ ते मारी वळी ते वस्तुने विषे, पोतापणानो ममत्व छे; परित्यक्तं कहेतां ते अहंपणाना ममत्वनो त्याग कर्यो छे जेणे, एटले त्याग तो कर्यो पण केवी रीते कर्यो के, अज्ञान द्रष्टिए नहि ज्ञानद्रष्टिए कर्यो छे अज्ञानद्रष्टिए तो सिद्धांतमां कहे छे के, मेरु पर्वत जेटला, उंघा मुहपत्ति, कंचन कामिनीनो त्याग करीने ग्रहण कर्या पण समकितनी स्पर्शना थइ नही अने संसार खुटयो नही. तेनुं कारण ए छे के, त्याग करी छोडी तो खरी, निर्ग्रंथ थया, पण परवस्तुथी मारापणों अनादि संबंधे संज्ञाए चाल्यो आवे छे. तेहने छेद्यो नथी, एटले तद्गत आत्माने उपयोगगोचर द्रष्टि प्रत्यक्ष कर्यो नथी तीहां सुधी, परवस्तु मारी नथी. परवस्तुनो हुं स्वामी नथी. एम निर्णय न थयो अने छोडे ते कांतो दुःखगर्भित त्याग छे. अने कांतो मोहगर्भित त्याग छे. पण ज्ञान गर्भित त्याग नथी, ज्ञानगर्भित त्याग तो एम छे के, स्वपर विभाग व्हेंची परवस्तु परपणे जाणी पोताना आत्माना विषे नास्तिभावे रही छे तेनो हुं स्वामी नथी. जे मारुं छे ते मारी पासे छे. मारा स्वरुपमां तो कोइ वस्तु त्यागवा योग्य नथी. तेम मारा आत्माथी जे अन्य वस्तु छे. तेमांथी मारे कोइ वस्तु ग्रहवा योग्य पण नथी. कह्युं छे समाधिशतकेः—

दुहा.

ग्रहण अयोग्य ग्रहै नही ॥ ग्रह्यो न छोंडै जेह ॥
जानै सर्व स्वभावने ॥ स्वपर प्रकाशक तेह ॥१८॥
त्याग ग्रहण बाहिर करै ॥ मूढ कुशळ अंतरंग ॥
बाहिर अंतर सिद्धकू ॥ नहीं त्याग औरसंग ॥४६॥

एम जाणीने पोतानी वस्तुए संतोषी थया तेमने निश्चयथी त्याग कहीए. वळी तेमनेज निर्ग्रंथ कहीए. अ-कर्म कहेतां कर्मशब्दनो अर्थ क्रिया छे. ते अकार शब्दे बाह्य भावे नहीं करवी तेने अकर्म कहीए. एटले विरोध नही करवो. उद्वेग नही करवो इच्छा वांछा मोहवशे थाय ते नही करवी मननी चपळ वृत्तिए दूर्ध्याननो ध्याता थाय ते नही करवुं अहं ममत्व नही करवो एम नही करवानुं कह्युं तेज कर्म उच्यते कहेतां तेने निर्ग्रंथ पदनी वळी संवरभावनी अने मोक्ष पंथनी अनुकुळ हेतु शुद्ध प्रवृत्तिरूप क्रिया कहीए एटले निर्ग्रंथ पदनी बाह्य भावमां अकरवापणे करणी छे. एम उच्यते कहेतां आ-त्मज्ञानी महात्मा पुरुषो कहे छे (१) वळी कह्युं छे

बाह्यवृत्तिये गुणठाणे चढवुं, तेतो जळना भामा॥
संयम श्रेणि शिखर चढावे, अंतरंग परिणामारे॥
लोगा भोळविया मत भुलो०

वळी परमानंद पच्चीसीए,—

श्लोक.

उत्तम आत्म चिंता च, मोह चिंता च मध्यमा ॥
अधम काम चिंताय:, परचिंताऽधमाधमा ॥ १ ॥

अर्थ—उत्तम आत्म चिंताच. कहेतां जे आत्मस्वरुपनी चिंता एटले चितवणा करवी. गवेषणा करवी, ते चितवणा बाह्यवृत्तिमां नथी त्यारे क्यां छे. तो अंतरवृत्तिए छे तिहां पण मनयोगस्थिरता पामे त्यारे चितवणा शक्ति आवे, एम करतां करतां अभ्यासे करीने, मन स्थिर थाय अने क्षय उपशम भावनी सहाय मले तो तद्गत स्वरुपे ज्ञानज्योति उद्योत प्रकाश अनुभव भुवने करे ए अनुभव भुवन केवुं छे. तो, सामो भित प्रमुख आडो पडदो नथी घणो मोटो सपाट बगीचो एवो खुल्लो आकाश, जेम सूर्यना तेजे करी प्रकाशित होय ए द्रष्टांते अंतरगत अनुभव भुवनमां ज्ञानज्योतिए प्रकाशित, अति उद्योत कर्त्ता एवुं अनुभव भूवन छे तिहां चितवणा अनुभव बळे अपूर्व प्रगटे एटले ध्यानगत भेदज्ञाने, एक पछी बीजो एम विचाररूप अनुभव धारा तत्वनो निर्णय करवारुप, परिपाटि चाले तेमां पृच्छा करवानी तर्क पण करवी रहे नही. एम अशंकित निरधार वस्तुने विषे वस्तुपणानो करवानुं एज एक अनुभव भुवन छे वळी अनुभवनी धोरु केवी छे के जेम रेलवेनी धोरु छे तेम अनुभवनी एटले तत्वनी गवेषणानी धोरु छे; अरुपि आत्माने द्रष्टिगोचर करवानुं एक एही अपूर्व स्थान छे. ए अनुभवना भावने जाण-

वाना अर्थे इहां त्रण सवैया लखीए छीए तेथी हे तत्वबो-
धना अर्थि नाइओ तमे अनुभवनो खप करजो.

सवैया एकतीसा

मनसो अचळ रहे ज्ञान ध्यान तहे तहे.
रहे स्थिर थइने अनुभव सो रंग है
पांचु इंद्रीथी चळे चेतना इहां न मळे
मळे अनुभव स्थळे सही सहज भाव है
अनुभवे अति घणुं धारणा सो एक अणुं
अनुभव गये गणुं अंतह करण है
लाग्यो पाछो आवे नही आवे मनस्थिर तही
रहे न उपाधि महीं शिव खुलो खेत है (१)
अनंत गुणोमां आगु ज्ञानने दर्शन जागुं
अनुभव थाय लागु स्वरूप रमण है
तिक्षण धारा न टूटे मोहनो खजानो खुटे
शुभाशुभ बंध छूटे सो अशुद्धवान है
शुद्धको स्थापन सही देखे परत्यक्ष अहीं
मन जोग स्थिर तही खुल्लो खेल तान है
असंकित वात एही गति रेलवेल तेही.
थोभाव्यो सो थोभे सही अंतः सो स्थिर है(२)
सहज स्वभावे आवे जडतासें खसी जावे
अनेक चतुर मिलावे एसो घटंतर है

आतम ग्यान ध्यान सो आतम धर्मवान सो
परम पद सांन सो देख्यो अनुभव है
सित गया आणे छे अमृत भक्त भाणे ठे
अनुभवी सो जाणे ठे एन आवे वचन है
वंदना हमारी सदा रीझसु आवसो जदा
ज्ञान शीतळ तदा मित्र प्रमोदित है (३)

एम आत्म चिंता एटले आत्मस्वरुपनी चिंतवणा करवी, वस्तुगते वस्तुपणानो निरधार करवो ते अनुभव-गम्य ठे अने अनुभवनी जेने प्राप्ती थइ ते उत्तम कहेतां पुरुषोत्तम ठे; मोहचिंताच, कहेतां जे पुरुषे, सप्रविभाग वहेंची आत्मस्वरूप चिंतवी, अनुभवीने ग्रंथिभेदपूर्वक समकित प्रगट कर्युं ठे, यथार्थ श्रद्धा करी ठे, वस्तुने विषे वस्तुपणानो निरधार थयो ठे, वळी संसारने असार जाणी, ठोमीने, अणगार थया ठे ते ठतां पोतानुं वीर्य तद्गत सहज भावमां वृद्धिए स्फूर्णा न पामे; अने परभवे देव-लोकादि ऋद्धिनुं पामवुं इत्यादि मनोज्ञ भोगनी इच्छा मोहीत थका करे, तेवा पुरुषने मध्यम कहीए; अधम काम चिंताच, कहेतां उपर कह्युं ए प्रमाणे समकित मूळ सर्व विरति थया ठे, ते ठतां कर्मनी विचित्र गति ठे, अने उदय महा बळवान ठे, तेथी करीने, कंदर्पने एटले काम चिन्हने उपशम करवानी बुद्धिए, आकरी तपस्या करतां ठतां पण न शम्यो अने व्याकुळतानो पराभव क्षीण न थयो

एम करतां कारण पण उदय पूर्वक तेवुंज मली आव्युं तेथी करीने लिंगथी भ्रष्ट थया अने स्त्री संगे विषयभोग करे, पण समकितनी, ज्ञाननी, यथार्थ साविती छे, गुमाव्युं नथी ते पुरुषने अधम कहीए, कारण के जो ए वेद अग्नि, कर्म क्षीण होवाथी; शांत थाय तो पाछुं पुनरपि एज भवे संयम ग्रहण करीने, निरतिचार चारित्र पाळी, तद्गतभावे, वीर्यनी स्फूरणा पामे तो यावत् सिद्धि पण वरे; नहि तो जे गतिनुं आयुष्य वांधे ते गतिमां जाय, पण ए अंते मोक्ष-गामी छे, माटे अधमाधम न कह्यो. परचिंता कहेतां पर जे तन, धनादि तेना वे भेद, एक अशुभ अने वीजी शुभ एटले वस्तुगते आत्मा जुदो छे अने तन, धनादि जुदुं छे, तेने जुदुं न जाणे अने कायाने जीव समजे, वळी सज्जन कुंटुंवादि राजऋद्धिने पोतानी समजे, तेना वास्ते पापस्थान सेवे अने परिग्रहने निधान माने. आर्त्त, रौद्रध्याननो ध्याता, वस्तुना स्वरूपनो अजाण, तत्वथी विमुख, रात्रीभो-जननो कर्त्ता इत्यादि अशुभ चिंतानो कर्त्ता, ए पहेलो भेद कह्यो.

हवे वीजी शुभ चिंता, तेना वे भेद, आरोप शुभ, अने अणारोप शुभ, अणारोप शुभ तो, सम्यक्ज्ञानीना घेर संभवे, ते इहां न लाधे हवे आरोप शुभना वे भेद एक सामान्य, वीजो विशेष सामान्य आरोपित शुभ तो ए छे के गुरुमहाराजने वांदे वळी सामान्य प्रकारे विनय साचवे, जीनविंवनां दर्शन करे, तीर्थयात्रा करे दिन दुःखी-

यांनी अनुकंपा करे इत्यादि ए सामान्य आरोपीत शुभनो प्रथम भेद कह्यो. हवे विशेष आरोपित शुभ तो ए छे के दुःखगर्भित मोहगर्भित वैराग्य पामीने, संसार त्याग करी, निर्ग्रंथथाय, पंचमहाव्रत आदे, चरणसित्तरीअने पडिलेहण आदे करणसित्तरीनो ग्राहक थाय, शक्ति पूर्वक तप करे, पोताना क्षय उपशम पूर्वक भणे, गुरुवादिक वगेरानो विनय वैयावच्च करे, पुन्यने भलुं जाणे, परंतु जीहां सुधी पोताना आत्माने कायाथी जुदो जाण्यो, (अनुभव्यो) नथी तिहां सुधी ए शुभाशुभ चिंतानो कर्त्ता जरु जीव छे. तेने परचिंता कहिए. धमाधमा कहेतां एम परचिंतानो कर्त्ता ते जीवने अधममां अधम कहीए. कारण के भगवतीजीना पहेला शतकना बीजा उद्देशे, नवमा ग्रैवेयकना ग्राहक सर्व विरति साधुने वीर परमात्माए, वळी गणधर महाराजे असंयति कहीने बोलाव्या छे, वळी तीहां सुधी जवानी योग्यता तो मिथ्यात्वी भवी अने अभवी बेहुमां पण कही छे, वळी परने पोतानुं मानवुं एज अज्ञान, अने एज मिथ्यात्व छे, वळी संथारा पोरसिमां पण कह्युं छेः—

संयोग मूला जीवेण, पत्ता दूःख परंपरा,
तम्हा संयोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥ १३ ॥

अर्थः—संयोग कहेतां पूर्वकृत कर्मयोगे अने उदय संजोगे जे वस्तु प्राप्त थइ ते वस्तु जीवने पर छे, तेने विषे एकांते पोतापणानी बुद्धि एज दुःखनी परंपरा पामवानुं मूळ कारण

छे. हा! हा! इति खेदे चेतन थइने अचेतननी बुद्धि राखे छे, माटे आ श्लोकमां परचिंताना कर्त्ताने अधममां अधम कह्या, ते यथास्थित छे.

अध्यात्म सार ग्रंथे,–

श्लोक

या निश्चे कलीनानां, क्रियानाति प्रयोजना ॥
व्यवहार दशा स्थानानां, ता एवाति गुणावहा॥ १९॥

अर्थः–जे मुनीश्वरनुं मन निश्चय पोताना स्वरूपमां लिन थयुं अने स्वरूप ओळखाण करी तेमांज रमेछे तेवा मुनीश्वरने बाह्य व्यवहार प्रमुख क्रिया करवानुं कंइ प्रयोजन नथी. जेने मोक्षनी अभिलाषा छे तेने क्रियानी कांइ जरुर नथी अने जे ज्ञानदशा पाम्या नथी तेने व्यवहार क्रियानो खप छे. केमके ते थकी शुभ कर्म उपार्जे. पण मुक्ति हेतु न थाय. (१९)

आवश्यकादि रागेण, वात्सल्याद्भगवद्गिरा ॥
प्राप्नोति स्वर्ग सौख्यानि न याति परमं पदं ॥४॥

अर्थः–आवश्यकादि रागेण कहेतां प्रतिक्रमण प्रमुख क्रियाने विषे अथवा उपवासादि तपने विषे राग छे. वली जिनवाणी सांभलवानो राग छे एटले परमात्मा भाषित अथवा परमात्माना मार्ग अनुसारी एटले सूत्रसिद्धांत ग्रंथ प्रकरणादि सांभळवानो राग छे ते सर्वने शुभराग कहीए ते थकी स्वर्गनां सुख पामे पण तेथी परमं पदं

कहेतां परमनाम उत्कृष्ट पद जे आत्माने कर्मथी मुकावुं तेने मुक्ति पद कहीए. ते न याति कहेतां न पामे. इहां कहेवानो सार एटलो छे जे बाह्य क्रिया जोगे संसार अने अंतर क्रिया जोग मोक्ष ए वात निःसंदेह छे, हवे जेथी मोक्ष सुख मले ते कहे छे. (४)

ज्ञान योगस्तपः शुद्धमात्मरत्येक लक्षणं

इंद्रियार्थोन्मनीभावात्स मोक्ष सुख साधकः ॥५॥

अर्थः—ज्ञान आत्मा ज्ञान योग धारण करे छे, ते ज्ञान योगना बे भेद एक भेदज्ञानयोग अने बीजो अभेद ज्ञानयोग तेमां पहेलो भेद ज्ञानयोग छे. तेना बे भेद एक कृत्रिम अने बीजो अकृत्रिम. तेमां कृत्रिम भेद-ज्ञान छे ते चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी अंतरमां अनुभव छे. ते कृत्रिम जाणवो परंतु क्षयोपशम भावनो छे. ते उबाळा खातो रहे छे. एटले परसंगथी छुटी शकतो नथी. परंतु तत्त्वातत्त्वनो विचार करे, वळी द्रव्य गुण पर्यायनो विचार करे, आत्माना त्रण भेद चिंतवे, बहिरात्मा, अंतर आत्मा अने परमात्मा अथवा नय-निक्षेपपक्ष प्रमाण विचारे. इत्यादि स्वरूपे कृत्रिम अनुभव ए पहेलो भेद, ते कह्यो. हवे बीजो भेद अकृत्रिम भेदज्ञाननो ते आठमा गुणठाणाथी श्रेणिगते आवे. इहां उबाळानो संभव नथी वळी प्रसंग वृत्ति नथी, ज्ञान तो क्षयउपशम भावनुं छे, परंतु अतिविशुद्धि भावने पामेलुं घणुं निर्मळ

छे, उपयोग तिक्ष्ण छे, इहां एक पोताना द्रव्यनो विचार भेद अपेक्षाए छे, परपक्षनो ग्राहक नथी, पोतानुं मुलस्वरूप प्रत्यक्ष रीते, स्याद्वादपक्षनी ऐक्यतापणे स्वभाववृत्तिए अनुभवे छे, ते अकृत्रिम भेद ज्ञान योग साधननो बीजो भेद ते कह्यो, इहां समजुनो तर्क थशे जे, केवळ ज्ञाननो अनुभव ते अकृत्रिम छे, बाकीनो अनुभव ते कृतिम कहेवाय. कारण के अनुक्रमे अनुभव थाय तेनो उत्तर. जे केवळज्ञान छे ते क्षायक भावनुं निरावरण, आवरण रहित छे.ते सर्वथी अकृत्रिम अनुभव करे, अने श्रेणिगते भेदज्ञान छे ते कृत्रिम कह्युं, परंतु देशथी अकृत्रिम छे, कारण के चेतन पोताना स्वभावे थयो त्यां ज्ञाननो अरूपी विषय छे, वळी सहजभावे पर्याय धर्मनी शुद्ध प्रवृत्ति छे, ते पुरूषने अशुभोदय जोगे कदाच कोइ घाणीमां घालीने पीले, अथवा खाल उतारे, अथवा माथे अग्नि सींचे, इत्यादि घणुं कष्ट करे, यावत् प्राण रहित करे तोपण पोताना स्वरूपथी चूके नहि. अने जे दुःख वेदे नहि तेनो अनुभव ते अकृत्रिम जाणवो. ए भेदज्ञान साधनयोगनो बीजो भेद ते कह्यो. हवे अभेद ज्ञानयोग ते दशमा गुणठाणाना अंते एटले छोडतां बारमा गुणठाणे आवे, तेमां अभेदे पक्ष चिंतवे, ते गुणपर्यायमय आत्मा, एटले ज्ञानादि गुण आत्मा थकी जुदा नथी, एकत्व छे, इहां भेदनो छेद थयो, असत्य कल्पना टळी ज्ञान, दर्शन, चारित्र तेहीज आत्मा, एटले कंचननु भारेपणुं,पिळाशपणुं,चिकाशपणुं ते कांइ कंच-

नथी जुदुं नथी जुदुं कहीए ते कल्पना कहेवाय, तेम आत्मा अने आत्माना गुणपर्याय ते कंइ जुदा नथी, एटले भिन्न नथी, अभिन्न छे; इहां मोहनुं तथा अशुद्ध परिणति, जे रागद्वेष तेनुं उन्मूलन दशमा गुणठाणा अंते थयुं, अने वितराग-भावे बारमा गुणस्थाने यथाख्यात चारित्र, शुद्ध परिणति प्रगटयुं, वली ज्ञानावर्णि, दर्शनावर्णि, अने अंतराय ए त्रण कर्मनो वीतरागभावे बारमा गुणठाणा अंते क्षय थयो. त्यां केवळज्ञान, केवळदर्शन प्रगटयुं, ए अभेदज्ञान योग साधन ते कह्यो, ए रीते भेदज्ञान, तथा अभेदज्ञानयोगे आत्दाने स्वरूप रमण करवुं, गुणवृतिए कर्त्ता भोक्ता पोतानो आत्मा छे अने परभावनुं त्यागपणुंछे. तेने आत्मयोग कहीए. एटले इहां बाह्यथी लोचवुं, मुंरुवुं, वेष धारण करवुं इत्यादिकने योग कहेवाय नहि, ए तो बाह्ययोगछे. पण मुक्तिमार्ग साधवानो तो आ एक अंतर्गत ज्ञानयोग छे, ते ज्ञानयोगने शुद्ध तप कहिए, एटले सर्व कर्मनो नाशकर्त्ता एक ज्ञान छे. कह्युं छे योगशास्त्रे,–

श्लोक

प्रणिहंति क्षणार्धेन, साम्यमालंब्य कर्मतत् ॥
यन्नहन्यान्नरस्तीव्र, तपसा जन्मकोटिभिः ॥५१॥

तथा ज्ञानार्णवेः–

यज्जन्म कोटिभिः पापं जयत्यज्ञस्तपोबलात् ।
तद्विज्ञानी क्षणार्द्धेन दहत्यतुल विक्रमः ॥ १८ ॥

वळी श्रीपाळना रासमां चोथा खंडेः-

॥ देशनानी ढ.ले. ॥

क्षण अर्धे जे अघ टले, ते न टळे नवनी कोमीरे॥
तपस्या करतां अति घणी, नहीं ज्ञानतणीछे जोमीरे॥
नहीं ज्ञानतणीछे जोमी संवेग गुण पालियें पुण्य-
वंतरे ॥ ३७ ॥

अर्थः-क्षण अर्धे जे अघ टले, कहेतां आत्मज्ञानयोगे अर्धी क्षणमां एटले आंख मीचीने उघामीए तेने क्षण कहीए, तेना अर्धा नागमां अघ टले एटले पाप कर्म टले, तेटलां पाप कोमि नवो सुधी अति घणी एटले उत्कृष्टि तपस्या करतां पण न टले, ते उत्कृष्टि तपस्या कोने कहीए, के प्रथम तीर्थंकरना वारे वार मासि तप ते उत्कृष्टो कहेवाय ने बाविस जिनना वारे आठमासि तप ते उत्कृष्टो कहेवाय अने वीर स्वामीना छेल्ला तीर्थे छ मासि तप ते उत्कृष्टो कहेवाय, ए प्रमाणे तपस्या करतां नव पुरो करे. एटले जे काले जेटलुं आयुष्य होय, तेटलुं उपर कह्युं ते प्रमाणे, बाल वय टाळीने तपस्या जोगे पुरुं करे. एम क्रोम नवो सुधी नवोनव तप करे, तोपण ज्ञानी पुरुषने ज्ञानयोगे अर्धी क्षणमां पाप कर्म टले, तेटलां पाप क्रोम नवो सुधी उत्कृष्टि तपस्या करतां पण न टळे ते पापना बे नेद, एक घाती पाप अने बीजुं अघाति पाप, तेमां घाती चउकर्मनी (४५) प्रकृति छे अने अघाती चउक-

मनी अशुभ (३७) प्रकृति छे. ए घाती कर्म अघाती बेहुनी मलीने (८२) पाप प्रकृति थइ तेमां जे घाती कर्मनी(४५)प्रकृति कही ते तो एक आत्मज्ञान अने बीजुं आत्मध्यानयोगे निश्चय खपे ए कर्म प्रकृति आत्मप्रदेशथी आत्म ज्ञाने छेदाय. वळी अघाती कर्मनी(३७)प्रकृति कही ते आत्मज्ञान अने आत्मध्यानयोगे खपती नथी कारण के अघाती कर्मप्रकृति उत्कृष्ट रस जे बांधेली होय ते बहुधा भोगववी पडे छे तेमां जे व्यापकपणे भोगवे तेने पाछी पुनरपि बंधाय अने ज्ञानध्यानगत व्यापक थइ उदय अव्यापकपणे भोगवे तेने निर्जरा थाय पण बंधाय नहि. माटे कर्मनो नाश करवो अने मुक्तिनां सुख लेवां ते तो एक ज्ञानयोगे मळे ते माटे कह्युं के, नहि ज्ञानतणी छे जोडीरे, एटले ज्ञान गुणनो बरोबरीयो, तप प्रमुख कोइ गुण निर्जरा हेतु नथी, एम सर्व पंडितोनी बोली छे, माटे ज्ञानयोगने शुद्ध तप जाणवो.

वळी आत्मरत्येक लक्षणं, कहेतां आत्माने रति एटले परमानंद पामवानुं एक ज्ञान एहिज लक्षण छे. एटले आत्माने ज्ञानयोगे आनंद प्रवर्ते छे. इंद्रियार्थोन्मनीभावा, कहेतां ए ज्ञानयोगी मुनीश्वर छे ते केवा छे तो, आ भव आश्री, वळी परभव आश्री कोइ प्रकारे इंद्रियजनित विषय सुखना तो अर्थी नथी, वळी आ भवमां यशकीर्तिना वळी वहु मान पामवाना, पुजावाना, मनावाना, तो अर्थी नथी. वळी बहुश्रुतपणानो, तपनो, व्रतनो मद नथी, पांच

इंद्रिना ज्ञोग सुखमां रमे नहि, एटले पांच इंद्रिना तेवीस विषयथी अणइच्छाए प्रवर्ते छे, कपट रहित सरळ वृत्ति छे. वळी परज्जव देवगति पामुं, इंद्र थाउं, अथवा इंद्रनो सामानिक थाउं, अथवा चक्रवर्ति, वासुदेव, बलदेव थाउं, राजा थाउं, शेठ शाहुकारनी पदवी पामुं, अथवा पुत्र, कलत्र धनादि पामुं, एवो ज्ञाव मनमां, ज्ञानयोगी सर्वथा न राखे. वळी आठमा गुणठाणेथी जीननाम कर्म बांधुं, एम पण ज्ञानयोगी चिंतवे नहि; ए पद चोथा ठाणाथी सातमा गुणस्थानक सुधी बंधाय छे अने आठमे गुणठाणे तो जीन नाम कर्मनो बंधविच्छेद छे. वळी स्वार्थ सिद्ध विमानना देवनुं सुख पण ज्ञानयोगी इच्छे नहि अने पुन्यने ज्ञलुं जाणे नहि, ते मोक्ष सुखसाधक कहेतां ते ज्ञानयोगीश्वर मोक्षनां अव्याबाध सुखनो साधक थाय. (५)

ज्ञानसार ग्रंथे, ज्ञानाष्टकेः—

श्लोक.

निर्वाण पदमप्येकं ज्ञाव्यते यन्मुहुर्मुहुः
तदेवज्ञान मुत्कृष्टं निर्बंधो नास्ति ज्ञूयसा ॥१॥

अर्थः—निर्वाण पद कहेतां जे पदने विषे जन्म मरण नथी, वळी आधि व्याधि नथी, क्लेश, संताप, आपदा नथी एवुं एक मोक्षपद एटले कर्मनो नाश करवाथी, संपादन करेलुं निज स्वरूप अवस्थान रूप जे पदने निर्वाण पद कहीए. मप्येकं कहेतां ए निज स्वरूपने विषे

उपयोग दृष्टि स्थापी छे जेणे वळी यन्मुहुर्मुहु कहेतां वारंवार " जाव्यते कहेतां " निज स्वरूपने विषे, तन्मय एकत्वपणे, अभेद स्वरूपे परिणाम पामवा पूर्वक उपयोगे अनुभवे छे. तदेव ज्ञान कहेतां तेहीज ज्ञान, मुत्कृष्टं कहेतां उत्कृष्टामां उत्कृष्टुं निज स्वरूप अवस्थान रूप निर्वाण पद पामवाने कारण जाणवुं. पण बीजो निर्बंधो कहेतां इहां आवश्यकादि क्रियानो वा उपवासादि तपनो, वा लोचादि कष्टनो, वा पूजा प्रभावनानो, वा तीर्थ यात्रानो इत्यादि कारणनो आग्रह एटले करवापणानो, निज स्वरूप प्रगट एटले व्यक्ति भावे करवाने अर्थे, भूयसा कहेतां घणुंज, नास्ति कहेतां ए कारणोनुं इहां ज्ञानयोगीश्वर महा मुनिने कंइ प्रयोजन नथी, एक ज्ञानयोगे क्षायक भावनी लब्धि पामीने निर्वाण पद पामे छे. इहां कोइ कहेशे के तमे पण आगळ दश प्रकारनो कल्प व्यवहार प्ररूप्यो छे तेमां आवश्यकादि क्रिया ते महा मुनीनी करणी निर्वाण पद अर्थे कही छे. अने तमे इहां केम ना पाडो छो, तेनो उत्तर त्रीजा श्लोकथी करीए छीए.

स्वभाव लाभ संस्कार कारणं ज्ञान मिष्यते ॥
ध्यांध्य मात्र मतस्त्वन्यत्तथा चोक्तं महात्मना ॥३॥

अर्थः—स्वभाव लाभ कहेतां आत्माना स्वभावमां ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यादि अनंता गुण छे अने एक एक गुणना अनंता पर्याय छे, वळी गुण गुण प्रत्ये भिन्न एटले जुदो जुदो स्वभाव आत्मामां रह्यो छे. ते ज्ञाननो जाणवा

रूप, दर्शननो देखवा रूप, चारित्रनो स्थिरता रूप, वीर्य-
नो स्फुरणा शक्तिए एम अनंता गुण न्निन्न व्यक्तिरूप पिंड-
पणे आत्माने विषे अनादि संबंधे, शक्ति न्नावे अव्यक्ति-
रूप निर्लेप रह्या छे. एटले शक्ति न्नावने आवरण लागे
नहि. तेम शक्ति न्नावथी आत्मानुं कार्य पण सरे नहि,
यथा दृष्टांते, जेम काष्टमां शक्ति न्नावे अग्नि रही छे,
ते अग्नि केवी छे के जाज्वल्यमान, दाहक स्वन्नावमां
छे, परंतु ते काष्टने आपणे बाथ न्नीडीए तेथी ते का-
ष्टमां रहेली अग्नि आपणी टाढने टाळवा शक्तिमान
थाय? अर्थात् न थाय, तेम आत्माने विषे शक्ति-
न्नावे धर्म रहेलो चतुर्गति न्रमण टालवा अर्थे
न थाय, परंतु काष्टमां रहेली अग्नि प्रगट व्यक्तिन्नावे क-
रीए तो टाढनो उपद्रव तरतज टळे, तेम शक्तिन्नावे आ-
त्माने विषे ज्ञानादि गुण अव्याबाधादि पर्याय रहेला ते
ज्ञाने जाणी वीर्य फोरवीने, प्रगट करीए तो चतुर्गतिनुं
न्रमण, जन्म, जरा मरणनां दुःख ते सर्वे टळी जाय, एम
जाणवुं. ते आत्माना गुण पर्यायनी व्यक्तिनुं थवुं तेने स्व-
न्नाव लान्न कहीए अने संस्कार एटले निज स्वन्नावे धर्म
रहेलो तेने साध्यमां, एटले स्मरण चिंतवन करवामां अ-
नुन्नववामां, लय पामवामां जे कारण एटले हेतु तेज,
द्रव्य ते कहेतां ज्ञान कहेवाय छे, यतः कहेतां ए ज्ञान
सिवाय बीजुं जाणवु, जणाववुं, करवुं, कराववुं; ते सर्वे नि-
मित्त कारणमां छे, उपादान कारणनी प्राप्तिवाळाने एटले

जे पुरुषे यथा प्रवृत्ति आदे त्रण करण करी, कर्म स्थिति घटाडी, ग्रंथि भेद करी समकित प्रगट कर्युं छे, वळी वम्युं नथी, एटले चोथा समकित गुणठाणानी साबिती छे, तेने उपादान कारणनी योग्यता होय ए उपादान कारणने कार्यपणे प्रवर्त्तावतां एटले उपयोगे जाणवुं, अथवा आवश्यकादि क्रिया आदे करवुं ते सर्वे व्यवहारना न्याये, देश विरति पांचमा अने सर्व विरति छट्ठा ए बे गुणठाणे आवस्यकादि क्रिया, साध्य, साधन सापेक्षपणे परंपर कारणमां छे. माटे अमे तीहांज कल्पने निमित्त कारणमां गवेष्यो छे. ते उपादान कारणवालाने व्यवहारना न्याये, साध्य सापेक्ष योग्यताए परंपर कारणमां समजवो अने उपादान कारणनी प्राप्तिना अभावे करवुं, करावबुं सर्वे अकारणमां मात्र बुद्धिने अंध करनारुं छे. एम केवळ शब्द रणकार मात्र निष्फळ छे. अने जाणवुं, जणाववुं करवुं, कराववुं तेनी सीमा सातमा गुणठाणेथी अटकी उपरांत नथी एटले सातमा गुणठाणा सुधी सालंबन वृत्ति छे. तेमां पण ग्रंथि भेद अवसरे तो निरालंबन छे अने सातमा गुणठाणा उपर तो आठमा गुणठाणाथी केवळ निरालंबनपणुं छे तीहांथी दसमा गुणठाणा सुधी भेदज्ञान अने भेदाभेद ज्ञान ध्यानगत् छे. उपरांत अभेदज्ञाननुं साधन छे अने तेरमे गुणठाणे अभेदज्ञान जे केवळज्ञान, केवळदर्शन आदे क्षायक लब्धिनी पूर्ण प्राप्ति छे. एम महात्मा पुरुषो कहे छे. (३)

सवैया एकतीसा.

ज्ञान अनुभव भयों, सहज स्वरूप थयों
चिदानंद गूणागरो राग रस तज्यो है
निरालंबसाऊ नांही. मरणादि भय नांही
देहातित रूपातित यथाख्यात ग्रह्यो है
एही शुद्ध धर्मधारी मोहादि विनाशकारी
महामुनी वीतराग तेरमामां गयो है
अनंत चतुष्टिमां क्षायक दान लाभने
भोगोपभोग वीरीअ, अनंत स्फुरि रह्यो है (१)

अर्थः—ज्ञान कहेतां साकार उपयोगे जीव अजीवादि वस्तुनुं विभाग व्हेंचण करवारूप जाणपणुं तेने ज्ञान कहीए. अनुभव भयों कहेतां विभाग व्हेंचणतो ज्ञानथी प्रथम थइ गइ छे कही. एटले पोतानो आत्मा मन वचन अने काया ए त्रण योगथी जुदो छे एम सद्दहणा करवा पूर्वक ज्ञानयोगे श्रद्धा करी छे. वली केवो छे सिद्धनो साधर्मि, सिद्धनो बरोबरीउ छे एम गुणने उळखी चेतनने विषे चेतनपणानी बुद्धि थइ छे. अने अचेतनने विषे चेतनपणानी बुद्धि हती ते टळी छे. तीहां गुणरागीपणे प्रशस्त राग कहीए. ते रागनो प्रेर्यो थको, अंतःकरणे उंडो उतरे तिहां मनन भुवने पोताना आत्माने विषे परमात्मपदनुं आरोपण करीने स्मरण चिंतवन करे. एम करतां करतां अभ्यासे करीने मनयोगे चेतन गुणमां रमण करे. त्यारे

वाह्यरमण मनयोगने अवल्लन्न लागे अने निजस्वरूप रमण वल्लन्न लागे. तिहां मनयोग स्थंन्नी जाय त्यारे स्वरूप अनुन्नव ज्ञान प्रगटे. हवे मनयोग ज्ञानरूप खीले बंधाणो एटले अनुन्नव वृद्धि पामतां, पोतीकुं मूळ स्वरूप उपयोग-गोचर प्रत्यक्ष प्रमाणे करतळवत करे. त्यां सहज स्वरूप कहेतां. पोतानुं सहजन्नावे स्वरूप ठे. तेने वर्यो कहेतां पोते पाम्यो. ए सहज स्वरूप कवुं ठे तो चिद् कहेतां ज्ञान ते आनंद कहेतां आनंदोपत ठे. तेम आत्माना अनंता गुण ठे ते सर्वे गुणो आनंदोपेत ठे. एटले गुण गुण प्रत्ये न्निन्न व्यक्ति ठे अने व्यक्तिने विषे गुण गुणनो आनंद जुदो जुदो ठे. एम जाणवुं एटले पोतीका आत्माने विषे अनंत-न्नेदे आनंदनी प्रगटतानुं एटले क्षय उपशम न्नावनी लब्धिनुं सुख अनुन्नव अवसरे आत्मा अनुन्नवे एटले श्रेणिगते आस्वादे ठे. एवुं पोताना आत्मानुं सहज स्वरूप तेने पोते पाम्यो. गुणागरो कहेतां पाम्यो ते आत्मानुं सहज स्वरूप ज्ञानादि अनंता गुणनी खाण ठे राग कहेतां राग अने तेनो प्रतिपक्षी जे द्वेष. तेने अशुद्ध परिणति कहीए ते आत्माने विषे अनादि संबंधे ठे. रस कहेतां ते रागद्वेषरूप रस आत्माने विषे परिणतिए परिणामी जाय. ते अशुद्ध परिणतिने तज्यो है कहेतां अनुन्नव वळे पोतीकुं सहज स्वरूप पामतां ज्ञाननी, वीर्यनी ऐक्यताये न्नेद ठेद रूपे तज्यो. वली तेनी साथे मोहप-ल्लीनुं उन्मूलन कर्युं ए संसारमां उत्पन्न थवानुं एटले

जन्म मरण करवानुं वीज वळ्युं, तद्भवे मुक्ति पामवी एम निर्णय थयुं. निरालंब कहेतां इहां श्रेणि गते मन वचन अने काया आदे कोइ अचेतन पदनुं अवलंबन आतमा गुण ठाणाथी नथी. साज नांही कहेतां श्रेणि गते कदाच मरणांत उपसर्ग उदयिकता योगे आवे तोपण अव्यापकपणे दुःख विपाक नही वेदतां कायायोगे सहन करवा सामर्थ्य छे. वळी कायाना दुःख सुखनो विभागी श्रेणि गते चेतन नथी. मरणादि भय नांही कहेतां मरण आदे संसारमां भव भमतां सदा सर्वदा अनेक भयनी जीवने भिती एटले वीक छे ते कायामां चेतना इंद्रिय-द्वारे परिणाम पामी छे. तीहां सुधी जाणवी परंतु श्रेणि-गते चेतन अनंत वीर्यनो धणी छे. ते वीर्यनी स्फूरणायोगे पोतीकी चेतनाने कायाथी पलटावी पोतीका स्वरूपे अंतःकरणे अनुभव भूवने परिणमावी छे. तीहां भयनो असंभव जाणवो. देहातित रूपातित कहेतां देह एटले काया अने रूप एटले वर्ण अथवा मूर्त्तिपणुं इत्यादि जड जाति तेने अचेतन कहीए. तेथी अतित एटले रहित एवुं आत्म जनित यथाख्यात कहेतां क्षायक भावनुं पांचमुं चारित्र अरूपी,अमूर्त्ति,अचळ, अविनाशी एवुं सादि,अनंत भांगो लागे छे जेने ते, चारित्र वळी वीजुं नाम वीतराग संयम छे जेनुं, ते ग्रह्यो है कहेतां दशमा गुणठाणाना अंते एटले वारमे गुणठाणे ग्रह्युं छे जेणे, सोही कहेतां तेही पुरुष शुद्ध कहेतां शुद्ध परिणतिए एटले वीतराग परिण-

तिए, धर्मधारी कहेतां क्षायक ज्ञावे गुणने धारण करवावाला जाणवा. मोहादि विनाशकारी कहेतां मोहनो तो दशमा गुणठाणाना अंते पूर्वें ध्वंस कर्यो कह्यो ठे अने आदि शब्दथी इहां क्षिण मोह बारमा गुणठाणाना अंते ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अने अंतराय ए त्रण कर्मने संलग्न एके काळे विनाश एटले क्षय कर्यो. तीहां गुण घाति चारे कर्मनी सत्ता आत्मप्रदेशथी खुटी, ए चार कर्मनी अपेक्षाए आत्मप्रदेश नीरावरण थया महामुनि कहेतां उत्कृष्टामां उत्कृष्टा वीतराग कहेतां रागद्वेष रहित थका तेरमामां कहेतां तेरमा सयोगी केवळी गुणठाणामां गया है कहेतां अरिहंत पदमां प्रयाण कर्युं, अनंत चतुष्टयी कहेतां. केवळज्ञान, केवळदर्शन अने अनंतु वीर्य वली पुर्वें यथाख्यात चारित्र गवेष्युं ते मली अनंत चतुष्टय व्यक्तिज्ञावे प्रगट थइ ते. मां कहेतां ते अनंत चतुष्टयीमां प्राप्तिरूप तेरमुं गुणठाणुं पाम्या. तेज समये अनंता गुणनुं दान देवारूप दान लब्धि अंतराय कर्मनो क्षय होवाथी अन्नेद स्वरूपे प्रगट थइ एटले देता लेता पोते जाणवा तेनो खुलासो एम ठे के आत्माने विषे शक्तिज्ञावे तीरोज्ञावीपणे निर्लेप अनंती क्षायकलब्धि अनादि संबंधे रही हती. ते लब्धि वीर्य फोरवीने आविर्ज्ञावे प्रगट करी एटले प्रगटज्ञावे न हती. ते ठतापणे थइ अने शक्तिज्ञावे सामान्य स्वज्ञावे गुणरूप लब्धि हती. ते विशेष स्वज्ञावे परिणमावी

व्यक्तिभावे करी ते प्रगट होवारूप दानलब्धि कहीए. तेनो दाता आत्मा पोते छे अने ए लाभ पूर्वे न हतो ते लाभ आत्माने संपादन थयो. तेने लाभलब्धि कहीए.वळी ते लब्धि प्रगट थइ तेज समय अनंतागुणनो भोग,आस्वादन आत्मा करेछे. तेने भोगलब्धि कहीए. वली उपभोग ते बीजा समयथी पुनरपि पुनरपि भोगववुं एम चीरंकाललगे सादि अनंतभांगे अनंती क्षायक लब्धिने पोते भोगवे छे अने वली भोगवशे, आस्वादन करशे तेमां एक समय मात्र पण निज लब्धिनो अभोगववो एम नथी, व्याघात विघ्ननो असभंव छे. तेने उपभोग लब्धि कहीए. वीर्य कहेतां वीर्य शक्ति, अनंत स्फूरी रह्यो है- कहेतां अनंत भेदे गुण गुण प्रत्ये गुण गुणगत स्वभावे दान देवापणे लाभ होवापणे भोग करवापणे उपभोग ते पुनरपि पुनरपि भोगववापणे, वीर्य स्फूर्णपणे, एम कही ते प्रमाणे, क्षायकभावनी पांच लब्धी प्रगट थइ. वली केवळज्ञान, केवळदर्शन ए बे गुणो भेळतां क्षायक भावनी सात लब्धि तेरमुं गुणठाणुं पामतां प्रथम समये प्राप्त थइ अने बारमा गुणठाणाना प्रथम समये यथाख्यात चारित्र प्रगट कर्युं ते मेळवतां आठ अने पूर्वे चोथे वा सातमे गुणठाणे क्षायक समकित पाम्या. ते गणतां नव भेदे क्षायकलब्धि कहीए ते इहां अरिहंत पदे तेरमा गुणठाणे पूर्ण गवेषीने कही. इहां तेरमा गुणठाणानी जघन्य स्थिति अंतर मुहूर्तनी छे अने उत्कृष्टि देशे उणी एटले आठ वरसे उणी पूर्व कोडनी

जाणवी ए गुणठाणुं आयुषना छेडे छोडी योगरोध करी सैलेसिकरणज्ञावे अयोगी चउदमा गुणठाणे आवे तीहां उच्छिन्न क्रियानि वृत्ति चोथो पायो शुक्लध्याननो ध्याता थका ए गुणठाणाना अंते मनुष्य ज्ञव गतिने छोडी कार्मण वर्गणा रहित थइ पोतानी काया प्रमाण अवगाहनामांथी त्रीजो ज्ञाग पोलारनो घटाडी वे ज्ञाग प्रमाण आत्मप्रदेशनो निविडघन करी एक समय काळ माने सम श्रेणीए बीजा आकाशप्रदेसने अणफरसते लोकाग्रज्ञागे सादि अनंतज्ञागे शिद्ध थया. (१)

हवे सिद्ध ज्ञगवाननी स्तुति करे छेः—

सवैया एकतीसा.

अरुपी अविनाशी निरंजन, ज्यूं आकाशी
अनंत गुणनी राशी; अकेक परदेशे है
असंख्य प्रदेसें एम उपयोगे व्यक्ति तेम
स्वज्ञाव भोगीखेम सदा परमानंद है
अचळ अलख सिद्ध अगम विमळ बुद्ध
निराकार नविकार गुण गुणमां रहै
परगुणे नही कदा निज गुणे रहे सदा
पर्याय ते फीरे तदा द्रव्ये स्थिर सिद्धि है ॥१॥

अर्थः—अरुपी कहेतां जीहां वर्ण, रस, गंध फरस अने संस्थान नथी. ए वस्तु पुद्गळमां लाधे तेथी सिद्ध ज्ञगवान रहित, आत्मस्वरूपी छे, माटे अरूपी कहीए;

अविनासी कहेतां जेनो विनास त्रण काळमां न थाय शास्वतपणा माटे अविनाशी छे. वली सिद्ध भगवान केवा छे तो निरंजन कहेतां. कर्मरूप लेपे करीने रहित. ज्यूं आकाशी कहेतां यथा दृष्टांते जेम आकाश निर्लेप छे तद्वत, अनंत गुणनी राशी कहेतां सिद्धभगवानने विषे ज्ञान दर्शणादि गुणराशी अनंती अनंती रही छे. अकेक प्रदेशे है कहेतां. एक एक प्रदेसने विषे, असंख्य प्रदेशे एम कहेतां जेम. एक प्रदेशे अनंती गुणरासी कही, एम पोतीका आत्माना असंख्याता प्रदेशे पृथक् प्रदेश प्रदेश प्रत्ये अनंती अनंती गुणराशी रही छे. उपयोगे व्यक्ति तेम कहेतां सिद्धात्माना आत्म प्रदेशे गुणरासीनो अनंतो समुदाय कह्यो. ते समुदायमां भिन्न भिन्न पोते पोतीका गुणगत स्वभाव उपयोगे कहेतां. प्रगट भावे तेम कहेतां. तेमज छे. पण कोइ गुण अप्रगटपणे एम नथी स्वभाव कहेतां ए स्वभाव सिद्धात्मानो कह्यो, तेना भोगी कहेतां अनंती गुणरासी गवेषी तेना भोगी सिद्धभगवान सदा सर्वदा चीरंकाल लगे. सादी अनंत भांगे छे. समय समय भोग करे उपभोग करे पण एक समय मात्र अभोगववापणे एम नथी. वली खेम कहेतां पोतानी ऋद्धि पोते भोगवे एज कल्याणकारी छे. उत्तमनुं तो एज लक्षण छे. सदापरमानंदहै कहेतां निरंतर अनंती गुणराशीनी अनंती व्यक्तिनो. भोग करता छतां. सिद्ध भगवान कह्या. ते अनंती व्यक्ति आनंदोपेत सुखदाइ छे अने व्यक्ति व्यक्ति प्रत्ये

आनंद भिन्न एटले नोखो नोखो छे, तेथी अनंतो आनंद प्राप्त थाय. तेने परमनाम उत्कृष्टो आनंद कहीए. एम अनंती गुण राशीनो अनंतो आनंद गवेख्यो ते शिवाय सिद्धात्माने विषे अव्याबाध सुख प्राप्त थाय ते जुदुं छे. एम आगममां व्याख्या छे. एवुं देवचंद्रजी कृत चोवीसीना बाळाबोधने विषे सातमा सुपार्श्वजिनना स्तवनमां प्रथम गाथाना उपरना अधिकारे कह्युं छे एम अनंती गुण रासीथी परमानंद प्रगटयो. तेनुं सुख वली अनंतु अव्याबाध सुख तेनी लेहेरमै कहेतां सदा मग्नतामां चेतनत्व धर्मे सिद्ध सिल्ला उपर एक जोजनना तेवीस भाग निचे मेलीने चोवीसमा भाग उपर अलोकने अफीने सिद्ध परमात्मा स्थिर रह्या छे, अचळ कहेतां जिहां रह्या छे तीहांथी एक आकाश प्रदेश पण आघा पाछा चळायमान थाय नही माटे अचळ,अलख कहेतां सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप छद्मस्थथी जाणयुं न जाय. केवलज्ञानी पूर्ण जाणे वळी अनुभवी पुरुषो देशथी जाणे, बीजा न जाणे. अगम कहेतां सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप निहाळवाने छद्मस्थनी द्दष्टि थाके छे, गम न पहोंचे. विमळ कहेतां सिद्ध परमात्मा आवरणना अभावे सदा निर्मळ छे, बुद्ध कहेतां ज्ञायक भावे ज्ञानी छे निराकार कहेतां परिमंफळ प्रमुख संस्थान छे नहि, ते सिद्ध भगवानने आकार कहीए, निराकार छे. नविकार कहेतां विकार तो जिहां पांच इंद्रि होय तीहां विषयनो संभव आवे अने छठो नोइंद्रि जे मन होय,

तीहां विकल्पनो संभव थाय, तेने विकार कहीए. तेथी रहित सिद्ध भगवान छे, माटे नविकार गुण गुणमां रहे कहेतां सिद्ध परमात्माना ज्ञानादि अनंता गुण छे, ते गुणोमांज पोते रहे, पण बीजा जीव अजीवादि द्रव्यना गुणोमां न रहे, न रमे, परगुणे नहि कदा कहेतां, पोतानो गुण छोडीने बीजा परद्रव्यना गुणे कोइ काळे न प्रवर्त्ते एवो वस्तु स्वभावनो धर्म छे, ते कारणे निज गुणमांज रहे अने वली रमे. सदा कहेतां आंतरा रहित पोताना गुणमांज रमण करे, एटले सिद्ध भगवानने विषे गुण गुण गत, गुण गुण स्वभावे, भिन्न भिन्न रमणनी एक समयमां अनंती प्रवृत्ति थाय, ए गुण चारित्र धर्मनो छे एटले चारित्र धर्म ते पोताना गुणमांज पोते रमे; परमां न रमे, ए चारित्रना पर्याय छे, वली स्वभाव रमण परभावनी वृत्तिए चारित्रनी परिणति छे, पर्याय फीरे तदा, कहेतां सिद्ध भगवानना स्वभाव रमणने विषे, समये समये उत्पाद, व्यय, प्रवर्ते छे, तेथी गुण गुण गत गुण गुण स्वभावमां पर्यायनुं परावर्त्तन धर्म छे तेथी पूर्व पर्यायनो नाश अने अभिनव पर्यायनी उत्पत्ति, एम समय समय अभिनवपणे गुण गुण गत प्रवर्त्ते छे, ए द्रव्यनुं मूळ लक्षण छे, तेथी सदा उत्पाद व्यय परिपाटी प्रवर्त्ते; जो एम न होय तो जिनेंद्रनी देशना असत्य थाय माटे नहि असत्य यथार्थ सत्य छे. वळी अभिनवपणे पर्यायनुं प्रवर्तनपणुं न मानीए तो पुनरपि पुनरपि भोग उपभोग परमानंदपणे, सदाय सिद्ध

ज्ञगवानने विषे उपर गवेख्यो, ए वचन असत्य थाय पण नही नही यथार्थ सत्य छे. द्रव्येस्थिर सिद्धहै कहेतां जे समये उत्पाद व्यय छे, तेज समये ध्रुवता एटले स्थिरता द्रव्यने विषे जाणवी. इहां कोइ कहेशे के तमे उत्पाद व्यय पर्यायमां बोलोछो अने गुणमां गवेखोछो, तेनुं शुं कारण छे तेनो उत्तर हे ज्ञाइ सिद्धांतमां द्रव्यपर्यायनी व्याख्या छे, गुण कोइ वस्तु नथी, अमेतो अनंता पर्यायनो समुदाय मळीने जे कार्य करे तेने गुण कहीने बोलावीए छीए. परंतु पर्याय जे छे ते गुणथी मूळधर्मे ज्ञिन्न नथी, वस्तुमां पर्याय परिपाटी छे, तेथी पर्यायनीज प्रवृत्ति छे अने द्रव्य ते आधार छे, तेनी साक्षी जोवी होय तो देव-चंद्रजी कृत चोवीसीमां दशमा शीतळ जीनपतिना स्तवननी त्रीजी गाथानो अर्थ ज्ञरेलो छे त्यांथी जोइ लेजो (२)

सवैया एकतीसा.

उतकृष्ट पद सिध्ध, महा मंगळीक बुद्ध;
शानभानु विसुद्ध, परम योतीवंत है.
परम पवित्र प्यारो, ज्ञानानंद ज्ञोगी न्यारो;
अव्या बाध सुख सारो, अनादि अनंत है:
व्यापे निज द्रव्य मांही, गुणने पर्याय मांही;
असंख्य प्रदेश त्यांही, सही निज खेत है.
एहि अवगाहनाउं, एकमां अनेकताउ;
ज्ञेगी मळी ज्ञिन्न सदा, मानजो प्रणाम है. ॥३॥

अर्थः—उत्कृष्ट पद कहेतां, पदना बे भेद उपाधिजनितपद, निरुपाधिजनितपद तेमां उपाधिजनितपदना बे भेद. प्रशस्त, अप्रशस्त. प्रशस्तना बे भेद, देवेंद्र, नरेंद्र, हवे निरुपाधिजनित पदना बे भेद कहेछे, एक व्यवहार, बीजुं निश्चय. व्यवहार निरुपाधी पदना त्रण भेद समकित मूळ योग्यताए कहे छे, आचार्यपद, उपाध्यायपद अने साधुपद तेमां प्रथम आचार्यपद कह्युं छे ते पदमां गणधर पद कहीए, वा गीतार्थ कहीए, वळी बहु श्रुत कहीए, ते सर्व पदनो समावेश आचार्य पदे थाय छे, एम जाणवुं. हवे निश्चय निरुपाधि पदना त्रण भेद कहे छे, एक जघन्य, बीजो मध्यम अने त्रीजो उत्कृष्ट, जघन्य निश्चय निरुपाधिपदतो क्षीणमोह बारमा गुणठाणे वीतराग भावे, रागद्वेष अशुद्ध परिणतिनो वळी मोहनो उपाधि जाणी ध्वंस करीने यथा ख्यात चारित्र पाम्या ते पहेलो भेद कह्यो, हवे बीजो भेद मध्यम निश्चय निरुपाधिपदतो तेरमा चौदमा गुणठाणे वर्त्तता, एवा परम पूज्यने अरिहंत पद कहीए. इहां चौघाति कर्मनी उपाधि आत्म प्रदेशथी टळी छे अने अघाति कर्मनी रही छे माटे मध्यम कह्या, हवे त्रीजो भेद निश्चय निरुपाधि उत्कृष्टपद, तो अयोगी चौदमा गुणठाणाना अंते एटले छेल्ला समये चौअघाति कर्मोनी उपाधि आत्मप्रदेशे हती ते टळी; कार्मण वर्गणा रहित आत्मप्रदेश थया, इहां उपाधिनो अभाव थयो, माटे उत्कृष्ट निश्चय निरुपाधिक पदने सिद्ध भगवान कहीए.

महा मंगलिक, कहेतां सर्व मंगलीकमां मंगलीक, जीहां अपमंगलीकनो संन्नव त्रण काळमां आवे नहि, माटे, महामंगलिक कहेतां कल्याणकारी, उत्कृष्टमंगलिक ते निजात्म शुद्ध स्वरूप;निश्चळ अवस्थानरूप सिद्धनेज कहीए, बुद्ध कहेतां सिद्धन्नगवान बे ते अविनाशी पंमित बे. एटले पंमित बे ते ज्ञानी बे, पण न्नणीने न्नुले तेने विनाशी पंमित कहीए अने सिद्धन्नगवान तो केवळ ज्ञानरूप बोध पाम्या बे, ते बोध त्रण काळमां जाय नही, तेम न्यूनता पण पामे नहि, माटे अविनाशी पंमित कह्या ज्ञान न्नानुविशुद्ध कहेतां केवळ ज्ञानरूप सूर्य बे ते विशुद्ध कहेतां घणो उद्योत प्रकाश कर्त्ता बे, कारण के जे सूर्यनी ज्योति बे, ते जम ज्योति बे एटले रूपीपदार्थने देखामवा वाली बे अने जे केवळ ज्ञाननी ज्योति बे. ते आत्मजनित अरूपी ज्ञान ज्योति बे, वळी सूर्यनी जमज्योति बे ते तेनी मर्यादा पूर्वक प्रकाश करे अधिक न करे अने केवळ ज्ञाननी ज्योति बे ते लोकमांने अलोकमां; वळी लोकमां रहेला जीव अजीवादि रूपी अरूपी सर्व द्रव्यने विषे, वळी अतित अनागतने वर्त्तमान ए त्रणे काळनी वर्त्तनाने विषे, उत्पाद व्यय अने ध्रुव संयुक्त एक समये जाणे, कोइ जग्योए ज्ञान ज्योति खळाय नहि वळी सूर्य प्रकाश करे ते पोतानां कीरण वीस्तारीने करे बे अने सिद्धात्माने तो केवळ ज्ञानरूप अरीसो चारे तरफ आवरणना अन्नावे, निर्मळ थयो बे. तेमां उपर कही ते प्रमाणे त्रणे काळनी, पंचास्ति

कायनी वर्त्तना प्रतिविंवीत थाय अने तेमां पोते लेपाय पण नहि, एवी केवळ ज्ञाननी अद्भूत ज्योति तेने परम ज्योतिवंत है कहेतां उत्कृष्टी ज्योतिवंत कहीए, परम पवित्र कहेतां सिद्धात्मानां आत्म प्रदेशे अन्य पदार्थनो एक परमाणु मात्र पण उपाधि संयोग संवंध रह्यो नथी; पोते पोताना शुद्ध स्वभावे तद्रूप छे, माटे उत्कृष्टा पवित्र सिद्धभगवानने कहीए. वली प्यारो कहेतां समकिती, देशविरति अने सर्व विरति जीवोने गुणरागीपणे, गुणने जाणी ओलखीने गुण प्रगट करवानी बुद्धिए सिद्धभगवाननी स्तुति करतां, गुण गातां भावना भावतां वळी ध्यानगत समरण चिंतवन करतां थकां जे सुलभ बोधी जीवो छे ते प्रमोद पामे आनंदीत थाय माटे सिद्धात्माने प्यारोज कहीए; ज्ञानानंद भोगी न्यारो कहेतां उपर सुलभ बोधी जीवोने सिद्धभगवान प्यारा कह्या, पण सिद्धात्मा तो ज्ञानानंद परमानंद, भोगी सवसें न्यारा छे. अव्यावाध सुखसारो कहेतां सम्यक् ज्ञानीने अनुमोदवा योग्य, रुचि करवा योग्य, अभिलाषा करवा योग्य, एवुं जे अव्यावाध सुख, सिद्धभगवानने प्रगट थयुं छे, तेमां एक अंशे पण ओछाश रही नथी, तेम सुखनी पाछळ वाधा पीडा अचानक आवशे तेवो भय पण रह्यो नथी, माटे निर्भय थका अवाधितपणे अनंतु सुख स्वाधिनपणानुं भोगवे छे, तेथी ज्ञानीए अव्यावाध सुखने सारो कह्यो छे अने सर्वार्थ सिद्ध विमानवासी देवना इंद्रीजनित पुद्गलीक सुखनी

अभिलाषा करवी, ज्ञानीए निवारी छे; अव्याबाध सुख सारो, एटले आनंदोपेत अतिंद्रियजनित अव्याबाध सुख छे, माटे सारो कह्यो, ज्ञानीपुरुषोने भोग करवाने, अनुमोदवाने योग्य छे. अनादि अनंत है कहेतां मोक्षगतिने विषे सिद्धभगवान अव्याबाध सुख भोगवे छे, ते सुख अनादि संबंधे छे अने अनंत है कहेतां अंत एटले कोइकाळे नाश थावानो नथी, इहां कोइ कहेशे के सिद्ध थाय तेनी तो आदि छे अने तमे तो अनादि संबंधे अव्याबाध सुख कहो छो, तेनो उत्तर–हे भाइ सिद्ध थाय तेनी तो आदि छे, पण काळनी आदि नथी, वळी सिद्धगतिनी पण आदि नथी के अमुककाळे अमुक पुरुष प्रथम सिद्ध थया ते आदि कहीए, माटे सिद्धगति आश्रीने अनादि अनंत भांगो लागे, ते कह्यो. व्यापे निज द्रव्यमांही कहेतां जीहां सिद्धभगवान रह्या छे तीहां धर्मास्तिकाय रह्यो छे, अधर्मास्तिकाय रह्यो छे, आकाशास्तिकाय रह्यो छे, पुद्गलास्तिकाय पण अनंता द्रव्य रह्या छे अने जीवास्तिकाय जे पोताथी अन्य बीजा जीवो ते पण सिद्धसंसारी अनंता रह्या छे. एम पंचास्तिकाय एक खेत्र अवगाहीने भेळा रह्या छे, तो पण सिध्धभगवान एक पोतीका द्रव्यमांही व्यापकपणुं करी परिणमी रह्या छे, अन्य द्रव्यमां व्यापक परिणमन कोइकाळे थाय नहि. गुणपर्याय मांही, कहेतां एक पोताना द्रव्यना अनंता गुण छे, अने एक एक गुणना अनंतापर्याय छे ते गुणपर्याय पोतपोतीका गुण गुणगत,

पर्याय पर्यायगत, एम व्यापकपणुं परिणमनपणुं सिध्ध भगवानने विषे छे, एटले एक गुण बीजा गुणमां न व्यापे, एक पर्याय बीजा पर्यायमां न व्यापे, ने परिणमे, वळी अन्य द्रव्यना गुणपर्यायमां पण न व्यापे न परिणमे त्यारे कीहां गुणपर्याय परिणमे ते कहे छे, असंख्य प्रदेश त्यांही कहेतां सिध्धात्माना असंख्याता प्रदेश छे त्यांही कहेतां ते प्रदेशोने विषे एक एक प्रदेश प्रदेश प्रत्ये, अनंता गुण अने अनंता पर्यायनुं व्यापकपणुं परिणमनपणुं छे, अन्य बीजा जीव अजीवादि द्रव्यना प्रदेशमां न व्यापे न परिणमे, सही कहेतां निश्चय निज कहेतां पोताना गुणपर्यायने रहेवानुं, वसवानुं, प्रदेशने विषे व्याकपणुं परिणमनपणुं कह्युं, तेज खेत है के० सिद्ध भगवानने स्वक्षेत्र जाणवुं एही अवगाहनाउ कहेतां जे सिद्धात्माना असंख्याता प्रदेशनो निविडघन अयोगी चौदमा गुणठाणाना अंत समय बनेलो, एज सिद्धात्मानी अवगाहना कहीए, ए प्रमाणे एटले जेम एक सिद्धनुं कह्युं तेम अनंतासिद्धनुं स्वक्षेत्र तेहीज अनंती अवगाहनाउ कहीए एटले अवगाहना कहीए ते सिद्ध अने सिद्ध कहीए ते अवगाहना जाणवी, एकमां अनेकताउ कहेतां जीहां एक सिद्धनी अवगाहना छे तीहां अनेक सिद्धनी अवगाहनाउ रही छे. तेमां कोइनी उभी छे कोइनी बेठी छे. कोइनी चित्ती छे. कोइनी पासाभर छे. कोइनी पद्मासने छे. कोइनी विकटासने छे. वली कोइनी लघु छे. को-

ढनी गुरु छे. लघु छे ते बत्रीस आंगलनी छे अने गुरु छे ते त्रणसोनेतेत्रीस धनुष्यने बत्रीस आंगळनी छे अने मध्यस्थ अवगाहनाउं असंख्यात भेदे. न्यूनाधिकपणे सिद्धमां रही छे. एटले चौदमा अयोगी गुणठाणे सैलेसीकरण अवसरे जेवी रीते पोतानी कायानी स्थिति हती तेवी रीते सिध्धमां अवगाहनाउं उपर अलोकने अडीने रही छे. जे पांचसो धनुष्यनी कायावाला सिध्ध थया अने उभा थका मोक्षे गया. तेमनी गुरु अवगाहना जाणवी अने बे हाथनी कायावाला उभा थका मोक्षे गया, तेमनी बत्रीस आंगळनी सिध्धमां छे. ते लघु जाणवी अने पांचसो धनुषथी मोटी काया अने बे हाथथी नानी कायावालानी सिध्धी प्राये थती नथी, भेगी मली कहेतां. जेम उपर कही तेम सिद्ध भगवाननी अवगाहनाओ भेगी एटले एकमां अनेक भेगी मळेली कही. भिन्न सदा कहेतां, तोपण सदा सर्वदा भिन्न छे यथा द्रष्टांते जेम दीवानी मांहेली कोरे अनेक दीवेटनी वाटो करीने भेगी मुकीये तेनी ज्योति सर्व वाटनी एक देखाय, पण वाट वाटनी ज्योति भिन्न छे. जे ज्योति छे ते पोत पोतानी वाटना सबंधे छे. अन्य वाटना सबंधे नथी. एक वाट उपाडीए ते वखते ते वाटनी ज्योति नोखी भिन्न पडे. परंतु भेगी हती तोपण भिन्न हती ए दृष्टांते सिध्ध भगवाननी अनेक अवगाहनाओ भेगी मली छे, तोपण सदा नीज द्रव्यना सबंधी पणे भिन्न छे. ए सिध्ध भगवाननी अवगाहनाओनी

संख्या जिन वचने सिध्धांत साद्दीये पांचमा अनंते कही छे ते सर्व अवगाहना मय अनंता सिध्ध भगवान प्रत्ये आ ग्रंथनी पूर्णता अवसरे ग्रंथकर्त्ता कहे छे के मानजो प्रणाम है, कहेतां पंच अंग एटले बे हाथ बे पग अने मस्तक. ए पंच अंगने नम्रता पूर्वक विनयपूर्वक बहुमान पूर्वक, भक्तिपूर्वक, प्रमोदपूर्वक, उत्साहपूर्वक, गुणरागी-पणे पर आकंक्षा दूषणे वर्जित थइने अंतरदृष्टि योगे, त्रि-करण जोगे प्रणाम है कहेतां मारो नमस्कार छे. ते हे सिध्ध परमात्मा मानजो. कहेतां स्वीकारजो, मारी विनति अवधारजो:(२)

ग्रंथनी पूर्णताना दुहा.

भेद ज्ञानविण भविकने, नहीं वस्तु ओळखाण ॥
वीपरित श्रद्धा त्यां लगे, समजो चतुरसुजाण ॥ १ ॥
भेदज्ञानथी भावीए. जड चेतन दुफार ॥
समकित शुद्ध समाचरे, निज वस्तु निरधार. ॥ २ ॥
तेहीज सिद्ध स्वरुप छे, तेहीज शीव सुख कंद ॥
ध्यावो गावो भविजना, एथी टळे भवफंद ॥ ३ ॥
निज सबळे सुख संपत्ति, अबळे दुःख अनंत ॥
रागद्वेष अबळी दशा, तजतां सिद्ध महंत. ॥ ४ ॥
शिवपद सोही ज्ञानमां, ध्यान ज्ञाननी मांही; ॥
ध्याता ध्येयनी एक्यता, पूरण साधन त्यांही ॥ ५ ॥
धर्म प्रवर्त्तन सार ए, ग्रंथ रच्यो गुणखाण; ॥
ज्ञानी वचना लंबने, पूरण कीयो परमाण ॥ ६ ॥

व्यवहार विशेषे कह्यो, शुद्धाशुद्ध विचार ॥
समकित शुद्ध व्यवहार छे, मिथ्या अशुद्ध आचार ॥७॥
निश्चय नय वस्तु रूपे, सूक्ष्मज्ञान स्वभाव ॥
अनुभव जोगे वर्णव्यो, दाख्यो निज सद्भाव ॥ ८ ॥
गुरु गुणगातां ज्ञाननी भावी भावना शुद्ध ॥
टाळी अज्ञान भावना, कृत्रिम अनुभवी बुद्ध ॥ ९ ॥
ग्रंथज्ञान गंगाजळे, टाळो मळ मिथ्यात ॥
लहो समकित मूल धर्मनुं, शीव साधन सुखशात ॥१०॥
बाधक भाव विछेदीने, ग्रहो ए रुप अबाध ॥
ते साधन शीव पदतणुं, साधे सोही साध्य ॥ ११ ॥
ग्रंथ सुगुण मणि हार छे, अमुलख वस्तु अनुप ॥
संयम श्री शणगार छे, तस कंत मुनिवर भूप ॥ १२ ॥
ग्रंथ ज्ञान अमृत रसे, जलभर सागर जेम ॥
गंभीर ऊंडो अर्थ छे, निज गत उपयोगे खेम ॥ १३ ॥
टाळो परगत चेतना, स्वगत अनुभव नाव ॥
तारे भव दुःख सागरूं, सिध्ध निरंजन राव ॥ १४ ॥
ग्रंथ सुगुण सुरतरू, वंछीत दाता सार ॥
आपे शाश्वत सुखने, तजो नहि क्षण वार ॥ १५ ॥
ग्रंथ सोही निमित्त छे, सापेक्ष सिध्धि लहंत ॥
भावग्रंथ सो आतमा, शोधो चतुर महंत ॥ १६ ॥
भावग्रंथ ए ज्ञान निधि, मेरु अडग समकित ॥
चरण रमण थीर सैलज्युं, तप रवि तमहर नीत ॥ १७ ॥
सोही ग्रंथ शीव रूप हे, ध्रू ज्यु अविचळ रूप ॥

प्यारो पंक्ति लोकने, न पमे सो नव कूप ॥ १८ ॥
स्वपर विजागे संपजे, खेले अनुनव योग ॥
ते धर्म वर्त्तना सद्दही, पामे शीववधु जोग ॥ १९ ॥
सिध्ध वधु एम पामीए, सादि अनंतो काळ ॥
नीरविघ्न सुख शाश्वतां, सो मुज काज अचाल ॥ २० ॥
आज मनोरथ सवी फळया, नाव अध्यातम पाप ॥
ज्ञान शीतल करी सो रच्यो, ग्रंथ गुरु आज्ञाय ॥ २१ ॥

संपूर्ण.

श्री गुरुभ्यो नमः

अथ क्षायक नावतत्व विलास ग्रंथ लीख्यते

॥ दुहा. ॥

॥ ढाळ ॥ द्वेष न धरीये लालन द्वेष न धरीए ए देशी ॥

क्षायक समकित नात्र वखाणु ॥ एहथी पामीयें मुक्तिनुं टाणुं नविका ॥ मुक्तिनुं ॥ सात प्रकृति क्षय इहां थावे ॥ ते फरी कदीय न सन्मुख आवे नविका ॥सन्मुख०॥ ॥ १ ॥ प्राप्ति चोथे वा सातमे ठाणे ॥ वेदक क्षायक वचन प्रमाणे नविका ॥ वचन० ॥ क्षायक समकित दू नेदे नाख्युं ॥ सदगुरु वचन में घटमां राख्युं नविका ॥ घटमां० ॥ २ ॥ आवता नवनुं पहेलुं आयुष्य वांध्युं ॥ लहे समकित पछे श्रेणि न साध्युं नविका ॥ श्रेणीन० ॥ खंम श्रेणी क्षायक नेद ए पहेलो ॥ उत्कृष्ट चार नवे सीव लहे वहेलो नविका ॥सीव०॥३॥ संसार स्थिति काळ शास्त्रे ना-

ख्यो ॥ तेत्रीस सागर फाफेरो दाख्यो ज्नविका ॥फाफेरो०॥ उत्कृष्टो संसार एटलो रहेवे ॥ जघन्य त्रीजे ज्नवे शीवसुख लेवे ज्नविका ॥ शीव० ॥ ४ ॥ अखंम श्रेणी क्षायक ज्नेद हवे बीजे ॥ क्षपक श्रेणी मांफी तदज्नवे सीजे ज्नविका ॥ तदज्नवे० ॥ एम समकित दुज्नेद क्षायक ॥ नरनारी जे लहे ते शीवलायक ज्नविका ॥ ते सीव० ॥ ५ ॥ क्षय उपसमज्नावे ध्रुवता पामे ॥ ज्ञान दर्शणने लब्धि दानादि नामे ज्नविका ॥ दानादि० ॥ आत्म असंख्य प्रदेश समाधि ॥ सात प्रकृति टळी मोहनी उपाधि ज्नविका ॥ मोहनी० ॥ ६ ॥ अखंम श्रेणी क्षायक चारित्र पामे ॥ ते बीजी ढाळे यथाख्यात सोनामे ज्नविका ॥ ख्यातसो० ते ज्नाव शुद्ध उपयोग ज्नावुं ॥ ज्ञान शीतल करी मोह खपावुं ज्नविका ॥ मोह० ॥ ७ ॥ इति प्रथम ढाळ कही.

॥ ढाळ बीजी ॥

राज पधारो मेरे मंदिर ॥ ए देशी ॥

क्षायक चारित्रपद वरवाने ॥ उपयोगी अप्रमत्तेजी ॥ अखंम श्रेणी क्षायक समकिती ॥ आवे नही प्रमत्ते ॥ क्षपक श्रेणी मांफे जी ॥ अंतर अपूरव ठांण ॥ उपाधि मळ ठांफेजी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अपूर्व ठाणे अपुर्वज्ञानी ॥ अपुरव खेल खेलेजी ॥ अपुर्व अदूज्नुत मूलरूपे ॥ अकृत अनुज्नवरेले ॥ क्षपक० ॥ २ ॥ प्रथकृत्व प्रथकृत्व दूज्नेदे ॥ व्हेंची स्वपर जिन्नजी ॥ जीवने पुदूगल बेहु अलगा ॥ तिहां चेतन निज गुण लिन्न ॥ क्षपक० ॥ ३ ॥ अनंतगुण

निज द्रव्ये गवेषे ॥ गवेषे पज्जव अनंताजी ॥ भेदज्ञाने प्रथक् स्वरूपे ॥ क्षय उपशम शुभसंता ॥ क्षपक० ॥ ४ ॥ शुक्लध्यान तप पहेलो पायो ॥ ध्यातां अग्नि अति ज्वाळाजी ॥ मोहपल्ली इहां भस्मी थावे ॥ भेद छेद अभेदी लाला ॥ क्षपक० ॥ ५ ॥ क्षय उपशम छेद इहां मोहनीनो ॥ अशुद्ध परिणति छेदीजी ॥ रागद्वेष ए विभाव चेतना ॥ हुइ शुद्ध चेतना समवेदी ॥ क्षपक श्रेणी० ॥ ६ ॥ मिश्र भाव इहां नही लाधे ॥ लाधे शुध्ध परिणतिजि ॥ गुण पर्याय अभिन्न निज द्रव्ये ॥ ऐक्यता उपयोग वृत्ति ॥ क्षपक० ॥ ७ ॥ यथाख्यात इहां चारित्र पामे ॥ दशमा ठाणना अंतेजी ॥ शुक्ल ध्यान वीजो पायो ध्याता ॥ वितराग वारमे एकंते ॥ क्षपक० ॥ ८ ॥ पर अनुभव इहां नही लाधे ॥ समभीरुढ नय साधेजी ॥ घाती कर्म त्रण क्षय इहां पामे ॥ केवल नाण दर्शण लाधे ॥ क्षपक० ॥ ए ॥ क्षपक श्रेणी उत्तरोत्तर वृद्धि ॥ ज्ञान अनुभवयोगजी ॥ कृत्रीम पक्ष इहां नही लाधे ॥ ज्ञान शीतल समाधि संयोग ॥ क्षपक० ॥ १० ॥ ढाल वीजी संपुर्ण ॥

॥ दुहा ॥

ढाळ त्रीजी ॥ राग सारंग हो धन्ना ए देशी ॥ केवळ लहो ठाण तेरमेरे मीता ॥ ज्ञान दर्शण अनंत ॥ घाती कर्म अभावथीरे मिता ॥ निर्मळ उपयोगवंतरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो सेवोने ॥ ए गुणो प्रगटे घटमांरे मिता ॥ उपयोग विशेष सामान्यरे रंगीला मिता ॥ ए

गुणो० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विशेष उपयोग ज्ञाननोरे मिता ॥ पहेले समय लहंत ॥ बीजे समय दर्शणनोरे मिता ॥ उपयोग सामान्य कहंत रे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ २ ॥ विशेष ते साकार ज्ञेदतारे मिता ॥ सामान्य सो निराकार ॥ अज्ञेद ग्राहक ज्ञाषीयोरे मिता ॥ ए सिद्धांतीक पक्ष साररे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ३ ॥ नय वादे ज्ञिन्न न मानीयोर मिता॥ एक विशेषोपयोग ॥ सामान्य विशेषमां ज्ञव्योरे मिता ॥ न समय अंतर जोगरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ४ ॥ एम ज्ञिन्न मत ए बेहुनोरे मिता ॥ जिन ज्ञद्र गणी सिद्धसेन ॥केवळी गम्य सो तत्व एरे मिता ॥ सिद्धसेन विसारद नय ज्ञानरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ५ ॥ हवे ज्ञान अनंतु दाखवुंरे मिता ॥ सवे एक समय प्रत्यक्ष ॥ आच्छादन नही एहनेरे मिता ॥ जाणे जिव अजिव समक्षरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ६ ॥ तेमां रूपी अरूपी जाणतारे मिता ॥ जाणे गति हेतु द्रव्य॥ स्थिति हेतु द्रव्य जाणतारे मिता॥ जाणे अवकाश हेतु द्रव्यरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ७ ॥ नवी वस्तुने जुनी करेरे मिता॥ तेहना हेतुनो जाण॥ एम खट द्रव्यने जाणतारे मिता ॥ उपजे विणसे ध्रुव जाणरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ८ ॥ नीज नीज वृत्ति सवे करेरे मिता ॥ ए अगुरू लघु पर्याय ॥ समे समे हांणी वृद्धि लहेरे मिता ॥ षट् षट् वार कहायरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ए ॥ अतित काळ अनंतो गयोरे

मिता ॥ अनागत काळ अनंत ॥ एक समय वर्त्तमाननोरे मिता ॥ हुइ होसे सवि जाणंतरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ १० ॥ मति यादि ज्ञान तणी प्रभारे मिता ॥ एहमां सर्व समाय ॥ रवि प्रभाथी अधिक नहीरे मिता ॥ तारा नक्षत्र समुदायरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ११ ॥ केवळज्ञान गुण मोटकोर मिता ॥ केवळ दर्शण साथ ॥ जाणे देखे एम कीजियेरे मिता ॥ ए गुण लाधे तो हुं न अनाथरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ १२ ॥ क्षायक लब्धि भेद चउ कह्यारे मिता ॥ आ ढाळमां कह्या दोय ॥ पण लब्धि बाकी रहीरे मिता ॥ ते आंगे वर्णवीशुं सोयरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो सेवो० ॥ १३ ॥ अरूपी वस्तुने जाणवीरे मिता ॥ ते न लहे द्रव्य अजाण ॥ तिणे द्रव्य षट् दाखशुंरे मिता ॥ गुण पर्याय युक्त वखाणरे रंगीला मिता॥ ए गुणो० ॥ १४ ॥ धर्म अधर्म आकाशनेरे मिता ॥ कालने पुद्गल जिव ॥ अनुक्रमे विस्तारशुंरे मिता ॥ ज्ञान शीतल लही थाओ सीवरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ १५ ॥ ढाल त्रीजी संपुर्ण ॥

॥ ढाळ चोथी ॥

॥ भवी तुमे वंदोरे सुरीश्वर गच्छराया ए देशी ॥

भवी तुमे करजोरे द्रव्याणुं योगज्ञान मोटुं ॥ निजात्म जाणयावीण चरण आराधे ॥ ते सवी जाणो छोटुं ॥ भवी० ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ द्रव्यस्वरूप तेहने कहीए॥

अखंड अविनाशी त्रण काळ ॥ वस्तुता जेहमां रहीरे ॥ ते द्रव्य नित्य निहाळ ॥ नवी तुमे० ॥ २ ॥ गुण पर्याय नाजन ते द्रव्य ॥ गुण स्वनावे धर्म ॥ निन्न अनिन्न त्रिविध सदाए ॥ एक पदारथ मर्म ॥ नवी० ॥ ३ ॥ उपजे विणसे थिर रहे ए ॥ एसो वस्तु वखाण ॥ उपजे विणसे पर्याय धर्मे ॥ थिर द्रव्य प्रमाण ॥ नवी० ॥ ४ ॥ अवगाहना सवे द्रव्यनी ए ॥ गुणपर्याय प्रदेश ॥ तेहीज सत्ता द्रव्यनी दाखी ॥ अविनासी रूपी बेस ॥ नवी० ॥ ५ ॥ द्रव्येद्रव्य ते न मीले कहीये ॥ अनादि असहाइ ॥ निज सत्तामय द्रव्य रहेवे ॥ पर सत्ताये नही कदाइ ॥ नवी० ॥ ६ ॥ द्रव्यरूप बती कार्यनी ए ॥ तिरोनाव शक्ति सदाय ॥ आविरनावे प्रगट लहीये ॥ व्यक्ति गुणपर्याय ॥ नवी० ॥ ७ ॥ कार्यकारण निज द्रव्य एही ॥ पर अकारण अकार्य ॥ परनेकारण एकान्ते माने ॥ ते जीव सो अनार्य ॥ नवी० ॥ ८ ॥ बतीपणे स्व द्रव्य कहीये ॥ अबतीपणे पर द्रव्य ॥ एम अस्ति सो निजपर बेहुनी ॥ रही बे सर्वे द्रव्य ॥ नवी० ॥ ए ॥ द्रव्यत्रिकाळे नित्य कहीये ॥ पर्याये अनित्य ॥ नित्य अनित्य एक वस्तुमां ॥ नाषे ज्ञानी त्रिनित ॥ नवी० ॥ १० ॥ स्व द्रव्य स्व खेत्र स्व काळ ॥ स्वनाव सहित चउ सत्य ॥ परद्रव्य परखेत्र परकाल ॥ पर नाव चउ ए असत्य ॥ नवी० ॥ ११ ॥ द्रव्य पदारथ एक कहीये ॥ गुणपर्याय अनेक ॥ अनेक गुणपर्यायमां एक द्रव्य ॥ समजो ज्ञान विवेक ॥ नवी० ॥१२ ॥ शक्तिनावने

कारण मानो ॥ व्यक्ति ते कार्य जाणो ॥ शक्तिनी व्यक्ति जेहथी लहीये ॥ ते साधन परमाणो ॥ ज्ञवी० ॥ १३ ॥ पर्यायास्तिक नयज्ञेद स्वज्ञावे ॥ द्रव्यास्तिक अज्ञेद ॥ उज्ञयधर्मी द्रव्य दाख्यो ॥ अविरोधी अच्छेद ॥ ज्ञवी० ॥ १४ ॥ एम स्याद्वाद लक्षणमयी ए द्रव्यसत्ता गुणखाण ॥ इत्यादि ज्ञेद घणा विस्तारे ॥ वस्तु सत्ता उलखाण ॥ ज्ञवी० ॥ १५ ॥ द्रव्य षट्ज्ञेदे जाणी लहीए ॥ हेय उपादेय बुद्धि ॥ हेय जाणी पंच अजीवने छंडी ॥ ग्रहीए एक निज जीव शुद्धि ॥ ज्ञवी० ॥ १६ ॥ हेय उपादेय बुद्धि घटमां ॥ तेही ज आतमज्ञानी ॥ ज्ञानशीतल उपयोगे प्रकाशे ॥ द्रव्य-स्वरूप थिर ध्यानी ॥ ज्ञवी० ॥ १७ ॥ ढाल चोथी संपुर्ण ॥

॥ ढाल पांचमी. ॥

नदी जुमना के तीर उडे दोय पंखीयां—ए देशी,

ज्ञाखुं धर्मास्तिकाय ज्ञवी तुमे सांज्ञलो ॥ समजो द्रव्य वखाण मिथ्या टले आंवळो ॥ चेतन बुद्धि कायामां राखीने व्रत धरो ॥ न लहो सो समकित कर्म बांधो खरो ॥ १ ॥ ते कारण द्रव्य जाणी नीज जीव जाणजो ॥ पामशो सम्यक् ज्ञान शीव लही माणजो ॥ धर्मास्तिकाय ग्रंथे गीतार्थे वर्णव्यो ॥ चउगुण वीस्तारमां जोइ अनुज्ञव्यो ॥ २ ॥ अरूपी गुण पहेलो वर्ण अज्ञावथी ॥ रसगंधने फरसे संस्थान को नथी ॥ संस्थानने अज्ञावे अमुर्त्ती लीजीए ॥ वर्ण विना नही रूप अरूपी कीजीए ॥ ३ ॥ प्रथम

गुण थयो सिद्ध बीजो अचेतनए ॥ जाण गुण अन्नावे नही ते चेतनए अक्रिय गुण त्रीजो करणी करे नही ॥ इहां कोइ करे तर्क साज जीवादि तही ॥ ४ ॥ तेहने उत्तर दाखुं ए स्वन्नाव करणी ॥ जलतारे बुरु तेले वेहेवारे नवरणी ॥ स्वन्नाव करणी एक चउ द्रव्ये जाणीए ॥ सिद्ध परमातममांही स्वन्नावे वखाणीए ॥ ५ ॥ पुद्गल संसारी जीव बे द्रव्यमां दाखवुं ॥ स्वन्नावने विन्नाव बे करणी न्नाखवुं ॥ विन्नाव करणी एक मीथ्यात्वी जीवमां ॥ मन तन वचन प्रवृत्ति न्नव्यने अन्नव्यमां ॥ ६ ॥ चोथा ठाणथी उपयोगी चौदमा अंत ज्युं ॥ स्वन्नावने विन्नाव बे करणी संत ज्युं ॥ स्वन्नावे शुद्धातम अनुन्नव करणी ॥ विन्नावे उदयिक न्नाव सवे नीरजरणी ॥ ७ ॥ पुद्गलमां दोय न्नेद करणीना दाखसुं ॥ एक परमाणुं मांही स्वन्नावे न्नाखसुं ॥ खंध मीले ने विखरे ए विन्नाव करणी ॥ योग्यतावंत ए द्रव्य ग्रंथे एम वरणी ॥ ८ ॥ स्वन्नावे जे करणी ते निश्चय जाणीये ॥ विन्नाव करणी बाह्य व्यवहारे पीछाणीये ॥ व्यवहारे नहि करणी धर्मास्तिकायमां ॥ तेथी अक्रिय कह्युं हेतु त्रीजा गुणमां ॥ ए ॥ गुण त्रीजो थयो सिद्ध चोथाने पीछाणीए ॥ जीव तथा पुद्गल बेहुने गति हेतु जाणीए ॥ मीन चाले जळ मांही चाले नही अन्य कां ॥ जीवने पुद्गल चाले धर्मास्ति थकां ॥ १० ॥ धर्मास्तिने अन्नावे गति नहि संन्नवे ॥ जीवने पुद्गल नाहि जइ अलोके ठवे ॥ गति करवा शक्ति छे जीव पुद्गले ॥ आकास आपे मार्ग

वीण हेतु न चले ॥ ११ ॥ कारणने अन्नावे सो कार्य न संन्नवे ॥ चक्षु छते काळी राते देखे अनुन्नवे ॥ एम समजी तुमे न्नवी कारणने मानजो ॥ निमित्तने उपादान संन्नवे सो जाणजो ॥ १२ ॥ गुण चोथो थयो सिद्ध धर्मास्तिकायनो ॥ हवे करुं विस्तार चार पर्यायनो ॥ खंध एक द्रव्य पर्याय रह्यो लोकाकासमां ॥ उर्ध्व अधो तिर्छादी ते कल्पी ए देशमां ॥ १३ ॥ ए वीजो त्रीजो प्रदेश कहीया असंख्यए ॥ लोकाकास प्रमाणे प्ररुप्या जीनंदए ॥ अगुरु लघु पर्याय चोथो परिणतिए ॥ हानी वृद्धि वार गुण नीवृत्तिए ॥१४॥ ए चार पर्याय गुण चार दाखीया ॥ उपगारी गुरु मुखे सुण्या एम न्नाषीया ॥ ज्ञान शीतल करी न्नविजन द्रव्यने जाणजो ॥ थीर मने करजो विचार हठ नहि ताणजो ॥ १५ ॥ ढाल पांचमी संपूर्ण ॥

॥ ढाळ छठी ॥

देखो गति दैवनीरे—ए देशी.

अजीव अरूपी हवे वर्णवुंरे ॥ त्रण द्रव्य व्याख्या आ ढाळ॥ अधर्मास्ति आकाशास्तिरे॥ कहुं वली त्रीजो काल ॥ सोन्नागीजन सांन्नलोरे ॥ द्रव्याणुं जोग निश्चय ज्ञान अनुन्नवसुं मील्योर ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ प्रत्येके त्रण द्रव्यनारे ॥ गुणपर्याय चार चार ॥ त्रण गुण पूरवपरेरे ॥ धर्मास्ति ए विचार ॥ सोन्नागी० ॥ २ ॥ अरूपी अचेतन वीजोर ॥ अक्रीय त्रीजो एम ॥ विस्तारे वर्णव कर्योरे ॥

तेम न्नावो करी प्रेम ॥ सोन्नागी० ॥ ३ ॥ एक गुणे न्निन्न न्नाखशुंरे ॥ अनुक्रमे त्रण द्रव्य ॥ अधर्म स्थिती हेतु बेरे॥ ते जाणीये टाली गर्व ॥ सोन्नागी० ॥ ४ ॥ जीव पुद्गलने ते दीयेरे ॥ वीसामो मनोहार ॥ वाटे पंथी चालतारे ॥ ग्रीष्मकाळे विचार ॥ सोन्नागी० ॥ ५ ॥ देखी व्रक्ष वीसामो लीयेरे ॥ तेम जीव पुद्गलने तेह ॥ कह्यो स्थिति हेतु अधर्मास्तिरे ॥ एम समजो गुणगेह ॥ सोन्नागी० ॥ ६ ॥ आकाश ते अवकाशनोरे ॥ हेतु सवे द्रव्ये थाय ॥ जीवअजीव रूपी अरूपीरे ॥ आकाश खेत्रे समाय ॥ सोन्नागी० ॥७॥ काळ हेतु अस्ति द्रव्यनोरे ॥ पर्याय धर्मनी मांही ॥ पूर्व पर्याय ढेदीनेरे ॥ अन्निनव उपजे त्यांही ॥ सोन्नागी० ॥८॥ चोथो गुण त्रणे द्रव्यनोरे ॥ कह्यो कहुं हुं पर्याय ॥ अधर्म चौदराजमांरे ॥ एक खंध द्रव्यपर्याय ॥ सोन्नागी० ॥ ए ॥ उर्ध्व अधो तिर्छादिकेरे ॥ कल्पी कहीए देश ॥ प्रदेश असंख्याता कह्यारे ॥ लोकाकाश प्रदेशे प्रदेश ॥ सोन्नागी० ॥१०॥ अगुरु लघु परिणतियेरे ॥ गुण वृत्तिनी मांही ॥ हानि वृद्धि ग्रंथे कहीरे ॥ षट् षट् न्नेदे त्यांही ॥ सोन्नागी ॥११॥ ए पर्याय चार दाखीयारे ॥ अधर्म द्रव्यना सार ॥ हवे कहीशुं आकाशनारे ॥ पर्याय न्नेद ए चार ॥ सोन्नागी० ॥ १२ ॥ एक खंध द्रव्य पज्जवारे ॥ लोकालोक प्रमाण ॥ लोकाकाश देश कीजीयेरे ॥ प्रदेश अनंता वखाण ॥ सोन्नागी० ॥ १३ ॥ प्रदेश लोकाकाशे कह्यारे ॥ असंख्याता ग्रंथे साख ॥ अगुरू लघु परिणतीयेरे ॥ गुण वृत्तिए राख ॥

सोजागी० ॥ १४ ॥ हवे कहुं काळ द्रव्यनारे ॥ चार न्नेद पर्याय ॥ अतित जे अनंतो गयोरे ॥ तेनो नेम न बंधाय ॥ सोन्नागी० ॥ १५ ॥ अनागत अनंतो रह्योरे ॥ एक समय वर्त्तमान ॥ वर्त्तमान अतितमांरे ॥ अनागत वर्त्तमान ॥ सोन्नागी० ॥ १६ ॥ चोथो अगुरू लघु कह्योरे ॥ एम न्नेद पर्याय ॥ काळ द्रव्य अछतो कह्योरे ॥ आरोप नैगम थाय ॥ सोन्नागी० ॥ १७ ॥ अजिव अरूपी दाखीयारे ॥ आ ढाळमां त्रण द्रव्य ॥ धर्मास्ति पूर्वे कह्योरे ॥ अजिव अरूपी ए सर्व ॥ सोन्नागी० ॥ १८ ॥ हवे रूपी पूद्गलनेरे ॥ न्नाखुं वचन रसाळ ॥ ज्ञान-शीतल तेने जाणतांरे ॥ बोध पामे केइ वाल ॥ सोन्नागी० ॥ १९ ॥ ढाल छठ्ठी संपुर्ण ॥

॥ ढाळ सातमी ॥

॥ देशी चंद्रावळानी ॥ पुद्गल द्रव्यने वर्णवुंरे ॥ जेह रूपी कहेवाय ॥ न्नेद घणा तस दाखीयारे ॥ उपयोगे ग्रहाय ॥त्रुटक ॥ उपयोगे ग्रहायते दाखुं॥ परमाणु वीजो खंध ते न्नाखुं ॥ खंध दोय न्नेद ते कहीये ॥ जीव सहित रहित जिव लहीये ॥ सुणो न्नवी जन एह ॥ ए आंकणी ॥१॥ जिव रहित जे खंधछेर ॥ तेहना न्नेद अनेक ॥ द्विप्रदेशीथी मांमीनेरे ॥ अनंत प्रदेशी छेक ॥ त्रुटक ॥ अनंत प्रदेशी छेक अनंता ॥ मीले वीखरे न्नंग सादी संता विन्नाव पर्याय ते कहीए ॥ परमाणु स्वन्नावे लहीए ॥ सुणो० ॥ २ ॥ जीव सहित जे खंधछेरे ॥ तेहना कह्या न्नेद दोय ॥ सुक्ष्म वादर जाणीएरे ॥ वर्गणा चौ चौ सोय

त्रुटक ॥ वर्गणा चौ चौ सोय ते आठ ॥ उदारीक पहेली सो गाठ ॥ बीजी वैक्रीय ते कहीये ॥ त्रीजी अहारक ते लहीए ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ काय जोग बंध एहथीरे ॥ जिवकरे सही दाखुं ॥ मनुष्य तिर्यंच गति प्रतेरे ॥ काया उदारीक न्नाखुं ॥ त्रु० ॥ काया उदारीक न्नाषुं एह ॥ देव नर्क वैक्रीय तेह ॥ चौद पूर्वी आहारक करे ॥ तिहां प्रमाद गुणठाणुं ठरे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तेजस वर्गणा चोथी कही रे ॥ पाचन अग्नि ते एह ॥ न्नाषा वर्गणा पांचमीरे ॥ वचन जोग सो तेह ॥ त्रु० ॥ वचन जोगसो तेहज कहीए ॥ स्वासो सास ते छट्ठी लहीए ॥ मनोवर्गणा सातमी दाखी ॥ ते मन जोग घटमां राखी ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ वर्गणा कार्मण आठमीरे ॥ कर्म आठ मुल एह ॥ ज्ञानावर्णादी बंध एरे ॥ सत्ता उदीयादी तेह ॥ त्रु० ॥ सत्ता उदी यादी तेह उत्तरमां ॥ एक सत ने वीस छे बंधमां ॥ उदय उदीरणामां एक सत बावी ॥ सत्ता अट्ठावन एक सत न्नावी ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ प्रथमनी चउ वर्गणारे ॥ बादर कही जिनराय ॥ बादरमां गुण वीस छे रे ॥ वर्ण पंच रस पंच गाय ॥ त्रु० ॥ वर्ण पंच रस पंच गाय ग्रंथे ॥ दोय गंध कह्या ग्रंथ पंथे ॥ फर्स आठ सुण्या गुरु मुखे ॥ ए वीस गुण जाण्या सुखे सुखे ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ पाछळनी चउ वर्गणारे ॥ सुक्ष्म तेह कहाय ॥ सोळ गुण छे एहमां रे ॥ हीण फर्स चउ थाय ॥ त्रु० ॥ हीण फर्स चउ थाय यथारथ ॥ वर्गणा संबंध कह्यो गीतारथ ॥ ८ वर्गणानो

सादी संत ज्ञंगे ॥ तेजस कार्मण कहुं हवे रंगे ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ अनादी अनंत अज्ञवीनेरे ॥ ज्ञवीने अनादी संत ॥ शुज्ञाशुज्ञ ते जाणीयेरे ॥ पुन्य पापसो कहंत ॥ ज्ञु० ॥ पुन्य पापसो कहंत ते आश्रव ॥ जीव गुण वाळे सही ए दव ॥ ज्ञान शीतल पुद्‌गलने जाणो ॥ कह्यो कहुंछुं आगे चित आणो ॥ सुणो० ॥ ए ॥ ढाल सातमी संपुर्ण ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ श्री अरीहंत पद ध्याइए–ए देशी ॥

समजो ज्ञवीजन एहने ॥ कहुं वर्गणानो विचाररे ॥ जीव ग्रहे सही दाखवुं ॥ करो श्रद्धा निरधाररे ॥ समजो० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीव अज्ञवी जगतमां ॥ तेथी अनंत गुणा करीयेरे ॥ सिद्धना ज्ञाग अनंतमां ॥ एटला परमाणु दळ कहीयेरे ॥ समजो ॥ २ ॥ ते वर्गणा वादर ज्ञावमां ॥ ग्रही वांधे उदारीक कायारे ॥ तेथी उंछी ते ग्रहे नहि ॥ एम वोले गीतारथ रायारे ॥ समजो० ॥ ३ ॥ तेथी अनंत गुणा दळ ज्ञरी ॥ वर्गणा वीजी वैक्रीयरे ॥ जीव ग्रहे सही एहने ॥ गुरु वचने एम कहीयेरे ॥ समजो० ॥ ४ ॥ तेथी आहारक अनंत गुणी ॥ जीवना ग्रासमां आवेरे ॥ एम कीजे प्रत्येके अनंत गुणी ॥ अधिक सवे चमती कहावेरे ॥ समजो० ॥ ५ ॥ तेजस ज्ञाषा स्वासो सासजे ॥ तेथी अनंत गुणी मन थायरे ॥ मनथी कार्मण अनंत गुणी ॥ नीज जाती परमाणुं कहायरे ॥ समजो० ॥ ६ ॥ तेथी उंछी अ ग्रहण कही ॥ आगम सार ग्रंथ साखीरे ॥ नय व्यवहार

गवेखतां ॥ देवचंद्रजीए जाषीरे ॥ समजो० ॥ ७ ॥ एकथी बीजी अनंत गुणी कही ॥ तेहनुं कारण कहीएरे॥ सुक्ष्म छे पहेलीथी बीजी॥ बीजीथी सुक्ष्म त्रीजीएरे॥समजो०॥ ८॥ एम सुक्ष्म चमती सवे ॥ वर्गणा खंध जाती आठरे ॥ सर्वे सरखी कीजीए ॥ पुद्गलपणे एक ठाठरे ॥ समजो० ॥ ए ॥ जीव ग्रहण वर्गणा कही ॥ हवे कहुं गुण पर्यायरे ॥ आगळ नवमी ढाळमां ॥ ज्ञान शीतल वर्णव थायरे ॥ समजो० ॥ १० ॥ ढाल आठमी संपूर्ण.

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राग बंगाली ॥

पुद्गल द्रव्यना गुणपर्याय ॥ जाष्या अनंता जीनेंद्रराय ॥ जवी सांजलो ॥ तेमां चौ चौ मुख्य कहाय ॥ ग्रंथे वर्णव्या गीतारथराय ॥ जवी सांजलो ॥ १ ॥ पहेलो कह्यो गुणरूपी जेह ॥ दृष्टीगोचर आवे तेह ॥ जवी सांजलो ॥ बीजो अचेतन जमता जेह ॥ जाणं गुणनो अजाव तेह ॥ जवी० ॥२॥ त्रीजो क्रिया गुण कहेवाय ॥ शुजाशुज क्रिया जेह थाय ॥ जवी० ॥ चोथो मिलण वीखरण जेह ॥ समण पमण वीध्वंसण तेह ॥ जवी० ॥३॥ ए गुण चउ कह्या कहुं पर्याय ॥ वर्ण पंच ए पहेलो कहाय ॥ जवी० ॥ रातो धोळो लीलो पीळो स्याम ॥ बीजो रस पंच जेदे नाम ॥ जवी० ॥ ४ ॥ तीखो कमवो कषायलो जेह ॥ खाटो मधुरो ए पंचे तेह० ॥ जवी० ॥ त्रीजो गंध दोय जेद पर्याय ॥ सुरजी दूरजी वास लहाय ॥ जवी० ॥ ५ ॥ चोथो फर्स

आठ भेद नाम॥ सीत उष्ण भारे हलवो ताम ॥ भवी० ॥ स्निग्ध रुक्ष कोमळ वरसट ॥ फरस सवेए कह्या अष्ट ॥ ॥ भवी० ॥ ६ ॥ ए चौ पर्याय भाष्या सार ॥ वळी गुण गावानो छे विचार ॥ भवी० ॥ इंद्री नोइंद्री मन वचकाय ॥ पर्याप्ति प्राण पुद्गल ताय ॥ भवी० ॥ ७ ॥ संघयणने वळी संस्थान ॥ लेस्या संज्ञा ए पुद्गल स्थान ॥ भवी० ॥ ज्योनी वेद जनमने मरण ॥ जरा जठरा दोय पुद्गलरण ॥ भवी० ॥ ८ ॥ आहार नीहार गता गती जेह ॥ अव-गाहना ए पुद्गल तेह ॥ भवी० ॥ पुद्गल सुक्षमने बादर ॥ आधि व्याधि ए पुद्गल सर ॥ भवी० ॥ ए ॥ आठे कर्म कह्यां पुद्गल ॥ बंध उदय ए पुद्गल दल ॥ भवी०॥ सत्ता उदीरणा कर्म कहाय ॥ पून्य पाप ए पुद्गल ताय ॥ भवी० ॥ १० ॥ इत्यादि पुद्गल गुण अनंत ॥ ते जोगे संसार भाषे संत ॥ भवी० ॥ ज्ञान शीतल कहे टालो तेह ॥ नीज वृत्तिए लहो शीवगेह ॥ भवी० ११ ढाल नवमी ॥

॥ ढाळ दशमी ॥

धन्य धन्य ते जग प्राणीया मन मोहन मेरे—ए देशी ॥

आश्रव हेतु भाषीए सही चेतनमेरे ॥ तेमां पहेलो हेतु मिथ्यात ॥ सही० ॥ अव्रत बीजो कषाय त्रीजो ॥ सही० ॥ जोग चोथानी कहुं वात ॥ सही० ॥ १ ॥ मुळ हेतु चउए कह्या ॥ सही० ॥ उत्तर सत्तावन भेद ॥ सही० ॥ तेमां मिथ्यात्व पंच भेदे कह्या ॥ सही० ॥ अव्रतना कह्या बार भेद ॥ सही० ॥ २ ॥ कषाय नोकषाय

पचवीस कह्या ॥ सही० ॥ जोग भेद पंच दश सार ॥ सही० ॥ सर्वे सत्तावन थया ॥ सही० ॥ अनुक्रमे करुं विस्तार ॥ सही० ॥ ३ ॥ मीथ्यात्व पहेलुं अभिग्रही ॥ सही० ॥ ग्रह्युं न छोडे खर पूछवत ॥ सही० ॥ हठ मत ग्रह्यो कुबुद्धिथी ॥ सही० ॥ तीहां लोह वाणीयानुं द्रष्टांत ॥ सही० ॥ ४ ॥ अण अभिग्रही बीजुं मिथ्या ॥ सही० ॥ नहि परीक्षा पीतळ के हीम ॥ सही० ॥ दूध छास भेद जाणे नहि ॥ सही० ॥ इहां सत्य असत्य एकतीम ॥ सही० ॥ ५ ॥ अभीनीवेसी मिथ्या त्रीजुं ॥ सही० ॥ खोटुं जाणी खरुं करवानो हठ ॥ सही० ॥ युक्ति कुयुक्ति घणी करे ॥ सही० ॥ माया भाषाथी न फरे ए शठ ॥ सही० ॥ ६ ॥ मिथ्यात्व संशय ते चोथुं ॥ सही० ॥ जीन वचनमां संका दोष ॥ सही० ॥ अपेक्षा नय समजे नहि ॥ सही० ॥ तीहां बोले बोले संकानो जोष ॥ सही० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्व अणा भोग पांचमुं ॥ सही० ॥ नहि जाणे ए धर्म के कर्म ॥ सही० ॥ अजाण नबळो सर्वथी ॥ सही० ॥ रच्यो पच्यो संसारमां पर्म ॥ सही० ॥ ८ ॥ मिथ्यात्व वसे संसारे कर्या ॥ सही० ॥ पुद्गल परावर्त अनंत ॥ सही० ॥ हवे मिथ्यात्व न छोडशो ॥ सही० ॥ तो करसो पुनरपी अनंत ॥ सही० ॥ ९ ॥ अनंत पुद्गल परावर्तनो ॥ सही० ॥ अनादि मिथ्यात्व मालीक ॥ सही० ॥ समकित पामीने पडे ॥ सही० ॥ तोपण अर्ध पुद्गल ठीक ॥ सही० ॥ १० ॥ अनादि मिथ्यात्व समको नहि ॥ सही० निर्दय शत्रुए दुष्ट

॥ सही० ॥ अनंत दुःख दातार ए ॥ सही० ॥ करे कर्मथी जीवने ए पुष्ट ॥ सही० ॥ ११ ॥ कर्म पुष्ट शुभाशुभ ए ॥ सही० ॥ शुभाशुभ आश्रव पुन्य पाप ॥ सही० ॥ मिथ्यात्व पांच भेद कह्युं ॥ सही० ॥ अव्रतनो आगे कहुं ताप ॥ सही० ॥ १२ ॥ ताप कहेतां शीतळ वळे ॥ सही० ॥ ए अद्भूत अचरीज वात ॥ सही० ॥ ज्ञान शीतलज्ञान भावमां ॥ सही० ॥ उपयोगी तीहां सुख ॥ सही० ॥ १३ ॥ ढाळ दशमी संपूर्ण ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ तोरण आई क्युं चलेरे—ए देशी ॥

मिथ्यात्व दुष्ट इस्युं कह्युंरे ॥ वळी कह्युं गुणठाण सगुणा ॥ प्रश्न कर्युं रुडुं भलुंरे ॥ उत्तर करुं परमाण सगुणा ॥ शंका पडे तो फरी पुछीनेरे ॥ निःसंक थाउं गुणगेह सगुणा ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात्व दुष्टनोरे ॥ अर्थ कहुं थिर चित्त ॥ स० ॥ त्यार पछी गुणठाणनोरे ॥ कहेशुं उपयोग रीत ॥ स० ॥ संका ॥ २ ॥ मिथ्यात्व छतां नव पूरवीरे ॥ कह्या अज्ञानी ग्रंथे साख ॥ स० ॥ व्यवहारे यथारथ संयतीरे ॥ कह्या असंयती भगवैए दाख ॥ स० ॥ संका० ॥ ३ ॥ नर्क तिर्यंच गति आउखुंरे मिथ्यात्व विण न वंधाय ॥ स० ॥ स्त्री नपुसक दोय वेदनोरे ॥ मिथ्यात्वठाणे वंध थाय ॥ स० ॥ संका० ॥ ४ ॥ अनंतुं दुःख नरके कह्युंरे ॥ खेत्रवेदना परमाधामी आपे ॥ स० ॥ वली लढी मरवानुं तीहांरे ॥ पूर्वभव वेरनीए छापे ॥ स० ॥

संका० ॥५॥ नर्कथी अनंतु निगोदमांरे ॥ दुःख ज्ञाषे जीनें- द्रदेव ॥ स० ॥ पुद्गल परावर्त तीहां कर्यांरे ॥ अनंतां ए मिथ्यात्व टेव ॥ स० ॥ संका० ॥ ६ ॥ धर्म करयां धर्म होवे नहिरे ॥ धर्म करयां बंधाय कर्म ॥ स० ॥ संसार वृद्धि हेतु एरे ॥ मिथ्यात्व अज्ञान ज्ञर्म ॥ स० ॥ संका० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्वी जीव अजीव समोरे ॥ न जाणे वस्तु धर्म इम ॥ स० ॥ अती पाप मीथ्यात्व एरे ॥ बळीयामां बळीयो ए सीम ॥ स० ॥ संका० ॥ ८ ॥ ब्यासी प्रकृति पापनीरे ॥ तेमां एक पहले धरीए मिथ्यात ॥ स० ॥ बीजा पहले एकासी सवेरे ॥ तोळ्यां मिथ्यात ज्ञारे नमी जात ॥ स० ॥ संका० ॥ ए ॥ अनंत पुद्गल परावर्तनोरे ॥ मालीक एक मिथ्यात्व दुष्ट स० ॥ अव्रत कषाय जोग त्रण एरे ॥ मालीक ज्ञव सात के अष्ट ॥ स० ॥ संका० ॥ १० ॥ बहुल संसारी मिथ्यात्व एरे ॥ सर्व धर्म घाती एह ॥ स० ॥ अप मंगळीकमां मूख्य एरे ॥ शत्रु चारित्र रायनो तेह ॥ स० ॥ संका० ॥ ११ सागर सीत्तेर कोमा कोमीनीरे ॥ स्थिती मोटी ए शत्रु कठोर ॥ स० जगवासी सवे जीवनेरे ॥ राखे आंणमां सेवक ज्युं नठोर ॥ स० संका० ॥ १२ ॥ आपे स- हाय सवे कर्मनेरे ॥ मोह पल्लीनो पुत्र ए मोटो ॥ स० ॥ एने जोइ अघातीने वळ वधेर ॥ फेरी सवसें ए मिथ्यात्व खोटो ॥ स० ॥ संका० ॥ १३ ॥ उदय साता असाता वेदनी रे कही गुण रोधक ते देखो ॥ स० ॥ बाला बोध चौवीसीये रे ॥ बोले देवचंदजी ए पेखो ॥ स० ॥ संका० ॥ १४ ॥ इ-

त्यादि घणुं शुं कहीयेरे ॥ थोरुं कह्ये घणुं जाणो चतुर ॥ स० ॥ ज्ञान शीतलनुं कहेण मानजोरे ॥ मिथ्यात्व भ्रमिक ज्युं धंतुर ॥ स० ॥ संका० १५ ॥ ढाल अगीयारमी सपूर्ण ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ चतुर नर सामायक नय धारो ॥ ए देशी ॥

चतुर नर अव्रत ढीमां टाळो ॥ षट काय षट इंद्रीनो इंद्री ए बार अव्रत भाळो ॥ चतुर० ॥ अव्रत० ॥ ए आं- कणी ॥ १ ॥ आतम घर मेलातहे घटमां ॥ असंख्य प्रदे- शनी रचना ॥ अनंत गुणपर्याये भरपुर ॥ सरखा बराबर सिद्धना ॥च०॥ अव्रत० ॥ २ ॥ ए बार ढीमांमां थइने आवे॥ नीरंतर चोर रागद्वेष॥ आतम गुण रीद्धि लै जावे ॥ तिहां चेतन करे कर्म क्लेष ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ३ ॥ पांच इंद्रिने मन नोइंद्रि ॥ तेनो विषय शुभाशुभ कहीए ॥ राग द्वेषए अशुद्ध परिणति ॥ पुद्गल संगे लहीए ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ४ ॥ पृथवि पाणी अग्निने वायु ॥ वनस्पतिने त्रस ॥ ए सर्वे अव्रत सेवनथी ॥ कर्मबंध रागद्वेषवस ॥च०॥ अव्रत०॥५॥ ए बार अव्रतथी अलगा थइने॥ अंतर गत घटमांही ॥ चिदानंद घन नजरे नीरखो ॥ करो शुद्ध उपयोग त्यांही ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ६ ॥ एम भाव विरतीये स्वरूप रमणगत ॥ अंतर मुहूर्त्तमांही ॥ रागद्वेष मोहादी हणीने ॥ लहीये केवळ अरिहंत त्यांही ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ७ ॥ एम अ- व्रतने टाळो भवीजन ॥ आश्रव अलगो होवे ॥ ज्ञान शीतल गुणगत परिणामे ॥ कर्म मेल सब धोवे ॥ च० ॥

अव्रत० ॥ ८ ॥ ढाल बारमी संपूर्ण ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ देशी चंद्रावळानी ॥

कषायनी पहेली चोकमीरे ॥ अनंतानुवंधी ए दुष्ट ॥ जाव जिव लगे रहेरे ॥ क्रोध पथ्थर फाट पुष्ट ॥ त्रुटक० ॥ क्रोध पथ्थर फाट पुष्ट अमी लावो ॥ मान पथ्थर थंभ नमे न नमाव्यो ॥ वांस मूळ वांकां तेसी माया ॥ कीरमज रंग ज्युं लोभ कहाया ॥ समकित घाति ए मोह ॥ १ ॥ कषायनी बीजी चोकमीरे ॥ अप्रत्याख्यानीए ढळे ॥ बार मास लगे रहेरे ॥ क्रोध जमी फाट मले ॥ त्रु० ॥ क्रोध जमी फाट मले मेघ वरसे ॥ मान अस्थि थंभ ऊट नही नमसे ॥ शींग घेटानां वांकां तेसी माया ॥ करदम रंग ज्युं लोभ कहाया ॥ देश विरति घाति ए मोह ॥ २ ॥ कषाय प्रत्याख्यानी चोकमीरे ॥ त्रीजी ग्रंथे कहाय ॥ चार मास लगे रहेरे ॥ क्रोध वेळु लीक पूराय ॥ त्रु० ॥ क्रोध वेळु लीक पुराय वायु आपे ॥ मान काष्ट थंभ वळे तेल तापे ॥ गौमुत्रीका वांकी तेसी माया ॥ लोभ गाम्री उजए मली माग थाया ॥ सर्व विरती घातीए मोह ॥ ३ ॥ कषायनी चोथी चोकमीरे ॥ संज्वलनी ते कहाय ॥ पंच दश दीन ए रहेरे ॥ क्रोध जळ लीक ज्युं थाय ॥ त्रु० ॥ क्रोध जळ लीक ज्युं थाय अळप ॥ नेत्र थंभ नमे ज्युं मान ढोंमे टप ॥ वांस ढोती वांकी तेसी माया ॥ हलदी रंग ज्युं लोभ कहाया ॥ यथाख्यात घातिए मोह ॥ ४ ॥ कषायनी चउ चोकमीरे ॥ सोळ भेद विस्तार ॥ द्रष्टांत साथे वर्णवीरे ॥ स्थिती कही प्राइकघार ॥ २ ॥

त्रु० ॥ थीती कही प्राश्कधार अंतरमें ॥ हठमत नांही अनेकांत धर्मे ॥ हवे नोकषाय नव दाखुं ॥ अनुक्रमे उपयोगे जाखुं ॥ आतम गुणघातीए मोह ॥ ५ ॥ हास्य मोहनी नोकषाय पहेलोरे ॥ वीनोद कारण विषवाद ॥ रति मोहनी नोकषाय वीजोरे ॥ शाता द्वेष कारण नाद ॥त्रु०॥ शाता द्वेष कारण नाद पापस्थान ॥ अरति मोह त्रीजो अशातावान ॥ जय मोहनी नोकषायनी जीती ॥ मरणादी सप्त जय वर्ते अनीती ॥ आत्म गुण घातीए मोह ॥ ६ ॥ शोक मोह नोकषाय पांचमोरे ॥ राग कारण करे क्लेश ॥ दुगंछा ते मोह नोकषाय छठोरे ॥ अशुची कारण द्वेष ॥ त्रु० ॥ अशुची कारण द्वेष अणगमतुं ॥ पुरुषवेद जोग विषय मन जमतुं ॥ स्त्रीवेद कह्यो अग्नि जाजो ॥ नपुसकवेदे सदा रहे दाजयो ॥ आतम गुण घातीए मोह ॥ ७ ॥ नोकषाय नव जेदे दाखीयोरे ॥ दाख्यासवे पंचवीस ॥ आश्रव हेतु एछे त्रीजोरे ॥ अनादी संवंध आधीस ॥ त्रु० ॥ अनादी संवंध आधीसपणे जूखीयो ॥ सिद्धसम चेतन प्रसंगे दुःखीयो ॥ ज्ञान शीतल प्रसंग जव तूटे ॥ कर्म आठ सत्ताथी छूटे ॥ धन्य दीन धन्य घमी तेह ॥ ढाल तेरमी ॥

॥ ढाळ चौदमी ॥

॥ चेतन चेतोरे चेतना—ए देशी ॥

योग त्रणने सही वर्णवुं ॥ मन वचनने कायरे ॥ जेद पंचदश तेहना, कहेशुं उपयोग लायरे ॥ योग० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ चउजेद मनना कह्या ॥ सत्य सत्या सत्य

दूजोरे ॥ असत्य असत्या सत्यए ॥ अर्थ सूणी नवी बुजोरे ॥ योग० ॥ २ ॥ शुद्ध वेहेवारे मन रमे ॥ घटमां नेद ज्ञान आवेरे ॥ नीरावर्ण गुण आत्मा ॥ केवळ ज्ञानादि ध्यावेरे ॥ योग० ॥ ३ ॥ नय ऋजु सूत्र सत्य मन्न ए ॥ हवे सत्या सत्य दाखुंरे ॥ मतीज्ञानादी गुण आत्मा ॥ उपयोग व्यवहारे राखुंरे॥ योग० ॥४॥ असुद्ध वेहेवारे असत्य मन॥ समजे काया तेह जीवरे ॥ असत्या सत्य शुन्न व्यवहारे ॥ कर्म जनित काया गेहरे ॥ योग० ॥ ५ ॥ ए चउनेद मनना कह्या ॥ तेम वचन चउजाणोरे॥ चिंतवे बोले पटंतरो ॥ ए आठ नेद परमाणोरे ॥ योग० ॥ ६ ॥ हवे कायाना सात कीजीए ॥ पहेलो योग उदारीकरे ॥ बीजो उदारीक मिश्र ए ॥ त्रीजो वैक्रिय ठीकरे ॥ योग० ॥ ७ ॥ चोथो वैक्रिय मिश्रए ॥ पांचमो आहारक जाणरे ॥ छट्ठो आहारक मिश्रए ॥ सातमो तेजस कार्मणरे ॥ योग० ॥८॥ ए सात नेदे काया कही हवे कहुं तस अर्थरे ॥ मनुष्य तिर्यंच दोयगती प्रत्ये॥ उदरीक काया गर्थरे॥ योग० ॥ए॥ देवनर्क दोयगती प्रत्ये ॥ काया वैक्रिय जाणोरे ॥ आहारक प्रमाद ठाणे करे॥ चौद पूरवी राणोरे ॥ योग० ॥ ॥ १० ॥ आयुष बांधी मरी देह छोमीने ॥ जीव नवांतर जायरे ॥ तेजस कार्मण लेइने ॥ उपजे तीहां आहार थायरे ॥ योग० ॥ ११ ॥ मरी कायाथी जीव छूटीयो ॥ जइने आहार न लीधोरे ॥ अंतरालवृत्ति तेटला समे ॥ तेजस कार्मण कीधोरे ॥ योग० ॥ १२ ॥ ए चउ नेद प्रत्येके

कह्या ॥ हवे कहुं मिश्र त्रण कायारे ॥ उदारीक वैक्रिय वीजी ॥ त्रीजी आहारक कहायरे ॥ योग० ॥ १३ ॥ ए त्रण नाम ते मुख्यता ॥ गुणता मिश्र ते दाखुंरे ॥ तेजस कार्मण मिश्र ए ॥ ए सर्व सात भेद भाखुंरे ॥ योग० ॥१४॥ ए मुळयोग भेद त्रण कह्या ॥ उत्तर कह्या पंच दशरे ॥ चउद भेद सादि सांत छे ॥ एक भेद आगे कहीसरे ॥ योग० ॥ १५ ॥ तेजस कार्मण काय योगनो॥ ज्ञान शी-तल कहे संबंधरे ॥ अनादी अनंत अभवीने ॥ भवीने अनादी संत भंगरे ॥ योग० ॥ १६ ॥ ढाल चौदमी संपूर्ण ॥

॥ ढाळ पंदरमी ॥

॥ ए छकी कीहां राखी—ए देशी ॥

कर्म वंध निरंतर करीये ॥ ए विभाव क्रीया कहीये ॥ जीवने पुद्गल दोय मील्यां होवे ॥ एक जीवपणे न लहीयेरे भवीका ॥ ए क्रीया अनादीतारी॥ ए आंकणी ॥१॥ ए वंध चउभेदे दाखुं ॥ प्रदेश प्रकृति वंध ॥ रसवंध स्थिती मर्यादा ॥ द्रष्टांत लाडु संवंधरे भवीका ॥ ए क्रीया० ॥२॥ प्रदेश तेही आटो कहीए ॥ खांड गोळ प्रकृति॥ रस ते घी भेली लाडु वाळो ॥ थीती मर्यादा छरतीरे ॥ भविका ए क्रीया० ॥ ३ ॥ ए कह्यो नय हवे उपनय दाखुं ॥ शुभा-शुभ जेवी क्रीया ॥ तेवो आश्रव करम दळ खेंचे ॥ खंध परमाणुं अनंता भरीयारे॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥४॥ प्रकृति चउकषाय कहीए ॥ अनंतानादी भेद चउ ॥ नोकषाय मिथ्यात्व ए छवीस॥ जेसी होवे तेसी वांधे वहुरे॥ भवीका

॥ ए क्रीया० ॥ ५ ॥ रस ते राग द्वेष अशुद्ध रस ॥ अज्ञान रस अशुद्ध ॥ जेटलो पोतामां होय ते रसथी ॥ बांधे आत्म प्रदेश अबुद्धरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ ६ ॥ प्रदेश कर्मदळ मोह प्रकृति ॥ रस अज्ञान राग द्वेष ॥ निजातम असंख्य प्रदेशे ॥ बांधे एकत्व परिणमन बेसरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ ७ ॥ ए कर्मबंध जीहां तक रेहेवे ॥ आत्म प्रदेशथी न विखरे ॥ तेना काळनुं मान ते स्थिती ॥ उत्कृष्टी कहुं सिखरेरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥८॥ ज्ञानावर्णीने दर्शनावर्णी वेदनिकर्म अंतराय ॥ त्रीस कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ स्थिती ग्रंथे कहायरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥९॥ मोहनी कर्मनी स्थिती दू भेदे ॥ मिथ्यात्व बीजो कषाय ॥ सीतेर कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ मिथ्यात्व मोहनी कहायरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ १० ॥ चाळीस कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति कषायनी दाखे ॥ समकीत घातीए मिथ्यात्व कहीए ॥ घाती कषाय भाखेरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ ११ ॥ नामने गोत्र वे कर्मनी स्थिती ॥ सागरवीस कोडाकोडी ॥ तेत्रीस सागर आयुष्य केरी ॥ दाखी ग्रंथे द्रष्टी जोडीरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ १२ अज्ञान राग द्वेष अशुद्धरस ॥ मतीश्रुत विभंग अज्ञान ॥ राग द्वेष परिणति अशुद्ध ॥ ए कर्मबंध हेतु स्थानरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥१३॥ समकित वीण ज्ञानी नही होवे ॥ वितराग विण रागी द्वेषी ॥ समकिती संभावे अवंधक ॥ सकाम निर्जरा लेसीरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ १४ ॥ ए विभाव क्रीयामां भांगा कहीए ॥

नवीने अनवीमां॥ अनादी अनंत अनवीने.लागे॥ अनादी संत नाण्यो नवीमांरे॥ नवीका ॥ ए क्रीया० ॥१५॥ अनादी क्रीया जव त्याग होवे ॥ तव होवे आत्म अवंध ॥ ज्ञान शीतल उज्वल घटमांही॥ ते लहे शीवसुख संवंधरे॥नवीका ॥ ए क्रीया अन्नीनवप्यारी ॥ १६ ॥ ढाल पंदरमी संपूर्ण॥

॥ ढाल सोळमी ॥

॥ कपुर होवे अती उजळोरे—ए देशी ॥

चौकर्म अघाती पूर्व वंधनीरे ॥ शुन्न प्रकृति होय जेह ॥ तेनो उदय पुन्य कीजीएरे ॥ दाखुं वायाली नेद तेहरे ॥ प्राणीए पुन्य तणो अधिकार ॥ ते संसारे सुखनुं गेहरे ॥ प्राणीए० ए आंकणी ॥ १ ॥ साता वेदनी उदय थकीरे ॥ करे सुखनो अनुनव ॥ मधु लेप खफग धारज्युंरे ॥ चाटयां जीन्न कापे दुःख थाय तवरे ॥ प्राणीए० ॥ २ ॥ उंच गोत्र उदय थकीरे ॥ उंच कुळे जन्मे जीव ॥ मान पूजा प्रतिष्टतारे ॥ लहे आदर सत्कार दीव्यरे ॥ प्राणीए० ॥ ३ ॥ सुख आयुष कर्म उदय थकीरे ॥ पामे त्रण गति पर्याय ॥ काया देव मनुष्य तिर्यंचनीरे ॥ हेरू वंधन ए सर्व कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ ४ ॥ ए त्रण कर्मना कह्यारे॥ पांच नेद ते उदार ॥ हवे सततीस नामनारे॥ ए नेद विचित्र चितारे रे ॥ प्राणीए० ॥ ५ ॥ मनुष्यद्विक नाम उदय थकीरे ॥ पामे मनुष्य गति पर्याय ॥ मनुष्यनी आनुपुरवीरे ॥ वक्रगती उत्पत्तिये लायरे ॥ प्राणीए० ॥ ६ ॥ सुरद्विक नाम उदय थकीरे ॥ पामे देवगति पर्याय॥

देवनी आनुपुरवीरे ॥ मनुष्यद्विके कहीज्युं कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ ७ ॥ पंचेंद्री जाति उदय थकीरे ॥ पामे सही इंद्रीयो पांच ॥ देव मनुष्यादी गती प्रत्येरे ॥ उदय छते न लागे खांचरे ॥ प्राणीए० ॥ ८ ॥ उदारीक शरीरनोरे ॥ उदय होय जब सार ॥ उदारीक आहार लेइनेरे ॥ बांधे शरीर पींड नही वाररे ॥ प्राणीए० ॥ ए ॥ उदारीक अंगो पांग उदय थकीरे ॥ बांधे आठ अंग उपांग ॥ अंगुली रे खानख केस एरे ॥ इत्यादि कह्यां अंगोपांगरे ॥ प्राणीए० ॥ १० ॥ वैक्रीय शरीरनोरे ॥ अंगोपांग उदय थाय ॥ ते बांधे उदारीकज्युंरे, एम भावो ए सरखो न्यायरे ॥ प्राणीए० ॥ ११ ॥ वैक्रीयना दोय भेदछेरे ॥ औपपाति लब्धि एम ॥ औपपाती देव नर्कमांरे ॥ लब्धि मनुष्य तिर्यंच तेमरे ॥ प्राणीए० ॥१२॥ वैक्रियादि लब्धि एरे ॥ करे मनुष्यादी रुप अनेक ॥ प्रत्येक रूपे नीजात्मनांरे ॥ प्रदेश असंख्यनी टेकरे ॥ प्राणीए० ॥ १३ ॥ ए प्रदेश लब्धिवंतनारे ॥ काढे ते मुळ कायाथी सार ॥ अनेक रूपे एक आतमारे ॥ न त्रुटे प्रदेश श्रेणी फाररे ॥ प्राणीए०१४॥ए रूपथी लढतां अन्य सुरे ॥ लागे एकने शस्त्र प्रहार ॥ तेनुं दुःख जे प्रगटेरे ॥ ते अनुभव सर्वने धाररे ॥ प्राणीए० ॥ १५ ॥ असंख्याता प्रदेश विनारे ॥ कायजोग न वंधाय ॥ रुप विखरे आवी मिलेरे ॥ मुळ कायाये श्रेणी समायरे ॥ प्राणीए० ॥ १६ ॥ आहारक शरीर उदय थकीरे ॥ आहारक दळ ग्रहाय ॥ शरीरपणे परिणमावीनेरे ॥ मुंढा हाथनी बांधे ए कायरे ॥

॥ प्राणीए० ॥ १७ ॥ आहारक अंगोपांग उदयथकिरे ॥ बांधे अंग उपांग ॥ पूर्वे कह्युं ज्युं उदारीकेरे ॥ एम जावो ए जोग अती चंगरे ॥ प्राणीए० ॥ १८ ॥ तेजस शरीर उदय थकीरे ॥ आहारनुं पाचन थाय ॥ जठरा अग्नि एहछेरे ॥ उदय अजावे काळ कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ १९ ॥ कार्मण शरीर उदय थकीरे ॥ कार्मण दळ बंधाय ॥ असंख्य प्रदेशे ऐक्यतारे ॥ एखीर नीर द्रष्टांत न्यायरे ॥ प्राणीए० ॥ २० ॥ प्रथम संघयण उदय थकीरे ॥ हाड संधि द्रढ बंधाय ॥ मर्कट बंध दोय पासशीरे ॥ उपर पाटाए खीली जडायरे ॥ प्राणीए० ॥ २१ ॥ पहेला संस्थान उदय थकीरे ॥ समचउरस पलांठी जराय॥ माथो जानु जमणे खजेरे ॥ जमणो जानु डावे सम थायरे ॥ प्राणीए० ॥ २२ ॥ वर्ण चतुष्क उदय थकीरे॥ रस शुज वर्णी काय ॥ सुवास कमल ज्युं महमहेरे ॥ शुजफर्स मनोज्ञ कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ २३ ॥ अगुरु लघु नाम उदय थकीरे ॥ शरीर मध्यस्थता पाय ॥ नहि पुष्टता नहि कृसतारे ॥ ते अगुरु लघु नाम कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ २४ ॥ पराघात नाम उदय थकीरे ॥ अनंत बळ वीर्यता पाय ॥ एकपणे जीते अनेकशुंरे ॥ जूजा बळे समुद्र तरी जायरे ॥ प्राणीए० ॥ २५ ॥ श्वासोश्वास उदय थकीरे॥सुखे श्वासोश्वास लेवाय ॥ विघ्न संजव होवे नहिरे॥ लब्धि छतां सजीवन कहायरे ॥ प्राणीए० २६ ॥ आतप नाम कर्म उदय थकीरे ॥ तीखी तेजे तती काय ॥ परने

परीताप उपजेरे ॥ उदय वादर पृथ्वी ए कहायरे ॥ प्राणी-ए० ॥ २७ ॥ उद्योत नाम कर्म उदय थकीरे ॥ शांत मुद्रा शीतळ थाय ॥ परने प्रमोद हेतुएरे ॥ चंद्रोदय अमी वरसायरे ॥ प्राणीए० ॥ २८ ॥ शुभ विहायो गती उदय थकीरे ॥ पामे हंस सरखी ए चाल ॥ शीख्यां अणशीख्यां संपजेरे ॥ उदय अभावे न लहे ते ख्यालरे ॥ प्राणीए० ॥ २९ ॥ निर्माण नाम कर्म उदय थकीरे ॥ अंगना अवयव सर्व ॥ योग्य स्थापे सूत्रधार ज्युंरे ॥ सांधा मेळ पुद्-गल द्रव्यरे ॥ प्राणीए० ॥ ३० ॥ जिननाम कर्म उदय थकीरे ॥ समोसरणादी पामे ऋद्ध ॥ सेवे असंख्य कोडी देवनीरे ॥ अनंत पुन्योदय तीहां कीधरे ॥ प्राणीए० ॥ ३१ ॥ आहार निहार अन्य देखे नहीरे ॥ प्रस्वेद मळ रहित शरीर ॥ श्वास सुगंध महके कमळज्युंरे ॥ मांस लोही उज्वल जेसी खीररे ॥ प्राणीए० ॥ ३२ ए चार अ-तिशय जन्मथीरे ॥ घाती कर्म खपे एकादश ॥ ओगणीस देव कृत्य संपजेरे ॥ ए चौतीस अतीशयव्रत तसरे ॥ प्राणीए० ३३ ॥ पण तीस गुण भर वाणीयेरे ॥ भवी जीवने करे उपदेश ॥ बोध बीज पामे घणारे ॥ होवे विरति प-रिणामी रुडा वेशरे ॥ प्राणीए० ३४ ॥ कोइ होवे साधु साधवीरे ॥ कोइ श्रावक श्रावीका थाय ॥ क्षय उपशम अप्रतिहतनेरे ॥ दीये गणधर पद जिनरायरे ॥ प्राणीए० ३५ ॥ त्यां द्वादशांगी रचना करेरे ॥ ज्ञान लब्धिए गण-धरराय ॥ ए तीर्थ स्थापना कहीरे ॥ देशना निष्फल नही

जायरे ॥ प्राणीए० ३६ ॥ त्रस नाम कर्म उदय थकीरे ॥ न लहे स्थावर काय:पांच ॥ बाकी सवे गति त्रसछेरे ॥ तीहां उपजे तेमां नही खांचरे ॥ प्राणीए० ॥ ३७ ॥ बादर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ न लहे सूक्ष्म थावर पांच ॥ द्रष्टीगोचर काया कहीरे ते बादर नाम नही खांचरे ॥ प्राणीए० ३८ ॥ पर्याप्ति नाम उदय थकीरे ॥ करे पुरी पोतानी जे होय॥ कर्ण लब्धि दोय भेदथीरे ॥ न मरे अ-पज्जत्तो कोयरे ॥ प्राणीए० ३९॥ प्रत्येक नाम कर्म उदय थकीरे ॥ बे निगोद गति होय बंध ॥ जीव जीवनी काया जुदीरे ॥ ते प्रत्येक नाम संबंधरे ॥ प्राणीए० ४० ॥ स्थिर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ दाढ दंत हाड बांधो द्रढ ॥ नखसें हाड दंत एहनारे ॥ सर्व अवयव निश्चल गढरे ॥ प्राणीए० ४१ ॥ शुभ नाम कर्म उदय थकीरे शुभ कहीए उर्ध्व अंग ॥ अप्रिय न होवे कोइनेरे ॥ फर्स लाग्यां माने अती चंगरे॥ प्राणीए० ४२॥ सौभाग्य नाम कर्म उदय थकीरे ॥ उपकार विण वल्लभ होय ॥ सगपण प्रिती संबंध विनारे ॥ जग वल्लभ इष्ट लागे सोयरे ॥ प्राणीए० ४३ ॥ सुस्वर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ कंठ शब्द मधुर ध्वनी होय ॥ सर्व लोक ग्रह एहनेरे ॥ श्रवण रस सुखदाइ सोयरे ॥ ॥ प्राणीए० ॥ ४४ ॥ आदेयनामकर्म उदयथकीरे ॥ प्रमा-णीक पुरुष गणाय ॥ खंमीत वचन होवे नहीरे ॥ यथार्थ वचन पकमायरे ॥ प्राणीए० ॥ ४५ ॥ यशकीर्ति नाम उद-यथकीरे ॥ गाय गुण समुदाय जगजस ॥ ऋद्धि आडंबर

अतीघणोरे ॥ फेलाय जसकीर्ति तसरे ॥ प्राणीए० ॥ ४६ ॥ ए बायालीस न्नेद पुन्यनारे ॥ अघाती कर्म जनित कहाय॥ उदयिक न्नावे ते पामीयेरे॥ पुद्गलीक न्नाव ग्रंथे गवायरे॥ प्राणीए० ॥ ४७ ॥ ए न्नेद अर्थ रचना करीरे ॥ पहेला कर्म ग्रंथ अनुसार ॥ ज्ञानशितल कहे गुणवतंनेरे ॥ हित जाणी अशुद्ध होय तो नीवाररे ॥ प्राणीए० ॥ ४८ ॥ ढाल सोलमी संपूर्ण ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ तीरथनी आशातना नवि करीए–एदेशी ॥

घाती करम पूर्व बंधनी प्रकृति ॥ उदय आव्यां विघन करती ॥ आतम गुण पर्याय हणती ॥ अती मोटुं पाप ॥ घाती० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मतीज्ञानावर्णी पापोदयमां आवे ॥ इंद्री उपयोग हीण थावे ॥ तीहां चेतन जमता पावे ॥ अचेतन सम एह ॥ घाती० ॥ २ ॥ श्रुतज्ञानावर्णी पापोदयमां आवे ॥ सीद्धांत बोध तीहां जावे॥ श्रोत इंद्री बे'रासपावे ॥ मोटुं अज्ञान एह ॥ घाती० ॥ ३ ॥ अवधि ज्ञानावर्णी पापोदयमां आवे ॥ रूपी प्रत्यक्ष ग्यान हीण थावे ॥ उदय होय तिहां नहि पावे ॥ पाम्यो होय तेनुं जाय ॥ घाती० ॥ ४ ॥ मनपर्यव ज्ञानावरणी उदय मांही ॥ मनोगत न्नाव ग्यान क्षय त्यांही ॥ उदय छतां न प्रगटे क्यांही ॥ अढीद्विपनी मांही ॥ घाती० ॥ ५ ॥ केवळ ज्ञानावरणी पापनो उदे ज्यांही ॥ तीहां अरिहंत पदवी नांही ॥ छद्मस्थ ए कहेवाय त्यांही ॥ न सनातक

एह ॥ घाती० ॥ ६ ॥ ए ज्ञानावरणी उदय कह्युं वीजुं कहीए ॥ दर्शना वरणी उदय लहीए ॥ ज्ञान दर्शन हाणी तहीए ॥ कही कहुं विचार ॥ घाती० ॥ ७ ॥ चक्षु दर्शनावरणी पाप उदयमां आवे ॥ चक्षु इंद्री दर्शन हाणी थावे ॥ चौरंद्रीपणुं नही पावे ॥ तेरंद्रीए थाय ॥ घाती० ॥ ८ ॥ अचक्षु दर्शनावरणी पाप उदयमां आवे ॥ श्रोत गंध रसफर्स हाणी थावे ॥ मन हणतां असन्नी कहावे ॥ भेद आगे कहेवाय ॥ घाती० ॥ ए ॥ श्रोत उपयोग हणतां चौरंद्री भाखुं ॥ गंध हणतां वेरंद्री दाखुं ॥ रस हणतां एकेंद्री राखुं ॥ फर्स हणतां सूक्षम ॥ घाती० ॥ १० ॥ अवधि दर्शना वरणी पाप उदयमां आवे ॥ प्रत्यक्ष रूपी दर्शन हणावे ॥ दर्शन मर्यादा कहावे ॥ लाध्युं होय तेनुं जाय ॥ घाती० ॥ ११ ॥ केवळ दर्शनावरणी पाप उदयमांही ॥ तीहां केवळ दर्शन नांही ॥ अपुर्ण कार्य कह्युं त्यांही ॥ एही मोटुं दुःख ॥ घाती० ॥ १२ ॥ निंद्रा पंचक पाप उदे प्रत्येके आवे॥ इंद्रिगत उपयोग रुंधावे ॥ दर्शन गुण घात कहावे ॥ अचेतन सम एह ॥ घाती० ॥ १३ ॥ निंद्रा पंचक भेद प्रत्येके दाखुं ॥ सुखे जागे ते निंद्रा भाखुं ॥ वीजा घांटानो खप न राखुं ॥ पहेली निंद्रा एह ॥घाती०॥ १४ ॥ वीजो भेद निंद्रा निंद्रा भवी जाणो ॥ दुःखे जागे झझे घांटे साणो॥ वेठां उभां उंघे त्रीजो राणो ॥ तेनुं प्रचला नाम ॥ घाती० ॥ १५ ॥ चोथो भेद प्रचला प्रचलाए दाखुं ॥ चालतां चालतां उंघ राखुं ॥

खातां खातां पीतां उंघ नाखुं ॥ जागे कांकरो त्यांही ॥ घाती० ॥ १६ निद्रा थीणद्धी पंचमि मांही फरीए ॥ रात्रे दीन चिंतीत काम करीए ॥ वासुदेव बळ नीमे वरीये ॥ मरि नरके ए जाय ॥ घाती० ॥ १७ ॥ ए दर्शनावर्णी उदये कह्युं त्रीजुं कहीए ॥ मोहनी कर्म उदय लहीए ॥ चारित्र गुण स्थिर हाणी तहींए ॥ श्रद्धा हीण थाय ॥ घाती० ॥ १८ ॥ पापबंध ब्यासीमां मिथ्यात्व एक गणीयो ॥ तेनी उदयमां त्रण वणीयो॥ सवे जीवने ए मोटी रणीयो ॥ हांणी आगे कहेवाय ॥ घाती० ॥ १९ ॥ प्रथम गुणठाणे उदे मिथ्यात्व आवे ॥ ते मिथ्यात्व मोहनी कहावे ॥ ए वे समकीत घाती स्वभावे ॥ भाव मदिरा एह ॥ घाती० ॥ २० ॥ त्रीजे गुणठाणे उदे मिथ्यात्व आवे ॥ ए तो मीश्र मोहनी कहावे ॥ समकीत गुण हणतां पावे ॥ परुतां रस्तो एह ॥ घाती० ॥ २१ चउथी सातमा लगे उदे मिथ्यात्व आवे ॥ ते समकीत मोहनी कहावे ॥ क्षायक समकीत नही पावे ॥ ए छतां कोइ जीव ॥ घाती० ॥ २२ ॥ अनंतानुं कषाय पाप चोकडी उदे आवे ॥ तीहां समकीत गुण हाणी थावे ॥ कर्मबंध अनंतो पावे ॥ अनंत संसारी एह ॥ घाती० ॥ २३ ॥ अप्रत्याख्यानी पाप चोकडी उदय आवे ॥ तीहां देशविरती दूर थावे ॥ तिर्यंच गतीये पोहोचावे ॥ अणुव्रत हीण एह ॥ घाती० ॥ २४ ॥ प्रत्याख्यानी पाप चोकडी उदय आवे ॥ तीहां सर्व विरती क्षय पावे ॥ नीज गुण स्थिरता सवे जावे ॥ चारीत्र हीण थाय ॥ घाती०

॥ २५ ॥ संज्वलन कषाय पाप चोकमी उदय आवे ॥ तीहां क्षायक चारित्र नावे॥ अशुद्ध परिणति न जावे ॥ वीतराग न कहाय ॥ घाती० ॥ २६ ॥ नव नोकषाय पाप उदे प्रत्येके आवे ॥ तीहां कषाय प्रगट थावे ॥ कषायनुं ए कारण कहावे ॥ सवे संसार मुळ ॥ घाती० ॥ २७ ॥ ए मोहनी कर्म उदय कह्युं चोथुं कहीए ॥ अंतराय कर्म उदय लहीए ॥ जीव गुण लब्धि हाणी तहीए ॥ दानादीकनी थाय ॥ घाती० ॥ २८ ॥ ज्ञान दर्शनोपयोग दान प्रवृत्ति न पावे॥ तीहां श्रद्धा चरण लाभ नावे ॥ भोग उपभोगोपयोग अभावे ॥ वीर्य फुरणा न होय ॥ घाती० ॥ २९ ॥ घाती चौ कर्मबंध पापनो उदय भाख्यो ॥ गुण घात पुर्वक कही दाख्यो ॥ पहेलो कर्मग्रंथपुरे साख्यो ॥ भवी समजो एह ॥ घाती० ॥ ३० ॥ पुर्वबंध पाप भेद पंच चालीए दाख्या ॥ उदयमां तेना सत्त चाली भाख्या ॥ अघाति सत्त तीस बाकी राख्या ॥ आगे कहीशुं एह ॥ घाती० ॥ ३१ ॥ घाती कर्म बलीयो तीहां चेतन गलीयो ॥ भवोभव भमतां दूःख मलीयो ॥ ज्ञान शीतल गुण एणे हणीयो ॥ ए अनादी संबंध ॥ घाती० ॥ ३२ ॥ ढाल सत्तरमी संपूर्ण ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ ऊलगमी आदीनाथनीरे ॥ ए देशी ॥

अघाती पूर्वबंधनीरे ॥ अशुभ प्रकृति जेहलाल॥ तेनो उदय पाप कीजीएरे ॥ भेद सत्त त्रीस तेह लाल ॥ पापो दय भवी सांभलोरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वेदनी असाता

उदयथीरे ॥ करे दुःखनो अनुभव लाल ॥ नर्क निगोद गती विषेरे ॥ अनंत दूःख सुख न लव लाल ॥ पापोदय० ॥ २ ॥ गोत्र नीचना उदय थकीरे ॥ नीच कूळे जन्मे जीव लाल ॥ भीक्षुक निंदनीक हीनमांरे ॥ न पामे मान महत्व लाल ॥ पापोदय० ॥ ३ ॥ नर्क आयुष्य उदय थकीरे ॥ त्यां जइ भोगवे आयुष्य लाल ॥ आयु छतांए गति छूटे नहींरे ॥ आयु हेरु कहे जगदीश लाल ॥ पापोदय० ॥ ४ ॥ ए त्रण कर्मनी कहीरे ॥ एक एक त्रण प्रकृती लाल ॥ हवे चौतीस कहुं नामनीरे ॥ ए सवे सप्ततीस अघातीलाल ॥ पापोदय० ॥ ५ ॥ नर्क द्वीक नाम उदय थकीरे ॥ पामे नर्क गती पर्याय लाल ॥ नर्कनी आनुपूर्विरे ॥ वक्र गति उत्पत्तिये लाय लाल ॥ पापो० ॥॥ ६ ॥ तीर्यंच द्वीक नाम उदय थकीरे ॥ पामे तीर्यंच गती पर्याय लाल ॥ तीर्यंचनी आनुपुर्विरे ॥ नर्क द्वीके कही ज्यूं कहाय लाल ॥ पापोदय० ॥ ७ ॥ एकेंद्री जाती उदय थकीरे ॥ पामे फर्स इंद्री एक लाल ॥ ए उदय छतां दूजी नहीरे ॥ एम बोले ए ज्ञान विवेकलाल ॥ पापोदय० ॥ ८ ॥ बेरंद्री जाती उदय थकीरे ॥ पामे फर्स रसना दोय लाल ॥ ए उदय छतां त्रीजी नहीरे ॥ गंध न लहे प्राणी कोय लाल ॥ पापोदय० ॥ ए ॥ तेरेंद्रि जाती उदय थकीरे ॥ पामे फर्स रसने गंधलाल ॥ ए उदय छतां चोथी नहीरे ॥ न पामे ए चक्षु संबंधलाल ॥ पापो० ॥ ॥ १० ॥ चौरेंद्री जाती उदयथकीरे ॥ पामे सही इंद्री चार लाल ॥

पापोदय तीहां पंचमी नहिरे ॥ पंचमी कही पून्यमां विचार लाल ॥ पापोदय० ॥ ११ ॥ बीजुं संघयण उदयथकी रे ॥ हाड संघी द्रढ बंधाय लाल ॥ मर्कट बंध दोय पासथी रे ॥ हाड पाटो उपर विंटाय लाल ॥ पापोदय० ॥ १२ ॥ संघयण नाराच उदय त्रीजुंरे ॥ मर्कट बंध दोय पासे लाल ॥ अर्ध नाराच चोथुं कह्युं रे ॥ मर्कट एक एक खीली खासे लाल ॥ पापो० ॥ १३ ॥ संघयण किलीका उदयथकी रे ॥ हाड आंकडे आंकड बंधी लाल ॥ छेवठुं उदय छठुं कह्युंरे ॥ अणिए अणी संबंधी लाल ॥ पापोदय० ॥ १४ ॥ बीजां संस्थान उदयथकी रे ॥ नाभि उपर लक्षणो पेत लाल॥ नीचुं हेठळ अंग हीनतारे ॥ ए न्यग्रोधमंडळ खेत लाल ॥ पापोदय० ॥ १५ ॥ सादी संस्थान उदय त्रीजुंरे ॥ नाभि नीचे लक्षणोपेत लाल ॥ नाभि उपर अंग हीनतारे ॥ शुं पुर्व कमाणि संकेतलाल ॥ पापोदय० ॥ १६ ॥ कुब्ज संस्थान उदय चोथुंरे ॥ उत्तम हाथपग मूख ग्रीवालाल ॥ अधम पेट हृदयने पुंठतारे ॥ सो न लहो फरी फरी वा लाल ॥ पापोदय० ॥ १७ ॥ वामन संस्थान उदय थकीरे ॥ बे हाथने पग बे हीन लाल ॥ बाकी उत्तम सर्वे अंगछे रे ॥ ते वामन कहे देव जीन लाल ॥ पापोदय० ॥ १८ ॥ हुंड संस्थान उदय छठुं रे ॥ सर्वे अंग अवयव ही न लाल ॥ उत्तम लक्षण एके नही रे ॥ अंग आकार विशेषे खीन लाल ॥ पापोदय० ॥ १९ ॥ मनुष्य तीर्यंच गर्भज मांरे ॥ षट संस्थान ग्रंथे भाख्यां लाल ॥ समचौरंस एक

देवमांरे ॥ बाकी हुंम सवे गतीए दाख्यां लाल ॥ पापोदय० ॥ २० ॥ वर्ण चतुष्क उदय थकीरे ॥ अशुभ रस वर्णी काया लाल ॥ स्वास परसेवो दूर वासनारे ॥ अमनोज्ञ फर्स कहाया लाल ॥ पापोदय० ॥ २१ ॥ असुभ विहायो गतिने उदेरे ॥ पामे उंट खर जेसी चाल लाल ॥ पग घसाय दोय पाछलारे ॥ टिचाय अन्यो अन्य एसो ख्याल लाल ॥ पापो० ॥ ॥ २२ ॥ उपघात नाम कर्म उदय थकीरे ॥ न्युनाधिक अंगथी पिडाय लाल ॥ चोर दंत पड जीभि रसो लीयेरे ॥ पथरिए पामे खलना काया लाल ॥ पापोदय० ॥ २३ ॥ थावर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ एकेंद्री बादर थाय लाल ॥ पृथ्वी, जळ, अग्निने, वायुमांरे ॥ प्रत्येक वनस्पतीकाय लाल ॥ पापोदय० ॥ २४ ॥ सूक्ष्म नाम कर्म उदय थकीरे ॥ सूक्ष्म स्थावर चौ होवे लाल ॥ दृष्टीगोचर काया नहीरे ॥ लोक व्यापी ते ज्ञानी जोवे लाल ॥ पापोदय० ॥ २५ ॥ अपर्याप्तो नाम उदय थकीरे ॥ पर्याप्ति पुरी न होवे लाल ॥ लब्धि अपज्जतो मरे तीहांरे ॥ आरंभ्युं जीवक ए खोवे लाल ॥ पापोदय० ॥ २६ ॥ साधारण नाम उदय थकीरे ॥ उपजे निगोदनी मांही लाल ॥ सूक्ष्म बादर दोय भेद एरे ॥ काय स्थिती अनंत काळ त्यांही लाल ॥ पापोदय० ॥ २७ ॥ अस्थिर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ कान, पांपण, जीभ प्रमुख लाल ॥ अंगे अवयव जे चपळतारे ॥ स्थिर न होवे ध्रुव एसी दुख लाल ॥ पापो० ॥ २८ ॥ अशुभ नाम कर्म उदय थकीरे ॥

अशुन्न कहीए अधो अंग लाल ॥ पग फर्स लाग्यां अप्रीती हुवेरे ॥ थाय वाघ युद्ध- जरी जंग लाल ॥ पापोदय० ॥ २९ ॥ डुर्नाग्य नाम कर्म उदय थकीरे ॥ अवल्लन्न लागे वहु जणने लाल ॥ उपकार कर्यां वल्लन्न नहीरे ॥ न वल्लन्न मावाप सहुने लाल ॥ पापोदय० ॥ ३० ॥ दूस्वर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ कंठ शब्द पामे अनीष्ट लाल ॥ खर, उंट, घुरु, काग सरीखोरे ॥ वीरूप श्रवण नही इष्ट लाल ॥ पापोदय० ॥ ॥ ३१ ॥ अनादेय कर्म नाम उदय थकीरे ॥ सत्य वचन न रुचे केने लाल ॥ असत्य मानी उथापक करेरे ॥ नावे वोल्युं खप वृद्ध वय ठेने लाल ॥ पापोदय० ॥ ॥ ३२ ॥ अजस नाम कर्म उदय थकी रे ॥ जस न मीले जगत्रनी मांही लाल ॥ जस लेवा वळ धन वापरेरे ॥ अजस वोले जग त्यांही लाल ॥ पापोदय० ॥ ३३ ॥ ए चौतीस न्नेद नाम कर्मनारे ॥ एकेक वेदनी आयुष्य गोत्र लाल॥ ए सत त्रीस चउअघातीनारे ॥ सवे वर्णव्यासो पाप स्तोत्र लाल ॥ पापोदय० ॥ ३४ ॥ ए पाप तत्व पुरण थयोरे ॥ दोय ढाळे कह्या न्नेद व्यासी लाल॥ ज्ञानशीतल हेय जाणी परीहरोरे ॥ तो सुख समाधी लहो खासी लाल ॥ पापोदय० ॥ ३५ ॥ ढाल अढारमी संपुर्ण ॥



क्षायकभाव तत्वविलास ग्रंथमां छपतां छुहा रही गयेला छे ते.

ग्रंथ मंगळाचरणना दुहा.

नमुं निरंजन सिद्धने, पुदूगल योगातित ॥ नमुं सयोगि जीनेंद्रने, अयोगी शैलेसि स्थित ॥ १ ॥ नमुं क्षिणमोह ठाणमां, चरण यथाख्यातवंत ॥ ए संसार निरबीजता, सर्व सिद्ध वधुकंत ॥ २ ॥ क्षायक लब्धिवंतए, महामंगलिक महंत ॥ शुद्ध परीणतिमां वसे, सहज भाव शीव संत. ॥ ३ ॥ ज्ञाने ए पद पाइये, तीणे रचुं ग्रंथ थीर भाव॥क्षायक तत्व विलासए, संसार तारण नाव ॥ ४ ॥ क्षायकभेद अनंत छे मुखशुं कह्या न जाय ॥ क्षायक नव भेदे कह्युं, ज्युं कर्मग्रंथ चोथे कहाय ॥ ५ ॥ समकितने चारित्रए, केवळज्ञान दरशंन ॥ दान लाभने भोगए, उपभोग वीर्य घंन ॥ ६ ॥ ए नव लब्धि गाइए, नव तत्व संयुक्त ॥ अनुभव योगे ध्याइये, थिर उपयोगे युक्त ॥ ७ ॥

पेहेली ढाळनी पूर्णताये दुहा.—समकित मोहानि छेल्लो अणुं, खपतां वेदक कहाय ॥ एक समय स्थिति तेहनी, त्यां क्षायक समकित पाय ॥१॥ क्षायक चारित्र आतमा, परमातम वीतराग ॥ मोह ध्वंस करी हुआ, ठाण वारमे शिव माग ॥ २ ॥ रागद्वेष अवळी दशा, पुदूगल संग उपयोग ॥ छेदी सवळा सनमुखे, शुद्ध परिणति संयोग ॥ ३ ॥

बीजी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—क्षीणमोह ठाण अंतमें, त्रण कर्म करे नाश सात गुण लब्धि त्यां लहे, गुणठाण तेरमे वास ॥ १ ॥

त्रीजी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—द्रव्य सक्ति ओळखावशुं, सामान्यज्ञान विचार ॥ सर्व द्रव्यमां संपजे, ते सामान्य एम धार ॥ १ ॥ द्रव्यनो भेद जींहां पडे, जीवथी भिन्न सो अजीव ॥ ते विशेष एम जाणीए, ज्ञानी वचने सदीव ॥ २ ॥ सामान्य द्रव्यार्थक ए, पर्यायार्थक विशेष ॥ एक द्रव्यनी वृत्तिए, लाधे सामान्य विशेष ॥ ३ ॥

चोथी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—द्रव्य स्वरुप ए दाखीयुं, दाख्यो स्याद्वाद धर्म ॥ द्रव्य पर्यायने जाणतां, टळे मिथ्या मति भ्रम ॥ १ ॥

पांचमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—धर्मास्तिकाय वर्णव्यो, वर्णव्या गुण पर्याय ॥ ज्ञानी वचन आलंबने, थिर मने रमणता पाय ॥ १ ॥

छठी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—अजीव अरुपी चौ कह्या, गुणपर्याय संयुक्त ॥ हवे कहुं पुद्गलने, तजतां संसार मुक्त ॥ १ ॥

सातमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—वर्गणा आठे वर्णवी, तन वचन मन एह ॥ आठमी कार्मग कर्मए, सत्ता उदियादि तेह ॥ १ ॥ पुद्गलने जाण्या विना, जीव जाण्यो नहीं जाय॥ अरुपी गोचर नहीं, गोचर पुद्गल काय॥२॥

आठमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—वस्तुनो जे स्वभाव छे, ते कह्या गुण पर्याय त्रिकाळे गुण फीटे नहीं, ध्रुवता लक्षण सदाय ॥ १ ॥

नवमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—पुद्गल द्रव्यने दाखीयो, दाख्या पांच द्रव्य अजीव ॥ हवे कहुं आश्रवने, वचन सुधारस दिव्य ॥ १ ॥ कर्म दळ आवे ए सही, आश्रव नाम कहाय ॥ मूळ हेतु चौ दाखीया, कहुं अधिकार वनाय ॥ २ ॥

दशमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—आश्रव हेतु पेहेलो कह्यो, दुष्ट ए मिथ्यात्व नाम ॥ बीजो अव्रत दाखीये, उपयोग राखी ठाम ॥ १ ॥ इहां केइ तरक करे, तुमे कह्यो दुष्ट मिथ्यात ॥ गुणठाणुं पेहलुं कह्युं, ए अण मळती वात ॥ २ ॥ तेहने उत्तर दाखवुं, रचुं ढाळ रसाळ ॥ सांभळजो श्रोता जनो, थिर मन करी धर्मलाल ॥ ३ ॥

अगीआरमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—मिथ्यात्व दुष्टता वर्णवी, समजो भवि चित्त लाय ॥ ए छुटे जब धन्य घडी, सम्यक्गुण प्रगटाय ॥ १ ॥ मिथ्यात्व गुणठाणुं कह्युं, तस उत्तर हवे थाय ॥ थिर चित्ते भवी सांभळो, उपदेश गर्भित न्याय ॥ २ ॥ नैगम संग्रह नयथी, मिथ्यात गुणठाण मांही ॥ जीव वसे ते सिद्ध कह्यो, गुणमय सत्ता त्यांहि ॥ ३ ॥ गुणनुं पात्र जीव छे, तेथी कहुं गुणठाण ॥ जाणो भविजन एहने, होशे ज्ञान प्रमाण ॥ ४ ॥ जाणपणुं जग दोहिलुं, दुर्लभ सद्गुरु योग ॥ पुन्योदय तिहां पामीये, सद्गुरु वचन संयोग ॥ ५ ॥ गुरुवचन भाले करी, भविजन हणो मिथ्यात ॥ कुगुरु भ्रमने परिहरो, तीहां होशे सुखशात ॥६॥

जीवगुण ग्रहण करो, भेदज्ञान घटमांहि ॥ समविभाग त्यां संपजे, समकित लहो उछांहि ॥ ७ ॥ हवे अव्रतने वर्णवुं, सुणजो भविजन सार ॥ तजतां लाभ होशे घणो, विरतिपणुं निरधार ॥ ८ ॥

बारमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—आश्रव हेतु बीजो कह्यो, अव्रत बार भेद नाम ॥ हवे त्रीजो हेतु कहुं, कषाय पंचवीश श्याम ॥१॥ अनंतानादि चौ चोकडी, ए सोळ भेद कषाय ॥ नो कषाय नव भेद सहु, अनुक्रमे वर्णव थाय ॥ २ ॥

तेरमा ढाळनी पूर्णताये दुहा—आश्रव हेतु त्रीजो कह्यो, पंचवीश भेद कषाय ॥ मन तन वचन योगना, भेदनो वर्णव थाय ॥ १ ॥ मन वचन दो चउ चउ, सात भेद कही काय ॥ सर्व मळी पंच दस ए, योगना भेद सही थाय ॥ २ ॥

चौदमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—आश्रव हेतु चोथो कह्यो, योग भेद दश पांच ॥ कह्या सवे चउ हेतुना, भेद सत्तावन नहीं खांच ॥ १ ॥ ए हेतुये आश्रव खेंचीने, कर्म दळ मेळवे अनंत ॥ आत्म प्रदेश संबंध पणे, कार्मण वर्गणा तंत ॥ २ ॥ कार्मण ते आठ कर्मछे, अवर सात कर्म नांहि ॥ समे समे सात बांधतो, मिथ्यात वसे जीव मांहिं ॥ ३ ॥ आयुष आवता भवनुं, बांधे जीव एकवार॥बंध कहुं चउ भेदथी, आत्म प्रदेशे धार॥ ४ ॥

पंदरमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—बंध कह्यो चउ भेदथी, रसविण नहीं बंधाय ॥ रागद्वेष परिणतिये, निश्चय कर्म बंध थाय ॥ १ ॥ राग द्वेष जीहां नहीं, तीहां कर्म बंध न होय ॥ वीतराग भावे अबंध छे, निश्चय वचन ए सोय ॥ २ ॥ कर्म शुभाशुभ उदयथी, पुन्यने पाप कहाय ॥ पुन्य बायालिस भेदनो, कहु अधिकार बनाय ॥ ३ ॥

सोळमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—पुन्य भोग ए दाखीयो, पूरव बंध अनुसार ॥ पुनरपी बांधो नहीं, खेरवी सिद्ध पद धार ॥ १ ॥ निश्चय नयनो पक्षए, उतसर्ग साधन एह ॥ उपयोगे भावक्रिया, ध्याता ध्येय ध्यान तेह ॥ २ ॥ एकता अभेद भावमां, तीहां आत्म अबंध॥ उदांयकता खुटे तिहां, लहे सिद्ध वधु संबंध ॥ ३ ॥ ए विण मुक्ति मळे नहीं, समजो

चतुर सुजाण ॥ स्वभाव विण धर्म छे नहीं, उत्तराध्ययन वखाण ॥ ४ ॥ मुक्ति पंथ ए भाखीयो, भाख्यो निज परहित ॥ पुन्य वंध हेतु हवे, कहींशुं उपयोग रीत ॥ ५ ॥ शुभ व्यवहार नये करी, वांधे प्रकृति शुभ ॥ ओगण चालीश जाणीये, गुरु वचने भली बुध ॥ ६ ॥ निश्चय नयनी दृष्टिये, सरागता परिणामि जाय ॥ तेह अणारोप शुभ छे. तिहां भ्रणनो वंध थाय ॥ ७ ॥ चोथाथी सातमा लगे, जीन नाम कर्म बंधाय ॥ आठमे वंध विच्छेदता, कर्मग्रंथ वीजे कहाय ॥ ८ ॥ अप्रमत्त ठाण सातमुं, तीहां आहारक शरीर आहारक अंगोपांग दोय, वांधे शुद्ध संयमीवीर ॥ ॥ ९ ॥ ए पुन्य वंध हेतु कह्या, कहुं हवे पाप दुख ॥ घाति अघाती वर्णवुं, ते छुटे लहे जीव सुख ॥ १० ॥

सत्तरमी ढाळनी पुर्णताये दुहा.—गुण घाती पाप वर्णव्युं, पूरव वंध संवंध ॥ अघाती हवे सांभळो, दाखुं ए पाप प्रवंध ॥ १ ॥

अढारमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—पाप दुख भोग दाखीयो, घाती अघाती विचार ॥ पूर्व वंध अनुसार ए, सहीये समताये सार ॥ १ ॥ समताविण सेहेतां थकां, होवे न दुखनो अंत ॥ पुनरपि वांधे तिहां, इम भाषे सवि संत ॥ २ ॥ अघाती पाप एम टळे, हवे घातीनो विचार ॥ ज्ञान विना छुटे नहीं, ज्ञान छे सर्वमां सार ॥ ३ ॥ ते कारण भणो ज्ञानने, सेवो ज्ञानी गुरुजेह ॥ विनय करो प्रमोदशुं, लहशो ज्ञानगुण गेह ॥ ४ ॥ ज्ञान धर घटंतरे, अनुभव भुवनमांहि ॥ ज्ञान भानु उदय हुवे, घाति पाप भागे त्यांहि ॥ ५ ॥ ए विण घाती टळे नहीं, समजो भविजन सार ॥ पापस्थान सेवो नहीं, पापए दुःखदातार ॥ ६ ॥ पाप वंध हेतु एह छे, अष्टादश भेद नाम ॥ पंच अव्रत कषाय चौ, रागद्वेष परिणति श्याम ॥ ७ ॥ कलह कलंकने चाडीयो, रति अरति परनिंदा ॥ कपट फंद वचनए, मिथ्यात भारे मोटा जंदा ॥ ८ ॥ ए हेतु पाप वंधना, एही पापतत्व जाण ॥ पूरण पंच अजीवना, कर्या करुं जीव वखाण ॥९॥

श्री गुरुभ्योनमः

॥ अथ श्रद्धा प्रकरण लीख्यते ॥

दुहा.

प्रणमुं मल्ली जीणंदने, नग्र भोयणी सार.
यात्रा कारण आविया, जीन मंदिर दरबार ॥१॥
दर्शन दुर्लभ देवनुं, समकित हेतु मर्म.
त्रण तत्वसही भाषियां, देव गुरुने धर्म ॥२॥
श्रद्धा स्थिर शंका नही, ते समकित व्यवहार;
रचना कारणे ते करुं, श्रद्धा प्रकरण सार ॥३॥
सर्व धर्मनुं मूळ ए, फळदायक आचार;
श्रद्धा विण फळ नवी लहे, समजो चतुर विचार ॥४॥
देव गुरुने धर्मनुं, अनुक्रम वर्णन थाय;
ते जाणी भवि सद्दहो, जन्म सफलता पाय ॥५॥

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ अहो सर्व गुणी मुनिसुव्रत जीनराय काज
मुज सारो—ए देशी ॥

अहो सर्व गुणी वितराग अरिहंत सिद्ध विण देव नहि दूजो, घट ज्ञान लावी आत्म सत्ता गत धर्म जाणी भवि बूजो ॥ ए आंकणी. निज निज सत्ता घट घट भासे, त्रिकाळ वृत्तिए नहि क्षय थाशे, अखंड अविनाशी तेहि द्रव्य दाख्यो,, संग्रह नय पक्षे सर्वज्ञ भाख्यो ॥ अहो० ॥१॥

द्रव्य द्रव्य प्रत्ये अनंत गुण भाख्या, गुण गत अनंत पर्याय दाख्या, प्रदेस समूदाय तिहां राख्या, तेहिज सत्ता एम ग्रंथे साख्या ॥ अहो० ॥ २ ॥ इति पर्याये पूर्ण भासे कार्य नहि अव्यक्तव्यतासे, व्यक्तव्य सामर्थ पर्याय तिहां; न लहे उपयोग विण भाव इहां ॥ अहो० ॥ ३ ॥ उपयोग ज्ञान दर्शन द्विभेदे, लहे नय ऋजुसूत्र तद्गत वेदे; करी:करण अपूर्व ग्रंथी भेदे, लहे समकित मिथ्यात्वने छेदे ॥ अहो० ॥ ४ ॥ इहां शब्द नय साध्य साधन एकता, गुणगत गुण वृत्तिनी टेकता; स्वस्वरूप रमणीये नहि अन्य भेगता, छेदी मोहनी उपाधि लहे यथाख्यातता ॥ अहो० ॥ ५ ॥ इहां क्षीण मोह ठाणे समभिरूढ आवे, तिहां त्रण घाती कर्मनो क्षय थावे; लहे अनंत चतुष्ट व्यक्ति भावे, अरिहंत सयोगि केवळी ठाण पावे ॥ अहो० ॥६॥ सयोगि केवळीना दोय भेद भाख्या, एक तिर्थंकरने बीजा सामान्य दाख्या; बेहु देव तत्व अंतरगत सरखा, बाह्यमां विशेष तिर्थंकरने परख्या ॥ अहो० ॥ ७ ॥ ए जीन देव चो निक्षेप दाखुं, प्रथम जीन नाम जीननुं भाखुं; स्थापना जीन जीन पडिमा नीरखी, जीनने जीन पडिमा बेहु कही सरखी ॥ अहो० ॥८॥ जीन पडिमा नव अंगे पूजो, निज गुण हेतु जाणी तद्गत बूझो; हवे द्रव्य जीन भाखूं भवि सांभळो, बांध्यूं जीन नाम कर्म ते द्रव्य जीन भलो ॥ अहो० ॥ ए ॥ भाव जीन समोवसरण ज्यांहि, अष्ट प्राति-हार्यादि ऋद्धि त्यांहि; बार पर्षदा मिले आवीने जीहां,

दिये जीनपति देशना जलधार तिहां ॥ अहो० ॥ १० ॥ उप-न्नेवा विगमेवा ध्रुवेवा, सूणी ज्ञान लहे गणधरपद लेवा, नव द्रव्यास्तिक पर्यास्तिक बोध इहां, लब्धिए रचे द्वादश अंग तिहां ॥ अहो० ॥ ११ ॥ मस्तक नमावे जीनपति आगे, इंद्र वासक्षेप आपे थाल न्नरी रागे; वासक्षेपवि गणधर पद स्थापे, विरती प्रणामि थाय प्रन्नू मुख ठापे ॥ अहो० ॥ १२ ॥ साधू साध्वी सर्व विरती न्नावे, देश विरती श्रा-वक श्राविका थावे; एम संघ चउविध जीनपति स्थापे, आज्ञाये शिवपंथे कर्मबंध कापे ॥ अहो० ॥ १३ ॥ चौतीस अतिशयवंत गुण खाणी, पंचतिस गुणन्नर जीनपति वाणी; कंचन कमले प्रन्नू विहार करे, अणहूता कोम सूर सेवे मन खरे ॥ अहो० ॥ १४ ॥ दोष अढार रहित बार गुण-वंता, क्षायक नव लब्धिए पूर्ण संता; जीन नाम कर्मनो विपाक उदय न्नयो, तेने खेरवे त्यां न्नव्यने ए कारण थयो ॥ अहो० ॥ १५ ॥ षट् द्रव्य वस्तु जीनवर न्नाखे, तेमां एक जीव पंच अजीव दाखे, पंच अजीव परने हेतु दाख्या जीवने निज हेतुपर अहेतु न्नाख्या ॥ अहो० ॥ १६ ॥ जी-वने हेतु अहेतु उदिकताए कहीए, वस्तुए निज हेतु स-द्दहिए, एम जाणी निज गुणगत लिन थइए, शक्ति न्नाव ते व्यक्तिपणुं लहे तहींए ॥ अहो० ॥ १७ ॥ एम चउ निक्षेपे जीनवर जाणी, तरणतारण घटगत न्नाव आणी; जीन गुण गावो ध्यावो न्नव्य प्राणी, गुण गाइने थया अ-नेक गुण खाणी ॥ अहो० ॥ १८ ॥ सयोगि केवळी ठाणे

स्थिति दाखी, उत्कृष्ट देशे उणी पूर्व कोम्ह जाखी, जघन्य अंतरमुहुर्त एक राखी, एम ग्रंथ प्रकरणे बहुश्रुत साखी ॥ अहो० ॥ १ए ॥ आयुष्य अंते योग रोध ध्यावे, तिहां शैलेशी करण करी स्थिर थावे, अयोगी अंते अघाति चौ क्षय पावे, आत्म असंख्य प्रदेश निर्मल जावे ॥ अहो० ॥ २० ॥ एहि सिद्ध निवऽघन होय जागे, बूटी कायाथी पोलनो एक जाग त्यागे, समश्रेणीये लोकंते समे एक लागे, तिहां सादि अनंत काल स्थिति जांगे ॥ अहो० ॥ २१ ॥ एम साध्य साधन जवि जे करशे, कारण ठति पर्याय ऋजु सूत्र ग्रहशे, कार्य सामर्थ्य पर्याय शब्दथी वरशे, पूर्ण कार्य लोकंते सिद्ध स्थिति करशे ॥ अहो० ॥ २२ ॥ इहां एवं जूतनय एक कहीये, स्याद्वाद स्वरूप सिद्धगत लहीये, द्रव्यास्ति पर्यास्तिक पक्ष ग्रहीये, उपयोगे समकित निर्मल तहीये ॥ अहो० ॥ २३ ॥ एम देवतत्वनी जे श्रद्धा करशे, ते अल्पकाळे सिद्ध वधू वरशे, सर्व जीव समूदाय सत्ता ए सरखा, ज्ञानशीतल करी गुरु गम लेइ परख्या ॥ अहो० ॥ २४ ॥ संपूर्ण.

दुहा

देव तत्व ए वर्णव्यो, साधन साध्य अजेद;
धर्म स्व सत्ता जाणिये; नय पक्ष जेदाजेद ॥१॥
निजपर सत्ता जिन्नता, काळ अनादि सबंध;
पर नास्ति जावे रही, तजतां आतम अबंध ॥२॥

ગુરુ તત્વ હવે વર્ણવું, ગુરુના ગુણ અનંત;
બહુશ્રુત વિણ સદ્ગુરુ નહિ, સમજો ચતુર મહંત ॥૩॥
જેને જે ઉપકારી છે, બોધી બીજ દીયે દાન,
તે તેનો ગુરુ જાણિયે, કીજે તસ બહુ માન ॥૪॥
સમકિત દાયક ગુરુ તણી, સદા સેવા કરે એહ;
ભવ કોડાકોડી લગે (પણ) બદલો ન વળે તેહ ॥૫॥

॥ ઢાલ બીજી ॥

॥ દેખો ગતિ દૈવની રે–એ દેશી ॥

ગુરુ તત્વ બીજો ગુણ નિલોરે, જે શ્રુત કેવળી અણગાર, કેવળીને એ બેમાં અંતર નહિરે, વૃહત્ કલ્પ ભાષ્યે સાખ નિરધાર, જગત ગુરુવંદીએરે ॥ વંદ્યાં ટળે સહિ ભવના એ ફંદ, નિમિત્ત હેતુ પૂછએરે ॥ એ આંકણી ॥ ૧ ॥ સદ્ગુરુ નહિ સર્વ ક્ષેત્રે સદારે, શ્રેષ્ઠકાળે પણ એમ, આ દૂષમ પંચમ કાળમાંરે. કોઇ અવસરે મીલ્યાં કરો અતિ પ્રેમ ॥ જગત૦ ॥૨॥ વિનય કરો તનમનથી રે, ગુરુ રાયના ગુણ ગાવો સાર, આજ્ઞા ગ્રહી ગુણવૃત્તિ કરો રે, ગુરુ કરુણા રસ ભંડાર ॥ જગત૦ ॥ ૩ ॥ ઉપદેશ કરે યોગ્ય જાણીનેરે, સમજાવે એ જીવ અજીવ, ચેતના લક્ષણ જીવ છેરે, રહિત ચેતના તેહ અજીવ ॥જગત૦॥૪॥ ચેતના દ્વિવિધ જાણીયેરે, ઉપયોગ સામાન્ય વિશેષ, સામાન્ય દર્શન જાણીયેરે, જ્ઞાન ઉપયોગ તેહ વિશેષ ॥ જગત૦ ૫ ॥ મનુષ્યની કાયા ગત ઇંદ્રિ પાંચ છેરે, શબ્દ, રૂપ, રસ, ગંધ ને સ્પર્શ, મન નોઇંદ્રિ છઠ્ઠો છે

सहीरे, तेमां उपयोगी चेतन रह्यो सरस ॥ जगत० ॥ ६ ॥ काष्टमां जेम अग्नि रहीरे, वळी घी रह्युं दुधनी मांहि ॥ तिलमां तेल व्यापीने रह्युंरे, तेम चेतन रह्यो काया त्यांही ॥ जगत० ॥ ७ ॥ ए चेतन सत्ताए सिद्ध समछेरे, परसंगे संसारी कहाय ॥ परसंग छूटये तद्गत परिणमिरे ॥ अनुभवी शिव पद पाय ॥ जगत० ॥ ८ ॥ परसंगे वृद्धि राग-द्वेषनीरे, कर्म बंधनुं कारण एह ॥ इंद्रि संगे विषय जकता अनुभवेरे, अनादि अशुद्ध परिणति ए तेह ॥ जगत० ॥ ए ॥ दश द्रव्य प्राण कहीये जीवनारे, ते अशुद्ध व्यवहार नय पक्ष ॥ नहि जीवना उदिक भावे पामीएरे, पूर्व बंधज नित्य ए प्रत्यक्ष ॥ जगत० ॥ १० ॥ भाव प्राण जीव गुण उपयोग एरे, छति पर्याय भाषे त्रण काळ ॥ संग्रह सत्ता शक्तिएरे, घटमां नय ज्ञान वस्तु निहाळ ॥ जगत० ॥ ११ ॥ मिश्र भावे करे कर्मबंधनेरे, कर्मबंधथी जन्म मरण होय ॥ भवभ्रमण करे गति चक्रमांरे, जेमो न लहे तेली वळदपरे कोय ॥ जगत० ॥ १२ ॥ भव भव प्रत्ये दुःख अति घणुंरे, चउगति संसार मांहि ॥ तेमां घणुं दुःख नारकी भोगवेरे. तेथी अनंतु निगोद गति त्यांहि ॥ जगत० ॥ १३ ॥ तेनुं कारण अज्ञान मोहछेरे, अव्यक्तव्य अनादि संबंध ॥ अशुद्ध परिणतिए परीणम्योरे, तेथी न लह्यो निज गुणगंध ॥ जगत० ॥ १४ ॥ निज गुण सम्यक चौ गति संज्ञिमांरे, अंशे शुद्ध परिणति होय ॥ केइ ग्रंथी भेद लहेरे, छेदी अनादि मिथ्यात्व सोय ॥ जगत० ॥ १५ ॥ अंशे उपाधि

परिणतिये टळेरे, श्रद्धामां टळे उपाधि सर्व ॥ पर वस्तु भिन्न भासे आत्मज्ञानथीरे, समकित गणुं ए जाणो दीवाळी पर्व ॥ जगत० ॥ १६ ॥ इहांथी रस्तो सीधो शिव पंथनोरे, घट अंतर गुण श्रेणीमांही ॥ गुण गत मनुष्य भवे शिव लहेरे, न खळायतो एक मुहुर्त्ते पहोंचे त्यांही ॥ जगत० ॥ १७ ॥ सीधे रस्ते खाळे अधिक एक आउखुंरे, रोकाय केवळी तेरमा गणमांहि ॥ अवळे रस्ते खाळे अनेक जाणीयेरे, बूटे ते पाके भव स्थिति त्यांहि ॥ जगत० ॥ १८ ॥ अनुभव विण शंका टळे नहीरे, शंका टळे जब समकित होय ॥ वस्तु गत वस्तुपणुं लहेरे, ते शुद्धातम अनुभवि सोय ॥ जगत० ॥ १९ ॥ सिद्ध स्वरूपी आतमा रे, जाणे देशथी जे अनुभवि होय ॥ सर्वथी जाणे केवळी रे, प्ररूपे अनंतमे भागे अभिलाप्य सोय ॥ जगत० ॥ २० ॥ अधिक कहेवामां आवे नहि रे, एटलामां खुटे क्रोड पूर्व आयूष्य ॥ आठ वरसनी उम्मरे केवळ लहीरे, अखंड धाराये प्ररूपे आत्मऋद्धि जुष्य ॥ जगत० ॥ २१ ॥ अनअभिलाप्य तो वचनातित बे रे, केवळीना वचन गोचर नवि थाय ॥ अभिलाप्यथी अनंतो, अनअभिलाप एरे, एम बोले गितारथ राय ॥ जगत० ॥ २२ ॥ आत्मऋद्धि खुल्ली प्रत्यक्षबे रे, आळेखी अनुभव मंदीरमांही ॥ उपयोग भावे ते ऋद्धि ग्रहीये रे, लहीये सूख अव्याबाध अंश त्यांहि ॥ ॥ जगत० ॥ २३ ॥ शिव सूख कारण अनुभव बे रे, ए विण संसार पंथ ॥ कदि चौगति भ्रमण टळे नहिरे,

करतां शुभ्र क्रिया वोले अनेक ग्रंथ ॥ जगत० ॥२४॥ सद्गुरु श्रवण हेतु अति ज्ञलारे, दिये अढलक वोधनुं दान ॥ सुणि मनन चिंतवन घटंतर करिरे, निंद्राशय न टाळी जागृत थै पामे ज्ञान ॥ जगत० ॥ २५ ॥ जागृत दशा जव जाणीयेरे, निज ने पर वेहु ज्ञासे ज्ञिन्न ॥ आप स्वरुपी आपमांरे, व्यापक परिणमन थाय तद्लीन्न ॥ जगत० ॥ २६ ॥ निज पर ज्ञिन्न ज्ञेद जीहां नहिरे, तिहां एकांते पर पोतानुं मनाय ॥ विरती थैने ते धर्म करणी जो करेरे, नहि शिव हेतुए मिथ्यात्व कहाय ॥ जगत० ॥ २७ ॥ निज पर ज्ञेद ज्ञिन्न ज्ञासे जीहांरे, तिहां आत्म हेतु कहेवाय ॥ ज्यारे त्यारे पर परिहरेरे निजरूपे पूर्ण सिद्धता पाय ॥ जगत० ॥ २८ ॥ आत्मरुचि प्यारा तुमे अंतर ज्ञजोरे, उदे पामशे अपरिताप ज्ञानज्ञाण ॥ तिमिरांधकार ज्ञागे तिहांरे, पामो अनुज्ञवज्ञूवने केवळनाण ॥ जगत० ॥ २९ ॥ एम आत्म स्वरूपने जाणीयेरे, साधक वाधक वृत्तिनो विचार ॥ वाधक ज्ञावने परिहरीरे, लहीये साधकताए सिद्ध पद सार ॥ जगत० ॥ ३० ॥ गुरु दिनकर सम ज्ञाने दिपतारे, करे स्वपरने प्रकाश ॥ परपरपणे करीने लहेरे, स्व अनुज्ञवे सिद्ध पद खास ॥ जगत० ॥ ३१ ॥ ए गुरुना गुणगण गाइएरे, हुंतो सेवक सद्गुरुनो दास ॥ ज्ञानशितळ करी दाखीयोरे, कीधो उपदेश जीव गुणनो समास ॥ जगत० ॥३२॥

समास ॥

दुहा.

गुरु उपकारी अति भला, जणाव्युं जीव स्वरुप;
साधक बाधक वारता, दाख्युं ज्ञान अनूप. ॥१॥
धर्म तत्व त्रीजो हवे, भाखुं वचन रसाल:
स्थिर चित्ते भवी सांभळो, श्रध्धा करो विशाळ. ॥२॥
धर्म मूळ श्रुतज्ञान ए, बीजुं चारित्र धर्म;
श्रुत दिपक घट अंतरे, मिथ्यामती टळे भर्म. ॥३॥
श्रुत ज्ञान द्रव्य भावथी, आराधो भले भाव.
द्रव्य श्रुत कारण भावनुं, भाव भवो दधि नाव. ॥४॥
गुण स्थानक चोथुं इहां, ग्रंथी भेद करी पाय;
नहिं तो अज्ञानी रहे, धर्म न तेह कहाय. ॥५॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आदि जीणंद मया करो—ए देशी ॥

श्रुतज्ञान घटंतर पाइने, उपयोगे मोह खपावोरे, बाह्य वृत्तिए परिणमन मोह छे, त्यां राग द्वेष वृद्धि न भावोरे ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ घटगत निज चेतन ओळखो, गुण अनंतनो कंदरे, निरुपद्रवस्थान अंतर विषे, अनुभविने करो श्रद्धाए जीणंदरे ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ सर्व देवनो देव निज आत्मा, सर्व गुरुनो गुरु उपयोगरे ॥ धर्म वस्तु स्वभावे छे सहि, सत्ताए सिद्ध अनादि अनंत भंगरे ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥ शक्ति व्यक्ति लहीए श्रुतज्ञानथी, श्रुतज्ञानी थाय वितरागरे ॥ वितराग श्रुतज्ञाने केवळ लहे,

पामे सनातक पद अणगाररे ॥ श्रुत० ॥४॥ केवळ कारण सही श्रुत ज्ञानए, श्रुत ज्ञान शिवपंथ त्यांहिरे, करी अनुभव गुण श्रेणीये चढो, एकत्व परिणमन शुद्धातम मांहिरे ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥ श्रुतनाणी होवे पंचभेदे संजमी, यथाख्यात क्षिण मोहठाणे वंदोरे, श्रुतज्ञाने घातीकर्म क्षय करी, थाय केवळी त्यां परमानंदोरे ॥ श्रुत० ॥ ६ ॥ जाणे वस्तुगते एक निज आतमा, तेने सर्व जाण कह्या ठाणंगेर, बाकी सर्व जाणे तेने अजाण कह्या, जो जो पहेला ठाणे मन चंगे रे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥ जाणे जगत प्रत्यक्ष जेम केवळी, तेम जाणे परोक्ष श्रुतनाणी रे, केवळीनो उपयोग वर्ते समे समे, छद्मस्थनो असंख्य समे वर्ते भव्य प्राणीरे ॥ श्रुत० ॥ ॥ ८ ॥ घटंतर उपयोग ते भाव श्रुत छे, करे रमण अंतर परिणमभरे, उपादान कारणपणुं त्यां लहे, करे कार्य थाय तद्रूलिभरे ॥ श्रुत० ॥ ए ॥ केइ कार्य करे इहां देशथी, केइ सर्वथी कार्य करे जाणरे ॥ देशथी कार्य ते समकित लहे, सर्वथी कार्य पामे केवळ नाणरे ॥ श्रुत० ॥ १० ॥ भाव श्रुत निश्राये द्रव्य श्रुत छे, नहि तो अश्रुत एम कहीये रे, जीहां भणीये सूणीये विनय करी, तिहां द्रव्य श्रुत गुण ग्रहीये रे श्रुत०॥११॥ श्रुत चउद भेद विश भेद छे, वळी सूत्र पिस्तालीस भेदरे, सद्गुरु मूखे सूणिये विधी करी, लहीये समकित मिथ्यात्व छेदरे, ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥ भणावे अक्षर श्रुतना जेटला, तेटला सहसवरस सुख पावे रे, स्वर्गे अनंतां अनुभवे, एम विजय लक्ष्मीसूरी गावे रे ॥ श्रुत० ॥

१३ ॥ जाणे जीव द्रव्य क्षेत्र काळ ज्ञावथी, द्रव्य अखंड अविनाशी त्रणे काळरे, क्षेत्रथी असंख्य प्रदेशी कह्यो, काळथी अगुरुलघु परिणति रसाळरे ॥ श्रुत० ॥ १४ ॥ ज्ञावथी केवळनाण दर्शण सही, इत्यादि क्षायक लब्धि अनंतरे, बे सत्ताए संग्रह नयथकी, करो शब्द पामी संग्रह एवंज्रूतरे ॥ श्रुत० ॥ १५ ॥ ध्यान धर्म शुक्ल दोय ध्याइए, तिहां श्रुतज्ञान उपयोग घटमांरे, एहि ज्ञान गज गर्जारव करे, मोहादि उपाधि ज्ञागे समाधि वरे ऊटमांरे ॥ श्रुत० ॥ १६ ॥ समाधि हेतु एकश्रुत दूजो नहि, ज्ञान शितळ ए वचन प्रमाणरे, एम जाणीने ज्रविजन खप करो, लहो ज्ञावश्रुत अनुज्ञव नाणरे ॥ श्रुत० ॥ १७ ॥ समाप्त. ॥

॥ दुहा ॥

श्रुत ज्ञान ए वर्णव्यो, धर्म कहीजे तेह;
विरति ज्ञान फळ आदरी, टाळो आवरण खेह ॥१॥
विरति देशथी सर्वथी, द्रव्य ज्ञावे विचार;
द्रव्य विरतिथी स्वर्ग बे, ज्ञाव शिव पद सार ॥२॥
देश विरति श्रावक कह्या, सर्व विरति अणगार;
पंच ज्रेद बे तेहना, यथाख्यात शिव सार ॥३॥
अणुव्रत्तादिक ज्रेदथी, श्रावकनां व्रत बार;
गुरु मुखे ज्रवि उच्चरो, समकित मूळ नरनार ॥४॥
श्राद्ध धर्म हवे वर्णवुं, आगळ ढाळ रसाळ;
जाणीने ज्रवि आदरो, विरति मुख्य नहि बाळ ॥५॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ देशी रसीयानी ॥

श्री श्रावक धर्म आराधीएरे, समकित मूळ प्रख्यातरे गुण रसीया, स्थुल अणू व्रत पंच भेदथी रे, तेमां प्रथम दयाधर्म वातरे, गुण रसीया ॥ १ ॥ त्रस स्थावर दया भेदथीरे, स्थावरनी दया नहि कीधरे, गुण रसीया; दश वसा गया तेहनारे, रह्या त्रसना दश प्रसिद्धरे, गुण० २॥ तेमां कारणे हणाय जीव तेहनारे, गया पांच वसा ने रह्या पांचरे, गुण०॥ अपराध करे हणुं तेहने रे, तेना अढी गया रह्या अढी न खांचरे, गुण० ३॥ कारण विना निरापराधीनी रे, ग्रहस्थिना घरे अजतना थायरे, गुण० तेनो सवा गयो ने रह्यो सवा वसोरे, संकल्पि न हणुं त्रस जीव कायरे, गुण० ४ ॥ ए प्रथम अणुव्रत दाखीयुंरे, बीजे अलिक भाषानो स्थूल निमरे, गुण०॥ कन्याळी भूमाळी गवाळी वळी रे, थांपण मो सो कुडी साख पंच भीम रे, गुण० ५ ॥ त्रीजुं अदत्त विरमण व्रतमां रे, राजा दंडे ते चोरीनो करो त्यागरे, गुण०॥ चोथुं मैथुन विरमण व्रतमां रे, वेद विषय त्याग घट वैरागरे, गुण० ६ ॥ सामान्य विशेष दोय भेदथी रे, सामान्ये स्वदारा संतोष रे गुण० ॥ विशेषे सोय दोरा आकारथी रे, तजे विषय अंतर नहि रोषरे, गुण० ७ ॥ परिग्रह परिमाण व्रत पंचमुं रे, तेमां अधिक मूर्छानो अभावरे, गुण०॥ परिमाण बांधे नव भेदथी रे, तेनो करे लेख लखावरे ॥ गुण० ८ ॥ ए पंच अणुव्रत कह्यां व्यवहारथी रे, हवे तीन्न गुणव्रतनो

विचाररे गुण० ॥ गुणवृते गुणवृद्धि अणुवृतमांरे, जो पाले निर तीचाररे ॥ गुण० ए ॥ पहेला गुण वृत दिशी परिमाणमां रे, दिशीविदिशी उर्ध्व अधोदिसरे ॥ गुण० ॥ परिमाण करे गमनागमन तिहां रे, अधिक विरमण व्यवहार तसरे ॥ गुण० ॥ १० ॥ निश्चय दिशी अंतर उपयोगमां रे, करे अनुभव अनंत दोर संतरे ॥ गुण० ॥ दृष्टिगोचर नहि वर्णादि तिहां रे, बाऊ सवे दिशी विरमण कहंतरे ॥ गुण० ॥११॥ बीजुं गुणव्रत भोग उपभोगएरे, तेना निश्चे व्यवहार दोय भेदरे ॥ गुण० ॥ व्यवहारव्रतना कायादि जोगथी रे, तेमां अशुभ आचरण भोग छेदरे ॥ गुण० ॥ १२ ॥ निश्चे निज गुण लब्धि घटंतररे, क्षय उपशम प्रकृति एकादशरे ॥गुण०॥ उपयोगे करो भोग समाधि लहोरे, उपभोग पूनर्वारंवार तसरे॥ गुण० ॥१३॥ त्रीजुं गुणवृत अनर्थदंड विरम्यां रे, तेना निश्चे व्यवहार दोय भेदरे ॥ गुण० ॥ व्यवहारे सावद्य अशुभ जोग विरमी रे, निर्वद्य शुभ जोगे शुभ लेश्या वंध्यरे ॥ गुण० ॥ १४ ॥ निश्चे विरमो मिथ्यात्व मोह अज्ञानने रे, उदय पामशे घटमां ज्योतरे ॥गुण०॥ अंतर ऋद्धि रमण करतां तिहां रे, उपयोगे प्रगटे अनुभव ज्योतरे ॥ गुण० ॥ १५ ॥ चेतन दंडाय परसंगे एक मोहथी रे, न दंडाय निज संगे सत्य वातरे ॥ गुण० ॥ निज संगे शरण चारित्र रायनुंरे, उपयोग गुणगत स्थिर साक्षातरे॥ गुण० ॥ १६ ॥ ए अणुव्रत गुणव्रत दाखीयां रे, दाखुं शिक्षावृतना चौ भेदरे ॥ गुण० ॥ प्रथम सामायकवृत समाधिमां रे,

तिहां उपाधि द्रव्य भाव थाय भेदरे ॥ गुण० ॥ १७ ॥ निश्चे व्यवहार दोय भेदथी रे, करो नित्य सामायक गुरू संगरे ॥ गुण० ॥ व्यवहार गुरू निमित्त हेतु भलारे, निश्चय गुरू निज शुद्ध उपयोगरे ॥ गुण० ॥ १८ ॥ द्रव्य उपाधि टले त्रण योगनी रे, अशुभ आचरणाना दोष वत्तिसरे ॥ गुण० ॥ भावे अशुद्ध परिणति पडे पातळी रे, भाख्युं समभावे सामायक जगदिश रे ॥ गुण० ॥ १९ ॥ देसावगासिक वीजा शिक्षाव्रतमां रे, करो विशेषे सर्व दिशीनो संक्षेपरे, ॥ गुण० ॥ पौषधशाळाये करो त्रिकरण योगथी रे, व्यवहारे दश सामायक निर्लेपरे ॥ गुण० ॥२०॥ निश्चे देशावगासि ज्ञान घटमां लही रे, अहीयें शुद्धातम स्वरुप थै लिन्नरे ॥ गुण० ॥ परपरिणामन परदिशी टले इहां रे, भाग वेंची एम थैए भिन्न भिन्नरे, ॥ गुण० ॥ २१ ॥ पौषधोपवास त्रीजा शिक्षाव्रतनारे, व्यवहार निश्चय दोय भेदरे ॥ गुण० ॥ देशथीने सर्वथी पोषह करी रे, मोहादि कर्मनी करो सत्ता उच्छेदरे ॥ गुण० ॥२२॥ देशथी पोसह दिन चोपहोरनो रे, सर्वथी दिवस रात्री आठ पहोररे, ॥ गुण० ॥ ए भेद दोय शुभव्यवहारनारे, कहुं निश्चेना भेद जेसी दूधतोररे ॥गुण०॥२३॥पोषधज्ञान ध्याने आत्मा पोषीयेरे तिहां लहीए देशथी समकित ठाणरे ॥गुण०॥ सर्वथी केवळ-नाण पामतां रे, लहीये अघाति टाळी पद निरवाणरे॥गुण०॥ ॥२४॥ चोथुं अतिथी संविभाग शिक्षाव्रतएरे, अतिथीना पंचम अंगे भेद दोयरे ॥गुण०॥ एक गीतार्थ श्रमण अतिथी सही

रे, बीजा गीतार्थ निश्राये अतिथी होयरे ॥ गुण० २५ ॥ ए दोय परम पूज्य जीन शासन रे, तेमने ज्नक्तिये दीजे अशनादि दानरे ॥ गुण० ॥ सत्य ज्नाषा वोलीए पर आकंक्षा तजीरे. अढळक आपो आग्रह करी बहु मानरे ॥ गुण० २६ ॥ दश रूगलां पूंठे वळावीनेर. पढी पोते जमे व्रत धारि तेहरे ॥ गुण० ॥ ए अतिथी संविन्नाग व्यवहार थीरे. निश्चे अतिथी निज जीव गुण गेहरे ॥ गुण० २७ ॥ गुरुज्ञाने जीवाजीव जाणीयेरे, तिहां निजपर ज्नेद समजायरे ॥ गुण० ॥ परपरपणे करी तद्गत परिणम्योरे, तिहां शुद्ध उपयोग गूण प्रगटायरे ॥ गुण० २८ ॥ ए विषय विमूख शिव अनुज्नवेरे, पामे क्षय उपशमादि लब्धिनुं दानरे ॥ गुण० ॥ देता लेता निज पोते सहीरे, ते ज्नाव अतिथी जाणी तेनुं करो ध्यानरे ॥ गुण० २९ ॥ अतिथी संविन्नाग तस कीजीयेरे, आराधे ज्नाव्रि श्रावक जे होयरे ॥ गुण० ॥ ए अणुव्रतादि सवे द्वादश ग्रहीरे, लहीये स्वर्ग के शिवगति सोयरे ॥ गुण० ३० ॥ चौराशी सहस मुनि दानज्नुंरे, ज्नावे ग्रहस्थ दान ज्नक्तिफळ कीधरे ॥ गुण० ॥ क्रिया गुणठाणे मूनि वखारे, न ज्नाव तूल्य को जगप्रसिद्धरे ॥ गुण० ३१ ॥ एम जाणी ज्नविज्नाव प्रगट करोरे, ज्नाव शुद्धात्म स्वरूप उपयोगरे ॥ गुण० ॥ ज्ञान शितळ करी पामीयेर, घट अंतर अनूज्नवयोगरे ॥ गुण० ३२ ॥ समाप्त.

दुहा.

श्रावक धर्म ए वर्णव्यो, द्वादश व्रत गुणगाम;
द्वादश अव्रत टालिने, लहो निर्जरा सकाम. ॥१॥
यति धर्म हवे वर्णवुं, दाखुं वचन रसाळ;
दश भेदे भवि सांभळो, पामो मंगळ माळ. ॥२॥
खंति, मद्दव, अज्जवा, मुत्ति तप चारित्र;
सत्य शौच अकिंचनि, ब्रह्मव्रत्त पवित्र. ॥ ३ ॥
गुण विण संयति लिंगजे, कास कुसुम उपमान;
व्यवहारे बहुलां कर्यां, न लह्युं सम्यक् ज्ञान.॥ ४ ॥
आतम गुण गत रमणता, तेहिज संयति धर्म.
दश भेदे आराधतां, लहिये शिव सुख शर्म. ॥५॥

ढाल पांचमी.

॥ सहेजानंदिरे आतमा. ए देशी ॥

संजमि अनूभवि आतमा, समकित मूळ माहाव्रतरे, त्याग आश्रव पंचभेदथी, दिक्षा दिये गूरु संतरे, बोध दिये विशेष महंतरे, विनय करो गूरु गूणवंतरे, विनित गुण वृद्धि लहंतरे, गूणमां ज्ञान मूख्य हूंतरे, ज्ञान घट तरणी कहंतरे, दशभेद धर्म ग्रहंतरे ॥ संजमि० १ ॥ ए आंकणी ॥ पहिलो संयति धर्म ए, खंति क्रोध निराशरे, समता क्षिरो दधि आगळे, सुरनर सुखबिंदु भासरे, आशादासी तृष्णा थै नाशरे, नहि लोभनो अवकाशरे, गूण गत वृत्ति क्षि-माशासरे, सहे उपसर्ग वेदे नहि तासरे, वेदे अनूभवे

स्वस्वरूप खासरे, लहे परमानंद भोग विलासरे ॥ संजमि० २ ॥ बीजो धर्म ए मुनितणो, मार्दव नाम हितकाररे, मृदुतामान मराशथी, विनयादिक गूण धाररे, विनयथी श्रुतवृद्धि साररे, श्रुतफळ विरती अणगाररे, मद फणिधर डसतो निवाररे, मदथी गूणहानि अपाररे, अशुभ ए मोहनो परचाररे, छेदी अनूभवि आतमताररे, ॥ संजमि० ३ ॥ त्रीजो धर्म वखाणीये, आर्यव ऋजु सूत्र जेहरे, माया कपट विनाशथी, लहीये अंतर गूण गेहरे, टळे तिहां सर्व संदेहरे, मिथ्यात्व भ्रम भागे छेहरे, निज एक शुद्धातम तेहरे, त्रूटे सर्वपरथी स्नेहरे, रागद्वेषनो होय छेहरे, अनूभवि टाळे कर्म खेहरे ॥ संजमि० ४ ॥ चोथो मुक्तिधर्म मुनितणो, लोभनो जीहां अभावरे, निर्लोभि तेने संपजे, भव जलधि तरवा ए नावरे, लोभ दुःख दरीयो जाणो तावरे, ते अवसर छोडवानो दावरे, छोड्यां नमे सूरनर रावरे, संजम स्थिर गूणनो जमावरे, मोह ध्वंस करो ज्ञानखड्ग घावरे ॥ संजमि० ५ ॥ पंचमो तप धर्म जाणीये, निर्जरा हेतू कहायरे, द्वादश भेद छे तेहना, बाह्य अभ्यंतर मळी थायरे, इच्छाए कर्म बंधायरे, इच्छा रोध तप निर्जरा पायरे, इच्छा मोहथी प्रगटायरे, मोह मूळ त्याग मुनिपदरायरे, ज्ञानध्याने उपाधि हणायरे, निज अनुभवि शिव पूर जायरे ॥ संजमि० ६ ॥ छट्टो धर्म संजम कह्यो, सत्तर भेद शिव अंगरे, आतमभावे आराधीये, करीये शिववधु संगरे, भेदज्ञान निर्मल गंगरे, मळ टळयां मूळरूप चंगरे,

अनुभव ज्योति अभंगरे, परमानंद भोग रंगरे, शिवपद लहीये एकंगरे, सादि अनंत लागे भंगरे॥ संजमि० ७ ॥ सातमो सत्य धर्म मुनितणो, सत्य भव सत्ता प्रगटायरे, संग्रहनयथी शिवरूप छे, तेनो एवंभूत थायरे, ते सत्य धर्म कहायरे, असत्य उपाधि हणायरे, निरुपाधि शिवपद पायरे, लोकंते सिद्ध स्थिर ठाय रे, निराकार निरंजन राय रे, अव्याबाध सूख सदायरे ॥ संजमि० ८ ॥ भावथी सौच धर्मे मुनि रमे, न गमे शुभाशुभ ज्यांहिरे, शुभाशुभ तेह एंठ छे, अनंतजीवे वमि जगमांहिरे, ग्रही आश्रव बांधे मुनिनांहिरे, निर्जरे मुनि उपयोग तांहिरे, योग्य जीवतारे ग्रही वांहिरे, व्रतना उदासि भाव आंहिरे, रहे भेळा भळे नहि क्यांहिरे, भळे मूळरूपे सिद्ध शांहिरे ॥ संजमि० ९ ॥ नवमो अकिंचन धर्म ए, मुनिमारग शिवपंथरे, कंचन दो भेदे भाखीयुं, द्रव्यभाव देखो ग्रंथरे, तज्यां द्रव्यथी द्रव्य निग्रंथरे, मूळ न वळयुं त्यां रह्यो अनर्थरे, द्रव्य त्यागथी सरे नही अर्थरे, भावग्रंथी तज्यां शिववधू कंथरे, इहां कार्य थाय यथा तथ्यरे, मिले यथाख्यात संयम रथरे ॥ संजमि० १० ॥ दशमो ब्रह्मव्रत पालता, शिलंगरथे वेग मुनिजायरे, संयम श्रेणीमां एकला, उपयोग स्थिर सहायरे आतम अनुभव पायरे. प्रत्यक्ष प्रमाण कहायरे, ध्यान तुरंग नचायरे, ज्ञान गजगजारव थायरे, उपाधि अनंति हणायरे, रिद्धि लै मुनि सिद्ध सधायरे ॥ संजमि० ११ ॥ एम दशभेदे मुनि धर्मने, आराधे जे अढीद्विपरे, ते सर्वने करुं त्रिधिवंदना ए मिले उदे थाय पून्य पीपरे, तिहां ल-

हीये ज्ञान जेसो दीपरे, वारंवार आपे बोध जरी डीपरे, पीतां पीतां जागे मोह टळे टीपरे, अनुक्रमे लहे अनेद स्वरूपरे, मोह न घटे त्यां भारपर लीपरे, ज्ञान शितळनी गुण समीपरे ॥ संजमि० ॥ १२ ॥ समाप्त. ॥

दुहा

संयति धर्म ए वर्णव्यो, दश नेदे गुणखाण.
तेने अंगे आणतां, लहिये पद निर्वाण ॥१॥
विण आतम जे जे कथा, तेह न धर्म कहाय.
नव भ्रमण एहथी वधे, समजो नवि चित लाय ॥२॥
आत्म अनात्म भिन्नता, तेहिज कहिये ज्ञान.
स्थिर श्रद्धा पलटे नहि, ए समकित अनुमान ॥३॥
उपाधि देशथी टाळतां, लहे पंचम गुणठाण.
एकादश प्रकृत्तिनो, क्षय उपशम त्यां जाण ॥४॥
उपाधी टाळे सर्वथी, तेहिज संयति धर्म.
अप्रमतादि नावे लहे, क्षपक श्रेणी शिवशर्म ॥५॥

॥ ढाल छठ्ठी ॥

॥ गायो गायोरे मेंतो देव गुरु धर्मने गायो ॥

देव अरिहंतने सिद्ध निरंजन, क्षायक लब्धि अनंतस जोगी, समय समय जोग उपनोग करता, एक समय न कदिय अनोगी रे ॥ मेंतो देव० ॥ १ ॥ गायो गायो रे ध्यान ध्यायो रे, जीन आज्ञाये धर्मने पायो, ॥ ए आंकणी॥

परमानंद अनंतो प्रगटयो, रमण गुणगत भिन्न स्वभाव, क्षिण मोह अंते घाति कर्म सत्ता छेदी, क्षायक लब्धि आस्वादि अरिहंत रावरे ॥ मेंतो० ॥ २ ॥ त्यांथी तुमे देव सेवक हुं तमारो, जाणी पोतानो बांहि ग्रही तारो, तार कबिरुद निमित्त हेतु मिलीयो, तेथी जलदी लहीए भवोदधि आरोरे ॥ मेंतो० ॥ ३ ॥ गुरु गितारथ आतमज्ञानी, सदा निस्पृह भावे वर्तै, स्याद्वादादि वळी करुणा सागर; करे उपगार अनंतो भापा खरतेरे ॥ मेंतो० ॥ ४ ॥ सद्गुरु भापा अमृत पीपासा, रुची करी उपयोग सूणशे, ते तत्त्वा तत्त्व विचारी शंका छेदी, बोधि बीज लही विरती ठाण ग्रहशेरे ॥ मेंतो० ॥ ५ ॥ देव गुरु दोय निमित्त पुष्ट कहीये, तेथी उपादान धर्मवृत्ति लहीये, हेय उपादेय बुद्धि पामीने, हेय छंडी उपादेय तिहां ग्रहीयेरे ॥ मेंतो० ॥ ६ ॥ उपादेय धर्म रत्नत्रयि तेहि, उपयोग भावे लहीये, शिवहेतु संवरनिर्जरा करतां, उपाधि हणी उपरनुं ठाण ग्रहीयेरे ॥ मेंतो ॥ ७ ॥ एम शुद्ध व्यवहारे साधन करतां, अनुक्रमे केवळ नाण लहीये, अघाति चौहणी अयोगी अंते, सिद्धि वरीयें अक्षय सूख लहींयेरे ॥ मेंतो० ॥ ८ ॥ एम धर्म तत्त्व आराधो भविजन, शिव पंथनो ए सीधो रस्तो, आ काळे पामवो अति दुर्लभ, मिळे तो श्रेष्ट काळे स्थिती पाके ग्रहतोरे ॥ मेंतो० ॥ ९ ॥ सिधो रस्तो भेद ज्ञाने लहीये, भेदज्ञान ग्रंथी भेदी तिहां कहीये, जरु चेतन दोय भिन्न परिणमावी, अनुभव करतां विषय अण-

ग्रहीये रे ॥ मेंतो० ॥ १० ॥ सिधो रस्तो न मिले तनमन वचने, देवेन्द्र नरेन्द्र ऋद्धि वापरतां, एतो मिले शुद्धातम शक्ति फोरवतां, गुणपर्याय एकत्व अनुभवतां रे ॥ मेंतो० ॥ ११ ॥ हवे अवळे रस्ते जीवने न पिछाणे, द्रव्य प्राणने एकांते जीव जाणे, ए नहि जीव पूर्वकृत उदिक भाव छे, ए वचन सत्य आगम प्रमाणे रे ॥ मेंतो० ॥ १२ ॥ द्रव्य प्राणने कहे जीव अशुद्ध व्यवहारे, हवे तेहना भेद दोय जेह, एक शुभने बीजो अशुभ छे. ए शुभाशुभ पून्य पाप तेहरे ॥ मेंतो० ॥ १३ ॥ शुभ कहीये देव दर्शन गुरुवंदन, स्तुति भक्ति बहु मान आदरथी, सेवा पूजा वळी विनय वैयावच्च, सद्गुरुनुं करो तनमनथी रे ॥ मेंतो० ॥ १४ ॥ सुपात्रदान दीजे ने शियळ पाळी जे, तप कीजे शक्ति अनुसारे, भावना भावो धर्म ध्यान ध्यावो, शुभ बंध हेतु ए सरल आचारे रे ॥ मेंतो० ॥ १५ ॥ अधिक शूभविरती परिणामी त्यां कहीये, सर्व विरतीये चरण करण ग्रहीये, इच्छा बंछा टाळीने मूर्छा उतारी, कंचन कामनीथी निर्लेप रहीये रे, ॥ मेंतो० ॥ १६ ॥ इत्यादि धर्म कह्यो शूभ व्यवहारे, स्थिर श्रद्धाये ते शिव हेतु कहीये, नहि तो शुभ आश्रव संसार हेतुए, तिहां संसार वृद्धि लहीये रे, ॥ मेंतो० ॥ १७ ॥ स्थिर श्रद्धा कही तिहां समकित कहीये, वस्तु गत्ये वस्तु सद्दहीये, द्रव्यास्ति पर्यास्तिक बोध लहीने, नित्या नित्य स्याद्वाद धर्म ग्रहीये रे मेंतो० ॥ १८ ॥ स्याद्वाद स्वरुप अनेकांत धर्मे, कारण कार्य संयोग, कारण

ग्रही कार्यमां आवे, तव शिव सुखनो होय नोगरे ॥मेंतो० ॥ १ए ॥ कारण ते ड्व्यास्तिक कहीये, कार्य होवे पर्यास्तिक नावे, ए दोनयविण स्याद्वाद न लहीये, गुण गुणी नेदानेद ज्ञानी गावे रे ॥ मेंतो० ॥ २० ॥ ते नावे नावित चिदानंद माहरो, अंतर गुणगत रमतो, आतम अनुनव अवसर पामी, ज्ञान शितळ करी उपाधी हणतो रे ॥मेंतो० ॥ २१ ॥ संपूर्ण ॥

॥ कळस ॥

॥ श्रीजगन्नासन–ए देशी ॥

देवगुरु धर्म त्रण तत्त्वनो, अनुक्रमे वर्णव कर्यो, ते नाव जाणी श्रद्धा करीने, व्यवहार समकितने वर्यो ॥ १॥ निश्चे समकित ग्रंथी नेद कीधां, ते नावनो वर्णव करुं, अंतर नावे यथा प्रवृत्ति, करण शक्ति अनुसरुं ॥ २ ॥ ए करण प्रनावे खपे स्थिति, आयुवर्जीत कर्म सात ए, सागर कोमाकोमी हीण होवे, अपूर्व वीर्य उदेरे अनंत ए ॥ ३ ॥ नेदी परिणति कर्मवज्ज घनकी. सहज वीर्य अखंम प्रवाहए, नारिनूमि नयंकर चूरी. हणयो अनादि मिथ्यात्व मोहए ॥ ४ ॥ अनंतानु कषाय चौ अंत होवे, अनिवृत्तिये समकितलहे, शितळता प्रगटे घट अंतर, पापवेली नववनकी दहे ॥ ५ ॥ ए समकित नावे अल्प संसारी, सात आठ नव उत्कृष्ट ए, पमते नावे अर्ध पुद्गल, मांहेली कोरे लहे सिद्ध ए ॥ ६ ॥ व्यवहार निश्चे समकित नेद जाणी, पामवा नविजन खपकरो, ए विण

तप जप क्रिया करणी, निष्फळ वृथा जे आचरो ॥ ७ ॥ समकित विण अशुन्न करणी, आत्महेतू नवि कही, संसार वृद्धि हेतू न्नाषी, गमगाम देखो सही, ॥ ८ ॥ सर्व धर्मनुं मूळ समकित, सत्तार्थनय ग्रहणवखाणीये, द्रव्यगूण पर्याय जाणी, जीव पुद्गल पीछाणीये ॥ ए ॥ द्रव्य अखंम त्री-काळवृत्ति, गूण पर्याय आधारए, जीवगुण संवर निर्जराने मोक्ष, ज्ञान दर्शनादि अनंतपर्यायए, ॥ १० ॥ पुद्गलरूपी निर्जीव गूण दाखुं, पून्न पाप आश्रवने बंधए, शब्दरूप रस गंध ने स्पर्स, संस्थानादि अनेक पर्याय ए ॥११॥ एम न्निन्न न्निन्न गूणपर्याय दाख्या, जीवने पुद्गल बेहु द्रव्यमां, पुद्गल गूणनी नास्ति जीवमां, अस्तिजीव गूणनी जीवमां ॥ १२ ॥ एम जगतमांहि तत्व बे ठे, जीवने अजीव एम जाणीये, अजीवना पांच न्नेद न्नाष्या, अरूपी रूपी मन आणीये ॥१३॥ धर्म अधर्म आकाशकाळ चौ, अरूपीने रूपी पुद्गल ए, एम पांच द्रव्यनो समास अजीवमां जीव पुद्गल बे मि-ल्यां नवतत्व ए ॥ १४ ॥ जीव पुद्गल संयोगे मिश्र न्नावे, अनादि चउगति संबंधए, हेय उपादेय बुद्धि जोगे, होवे न्नवनो अंतए ॥ १५ ॥ जाणवा योग्य जीव अजीव जाणी, पून्य पाप आश्रव बंध ठोमवा, जीव गुण संवर निर्जराने मोक्ष, उपादेय जाणी ग्रहवा ॥ १६ ॥ हेय उपाधि त्याग त्रण न्नेदे, द्रव्य न्नावे कर्मने नोकर्म ए, द्रव्यकर्म आठ ज्ञा-नावर्णादि, न्नाव कर्म सही रागद्वेष ए ॥ १७ ॥ नोकर्म जोग मन वचन काया, द्रव्य कर्मबंध न्नाव हेतू सही, ते

कारण ठंमी घटंतर ग्रहीये, शुद्धात्म अनूजव शिव तहीं ॥ १७ ॥ एहि देव परमात्म पोते, एहि गूरु शुद्ध उपयोग ए, एहि स्याद्वादधर्मं परिणमतां, परमानंद स्थानपद सिद्धए, ॥ १ए ॥ एम देवगूरु धर्मतत्व अनुजव, शुद्धनय स्थापी कीजीये, आळपंपाळने दूर टाळी, सेहेजे शिवसूख लीजीये, ॥ २० ॥ एम साध्य साधो सत्ता आराधो, आरोपित धर्म परिहरो, शक्ति प्रगटे व्यक्तिजावे, अजरामर सुखने वरो ॥ २१ ॥ ए सूख अनादि आत्मसत्ताए, गूणगुणता तिरोजावे रह्युं, आविर्जाव तेनो प्रगटतां, लाधे क्षायकजाव एम सद्दहुं ॥२२॥ क्षायकजावे अनंतगूण वृत्ति, गूणगूण स्वजावे जिन्नता, उत्पाद व्यय गुणगत होवे, द्रव्ये कहीये ध्रुवता ॥२३॥ पूर्व पर्याय व्यय गुण वृत्तिए, अजिनव पर्याय उत्पादए, एम समे समे हाणी वृद्धि वृत्तिये, तिहां प्रगटे परमानंद ए ॥ २४ ॥ परमानंद गुणगुणनो जुदो, अनंतगुण आनंदोपेतए, तेनो जोग गुण निष्पन्नसमे कहीये, वाकी उपजोग चिरंकाळ गतए ॥ २५ ॥ एम पूर्णानंद जोगी सिद्धात्मा, तेमां अपूर्णता होवे नहि, एक समय मात्र विरहकाळ नावे, दुःख अशाता विघ्न कदी नहीं तहीं ॥ २६ ॥ ए सूख साधन घटंतरमां, गुण श्रेणीये जेदाजेदता, जेद ठेद करी अजेद लहतां, पामे यथाख्यात वितरागता ॥ २७ ॥ इहां संसार मूळ बीज विनाश होवे, खूटे रागद्वेषने मोह ए, त्रण कर्म वितरागजावे हणतां, चउघातीनो थाय उच्छेदए, ॥ २८ ॥ तिहां अनंत चतुष्टय

लहे अरिहंत पदमां, आयु छेहे थाय योग रोध ए, अघाति चौअंत अयोगी अंते, एम स्थिति पाके लहे नवि सिद्धए ॥ २९ ॥ ए सिद्ध हेतु तत्वगुण गाया, अंतरआत्म स्थिर-भाव ए, निजपर हित अर्थे रचना कीधी, ते शुद्ध करो ज्ञानी गुणवंत ए, ॥ ३० ॥ ओगणीस बासठ विजापुरमां श्रावण, शुक्ल बीज सोमवार ए, श्रद्धा प्रकरण ग्रंथ पुरण, करतां प्रमोद अपार ए ॥ ३१ ॥ आ ग्रंथ भविजन रुचीये भणशे, सूणशे निश्चल चित्तए, ज्ञान शितळ तद्गत रटण करतां, पामे समकित रत्न विनित ए ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा २०० ॥ श्लोक संख्या सवाभणसो (३२५) ॥ समपूर्ण. ॥

॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥

अथ श्री नवपदजीनी पूजा लिख्यते

॥ दुहा. ॥

चउवीशे जीनपति नमुं, नमुं अप्रमत्त निग्रंथ ॥
धर्म तेनुं भाख्युं सही, सो समकित शीवपंथ ॥ १ ॥
ते साधे सिद्ध चक्रने, पूजे नित्य द्रव्यभाव ॥
ते नव भेदे वर्णवुं, अनुक्रमे निज सद्भाव ॥ २ ॥
अरिहंत सिद्ध त्रीजे सूरि, पाठक मुनि गुण धाम ॥
दरशन नाण चरण वळी, तप द्वादशविध नाम ॥ ३ ॥
ए नवपद भक्ति करी, पूजा रचुं मनोहार ॥
नव पद गुण गण गावतां, त्रुटे कर्म प्रचार ॥ ४ ॥
नवपद सोहि आतमा, योग इंद्रिथी भिन्न ॥
पुद्गलमां लाधे नहीं, नवपद गुणनुं चिहन ॥ ५ ॥

ज्ञेद ज्ञान घटमां वसे, तो श्रद्धा स्थिर थाय ॥
स्वपर विज्ञाग करे तिहां अनुज्ञव घट प्रगटाय ॥ ६ ॥
समज्ञाव वृत्ति एह छे, ज्ञाव पूजा पण तेह ॥
अनंतकारण सिद्धनुं, तेमां नहीं संदेह ॥ ७ ॥

॥ ढाळ ॥ १ ॥

॥ राग विलावर ॥

जगत् प्रज्ञु आगळ ज्ञवी वर अक्षत धरीए ॥ ए देशी ॥
अरिहंत पद ठाण तेरमे, घाति कर्म हणीने ॥
अनंत चतुष्टयी पामीया, परियाय ठणीने ॥ हांहां रे
पर्याय ठणीने, हांहां रे उपयोगी थइने ॥
हांहां रे ज्ञान रमण लहीने, हांहां रे संज्ञीरुढ ग्रहीने ॥
हांहां रे मूळ रूपे रहीने, हांहां रे वीतराग वनीने ॥
अरिहंत पद ठाण तेरमे, घाति कर्म हणीने ॥आंकणी॥१॥
चार निकायना देवता, असंख्य तीहां आवे ॥
चोसठ इंद्र देवांगना, मळी मंगळिक गावे ॥
हांहां रे मळी मंगळिक गावे, हां० तीहां त्रिगडुं वनावे ॥
हां० केइ जळ वरसावे, हां० केइ कुसुम वीछावे ॥
हां० वीच कल्पवृक्ष ठावे, हां० पर्षदा वार आवे ॥अ०॥२॥
तीर्थपति अरीहंतजी, सिंहासन सोहावे ॥
चउदीशि चउमुख देशना, देइ सउने सुणावे ॥
हां० देइ सउने सुणावे, हां० ज्ञान जीव जाणे आवे ॥
हां० तीहां मिथ्यात्व जावे, हां० समकित शुद्ध पावे ॥
हां० लहे वीरति ज्ञावे हां० सिद्ध अनुक्रमे थावे अ०॥३॥

इत्यादि बहु देशना, नवि जीवने आपे ॥
जीव पुद्गल जूदाजूदा, इम वीहु पक्ष थापे ॥
हां० इम बीहु पक्ष थापे, हां० संग्रह नयनीए छापे ॥
हां० परपणे नहीं व्यापे, हां० गुणपरने ए नापे ॥
हां० जीव निज पर मापे, हां० बुटे अन्यथी आपे ॥अ०॥४॥
इत्यादि देशना देइ, अरिहंतजी तारे ॥
ज्ञान शीतल श्रद्धा करी, केइ धर्म काज सारे ॥
हां० केइ धर्म काज सारे, हां० प्रभुनो उपगारे ॥
हां० नवी पूजो निरधारे, हां० धन खरचो अपारे ॥
हां० योगत्रण समारे, हां० नहींतो नवहां रे ॥ अ० ॥ ५ ॥

इति प्रथम पदपूजा. ॥ १ ॥

श्लोकः—ॐह्रूँश्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय, जन्मजरा मृत्यु निवारयाए, अज्ञानोच्छेदकाय श्रीमतेवीरजीनेंद्राय जलंचंदनं, पुष्पं, धूपं, दिपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं च यजामहे स्वाहा (आ काव्य दरेक पूजा दीठ कहेवुं)

पूजा ॥ २ ॥ जी ॥ दुहा ॥

सिद्ध निरंजन गति नमुं, अलख अगोचर रूप ॥
आदि अंत नहीं एहने, परमानंद स्वरूप ॥ १ ॥

॥ ढाळ २ जी. ॥

॥ देखो गति दैवनीरे ॥ ए देशी.

श्री सिद्ध पद आराधीयेरे, जे निज संपत्तिवंत
ज्ञान अनंतु दर्शनेरे, चरण वीर्य अनंत नमो सिद्धरायनेरे.
॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

अव्याबाध सुख शाश्वतुं रे, परमानंद स्वरूप
अटळ अवगाह अगुरु लघुरे, अमूर्ति अनूप ॥ नमो० ॥२॥
क्षायक समकितवंतछे रे, चिन्ह मूर्त्ति परिब्रह्म.
परमज्योति व्यक्ति हुइरे, टळीयां आठे कर्म ॥ नमो० ॥३॥
अज अवीनाशी निरंजनो रे, लोक शिखर करे वास ॥
त्रणे काळनी वर्त्तनारे, एक समय प्रतिभाष्य ॥ नमो० ॥४॥
एक सिद्ध तीहां अनंत छे रे, निज निज रूपेरे भिन्न ॥
नहीं बाधा सिद्ध जीवनेरे, गुणपर्यायमां लीन्न ॥ नमो० ॥५॥
गुणपर्याय अनंतनी रे, व्यक्ति अनंती रे थाय ॥
कोइ कोइमां पेसे नहीं रे, सौ नीज धर्मे समाय ॥नमो०॥६॥
व्यक्ति व्यक्तियें भिन्नतारे, आनंद केरी रे थाय ॥
एम आनंद अनंतो हुवे रे, तेना भोगी सिद्धा सदाय ॥नमो०७
एक अनेक आदि अनादिरे, गुरु, लघुने मध्यस्थ॥
इत्यादिक भेद सिद्धनारे, जाणो वेशी संयमरथ ॥नमो०८॥
तेथी सिद्ध पद पामीयेरे, भविजन करजो विचार ॥
ज्ञान शीतळ कहे आपजोरे, सिद्धराय सिद्धपद सार ॥न०९॥

इति सिद्ध पद पूजा ॥ २ ॥

पूजा ॥ ३ ॥ जी ॥ दुहा ॥

छत्रीस गुण विराजता, पाळे पंचाचार ॥
षट् दर्शनने जाणता, स्याद्वादी सिरदार ॥१॥

॥ ढाळ ॥ ३ ॥ जी ॥

॥ महावीर प्रभु घेर आवे ॥ ए देशी ॥

आचारज पदने पूजीजे, गुणरागे वंदन कीजे ॥

दीये देशना ते न भूलीजे, शंका कंखा पूछी छेदीजेरे ॥
मन मोहन जगगुरु राया ॥ तुज दरसण पुन्य पायारे ॥
मन मोहन जगगुरुराया ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

तुमे पंच महाव्रत धारी, दया वीस वसा निरधारी ॥
सत्य भाषा निरवद्यसारी, आतम धर्म शक्ति प्यारीरे॥म०२॥
अणदीधे सळी नहीं लेवे, योग त्रिकरणे नारी न सेवे ॥
रूप निरखण नजर न देवे, परिग्रह नव त्यागी रहेवेरे म०३॥
आशा तृष्णा मूर्च्छा उतारी, आ भव परभवनी नीवारी ॥
निर्लोभीनपुन्यग्राहकारी,ज्ञान ध्यानतप निर्जरा भारीरे म०४॥
भाव संवर अंतर योगी, भाव अध्यातम गुण भोगी ॥
धर्म साधक शब्द संयोगी, करे करणी सदा उपयोगीरे म०५॥
शुद्ध पर्याय रमणता पाइ, सदबोध संयमश्री आइ ॥
भेटे आचार्य उभा थाइ,, तिहां आनंदवृद्धि सवाइरे म०६॥
निज गुण उपयोगे स्थिर, व्रते आचारीय थइ वीर ॥
अनुभव सरोवर तीर, भर्युं ज्ञान अगाधसो नीररे म०७॥
तेमां स्नाने सनातक थावे, कर्म मेल अनादिनो जावे ॥
समश्रेणीए सिद्ध गतिपावे, ज्ञानशीतळ पद भीजुं गावे रेम.८॥

इति आचार्य पद पूजा ॥ ३ ॥

पूजा ॥ ४ ॥ थी ॥ दुहा ॥

पाठक पंचवीस गुणी, ज्ञान तणा भंडार ॥
भणे भणावे साधुने, प्रभाविक सिरदार ॥१॥

॥ ઢાળ ॥ ૪ ॥ થો ॥

॥ रंगरसीया रंगरस वन्यो मन मोहनजी ॥ ए देशी ॥

पाठक पदने पूजीए मन मोहनजी, ए द्वादश अंगना जाण ॥
मनकुं मोह्युं रे मन मोहनजी

नय गर्भित दीये देशना म० नहीं एकांत पक्षनी ताण॥म० १॥
शब्द नये धर्म साधना म० तेमां चउ प्रथमनी समाय ॥मन०॥
अंश आरोप नैगम भळे ॥मन०॥ संग्रह सत्ता ग्रहवाय ॥म० २
भेदज्ञान अंतर जगे म०, करे चेतन पुद्गल भिन्न ॥ मन०
उपाधि अळगी टळे म०, ए व्यवहार नय चिन्ह ॥म० ३॥
मन स्थिर घरमां रहे म०, थइ शुद्धि अंतरमांही॥ मन० ॥
ऋजुसूत्रनय एह छे म०, परिणामग्राही त्यांही ॥ मन० ४ ॥
ए चउ शब्द नयें भळे म०, इहां प्रगटे समकित धर्म॥म०॥
अनुक्रमे वृद्धि लहे म०, आवे संभिरुढनो मर्म ॥ म० ५ ॥
ए नये अरिहंत पद लहे म०, तीहां छ नयनुं वृत्तांत॥म०॥
एम कार्य शब्दथी साधीयेम०, चउ पेहेला ए निमित्त एकांत॥६
आयुष्य अंते सिद्धिवरे म०, लोक शिखर करे वास॥मन०॥
एवंभूत नय तीहां होवे म०, हवे कारणिक तीहां नहीं पास॥७
पुद्गल संग जीहां लगे म०, तीहां कारणिकनो रहे वास॥म०
कार्ययोगे कारण कह्युं म०, नहीं तो कारण नहीं तास॥म०८
शब्द नय लाधे नहीं म०, तीहां स्थीर मिथ्यात्व धर्म॥मन०॥
कारण दुभेदे कह्युं म०, एक कार्य कारण मर्म ॥ मन० ए ॥
योगता कारण बीजुं कह्युं म०, ते समजो चतुर महंत॥म०॥
कार्य उपादाननुं हुवे म०, ते कार्य कारण कहंत म०॥१०॥

निमित्त प्रवृत्ति कीजीयें म०, ते जोगे कार्य निपजंत मन० ॥
ते योगता कारण सही म०,नहीं तो अकारण कहंत म० ११॥
एम सप्त नय ग्रहीए म०, नहीं एके उत्थापक हुंत मन० ॥
शक्ति ते व्यक्ति हुवे म०, थाय संग्रह एवंभूत मन० १२ ॥
इम सिद्ध साधन साधीये म०, कहे ग्रंथे ज्ञानी गुरुराज म०॥
ज्ञान शीतळ श्रद्धा करो म०लहो समकित सारो काजम०१३

इति पाठक पद पूजा ॥ ४ ॥

पूजा ॥ ५ ॥ मी ॥ दुहा. ॥

ज्ञानी ते साधु नमुं, जाणे वस्तु स्वभाव ॥
उपाधि अळगी करे, त्यां शीवसाधन दाव ॥ १ ॥

॥ ढाळ ५ मी. ॥

॥ गीरिवर दरसण वीरला पावे ॥ ए देशी ॥

मुनि महंत पदपूजा कीजे, मुनि गुण उळखतां दील रीजे॥
मुनि महंत पदपूजा कीजे ॥
मुनि दरसणथी समकित पामे, अनुक्रमे सिद्ध गति पण लीजे
मुनि महंत पदपूजा कीजे ॥ ए आंकणी. ॥ १ ॥
पंचइंद्रि विषय अशुभ निवारी, जीतेंद्रिय यति धर्मे रीजे मु०
पेहेलुं धर्म क्षमा अंतरमां, क्रोध तजी समता रस पीजे मु०२॥
बीजुं मार्द्दव धर्म अमानी, मद आठ तजी मोटपे न रीजे मु०
त्रीजुं आर्यवधर्म सरळता, कपटरहित अवक्र थइ जे मु०३॥
चोथुं मुनि धर्म ज्ञान वैरागे, तजी पर ममता लोभ हणीजेमु०॥
इम चौधर्म कषाय अभावे, गुरु मूख वचने एम सुणीजे मु० ४
पंचमुं तपधर्म द्वादश भेदे, षट् षट् बाह्य अभ्यंतर कीजे मु०

वहुं संयम आश्रव त्यागे, सत्तर भेद घणी रीझे ग्रहीजे ॥मु०५॥
सातमुंसत्यधर्मसत्यभाषाए,आज्ञासत्यवस्तुसत्यसमजीजेमु०।
अष्टम शौचधर्म भेद ज्ञाने,पुद्गल अनुभव त्यागी वरीजे मु.६।
नवमुं धर्म अकिंचन दाख्युं, परिग्रह त्यागी सनेह हणीजे मु.॥
दशमुं वह्मचर्य धर्मभाख्युं, त्रिकरण योगेवेद विषेनसेवीजेमु.७।
एम दशयतिधर्म आराधी, मुनिगुण वृद्धि लहे रंगरीझे मु०॥
संयम ठाण विशुद्धी वरतां, ज्ञान शीतलकरीशीवपदलीजे मु०८

इति मुनि पद पूजा ॥ ५ ॥ मी ॥

॥ पूजा ॥ ६ ॥ ठ्ठी ॥ दुहा ॥

वस्तुने वस्तुपणे, सद्दहे सो समकित ॥
अवस्तु वस्तु कहे, ते मिथ्यात्व भ्रम भित ॥१॥
भेद ज्ञान अंतर जगे, तीहां वस्तु ओळखाय
जीव पुद्गल डुफारता, श्रद्धा स्थिर न डोलाय ॥२॥
ते समकित दरशण नमुं, शिवपद आपणहार ॥
सर्व धर्मनुं मूळए, गुण वृद्धि आधार ॥३॥

॥ ढाल ६ छठ्ठी ॥

॥ तीरथनी आशातना नवी करिये ॥ ए देशी ॥

समकित दर्शन पूजीए भवी भावे, भाव स्वभावे समकित आवे, तीहां मिथ्यात्व मूळथी जावे, पामे चोथुं स्थान ॥ समकित० ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ दर्शन अनुभव ते सही प्रत्यक्ष, देखे शुद्ध स्वरूपनो पक्ष ज्ञान योगे दर्शन विचक्ष, जाणे देखे एम ॥ समकित० ॥ २ ॥ संसार छेदक ए सही, अति वळीओ, पक्षतां अर्द्ध पुद्गल कहीओ, नहींतो

सात आठ नव रहीउं, पछी सिद्धि लहंत ॥ समकित० ॥
॥ ३ ॥ चारित्र विण सिद्धि वरे एम जाणो, नहीं समकित
वीण शीवराणो, समकित गुण परथम आणो, थाशे कारज
सार ॥ समकित० ॥ ४ ॥ समकित विण धर्म साधना अ-
लेखे, करे किरिया जगत सौ देखे ॥ नणे ज्ञान कथे न
जाणे रेखे, अंकविण बिंदु जेम ॥ समकित० ॥ ५ ॥ गत
समकितने पूरवे आयु बांध्युं, ए बेउ विण समकित साध्युं ॥
बीजुं आयुष्य बांधे नहीं लाध्युं, देव वैमानि बंध॥ समकित०
॥६॥ मळ उपशम क्षय उपशम क्षय जाणो, तेथी समकित
त्रिविध आणो ॥ क्षायक त्रण चार नवे टाणो, सिद्धि व-
रशे एम ॥ समकित० ॥ ७ ॥ सास्वादन उपशम पंचवार
लहीजे, क्षय उपशम असंख्यवार कीजे ॥ क्षायक एकवार
ग्रही लीजे, नवस्थीति मांही ॥ समकित० ॥ ८ ॥ क्षय-
उपशम परथम लहे सिद्धांते, उपशम कर्म ग्रंथे अकांते ॥
पामे समकित शांत दांते, निन्न शास्त्रे विचार ॥ समकित०
॥ ए ॥ समकित ठाणथी पमी मिथ्यात्वें जावे, तीहां रहेतां
अनंत काळ थावे ॥ कर्मबंध अनंतो पावे, स्थिति न वधे
एम ॥ समकित० ॥ १० ॥ इत्यादिक गुण मोटको सिद्धि-
दाता, गुरु वचने कहे गुणग्याता ॥ समकित नावना मुनि
ध्याता, ज्ञान शितळ गाय ॥ समकित० ॥ ११ ॥

इति समकित दर्शन पद पूजा. ॥ ६ ॥ ठी.

पूजा ॥ ७ मी ॥ दुहा. ॥

जीव स्वन्नावे ज्ञान ते, चारित्र समकित मूळ ॥

अनुभवे शीव सुखने, सहजानंद अनुकूळ ॥ १ ॥
ज्ञानावरणी कर्म जे, क्षय उपशम तस थाय ॥
ज्ञान गुण प्रगटे सही, जाणे वस्तुने न्याय ॥ २ ॥
द्रव्यारथ दस भेदने, पर्यायारथ षट् भेद ॥
द्रव्यपर्यायने जाणतां, लहीए ज्ञान अभेद ॥ ३ ॥

ढाळ ॥ ७ मी ॥

राग सारंग ॥ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

आतम ज्ञानपद पूजीएरे मिता ॥ शुद्ध उपयोगे स्थिर ॥ अंतर अजवाळुं करेरे मिता ॥ अकृत्य चिंतक धीररे ॥ रंगीला मिता ॥ ए ज्ञान पूजोने ॥ ए ज्ञान पूजो घटमांरे मिता, लहो अनुभव प्रत्यक्षरे॥ रंगीला० ॥ ए ज्ञान पूजोने ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गुणपर्याय अनंतनो रे मिता, अनुभव स्हेजे थाय ॥ अनंत चक्षुवंतो सहीरे मिता, परम ज्योति प्रगटायरे ॥ रंगीला मिता ॥ ए ज्ञान० ॥ २ ॥ अरूपी विषय ज्ञाननो रे मिता, आतम ज्ञाने अर्हंत ॥ अनुभव रीते जाणतां रे मिता, स्पर्श ज्ञान कहंतरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ३ ॥ निजातम विण सर्वने रे मिता, जाणे ते बाह्य ज्ञान ॥ बाळ ज्ञान बीजुं नामछे रे मिता, त्रीजुं व्यवहार ज्ञानरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ४ ॥ स्वपर जाण ज्ञानी कह्यारे मिता, पर अनुभवी न कहाय ॥ अरीसामां अन्य छवी पडेरे मिता, छवीए अरीसो न लेपायरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ५ ॥ परजाण उपमा वांचछेरे मिता, ज्ञानी निजातम जाण ॥ स्वभावे निज धर्मछे रे मिता, परभावे परधर्म गणरे

॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ६ ॥ परन्नावे धर्म नवि रहे रे मिता, पामेलुं क्षणमां विनाश ॥ धर्मघाति परन्नावनेरे मिता, तजी करो स्वन्नावे वासरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ७ ॥ शुद्ध एकता अचलतारे मिता, अकृत्य चिंतक न्नाव ॥ परानुयायी इहां टल्योरे मिता, अन्नेदज्ञानी हुवा रावरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ८ ॥ न्नेद ज्ञान कारण कह्युं रे मिता, टळतां कार्यता पाय ॥ केवळनाण दर्शण लहेरे मिता, ए शुद्ध सद्न्नूत थायरे ॥ रंगीला० ॥ ए ॥ ए ॥ पर्याय द्रव्य एकाग्रतारे मिता, व्यक्ति अनंती न्निन्न ॥ अन्निन्न रूपे तिहां सहीरे मिता, ए स्याद्वाद धर्म चिन्हरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ १० ॥ एम ज्ञानयोग आराधीयेरे मिता, न्नेद अन्नेद विचार ॥ ज्ञान शीतल सिद्धिवरेरे मिता, लहे अव्याबाध हितकाररे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ११ ॥

॥ इति ज्ञानपद पूजा ७ मी ॥

पूजा ॥ ८ मी ॥ दुहा ॥

जे चारित्र शरण करे, ते निर्न्नय पद पाय ॥
न्नव न्नव-नाटक नवी करे, मोहादि कर्म क्षय थाय ॥१॥
चारित्र गुण अंतर विषे, अनुन्नव ज्ञान संयोग ॥
स्थिर उपयोगे शुद्धता, तीहां संयमश्री न्नोग ॥२॥
संयमश्री संगे रहे, चारित्र रायनी पास ॥
प्रमोदित अळगी नही, कार्य करे थइ दास ॥३॥

॥ ढाल ८ मी ॥

॥ तोरण आइ क्युं चले रे ॥ ए देशी ॥

चारित्र धर्मने पूजियेरे, निग्रंथ पद अणगार ॥ सलूणा ॥ व्यवहार निश्चय भेदथी रे, परथम कहुं व्यवहार ॥ सलूणा ॥ चारित्र धर्मने पूजिएरे, निग्रंथ पद अणगार ॥ सलूणा ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पंच महाव्रत उच्चरेरे, सुझतो आहार निहाळे ॥ सलूणा ॥ लोचकरे भूमिये सूएरे, अरुवाणे पगे चाले ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ २ ॥ षट् आवश्यक वे टंकनां रे, नव कल्पे विहार ॥ सलूणा ॥ देशना गुरु मुखे सुणे रे, पलेहण करे वे वार ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ३ ॥ इत्यादि बहु साधनारे, व्यवहार चारित्र तेह ॥ सलूणा ॥ स्वर्ग सुख तेहथी लहेरे, परंपर कारण एह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥४॥ निश्चें चरणहवे दाखवुं रे, जे शीव सुखदातार ॥ सलूणा ॥ अनंतर कारण सिद्धनुं रे, अंतर दृष्टि विचार ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ५ ॥ ज्ञाने वस्तुने उळखे रे, एक प्रणमन वस्तु भिन्न ॥सलूणा ॥ परसंगे मिश्रित हुउरे, चेतन पुद्गल चिन्ह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ६ ॥ परसंगी हुइ चेतनारे,, इंद्रिद्वारे एह ॥ सलूणा ॥ उपयोगीक सदा रहेरे, पुद्गल धर्मे तेह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ७ ॥ मन मेलुं नहि स्थिरता रे, भटकण लाग्यो तेह ॥ सलूणा ॥ वस्ती उजभमां भमे रे, गयण पायाले एह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ८ ॥ इंद्रि नोइंद्रि नहीं आतमारे, पुद्गल वस्तु तेह ॥ सलूणा ॥

तेमां जाणंग गुण आतमा रे, उपयोग लक्षण एह ॥सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ए ॥ एम भेदज्ञाने वहेंचीये रे, जीव पुद्गल दोय भिन्न ॥ सलूणा ॥ हेय जाणी पर छोडीने रे, चेतना ग्राहो थइ लीन्न ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १० ॥ वीर्य स्फूरणायें थइरे, पर्याय धर्में वृत्ति ॥सलूणा॥ उपयोग अनंतो हुवोरे, स्थिरपणे जेम धरती ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ११ ॥ भाव अध्यात्म धर्मए रे, संवर निर्जरा साथे ॥ सलूणा ॥ ध्याता ध्येय ध्यान एकतारे, चारित्र राय जगनाथ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १२ ॥ निर्मोही मोहने हणी रे, हणीया रागने द्वेष ॥ सलूणा ॥ अशुद्ध परिणतिने छेदीने रे, शुद्ध परिणतिये प्रवेश ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १३ ॥ निश्चें चरण ए भाखियुं रे, यथाख्यात तस नाम ॥ सलूणा ॥ वीत राग ठाण बारमे रे, लाध्युं पद हित काम ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १४ ॥ पा क्षणमां ए केवळ लहेरे, त्यां गुणठाण तेरमुं कहाय ॥ सलूणा ॥ ज्ञान शीतळ करे वंदनारे, मानजो अरिहंतराय ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १५ ॥

इति चारित्र पद पूजा ॥ ८ मी ॥

पूजा ॥ ९ ॥ मी ॥ दुहा ॥

कर्म जले तप धर्मथी, तपथी जाय विकार ॥
अशुद्धता अळगी टळे, तप उत्तम आचार ॥१॥
ध्यान तप अंतर विषे, आज्ञा अपाय विचार ॥
विपाकने संस्थानए, ध्याइ ल्यो धर्मसार ॥२॥

उत्सर्ग कायानो करे, त्याग ए ज्ञान संयोग ॥
बाधित भाव सवेटळे. लहे अव्याबाध भोग ॥३॥

॥ ढाळ ९ मी ॥

॥ वगमानो वासीरे मोर शीद मारीयो ॥ ए देशी ॥

तप पद पूजीने निरजरा करीयेर, बंधने विदारीरे कर्मथी छुटीये ॥ ध्यान तपे धर्मध्याने आज्ञा विचारीरे, मिथ्यात्वने मारीरे समकित लिजीये ॥ अज्ञानने निवारी रे ज्ञान रस पिजीये, अव्रतने गाळीरे विरति रसे भींजीये; प्रमादने टाळीरे अप्रमत्ते रीझीये, मोहने विदारीरे, यथाख्याते सिझीये ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अप्पाय विचय वीजे पाये विचारीरे, आतमरामरे अनंत गुणीने किजीए ॥ विपाक विचय त्रीजे पाये गुणवंतरे ॥ परसंगे फळरे विपाक अशाता लिजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ २ ॥ संस्थान विचार ते असंख्याता लोकमांहीरे ॥ कर्म पर्यायेंरे जन्म मरणे फरसीये ॥ एम चउभेदे धर्मध्यान तप ध्यायारे ॥ शुक्ल ध्यानरे परसंग त्यागी किजीये ॥ अज्ञान० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ३ ॥ पेहेले पाये स्वपर विचार भिन्न भिन्नरे ॥ वहेंची जूदा जूदारे जीव पुद्गल दोय कीजीये ॥ मोहमल्ल इहां आत्म प्रदेशथी टाळीरे ॥ ध्यान अग्नियें लगाभीरे यथाख्यात लीजीये ॥ अज्ञान० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ४ ॥ बीजे पाये अभेद ज्ञान एकत्वरे ॥ परअनुभवरे गण बारमेथी टाळीए ॥ ज्ञानावरणी दर्शनावर्णी अंतरायरे ॥ तेने

हणतां रे केवळज्ञान नीहाळीये ॥ अज्ञान० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ५ ॥ त्रीजो पायो तेरमा गणना अंतेरे ॥ आयुषने छेहेरे योग रोध किजीये ॥ चोथे पाये सही अयोगी अकर्मी रे ॥ क्रियाने कायानोरे उच्छेद करी सिजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ६ ॥ धर्म शुक्ल ध्यान चउ चउ पाया दाख्यारे ॥ ते अभिंतररे पांचमो तप भेद कीजीये ॥ छठ्ठो तप भेद कायोत्सर्ग कहीजेरे ॥ ते भाव आवी गयोरे, कायानो उच्छेद तीहां लीजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ७ ॥ बाकी रह्या दशभेद तपना ते समजीरे, अंतर्दृष्टियेरे कर्म बळे एम कीजीये ॥ ज्ञान शीतळ कहे ध्यान तपने आराधीरे ॥ अकृत्य अनुभवरे योगें सिद्ध पद लीजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ८ ॥

इति तप पद पूजा ॥ ९ मी ॥

कळश.

॥ ढाळ ॥

घणुं जीव तुं जीव जिनराज जीवो घणुं ॥ ए देशी ॥

अथवा ॥ कड़खानी देशी ॥

नवपद-पूजीये मुक्ति पंथ लीजीये, देवगुरु धर्म त्रण तत्व जाणी ॥ शुद्ध श्रद्धा करी मिथ्यात्व परहरी, समकित सुमति वेहु लीयो ताणी ॥ नवपद पूजीये० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ परथम अरिहंत पदतणी पूजना, शत्रु द्रव्यभाव दोय हणतां थावे ॥ भावथी रागद्वेष अशुद्ध परिणतिये, द्रव्यथी गुणघाति चउक्षय पावे ॥ नव० ॥ २ ॥ बीजी

सिद्ध पदतणी करुं हवे पूजना, अष्ट कर्मक्षयथी अष्ट गुण पावे॥ पुद्गल रहित ए आत्मरूपे सदा, अनंत गुण वृत्ति अकृत्य थावे ॥ नव० ॥ ३ ॥ आचार्य उपाध्याय साधु सर्व पूजीये, कंचन कामिनिथी रहित थइये सावद्य त्याग त्रिकरण त्रिकरण करी, जाव जीव लगे निस्पृही रहीये ॥ नव० ॥ ४ ॥ दर्शननाण चरण तप गुण पूजना, अंतरकरणे उपयोगी रहीए ॥ तेथी तीहां पामीए स्वरूपें विशुद्धता, शक्ति सोव्यक्ति परगट लहीये ॥ नव० ॥ ५ ॥ एम नव पदतणी पूजना घट विषे, गुण प्रगटे सो भाव पूजा कहीए॥ तेह ज्ञाने करी पूजा में वर्णवी, उपयोगे पूजी शीवसुख लहीए ॥ नव० ॥ ६ ॥ उंगणीसें बावन असाड दुवादशी, कृष्ण पक्ष वार गुरुए गाइ ॥ अनुभव पदतणा स्थिर विचारथी, रमण रचना करी पूर्णताइ ॥ नव० ॥ ७ ॥ मनोरथ माहरो सफळ हुवो आज ए, आनंद उलटभर हर्ष वाध्यो ॥ नवपद आतमा आत्म भावे पूजना, ए विण कार्य नहीं कोइए साध्यो ॥ नव० ॥ ८ ॥ एम भवि पूजीये भक्ति घणी कीजीये, वचन सत्य विवेके उचारीयेए ॥ ज्ञान शीतल करी उपयोग शुद्ध ग्रही, व्यक्ति लही शीघ्र पंथ चालीए ॥ नव० ॥ ९ ॥

॥ कळश. ॥

श्रुतज्ञान अनुभव ॥ ए देशी ॥

उपशम जळे मळ शांन्त करीए उपयोग चंदन पूजीए ॥
वळी ज्ञान पुष्पज धूप श्रद्धा, दिप अनुभव किजीए ॥

वैराग अक्षत ज्ञान गर्भित, दृष्टि सम नैवेद्य ए ॥
एम ज्ञान शीतळ जाव पूजा, फळ कह्युं संतोष ए ॥१॥
इति नवपदजीनी पूजा संपूर्ण.

अथ आरति लिख्यते.

॥ अपछरा करती आरती जीन आगे ॥ ए देशी ॥

आरति करुं जीनराजनी सहज जावे, ज्ञान दीप ज्योति प्रगटावे ॥ घट अंतर प्रकाश थावे, जागे तिमिरांधकार ॥ आरति करुं० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीनजाव संजाव ए ज्ञानयोग, टळे रागद्वेष जाव रोग ॥ वसे शुद्ध परिणति संयोग, क्षीण मोह वीतराग ॥ आरति० ॥ २ ॥ उतरवुं मुळरूपमां गुणे चढवुं, शुद्ध उपयोग रमण आदरवुं ॥ गुणपर्याय अनुजव करवुं, लाधे केवळ ज्ञान ॥ आरति० ॥ ३ ॥ जाव जीन अरिहंतजी ए प्यारो, घाति कर्महणी हुवो न्यारो ॥ ठाण तेरमुं तीहां विचारो, अंते योगनो रोध ॥ आरति० ॥ ४ ॥ धर्म अनंतो व्यक्तिए जिन्न वर्त्ते, सोही जाव नाटक नाच करते ॥ हुवा सिद्ध लोकंते ठरते, जांगे सादि अनंत ॥ आरति० ॥ ५ ॥ सहजस्वजावे जीनजी सम थावुं, एम उलट मनमां लावुं ॥ ज्ञान शीतळ आरति गावुं, तजी पुद्गलिक जाव ॥ आरति० ॥६॥

संपूर्ण.

अथ मंगळ दीवो लीख्यते.

ज्ञान प्रकाशसो मंगलिक दीवो, उतारो आरति समकिती जीवो ॥ मूर्छा उतारो पुद्गल केरी, अप मंगळिक

ए नहीं भलेरी ॥ ज्ञान० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मंगळीक जीव स्वरूपोपयोगी, भाव निक्षेप निजभाव संयोगी ॥ अरूपी शुद्ध परिणति त्यां कहीए, ध्याता ध्येय ध्यान एकता लहए ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ रागद्वेष अपमंगलिक हणीआ॥ गुणघाति टळया जे चउ रणीया॥ मंगळीक केवळज्ञान सो दीवो, परमानंद अनंत रस पीवो ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ एही मंगळिक सिद्ध पद आपे, आयुष्य अंते अघाति कापे, कार्मण कर्म मनुष्यभव छोडी, सिद्ध गतिये वर्या शीववधु जोडी ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ अव्याबाध अनंत सुख संगी, पर्याय धर्मे वृति एकंगी ॥ उत्कृष्ट मंगळिक सिद्धने कहीए, ज्ञान शीतळ ए भावसो ग्रहीए ॥ ज्ञान० ॥ ५ ॥ संपूर्ण. ॥

॥ अथ अध्यात्म चोवीशी लिख्यते ॥

प्रथम स्तवन.

शत्रुंजय दीठो रे ॥ ए देशी ॥

युगला धर्म निवारण स्वामी, शीवपद साधन कामी रे ॥ हित चिंतक परमेश्वर प्यारो, ऋषभदेव शीरनामी रे ॥ देवाधि देव पूजोरे, पूज्यां पूज्यां परमानंद ॥ भविक तुमे पूजो रे ॥ए शीव सुख केरो कंद ॥ भविक तुमे पूजो रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ प्रथम नरेसर प्रथम मुनीसर, प्रथम केवळ ज्ञानी रे ॥ त्रिगडे वेसी उपदेश देवे, नहीं कोइ एह सम दानी रे ॥ देवाधि० ॥ २ ॥ ए दान ग्रहे सो ज्ञाता, संघ चतुर्विध कहीएरे॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, गणधर मुख्य पद लहीए रे ॥ देवाधि० ॥ ३ ॥

समकित मूळ आज्ञायुक्त तीरथ, स्थापे आदि जिणंदरे ॥ तीहां सूत्र दुवादश रचता, लब्धियें गणधर मुनिंद रे ॥ ॥ देवाधि० ॥ ४ ॥ भव्य जीवने ए महा उपगारी, मिथ्यात्व टाळण हारी रे ॥ ज्ञानशीतल करी समकित पामे, सोही सिद्ध अधिकारी रे ॥ देवाधि० ॥ ५ ॥ संपूर्ण.

स्तवन बीजुं.

॥ देशी ललनानी ॥

अजित जिनपति देशना, सुणतां प्रगटे आनंद ॥ ॥ ललना ॥ जीव पुद्गलनी भिन्नता, दाखे दुफार जिणंद ललना ॥ अजित जिनपति देशना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीवसत्ताए सिद्ध अनादिनो, ए क्षायक लब्धिवंत ॥ ललना ॥ संग्रह नयना पक्षथी, अव्यक्तव्य गुण अनंत ॥ ॥ ललना ॥ अजीत० ॥ २ ॥ एम छती पर्याये जाणीए, जिम बीजमां रह्युं वृक्ष ॥ ललना ॥ वळी काष्ट मांही अग्नि रही, तेम काया व्यापक जीव शुद्ध लक्ष ॥ ललना अजित जिन० ॥ ३ ॥ ए धर्म वस्तुगत उळखो, करो श्रद्धा जीव पुदगल भिन्न ॥ ललना ॥ जीव गुण रागी थइ ग्रहो, तेहने अनुभवो तद्गत थइ लिन्न ॥ ललना ॥ अजित० ॥ ॥ ४ ॥ तदगत भावे ग्रंथी भेदीने, पामो सम्यक दर्शन ज्ञान ॥ ललना ॥ शुद्धातम अनुभव करो, मळे नीज गुण लब्धि दान ॥ ललना ॥ अजित० ॥ ५ ॥ त्यां गुण गण भिन्न व्यक्तव्यता, ए लाभ लब्धि कहेवाय ॥ ललना ॥ भोग लब्धि गुणगत त्यां लहो, भोग गुण निष्पन्न समे

थाय ललना ॥ अजि० ॥ ६ ॥ उपभोग वारंवार भोगवे, बीजा समयथी यावत् चिरंकाळ ॥ ललना ॥ वच्चे विरह-काळ आवे नहीं, उपभोग लब्धिमांहे रसाळ ॥ ललना ॥ ॥अजित०७॥ वीर्य स्फुरणा गुण स्वभावे लहे, गुणगुणगत उपयोग भिन्न ॥ ललना ॥ समे समे फुरणा अभिनव पणे, वीर्यलब्धि मांही सदा लिन्न ॥ ललना ॥अजित॥०८॥ ए लब्धि पांच क्षायक भावनी, भवि प्रकट करो व्यक्ति-भाव ॥ ललना ॥ लहो सामर्थ्य पर्याय सिद्धगति, त्यां घाति अघाति कर्म अभाव ॥ ललना ॥ अजित० ॥ ए ॥ हेतुक्षय उपशम चोथा ठाणथी, क्षिण मोह ठाण पर्यंत ॥ ललना ॥ घाति चउकर्म तेहथी खपे, लहे केवळनाण महा संत ॥ ललना ॥ अजित० ॥ १० ॥ जीव सत्ताये लब्धि रही पिंडरूपणे, ज्ञान शीतळ ए शीवसुख कंद ॥ ल-लना॥ तेने रोपो ग्रंथिभेद अवसरे, सींचो ज्ञान रस वृद्धिये आणंद ललना ॥ अजित० ॥ ११ ॥ संपूर्ण.

स्तवन त्रीजुं.

॥ चंद्रप्रभु मुख चंद्र, सखी मुने देखण दे ॥ ए देशी ॥

श्री संभव स्वभाव रमण ॥ सखी देखण दे ॥ उपयोग अनु-भव ज्ञान ॥ सखी मुने देखणदे ॥ क्षायक लब्धि अनंत सदा सखी० ॥ गुण गुण भिन्न व्यक्ति विज्ञान सखी० ॥१॥ जीवसत्ता निर्मळ सदा ॥सखी०॥ अनादि अनंत ए सिद्ध ॥ सखी० ॥ आवरण लाधे नहीं कदा ॥ सखी० ॥ ए निर्लेप वस्तु ऋद्ध ॥ सखी० २ ॥ मिथ्यात्व भावे न देखीयो ॥ सखी० ॥ अ-

ज्ञाने नहीं नास ॥ सखी० ॥ मोह विकलताए आंधळो ॥ सखी० ॥ अहंममत्व नर्यो घणो त्रास ॥ सखी० ॥ ३ ॥ दर्शनावरणी रुठयो घणुं ॥ सखी० ॥ करे चक्षुअचक्षु अन्नाव ॥ सखी० ॥ काळ अनंत निगोदमां ॥ सखी० ॥ कारण नहीं सामग्री दाव ॥ सखी० ॥ ४ ॥ त्रस थावरमां न देखीयो ॥ सखी० ॥ दीठो न चउगति मांही ॥ सखी० ॥ ज्ञान सम्यक विण जड थयो ॥ सखी० ॥ रागद्वेषनी वृद्धि त्यांही ॥ सखी० ॥ ५ ॥ क्लेशानंदी आतमा ॥ सखी देखणदे ॥ वांधे कर्म अनंत ॥ सखी० ॥ संतापे उदयिक अवसरे ॥ सखी० ॥ इष्ट हाणि महा दुखवंत ॥ सखी० ॥ ६ ॥ अंतराय नमीठे अनादिनो ॥ सखी० ॥ तेथी पाम्यो न संन्नव नूप ॥ सखी० ॥ काळ लब्धि आवी दुकमी ॥ सखी० ॥ नाव लब्धि प्रगट नीजरूप ॥ सखी० ॥७॥ द्रव्य कर्म नाग्योतदा ॥ सखी० ॥ नाव कर्मनो अन्नाव ॥ सखी० ॥ नो कर्म संग परहर्यो ॥ सखी० ॥ हुवा सिद्ध निरंजन राव ॥ सखी० ॥ ८ ॥ ज्ञान शीतळ करी पामीए ॥ सखी० ॥ मुक्ति सुखनुं धाम ॥ सखी० ॥ सादि अनंत स्थिति त्यां नली ॥ सखी० ॥ तेने पामुं ए छे मूज काम ॥ सखी० ॥९॥

संपूर्ण.

स्तवन चोथुं.

॥ सुगुण सनेहारे कबुये न वीसरे ॥ ए देशी ॥

अन्निनंदन जिन आनंद पूरणो, नाव अध्यातम पा-

मीजी ॥ द्वितिय भाव उन्मूलन ताहरे, अचळ अबाधित रामीजी॥ अभिनंदन जिन आनंद पूरणो॥ ए आंकणी ॥ गाथा॥१॥ ज्ञानानंदी स्वभावे पामीया, गुणी पर्याय अनंतजी॥ निज निज व्यक्तिरे आणंद भिन्नता, आणंद ल्हेर अनंतजी ॥ अभिनं० ॥ २ ॥ निर्मळ व्यक्तिरे संपत्ति ताहरे, मारे तुज सम शक्तिजी॥ समळ उपाधि भर्यो मुज आतमा, तेथी न प्रगटे व्यक्तिजी ॥ अभिनंदन० ॥ ३ ॥ तेथी तुं सिद्ध सेवक हुं ताहरो, तुज गुणरंगी अभंगजी ॥ तुज गुणज्ञान ध्यान मुज मन वस्यो, रुचे नहीं अन्य संगजी ॥ अभि० ॥ ४ ॥ चिन्ह मूर्त्ति अंतरमां थापीए, संवर जळ करीए पखाळजी ॥ अनुभव रमण परमपद पूजतां, पामे सिद्धपद लालजी ॥ अभिनंद० ॥ ५ ॥ नाचो राचो निरंजन मंदिरे स्तुति स्वरूप उपयोगजी ॥ तेथी ज्ञान शीतळ थाय आपणुं, ए पूरण आणंद योगजी ॥ अभिनंद० ॥ ६ ॥ संपूर्ण.

स्तवन पांचमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ कडखो ॥

सुमति शुद्ध चेतना, मूळ रूप देखना, तेहशुं सगपण जोडना ए ॥ मुजमन ते वसी तेनो हुं बहु रसी, स्वामी एणे नाथ तुमने कीया ए ॥ सुमति शुद्ध चेतना० ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ कुमति रीसाइ गइ दूख दिन लइ गइ, नडतर भाग्यो अनादिनो ए ॥ सुख संपत्तिभयी वृद्धिसंताननी, भोग भोगी हुउं आतमाए ॥ सुमती० ॥२॥

सदीव स्वामी सेवती चित उत्साहथी, क्षीण न अळगी थाये कदीए ॥ परोणापरे पूजती वचन न लोपती, अमृत रसोइ जमाडती ए ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ भूख भागी गइ, तृप्ति पूरण थइ, वीर्य अनंत वाध्यो तीहां ए ॥ रंगभर रीझथी सेवे शुद्ध चेतना, सादि अनंत भंग सिद्धमां ए ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ एम अनुभव करी सुमति शोधी लीइ, रूप जोइने रीझयो घणुं ए ॥ गुण तस अति घणा वचने आवे नहीं, ज्ञान शीतळ करी जाणीए ए ॥ सुमति० ॥५॥

संपूर्ण.

स्तवन ॥ ६ ठुं ॥

॥ देशी उपरनी ॥

पद्म द्रह भर्यो अमृत जळ अति घणो, चारित्र रायना देशमां ए ॥ तेह मीठो घणो शीतळ शुद्ध वासना, रसकुंपीका तस नाम छे ए ॥ पद्म द्रह भर्यो० ॥ ए आंकणी ॥ ॥ गाथा ॥ १ ॥ ते द्रहमां नाहीने कर्म मळ काढीउ, निरमळ चेतना त्यां थइए ॥ पद्म प्रभ तस नाम जग वीस्तर्युं, परमपूज्य तीर्थंकरु ए ॥ पद्म० ॥ २ ॥ तेह उपदेश भव्य जीवने आपता, तुज मुज एक देशी सहीए ॥ आपणो राय चारित्र नाम निर्मळुं ॥ हित वंछक सर्व जीवनो ए ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ तेने तुमे कीम तजो मोह रायने भजो, परघर पोतीकुं मानतां ए ॥ तेणे कबजे कर्या चोर जाणी करी अनर्गळ ऋद्धि पाछी लीए ए ॥ पद्म० ॥ ४ निरधन त्यां थया सर्व संसारीउ, चउगति मुलकमां फेरवे ए ॥ दुःख

आपे घणुं सुख नहीं एक अणुं, क्लेश करी काळ त्यां निर्गमे ए ॥ पद्म० ॥ ५ ॥ तेथी मुढ आंधळा सत्य सूझे नहीं हेम बंधन त्रुटे नहीं ए ॥ मोह पल्लीनी आज्ञा तुमे मानता, वेरी ए चारित्र रायनो ए ॥ पद्म० ॥ ६ ॥ एथी छुटया विना सुख आवे नहीं, अनंतकाळे ए मूके नहीं ए ॥ नव नवा वेषे नाटक नचावतो, निरदय हृदय नीठुर छे ए ॥ पद्म० ॥ ७ ॥ हुं पण ए रीते तुज सम रखडीउं, विकल थइने संसार मांहे ॥ एम करतां मळ्या सदगुरु देवता, तेणे चक्षुमां अंजन कीयो ए ॥ पद्म० ॥ ८ ॥ तेथी मने सूझीउं वीर्य तीहां फोरव्युं, पूंठ दीधी में मोह रायने ए ॥ चारित्र राय स्मरण कीयो ततक्षणे, ते मुज स्वरूपमां आवीयो ए ॥ पद्म० ॥ ए ॥ त्यां डह निरमळो ज्ञान अनुभव भर्यो, स्नाने विभाव मळ छुटीउं ए ॥ शुद्ध स्वभाव तद्रूप परमातमा, शीव पंथे सेजमां हुं चम्यो ए ॥ पद्म० ॥ १० ॥ एम तुमे करो वीर्य त्यां फोरवो, एह उपदेशने सद्दहो ए ॥ तेथी तुमे पामशो शाश्वत सुखने, ज्ञान शीतळ सो सिद्धातमाए ॥ पद्म० ॥ ११ ॥ संपूर्ण. ॥

स्तवन ॥ ७ मुं ॥

मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

सुपार्श्व जिनवर सातमा, पृथ्वी माताना जायारे ॥ कंचन वरणे दीपता, बसो धनुष्यमान कायारे ॥ सुपार्श्व जिनवर सातमा० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ वीस लाख पूर्वनुं आउखुं, अंतरदृष्टि वैरागी रे ॥ बाह्य रंग पतंगनो,

आतमज्ञानी सोन्नागी रे ॥ सुपार्श्व० ॥ २ ॥ जीव पुद्गल ल्हेंचण करी, उपयोग स्वरूपमां कीधोरे ॥ चिदानंद ज्योति जगमगे, परमानंद रस पीधोरे ॥ सुपार्श्व० ॥ ३ ॥ अप्रमत्त आतम हुउं, क्षपकश्रेणी तीहां मांमेरे ॥ सुक्ल प्रथम पगथालीए, मोह प्रकृति सर्व ठांमेरे ॥ शुपार्श्व० ॥ ४ ॥ समन्नावे चढती कळा, शुद्ध परिणतिमां आवेरे ॥ वीतराग ठाण अंते बारमे, त्रण कर्म क्षय थावेरे ॥ सुपार्श्व० ॥ ५ ॥ अनंत चतुष्टयी पामीया, त्रिगडुं देव बनावेरे ॥ पर्षदा बार मळे तीहां, देशना जीनजी सुणावेरे ॥ सुपार्श्व० ॥ ६ ॥ उपजे विणसे थीर रहे, एतो वस्तु विचार रे ॥ जे मरियादा वस्तुकी, सो सत्ता निरधार रे ॥ सुपार्श्व० ॥ ७ ॥ उपजवुं वीणसवुं ते सही, पर्याय धर्म सद्न्नावरे ॥ स्थीरपणुं तीहां द्रव्यनुं, एम वर्त्ते लक्षण न अन्नावरे ॥ सुपार्श्व० ॥ ८ ॥ ते वस्तु षट् न्नेदे जाणीये, गुण पर्याय संयुक्तरे ॥ हेय जाणी अजीव पांच परहरो, ग्रहो उपादेय चेतन निज युक्तरे ॥ ॥ सुपार्श्व ॥ ए ॥ एम सुणी केइ समकित पामीया, केइक देश विरति थावेरे केइक महाव्रत उचरे, एम लान्न बहु पावेरे ॥ सुपार्श्व० ॥ १० ॥ एम न्नव्य जीवने तारता, करता बहु उपकाररे ॥ आयु पूर्ण करी सिद्धि वर्या, ज्ञान शीतळ जीन अणगाररे ॥ सुपार्श्व० ॥ ११ ॥ संपूर्ण. ॥

स्तवन ॥ ८ मुं ॥

गिरुआरे गुण तुम तणा ॥ ए देशी. ॥

चंद्र प्रन्न जिन देशना, सुणतां शंका न्नाजे रे ॥ नि-

शंकित थाय आतमा, समकित शुद्ध विराजेरे ॥ चंद्र प्रभ्र जिन देशना ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ श्रद्धा कारण सुणो देशना, स्थीर करी मन वच कायारे ॥ मनन करो चिंतवन करो, न भूलो वचन गुरु रायारे ॥ चंद्र० ॥ २ ॥ जीवस्वरूपने ओळखो, पुद्गलमां ढंकाणो रे ॥ चिंतवन शक्ति वीस्तरे, ए कारण मुख्य वखाणो रे ॥ चंद्र० ॥ ३ ॥ यथा प्रवृत्ति प्रमुख सही, त्रण करण करी आवेरे ॥ अंतर करणे अनुभवे, जीव पुद्गल भिन्न भावेरे ॥ चंद्र० ॥ ४ ॥ ग्रंथि भेद करे ते समे, वीर्य वृद्धि जोगरे ॥ ज्ञान ध्यान उपयोगशुं, हणो मिथ्यात्व भाव रोग रे ॥ चंद्र० ॥ ५ ॥ बीज चंद्र सम आतमा, शुद्ध हुओ नीज रूपरे ॥ प्रकाश घट अंतर करे, चढती कळाए थाशे भूपरे ॥ चंद्र० ॥ ६ ॥ एही चंद्र प्रभ्र सेवीए, अंतर मंदिर स्थापी रे ॥ शीव सुख आपे ततक्षणे, ज्ञान शीतळ घट व्यापी रे ॥ चंद्र० ॥ ७ ॥ संपूर्ण. ॥

॥ स्तवन ॥ ९ मुं ॥

कपुर हुवे अति उजळुं जी ॥ ए देशी ॥

सुवुद्धि नाथ नवमा प्रभुजी, कांति फटक समान ॥ एक सत धनुष्य प्रमाण छे जी, काया बहु बळवान ॥ सोभागी जीन तुज गुणनो नहीं पार ॥ शीव सुखनो दातार सोभागीजीन, मारे अवलंबन आधार सोभागीजीन, तुज गुणनो नहीं पार ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ सुवुद्धि वर्णन करुंजी, ज्ञान श्री तस नाम ॥ ते छंके नीज देहनेजी, ग्रहे नाथ आतमराम ॥ सोभागीजीन० ॥ २ ॥ सुवुद्धिनाथ

तस कीजीएजी, घट अंतर रहे वास ॥ उपयोगे रमे रंगशुं जी, तोमे कर्म बंधन पास ॥ सोन्नागी० ॥ ३ ॥ ऋद्धि अनंती न्नोगवेजी, खरचे उदयिक न्नाव ॥ तिम तिम तेज वधे घणुंजी, वेग त्यां समन्नाव नाव ॥ सोन्ना० ॥ ४ ॥ संसार सागर उतर्याजी, पहोच्या शीवपुर मांही ॥ सिद्ध वधुए वधावीयाजी, दीधो बहु आदर त्यांही ॥ सोन्ना० ॥ ५ ॥ आणंद क्रीमा त्यां करेजी, वेशी एक रुपधार ॥ सिद्ध वधुने ज्ञान श्रीजी, न्नोगी चेतन सार ॥ सोन्नागी० ॥ ६ ॥ अवाधित सुख न्नोगवेजी, सादि अनंतो काळ, ज्ञान शीतळ चित्त तीहां वस्योजी, जावुं देश एक फाळ ॥ सोन्ना० ॥ ७ ॥ संपूर्ण. ॥

॥ स्तवन ॥ १० मुं ॥

सेवक किम अवगणीए हो मल्लिजीन ॥ ए देशी ॥

शीतल जिन शितल गुण ज्ञानी, निजपर सौने जाणे॥ निज रूपे शीतलता वाधे, त्यां परने कुण आणे ॥ शीतलजीन ए अब शोन्ना सारी ॥ मुज मनने अति प्यारी ॥ शीतलजीन ए अब शोन्ना सारी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीव अनादि सिद्ध स्वरूपी, शक्ति न्नावे लाधे ॥ अव्याबाध सुखनो न्नोगी, परसंगे ज़ुख वाधे ॥ शीतल० ॥ २ ॥ परसंग तेही अग्नि जाणो, चेतन गुणने बाळे ॥ दश प्राण ते पुद्गल कहीए, तेमां चेतन न्नाळे ॥ शीतळ० ॥ ३ ॥ ए परसंग ढुटे सुख आवे, आवे उपयोग घरमां, अनुन्नव मित्र मळे तीहां वेगे, लावे केवळज्ञान पळमां ॥ शीतळ ॥ ४ ॥

ए मनोरथ ज्ञान शीतळनो, पूरण करजो स्वामी ॥ हुं तमने उपगारी जाणी, नित्य प्रणमुं शीर नामी ॥ शीतळ० ॥५॥ ॥ संपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ ११ मुं ॥

धन्य धन्य संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

श्रेयांस जिन सेवा कीजे, त्यां अनुभव रस पीजे रे ॥ साधन ए सम अवर न दुजो, आत्म कार्य त्यां सिजेरे ॥ श्रेयांस जिन सेवा कीजे ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ श्री श्रेयांस जिन अंश स्वरूपी, समकित सरोवर तीरे रे ॥ ज्ञान जळ मान सरोवर भरीओ, खेले खेल चित्त स्थिरेरे ॥ श्रे० ॥ २ ॥ आत्म गुण चारो तीहां चावे, वीर्य अनंतु पावे रे ॥ तिम तिम क्रीडा अधिकी थावे, क्षायक नव लब्धि त्यां आवेरे ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ एही सिद्ध एही परमेसर, निरंजन निराकार रे ॥ ज्ञान शीतळ अनुभव अंश सेवे, ते उतरे भव पार रे ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ १२ मुं ॥

झांझरीआ मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

वासपूज्य जीन वारमाजी, मुक्ति पुरीमां वास ॥ स्वरुप रमण उपयोगशुंजी, लहे पूज्य शिवरूप तास ॥ रंगीला प्रीतम तुजसुं अविहड नेह ॥ ए आंकणी ॥गाथा॥ ॥ १ ॥ अनादि वास मिथ्यात्वमांजी, तीहां जडरूपी जीव ॥ काळ लब्ध आवे जदाजी, पामे समकित भजी शीव ॥ ॥ रंगीला० ॥ २ ॥ तीहां घट अंतर वासीयाजी, अनुभव

मंदिर मांही ॥ पूज्य पणुं तीहां पामीआजी, उपयोग प्रगटयो ज्यांही ॥ रंगीला० ॥ ३ ॥ अप्रमत्त पगथाळीएजी, एम गुण चेतन पामे ॥ त्यांथी चढवुं श्रेणीएजी, वीतराग भावना सामे ॥ रंगीला० ॥ ४ ॥ अरिहंत पदगण तेरमेजी, केवळज्ञानमां वास ॥ पूज्य पणुं अति वीस्तर्युंजी, मुक्तिपुरी त्यांथी पास ॥ रंगीला० ॥ ५ ॥ योग रोध करी सिद्धमांजी वास कर्यो तुमे पूज्य ॥ ज्ञान शीतळ जावुं तीहांजी, नीज आत्माने कहे बुझय ॥ रंगीला ॥ ६ ॥ संपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ १३ मुं ॥

लाछलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥

विमळनाथ जीनराय, कंचन वरणी काय ॥ आजहो उंची साठ धनुष्यनीजी ॥ १ ॥ विमळ श्री सो ज्ञान, बीजुं सर्व अज्ञान ॥ आज हो पुद्गलने जीव जे कहे जी ॥ २ ॥ ते जीव मोही मलीन, तप जप करे थइ लीन ॥ आजहो आशा बांधे आवता काळनीजी ॥ ३ ॥ तीहां संसार स्थिर, चेतन सदाय अस्थिर ॥ आजहो बळीओ ते गळीओ थइ पर्यो जी ॥ ४ ॥ बांधे कर्म अनंत, ए दुर्बुद्धिनो कंत ॥ आजहो ए कहे हुं छुं संयमीजी ॥ ५ ॥ एम दीसे छे आज, सुणजो विमळ महाराज ॥ आज हो मारे तो गुरू तुंज छे जी ॥ ६ ॥ तुमे परण्या स्वरूप ज्ञान, कीधुं दुर्मतिनुं स्नान आज हो दुखदीन नाठा ताहरेजी ॥ ७ ॥ तीहां थया विमळनाथ, झालो हमारो हाथ ॥ आजहो ज्ञान शीतळनी मानो विनती जी ॥ ८ ॥ संपूर्ण. ॥

॥ स्तवन ॥ १४ मुं ॥

॥ देशी ॥ चंद्रावळानी ॥

अनंत जिनपति चौदमा रे, आतमज्ञानी ध्यानी ॥ तुरंग गति रंग ध्यानमां रे, गर्जीत पुष्ट गज ज्ञानी ॥त्रुटक॥ गर्जीत पुष्ट गजज्ञानी नसाडे ॥ उपाधि सघळी स्वरूपथी काढे ॥ तीहां शीवरूप सद्भाव समाधि, पर अनुभव भेदी भाव व्याधि ॥ सेवो अनंत जिन एह ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अनंत जिनपति ते थया रे, नहीं कोइ परना संगी ॥ निज द्रव्यनी वृत्तिए रे, एकत्व रंगी अभंगी ॥ त्रुटक ॥ एकत्व रंगी अभंगी सभोगी, अरूधी क्षण तुं रहे न अभोगी, राग रंग तज्यो तुही स्वामी ॥ वीतराग थइ सहेज भाव आरामी ॥ सेवो० ॥ २ ॥ अनंत चतुष्टयादि गुण वर्या रे, गुण घाति करी चउ नाश ॥ अव्याबाधादि वर्या पजवा रे, अघाति कर्म त्यां विनाश ॥ त्रुटक ॥ अघाति कर्म त्यां विनाश अनंतां समश्रेणी सिद्ध वधु वरंतां, कार्य पूरण कीधुं स्वामी ॥ सादि अनंत स्थीति तीहां पामी ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ परमानंद पद शाश्वतो रे, मूळ रूपमांही देखाय ॥ आधि व्याधि जिहां नहीं रे, तीहां छे निरंजनराय ॥त्रुटक॥ तीहां छे निरंजनराय मुज प्यारो ॥ ए वीण सर्वे लागे खारो, ते कारण अंतरमां वशीये ॥ स्थिर थइ त्यांथी नवि खसीये ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ एहीज कारण सिद्धनुं रे, ए वीण अवर न दुजो ॥ ज्ञान शीतळ करी त्यां जइ रे, अलख अचळ पद पूजो ॥ त्रुटक ॥ अलख अचळ पद पूजो स्वामी ॥

देवाधि देव ए छे शीवगामी, सर्व शिद्धांत तणो ए सार ॥ श्रद्धा करीने लहो भवपार ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ संपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ १५ मुं. ॥

॥ देशी एकवीसानी ॥

धर्मनाथजी रे देव पनरमा सुखकरु ॥ दीये देशना रे नय गरभीत ए जीनवरु ॥ एक ज्ञानमां रे नय साते तुमे भाषिया, अज्ञानमां रे चोथी नय सुधी राखीया ॥ त्रुटक॥ शब्दनय समकित पामे, मिथ्यात्व धर्मने परहरे ॥ वस्तु स्वभावे धर्म सद्दहे, अंश अंश परगट करे ॥ वस्तु स्वभाव ते शब्द नय छे, तेमां अंश नैगम भळे ॥ जीवसत्ता शुद्ध ग्राहक, ए संग्रहनय त्यां मळे ॥ १ ॥ जीव स्वभावे रे, ज्ञान उदय प्रकाशीयो, तीहां पुद्गल रे उपाधिपुर नाशीयो ॥ तेथी चेतन रे, शुद्ध थयो समाधिमयी, ए व्यवहार नय रे, मिल्यो शब्द नयने जइ ॥ त्रुटक ॥ ज्ञानध्यान उपयोगे आवे तीहां मन हाले नहीं ॥ ए पंच ऋजु सूत्र नयनो, मल्यो शब्द नयने तहीं ॥ शब्दनय आरुढ वृद्धि, वस्तु धर्म प्रगट पणे ॥ ध्याता ध्येय ध्यान एक तीहां, सम भावे केवळ जणे ॥ २ ॥ ए अरिहंत रे समभिरूढ नये भाविया, उपर दाख्या रे, पांच नय ते साथे लाविया ॥ हवे इहांथी रे योग रुंधीने सिद्धिवरे, लोकंते रे सिद्ध शिला उपर ठरे ॥ त्रूटक ॥ तीहां एवंभूत नय थावे, एम करीए सप्त नय साधना ॥ शक्ति व्यक्ति मांही भळे त्यां कहीए आराधना ॥ सिद्ध साधन शब्द नयमां, ज्ञानयोगे

जाणीए ॥ वीजी नयोगर्भित आवे, तेमां हठ नवी ताणी-ए ॥३॥ एम सप्तनये रे वस्तु धर्म तुमे वर्या, तेथी धर्मनाथरे अमे तमने कहीए खरा ॥ तुमे अहनीश रे मुज घट अंतर आवजो, मुज चेतना रे तुम संगे जगावजो ॥ त्रुटक ॥ एम कीधुं धर्मनाथे, आव्या अनुभव मंदिरे ॥ पण मुजने मलीन देखी, वेठा नहीं कंइ चित्त थिरे ॥ तीहां मुजने प्रमोद झाझो, आणंद हरख वधामणां ॥ ज्ञान शीतळ करे विनति, वळी दर्शन देजो तुम तणां ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

स्तवन ॥ १६ मुं ॥

शांति जिणेसर केशर अर्चित जगधणी रे ॥
के अर्चित जगधणी रे ॥ ए देशी ॥

शांति जिणेसर साहेब मुज मनमां वस्योरे ॥ के मुज मनमां वश्योरे ॥ भाव रोगनो टालण अवरन तुज जिश्योरे ॥के अवर०॥ रोग सोग संताप क्लेश निवारीयोरे ॥क्लेश०॥ थइ शांति टळ्यो रोग निरोगी तुं भाळीउरे ॥ निरोगी तुं० ॥ १ ॥ रूप अनंतु साहिब दीसे ताहरुं रे ॥ के दीसे ताहरुं रे ॥ तुज मुख पुनमचंद हृदय हीसे मा-हरुं रे ॥ हृदय० ॥ कंचन वरणी काया कंचन सम दीपती रे ॥ कंचन० ॥ सेवा करतां लाभ घणो मुज आपती रे ॥ घ-णो० ॥ २ ॥ जळचंदन वरधूप दीपशुं पूजीएरे ॥ दीपशुं पूजीएरे ॥ कुसुम अक्षत नैवेद्यने फळ धरी धुजीयेरे ॥ फ-ळ० ॥ इत्यादिक शुद्ध द्रव्य शुं पूजो भवि जनोरे ॥ के पूजो० ॥ निमित उपादान समज्यां कार्य करे सवि जनोरे ॥ कार्य करे० ॥ ३ ॥ तुज गुण गातां अंतर रंग वधे मुनेरे

॥ के रंग० ॥ तुं उपगारी पूज्य तार कहुंबुं तुने रे ॥तार०॥
तुजवीण दुजो देव न दीसे दयालुई रे ॥ न दीसे० ॥ क-
रुणासिंधु मनमोहन तुंही, मायालुई रे ॥ के तुंही० ॥४॥
तुज जक्ति शुद्ध युक्ति मुक्तिने खेंचशेरे ॥ मुक्तिने० ॥
जीव पुद्गल दोय जिन्न जाति जेद व्हेंचशे रे ॥ जाति० ॥
जेद ज्ञाननुं एं काम बीजाथी न नीपजे रे ॥ बीजाथी० ॥
आतमरुप अनंत महंत तीहां जजे रे ॥ महंत० ॥ ५ ॥
अनंतर आतम सिजे त्यां वार लागे नही रे ॥ त्यां वार० ॥
अनुजव मित्र चेतन शुद्ध दोय मिळे तहीं रे ॥ के दोय०
आणंद लहेर अजंग रंग तीहां वधे रे ॥ के रंग० ॥ ज्ञान
शीतळनुं ए काज आज पूरण सधे रे ॥ के आ० ॥ ६ ॥
॥ संपूर्ण ॥

स्तवन ॥ १७ मुं ॥

॥ मरकलडानी देशी ॥

कुंथुनाथ जिन पूजोजी ए प्रजु गुण नीलो ॥ डुनि-
आमां देव नहीं दुजोजी ए प्रजु गुण नीलो ॥ द्रव्य जाव
दोय जेदेजी ॥ ए प्रजु० ॥ तेमां जावपूजा अखेदेजी ॥ ए०
॥ १ ॥ द्रव्य पूजाए द्रव्य उपयोगजी ॥ ए० ॥ शुद्ध चेतन
नहीं संयोगजी ॥ ए० ॥ जाव पूजाये शुद्ध उपयोगजी
॥ ए० ॥ ज्हां आत्मस्वरूप थयो जोगजी ॥ ए० ॥ २ ॥
द्रव्य पूजा छे चार नय शुद्धजी ॥ ए० ॥ जाव पूजाए श-
ब्दमां बुद्धिजी ॥ ए० ॥ द्रव्य पूजा आरोपित दाखीजी
॥ ए० ॥ जावपूजा अणारोप जाखीजी ॥ ए० ॥ ३ ॥ एम

पूजा विवेके करीएजी ॥ ए० ॥ निज पर भिन्नता बुद्धि धरियेजी ॥ ए० ॥ शब्दयोगे सर्व नय सत्यजी ॥ ए० ॥ नहीं तो चउ कहीए असत्यजी ॥ ए० ॥ ४ ॥ शब्दादि तरण नय भाख्याजी ॥ ए० ॥ एतो आत्मस्वरूपमां राख्याजी ॥ ए० ॥ एना संगे नैगमादि भळताजी ॥ ए० ॥ नहीं तो पुद्गलमां ठरता, ॥ ए प्रभु० ॥ ५ ॥ चोथी नय सुधी मिथ्यात्व वाइयोजी ॥ ए० ॥ शब्दमां समकित रुमो खाइयोजी ॥ ए० ॥ मुक्ति मारग शब्द नयथीजी ॥ ए० ॥ साधन ए विण होय कहांथीजी ॥ ए० ॥ ६ ॥ स्थिरादृष्टि शब्द नये लाधेजी ॥ए०॥ चारे दृष्टिमां मिथ्यात्व वाधजी ॥ए० भावशत्रुमां मिथ्यात्व मोटोजी ए० एथी जीव संसारी ढोटोजी ॥ए०॥७॥ शरधा वीपरित दुख दाताजी ॥ए०॥ एना अभावे जीवने शाताजी ॥ए०॥ एम ज्ञान शीतळनी वाणीजी ॥ए०॥ गुरु वचन श्रवण करी जाणीजी ॥ ए० ॥ ८ ॥ संपूर्ण ॥.

॥ स्तवन ॥ १८ मुं ॥

॥ राग वंगाली ॥

अरनाथजीनजी अढारमा देव, अंतरयोगे मिलवा करुं शेव ॥ साहेव सांभळो ॥ हुं तुमने चाहुं दीनरात, न गमे मुजने बीजाथी वात ॥ साहेव सांभळो ॥ १ ॥ तुज वचन सुणवानो प्यार, तुम संगे स्थिरता करवा बुं त्यार ॥ सा० ॥ तुम पासे मारे करवो रहेवास, तुं दूध बीजी सघळी छाश ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमे मळो त्यां मुने परमोद, रीझ मोजथी करीए विनोद ॥ सा० ॥ तुम संगे

मुज चेतन शुद्ध, तुज कृपाए थइये बुद्ध ॥ सा० ॥ ३ ॥ तुज गुणनो मुज रंग अजंग, तुज मुज बेउनुं करवुं एकंग ॥ सा० ॥ तुजवीण बीजुं न गमे बाज्य, संसार सागर तरवा तुं जाहाज ॥ सा० ॥ ४ ॥ सुणी विनति मीव्या अरनाथ, सत्ता शक्तिये त्यां त्रिजुवन नाथ ॥ सा० ॥ वात करे तुज मुज रूप एक, शक्तिमां नही कोइ अन्यनो जेग ॥ सा० ॥ ५ ॥ व्यक्तिमां अंतर पमीठे सार, निर्मळ समळनो जेद विचार ॥ सा० ॥ ज्ञान शीतळ श्रद्धा एम धार, स्थिति पाके तुं सिद्ध वधु जरथार ॥ सा० ॥ ६ ॥

संपूर्ण.

॥ स्तवन ॥ १९ मुं ॥

॥ दीठी हो प्रज्ञु ॥ ए देशी ॥

मूरती हो प्रज्ञु मूरती मल्लि जिणंद, ताहरी हो प्रज्ञु ताहरी अनंत गुणे जरीजी॥ केवळ हो प्रज्ञु केवळ ज्ञान-दर्शन, चरण हो प्रज्ञु चरण यथाख्यात मय ठरीजी ॥ १ ॥ दान लाज हो प्रज्ञु दान लाज आत्मा अजेद, जोग हो प्रज्ञु जोग उपजोग स्वगुण मही जी ॥ वीर्य हो प्रज्ञु वीर्य स्फुरणा अनंत, अप्रयास हो प्रज्ञु अप्रयास अन्य सदाय नहीजी ॥ २ ॥ क्षायक हो प्रज्ञु क्षायक लब्धि ए पांच सादी हो प्रज्ञु सादि अनंत जांगे कहीजी ॥ अव्रतक हो प्रज्ञु अव्रतक कदीए न होय ॥ गुण सव्वे हो प्रज्ञु गुण सव्वे त्रिविध परिणती ग्रहीजी ॥ ३ ॥ व्यक्ति हो प्रज्ञु व्यक्ति जिन्न जेद अनंत ॥ प्रगटे हो प्रज्ञु प्रगटे तेथी

परमानंदताजी ॥ सुख हो प्रभु सुख ए अनंत अव्याबाध॥ लहरी हो प्रभु लहरी विलास आस्वादताजी ॥४॥ अक्षय हो प्रभु अक्षय स्थितियें गति सिद्ध ॥ अरूपी हो प्रभु अरूपी वरणादि नही तीहांजी ॥ अगुरु हो प्रभु अगुरु लघु वार भेद ॥ हाणी हो प्रभु हाणी वृद्धि गुण वृत्ति तीहांजी ॥ ५ ॥ इत्यादि हो प्रभु इत्यादि गुण अनंत, धर्म हो प्रभु धर्म गुणगत स्वभावएजी ॥ गुण ते हो प्रभु गुण ते पर्याय समुदाय ॥ भिन्न हो प्रभु भिन्न कहीए हेतु उपदेशमांजी ॥६॥ वस्तुये हो प्रभु वस्तुए द्रव्य पर्याय॥ गुणनय हो प्रभु गुणनय नही सिद्धांतमांजी ॥ प्रदेश हो प्रभु प्रदेश असंख्याता दाख्य॥ तस घन हो प्रभु तस घन निवरू सिद्धमांजी ॥ ७ ॥ तेहीज हो प्रभु तेही मूरती मल्लि जिणंद ॥ उंगणीस हो प्रभु उंगणीसमा तीरथपतिजी ॥ ज्ञान हो प्रभु ज्ञान शीतळ शुद्धभाव ॥ पूजाथी हो प्रभु पूजाथी भवि लहे सिद्धगतिजी ॥ ८ ॥

संपूर्ण.

॥ स्तवन ॥ २० मुं ॥

॥ सांभळजो मुनिसंयम रागे ॥ ए देशी ॥

मुनिसुव्रत जगत गुरुराया, शुद्ध नयचित्त ठरायारे ॥ शुद्ध पर्याय रमण उपयोगे, ध्यान तुरंग नचायारे ॥ मुनिसुव्रत जगत गुरुराया० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ निज सत्ता धर्म प्रगट पाया, व्यक्ति गुण पर्यायारे॥ सेहेज स्वभावे क्षायक लब्धि, अचळ अनंती कहायारे ॥मुनि०॥

॥ २ ॥ तेमां नवभेदे इहां दाखुं, समकित परथम भाखुं रे॥ चरण यथाख्यात वीतराग भावे, शुद्ध परिणतीए राखुं रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ केवळ ज्ञानने केवळ दर्शन, विशेष सामान्य उपयोगरे ॥ समय अतंर बे सिद्धांते मान्या, नयवादे एकविशेषो पयोगरे ॥ मु० ॥४॥ दान लाभ भोग उपभोग वीर्य, दाखुं तस वृत्तांतरे ॥ दान देतो निज लेतो पोते, सहाय गुण गुणने करंतरे ॥ मु० ॥ ५ ॥ भोग स्वपर्याय भोगवे, उपभोग स्वगुण वृत्तिरे ॥ स्वपर्याय गुण वृत्ति सहायी, वीर्य स्फुरणा अनंती रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ ए पांच लब्धि मुज सत्ताये, अव्यक्तव्य अनादिरे ॥ ते व्यक्तव्य पणे करी आपो, तो ज्ञान शीतळ सिद्ध आदिरे ॥ मु० ॥ ॥ ७ ॥ संपूर्ण.

स्तवन ॥ २१ मुं ॥

ऋषभनो वंश रयणायरो ॥ ए देशी ॥

नमि जिनपति अरीहा नमो, एथी करो गुण राग रे॥ जीव स्वरूपने उळखो, तजो अन्य लावी वैराग रे ॥ नमि जिनपति अरीहा नमो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अन्य वस्तु जीवने पांच छे, तेमां दुःखदायी एकरे ॥ पुद्गल बंधन दृढ छे, कर्म वर्गणा अनेकरे ॥ नमि० ॥ २ ॥ ज्ञानावरणादि आठनो, कर्मदळ वृत्तंतरे ॥ समे समे अज्ञाने बांधतो, सात आठ कर्म महंतरे ॥ नमि० ॥ ३ ॥ तेथी अशुद्ध थयो आतमा, उदयिक भाव संयोगे रे ॥ बंधाणो वर्गणा सातमां, राग द्वेष पर उपयोगे रे ॥ नमि० ४ ॥ सं-

सार स्थिर चउगति भमे, डुःख सहे वारंवाररे ॥ क्लेश करी काळ निरगमे, अहं ममत्व अपाररे ॥ न० ॥ ५ ॥ निज वस्तु धर्म रूचे नहीं, अंतरदृष्टि न थायरे परवस्तु धर्में लागीउ, तीहां मिथ्यात्व सदायरे ॥ नमि० ॥ ६ ॥ सदगुरु वचनथी वेगळो, माने पुद्गलने जीव रे ॥ द्रव्य क्रियातप आदरे, तेथी काज नहीं नहि ए शीवरे ॥ नमि० ॥ ७ एम समजी अन्य संग तजो, भजो ज्ञानने ध्यानरे ॥ निर्विकल्प रस पीजीए, प्रगटे अनुभव ज्ञानरे ॥ नमी ० ॥ ८ ॥ एह शीवसाधन आदरो, आराधो भवि संतरे ॥ अन्य तजतां वीर्य वाधशे, ज्ञान शीतळ एकंतरे ॥ नमी० ॥ ए ॥ संपूर्ण.

॥ स्तवन २२ मुं ॥

॥ सांभळजो मुनि संयम रागे ॥ ए देशी.

नेमि प्रभु नीम कर्यो सही दाखुं, उदयिक भाव नही चाखुं रे॥ परवस्तु अग्राह्य चेतनने, सर्व विरति एम राखुं रे॥ नेमि प्रभु नीम कर्यो सही दाखुं० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ कारण कार्य ते निज स्वभावे, अकारण परभावे रे॥ क्षय उपशम शुद्ध कारण कहीए, कार्य ते क्षायक भावे रे ॥ नेमि० ॥ २ ॥ ए विण कारण कार्य ते नांही, अरिहंतने सिद्ध पदनुं रे ॥ भविजन समजीने आदरजो, वचन ए नेमि जीणंदनुं रे ॥ नेमि० ॥ ३ ॥ कारण ते कार्यने ध्यावे, सोही कार्यने पावे रे ॥ कारण कार्ये नहीं प्रवर्त्ते, ते कार्य रूप नहीं थावे रे ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ कारण सो कार्ये प्रवर्त्ते,

ते कारण कहेवाय रे ॥ कार्य प्रवृत्ति अण करतां, कारण एम न बोलाय रे ॥ नेमि० ॥ ५ ॥ कार्य योग्यतानी छति जेमां, ते कारण एम कहीए रे ॥ ए सत्य वचन प्रवृत्ति जोगे, नही तो कारण शेनुं 'सही'एरे ॥ नेमि० ॥ ६ ॥ कारण वस्तु स्वन्नावे वर्ते, सोही साधन उत्सर्ग रे ॥ ज्ञान शितळ निष्पन्न कार्य तहीं, व्यक्ति अनंत अपवर्ग रे ॥ नेमि० ॥ ७ ॥ संपूर्ण.

॥ स्तवन ॥ २३ मुं ॥

॥ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

पार्श्वनाथ त्रेवीसमारे ॥ मिता ॥ वामा राणी तस-मात ॥ पिता अश्वसेन नरपतिरे ॥ मि० ॥ नील वरण ए जीन प्रख्यातरे ॥ रंगीला मिता ए प्रन्नु सेवोने ॥ ए प्रन्नु सेवो अंतरंगमां रे ॥ मि० ॥ नहीं बाज्य पारस रूपरे ॥ रंगीला मिता ए प्रन्नु सेवोने ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ बाज्य ते उदयिक न्नावछे रे ॥ मि० ॥ पूरव बंध संबंध ॥ कर्म जनित पद्म बाज्यएरे ॥ मि० ॥ ते नहीं चेतन शुद्धरे ॥ रं० ॥ ए० ॥ २ ॥ चेतनरूप अंतरंगमां रे ॥ मिता ॥ पर तजतां प्रगटाय ॥ ज्ञान दीपक अनुन्नव सही रे ॥ मिता ॥ तिमिरांधकार न्नाग्यो जायरे ॥ रं० ॥ ए० ॥३॥ परन्नावथी न्यारापणेरे ॥ मिता ॥ अनुन्नवे वस्तु धर्म ॥ स्याद्वाद धर्म इहां संपजे रे ॥ मिता ॥ लहे आनंद अति पर्म रे॥ रं० ॥ ए० ॥४॥ स्वस्वन्नाव तस कीजीए रे ॥मिता॥ वर्त्तना ए व्यवहार ॥ न्नेद ज्ञान योग वर्णव्यो रे ॥ मिता॥

सोहि कारण शीवसाररे॥ रं० ॥ ए० ॥ ५ ॥ ए विण अवरने कारण कहेरे ॥ मिता ॥ ते कल्पना सो असत्य ॥ ज्ञान शितळ उपदेश एरे ॥ मिता ॥ सुणो नाणी संगे सदा संतरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ६ ॥ संपूर्ण.

॥ स्तवन २४ मुं ॥

॥ मन मोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जिनेश्वर साहेवा मन मोहनमेर ॥ भाव वीर्य शीव संत जीनजी गुरु मेरं ॥ तुज सम अवर न देखीयो ॥ मन० ॥ हणी शत्रु दयालु कहंत ॥ जी० ॥ १ ॥ प्रथम हएयो मिथ्यात्वने ॥ मन० ॥ तीहां फीटयो अचेतन भाव ॥ जी० ॥ चेतन जन्म त्यां कीजीये ॥ म० ॥ ए साधन अवसर दाव ॥ जी० ॥ २ ॥ अज्ञान नाठुं ते समे ॥म०॥ उग्यो अंतर भाण ॥ जी० ॥ हुवो प्रकाश स्वभावमां ॥ म० ॥ थया ज्ञानी अनुभवी जाण ॥ जी० ॥ ३ ॥ परएयां समिती संयम श्री ॥ म० ॥ तीहां त्यागी असंयम नार ॥ जी० ॥ कुमती टळी अधर्म बुद्धि ॥ म० ॥ तेनां संतान हणीआं ते वार ॥ जी० ॥ ४ ॥ कषाय पचवीशने मारीया ॥ म० ॥ हएया विषय विकार तेवीस ॥ जी० ॥ योग चपळताने परहर्या ॥ म० ॥ नाठी निद्रा चंढावीने रीस ॥ जी० ॥ ५ ॥ अप्रमत थयो आतमा ॥ म० ॥ स्वरूप उपयोगवंत ॥ जी० ॥ ज्ञान वीर्य तीहां वाधीयो ॥ म० ॥ टाळी उपाधि हुआ महंत ॥ जी० ॥ ६ ॥ रागद्वेष मोह भागीया ॥ म० ॥ वळी भागी परिणति अशुद्ध ॥ जी० ॥

शुद्ध परिणति पूरण थइ ॥ म० ॥ थया वीतराग जावी ए बुद्ध ॥ जी० ॥ ७ ॥ द्वादश गुणठाणे चढया ॥ म० ॥ त्रण कर्मनो तीहां विनाश ॥ जी० ॥ अनंत चतुष्ट प्रगट थइ ॥ मन० ॥ कीधो अरिहंत पदमां वास ॥ जी० ॥ ८ ॥ चार अतिशय मूळथी ॥ मन० ॥ गुणघाति खपे अगिआर ॥ जी० ॥ उंगणीस देवकृत संपजे ॥ म० ॥ ए चउतीस अतिशय सार ॥ जी० ॥ ए ॥ पांत्रीस वाणी गुणे जर्या ॥ मन० ॥ वळी नाठा दोष अढार ॥ जी० ॥ बार गुणे विराजता ॥ मन० ॥ छाजे प्रातिहार्य आठ सार ॥ जी० ॥ १० ॥ अणहुता सुर कोमीशुं ॥ मन० ॥ सदा सेवे पूरण नाण ॥ जी० ॥ जीन नाम कर्म उदय हुओ ॥ मन० ॥ तेने खेरवे ए वचन प्रमाण ॥ जी० ॥ ११ ॥ क्षत्रिय कुंम पुरे जनमिया ॥ म० ॥ राय सिद्धारथ कुळ चंद ॥ जी० ॥ त्रिसलानंदन गुण नीलो ॥ म० ॥ सेवे संघ समुदाय वृंद ॥ जी० ॥ १२ ॥ कंचन वरणे दीपतो ॥ म० ॥ उंचा सत्त हाथ प्रमाण ॥ जी० ॥ बोतेर वर्षनुं आवखुं ॥ म० ॥ लं-छण सिंह गुण मणिखाण ॥ जी० ॥ १३ ॥ सिंहपेरे धीर एकला ॥ म० ॥ करे शत्रु विनाश ॥ जी० ॥ तुज गुण को न गणी शके ॥ म० ॥ तुं पूज्य हुं छुं तुज दास ॥ जी० ॥ १४ ॥ अंतरदृष्टियें प्रीतमी ॥ म० ॥ कीधी जगगुरु तुजशुं अजंग ॥ जी० ॥ ज्ञान शीतळ रीझे तुजशुं ॥ म० ॥ बीजो न गमे अन्यनो संग ॥ जी० ॥ १५ ॥ संपूर्ण.

॥ कलश ॥

गाया गायारे वर्त्तमान जीन चउवीस गाया ॥ निज स्वन्नावे अनुन्नव करवा, उपयोग स्थिरजमाया॥ तीहां चेतन रूप जिनरूप अनोपम, तेने ध्यातां परमोद पाया रे॥ वर्त्तमान जीन चउवीस गाया ॥ गाया गाया रे, ज्ञान पाया रे, तीहां जीव स्वरूप उंळखाया ॥ ए आंकणी ॥ गाया ॥ १ ॥ ए साधन सिद्ध पदनुं साचुं, ए वीण सर्वे काचुं. ॥ मिथ्यात्व हणतां समकित आवे, ते न्नावे घणुं राचुं रे ॥ वर्त्त० ॥२॥ स्तुति करी गुण रागे करीने, तीहां आणंद हरख सवाया॥ चढतान्नावे स्तवन कीधां, अनुन्नवगम्य अर्थ रचाया रे॥ वर्त्त० ॥ ३ ॥ उंगणीसें उंगणपचास साले, प्रथम अषाढ गुरुवा रे॥ पूरण चोवीसी अमावाश्यायें, कीधी अल्प बुद्धि अनुसारेरे॥ वर्त्त० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ पूरण मारा, जीन गुण न्नक्तियें गाया ॥ प्रमोद न्नावना रुची न्नावी, ज्ञान शीतळ शुद्धता पाया रे ॥वर्त्त०॥५॥ संपूर्ण.॥ सर्व गाथा१८१

इति चोवीशी समाप्त.

अथ चैत्यवंदन अधिकार.

॥ चैत्यवंदन ॥ १ ॥ लुं ॥

॥ श्री सिद्धाचल सिद्ध क्षेत्र ॥ ए देशी ॥

प्रणमी श्री गुरु रायने, हुकम आज्ञा ग्रही जे॥ द्रव्य पर्यायने जाणवा, न्नेदज्ञान घट लीजे ॥ १ ॥ द्रव्य अविचळ रूप छे, ध्रुवता षड्विध जेह ॥ गुणपर्याय अन्नेदता,

अन्नव्य स्वन्नाव तेह ॥ २ ॥ अपलटण धर्म एहनो, पलटे नहीं निरधार ॥ कार्य प्रवृत्ति नहीं, अव्यक्तव्य विचार ॥ ॥ ३ ॥ द्रव्य शक्ति धर्म ए कह्यो, हवे कहुं पर्याय धर्म ॥ स्याद्वाद इहां संपजे, ए जिन वचननो मर्म ॥ ४ ॥ कार्य प्रवृत्ति करे, उपयोग न्नाव स्वन्नाव ॥ व्यक्ति गुण गुणनी न्निन्नता, सोही न्नेद स्वन्नाव ॥ ५ ॥ उत्पाद् व्यय गुण वृत्तियें, अनंतो न्नाख्यो ॥ अन्निनव उत्पाद छे, व्यय पूरव दाख्यो ॥ ६॥ उत्पाद व्यय करे कार्यने, ध्रुवता कारणमांही॥ एही न्नव्य स्वन्नाव कह्यो, मुळ स्वन्नाव छें त्यांही ॥ ७ ॥ पर्याय नय धर्म ए सही, शब्द नयनो पक्ष ॥ शीवसुखदाता एह छे, अनुन्नव ज्ञान प्रत्यक्ष ॥ ८ ॥ एह धर्मने जाणवा, हेतु छे द्रव्य न्नाव ॥ द्रव्य हेतु सद्गुरु न्नला, न्नावे क्षय उपशम नाव ॥ ए ॥ पूरण कार्य जब हुवे, त्यां लब्धि क्षायक न्नाव ॥ ज्ञान शितळने चित्त वस्यों, ए शीव साधन दाव ॥ १० ॥

॥ चैत्यवंदन ॥ २ जुं ॥

॥ सेवो पास संखेश्वरो मन्न शुद्धे ॥ ए देशी ॥

सुधानंद सिद्ध साधना साध्यरामी, वस्तु धर्म आराधना शुद्ध पामी ॥ अनुन्नव योगी सहज गुण न्नोगी, कलंक कर्म त्यागी थया ते निरागी ॥ १ ॥ कहुं तारा विचार अंतः मांही खोजी, चिदानंद मोजे रमे जेम तेजी ॥ अनादि मिथ्यात्वी अचेतंन जेवो, अमोवास रात्री काळी अंध तेवो ॥ २ ॥ समकित शुद्ध पामे जीहां जास, तीहां

चंद्रोदय बीज कला प्रकाश ॥ मिथ्या मोह तिमीर अणा-भोग नाश, अनंतानु कषाय चौकृय तास ॥ ३ ॥ देश विरति आवे वार व्रत भावे, अप्रत्याख्यानी चोकडी त्यां अभावे ॥ लीए सद्गुरु संगे महा व्रत रंगे, प्रत्याख्यानी चउ त्यां हणे उमंगे ॥ ४ ॥ अप्रमत्त सदा प्रमत्तन कदाइ, श्रेणिगत चेतन त्यां निर्मळाइ ॥ संजलना कषाय भाणने भेदी छेदी, आशादि षट् कंद मूळथी उछेदी ॥ ॥ ५ ॥ वेद विषय अभिलाष अग्नि, समावे छेदे नावे गर्भवास र-जनी ॥ रह्यो लोभाणु उदय ठाम दश्म, हणे वीर्यवंत करे बाळी भस्म ॥६॥ हण्यो मोहराय सत्ताथी छेदाय, त्यां अशुद्ध परिणतीनो क्षय थाय॥ परिणति रागादि अनादिनी टाळी, वीतराग परिणति त्यां अजवाळी ॥ ७ ॥ यथाख्यात चा-रित्र संपन्न सामि, रमे निर्विकल्प ध्यानी अनामी॥ वीत्यो राग वैरागी क्षीण मोह त्यागी, त्यां करे त्रण कर्म चकचूर भागी ॥ ८ ॥ लहे केवळनाण दर्शन अरिहंत, उद्योत करे व्यक्ति धर्म अनंत ॥ आयु जेटलुं तेटलो योगवास, छेदे अंत छेहे करे जोग नाश ॥ ए ॥ योगातित सिद्ध सम श्रेणी सधावे, पोंचे शीव धाम समय एक थावे॥ करे त्यां स्थिति भंग सादि अनंत, समावे ज्योति ज्योत भाषे सिद्धंत ॥ १० ॥ अनुभव करी साधना सिद्धभावी, चेतन सज्ज कीधो स्वरूपे रमावी ॥ आतम नीरखी परखी मूळ रूप, ज्ञान शितळ वंदे सिद्धराय भूप ॥ ११ ॥

॥ चैत्यवंदन ॥ ३ ॥ जुं ॥

॥ देशी उपर प्रमाणे ॥

समकितनुं मूळ ज्ञान आराधी, समकित शुद्ध त्यां ज्ञान समाधि ॥ ज्ञान फळ वीरती फळमुक्ति, विवेके करो साधना शुद्ध युक्ति ॥ १ ॥ अनुभव लावो अंतःमां रमावो, मनस्थिर त्यां उपयोग जमावो ॥ करे ते जूदाइ वस्तु उंळखाइ, पुद्गल जीव भेदी डुफार देखाइ ॥ २ ॥ आतम परखो परमातम सरखो, सत्ता भिन्न चिन मूरति नीरखो ॥ तीहां चेतना वीर्य ते एकठामे ॥ करे ग्रंथि भेद त्यां समकित पामे ॥ ३ ॥ समकित मूळ वीरति जोग लेवो, चिदानंद वासी स्वरूपने सेवो ॥ स्वरूपे ज्ञान उपयोग मिलावो, तीहां गुणठाण अप्रमत्त पावो ॥ ४ ॥ ज्ञान उपयोगथी अळगो चाले, तीहां प्रमत्त गुणठाणुं खाळे ॥ करे तेज मंद ज्ञान गुण केरो, वधे तेज उपयोग भळतां भलेरो ॥ ५ ॥ ए वीरति ठाण साधंन पाया, तजी ग्रंथि अभ्यंत्र निग्रंथराया ॥ करी साधना शुद्ध श्रेणि आरोहे, तिहण उपयोगे चरण स्थिर सोहे ॥ ६ ॥ अनुभवे आतम धर्म अनंतो, करे भेद बेद अभेद लहंतो ॥ निर्विकल्प भाव आतम पाया, शुद्ध परिणतिमां चेतन आया ॥ ७ ॥ एकत्व वीतर्क शुक्ल ध्यान ध्याया, संभाववृत्ति चेतन रमाया ॥ पामे नाण दर्शण केवल ताजा, सकल शिरोमणि अरिहंत राजा ॥ ८ ॥ अनंत धर्म शक्ति काळ अनादि, व्यक्ति ए लहे ते समय दिन आदि ॥ असंख्य प्रदेश निरावर्ण पाया, त्यां निर्वाण

सिद्ध निरंजन राया ॥ ए ॥ सादि अनंत भंग सिद्ध सोहावे, कार्य रूपे तेही पोतेज थावे ॥ मूळ स्वभाव अचळ अविनाशी, परमानंद भोगी थया शीव वाशी ॥ १० ॥ मुक्ति साधन करे आतमज्ञानी, समकित विरती लहे विज्ञानी ॥ वाह्य ज्ञान विरति पेहेले गुणठाणे, साधन सिद्धनुं ज्ञान शितळ जाणे ॥ ११ ॥

॥ चैत्यवंदन ॥ ४ थुं ॥

॥ विमळ केवळ ज्ञान कमळा ॥ ए देशी ॥

सिद्ध खेत्र पंचमी गति मुक्ति, परिवह्म केवळ ज्ञानं॥
क्षायक चरणने वीर्य अनंतु ॥ नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १ ॥
चिन्ह मूर्त्ति अज अविनाशी, निकलंक केवल दर्शनं ॥
शीव परमातम परम योति, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ २ ॥
अव्याबाध अरूपी अमूर्त्ति, अखंड अटळ अवगाहनं ॥
अनाश्रित अनंत गुण मंडित, नमो सीद्ध निरंजनं ॥ ३ ॥
अगुरु लघु निर्मळता व्यक्ति, पूर्ण परम पद परधानं ॥
परमेश्वर निर्वाण पवित्री, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ ४ ॥
गुण पर्याय स्वभाव अनंता, व्यक्ति सौनी भिन भिनं ॥
ते वस्तु गत धर्म अनंतो, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ ५ ॥
अनंत धर्मे अनंतो आनंद, अचळ अतिंद्रिय निधानं ॥
ते परमानंद लहरी भोगी, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ ६ ॥
एक सिद्ध तिहां सिद्ध अनंता, योतिमां योति समासनं ॥
नीज नीज रूपे भिन्नता सौनी, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ ७ ॥
अनादि अनंत ए सिद्ध सेवो, पूजो ध्यावो तरं ध्यानं ॥
ज्ञान शितळ तीहां केवळ पामो, नमो सिद्ध निरंजन ॥ ८ ॥

॥ चैत्यवंदन ॥ ५ मुं ॥

वस्तु स्वभावने जाणवा, अनुभव उपयोग रंग॥ निज पर सत्ता भिन्नता, एही ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ पर संगे उपयोगता, एही अशुद्ध आचार ॥ साधन बाधक फळ दीए, तेथी स्थीर संसार ॥ २ ॥ चेतन जब वळीउं हुवे, वीर्य स्फूरणा पाय ॥ विभाव उपयोग परिणमन, पर परिणति छेदाय ॥ ३ ॥ एहीज इच्छा माहरी, परअनुभव क्षयथाय ॥ शुद्ध परिणतिमां वशी, निर्विकल्प रस पाय ॥ ४ ॥ अनुभव स्थिर सहेज भावमां, सहज संवर प्रकाश ॥ आश्रव रोध शुद्ध निर्जरा, कर्मघन तिमिर विनाश ए ॥५॥ स्वभाव चेतनता, व्यक्ति धर्म अनंत ॥ अति निर्मळ विशुद्धता, एही सिद्ध महंत ॥ ६ ॥ निरंजन निराकारए; अगम अनोपम रूप ॥ अबाधित आनंदमां, ज्ञान शीतळ गुण भूप ॥ ७ ॥

॥ अथ स्तुति अधिकार. ॥

॥ सिद्धचक्रजीनो थोय जोडो १ लो ॥

॥ गौतम बोले ग्रंथ संभारी ॥ ए देशी. ॥

सिद्धचक्र वंदु मनरंगे, नवपद भावना भाव उमंगे; आतम स्वभावना संगे ॥ पहेलो अरिहंत पद अवकाश, गुण घाति चउकर्म विनाश, अनंत चतुष्टयी वास ॥ ए पद सयोग अयोगमां धारुं, योगातित सिद्धपदमां विचारुं; सकल शिरोमणि प्यारुं ॥ आचार्य उवज्झायने साधु, प्रमत्त अप्रमत्त गुणमां लाध्युं, शीवपद साधन बाध्युं ॥ १ ॥ द-

दंसणनाण चरण तप तपिया, क्षायक समकित सुधुं जपीया; वेदक अवसर खपीया ॥ तीहां चेतन समभावनो रंगी, आतम गुण श्रेणी दृढ जंगी, निर्विकल्प एकंगी ॥ रागद्वेष मोह सव भागे, अशुद्ध परिणति अळगी लागे; क्षायक चरण तीहां जागे ॥ वीतराग क्षीण मोह दुवादशम, त्यां त्रण कर्म बाळी करे भस्म; सविसंत परमानंद रश्म ॥ २ ॥ ज्ञान बोध अनुभव विण नांही, अनुभव विण पर ठोरे नांहीं, पर ठोरे समकित त्यांही ॥ धर्म अनंतनुं वीज ए प्यारुं, सुख दुःख सरखुं लागे खारु; भेद ज्ञान वीण अंधारुं ॥ अनुभव शुद्ध घट अंतर जागे, वंध सत्ता कर्म चेतन त्यागे,त्यां रागद्वेष मोह भागे॥केवळनाण दर्शण तीहां पामे, अनंतु लोकालोक सव सामे; ते ज्ञान धर्म हित कामे ॥३॥ वीजा पदमां ते सिद्ध कहीए, वाकी आठ सिद्ध साधन ग्रहीए; अरिहंत संभीरुढे लहीए ॥ आचार्य ते पंचाचारी, उपाध्याय पढे श्रुत भारी; साधु विरति वलिहारी ॥ दर्शण सामान्यने ज्ञान विशेष, उपयोग स्थिर त्यां चरण लहेश; तप निर्जरा प्रवेश ॥ इम नवपद सिद्धचक्रने पूजे, सूरनर इंद्र तीहां दिल रीझे; ज्ञान शीतळने सीझे ॥ ४ ॥

थोय जोडो ॥ २ ॥ जो ॥

॥ वीरजीणेसर वंदिए ए प्रगटयो वीरगुण जासतो ॥ ए देशी ॥

शुद्धानंद निज वंदिये ए, परम देव प्रधानतो ॥ मोक्ष कारण एह छे ए, उपादान रुपी रीततो ॥ निमित्त कारण

देवगुरु कह्या ए, जीन वचने दृढ चित्ततो ॥ शक्ति भाव प्रणमन करीए, व्यक्ति सनातक सिद्धतो ॥ १ ॥ वस्तु स्वभाव सिद्ध साधनाए, रमण स्थिर गुण पर्यायतो ॥ निर्विकल्प रस पीजीये ए, ज्ञान अभेदता पायतो ॥ भाव संवर शुद्ध निर्जराए, कर्म अनंत क्षय थायतो ॥ निर्मळ निरंजन बुद्ध थइए, सर्व संत सिद्धरायतो ॥ २ ॥ केवळ-नाण दर्शण लहीए, धर्म दान दातारतो ॥ हित उपदेश भव्य जीवने ए, करता वारंवारतो ॥ बोधि बीज विरती लहे ए, नरनारीना वृंदतो॥ गणधर सूत्र दुवादश रचे ए, ते ज्ञान भाण पवित्रतो ॥ ३ ॥ सर्व देवनो देव छे ए, निजा-तमे शुद्ध सिद्धतो ॥ सूत्रग्रंथनी साख्यथीए, गुरु वचने परतिजतो ॥ ज्ञान शीतळ जुए तेहने ए, आगम अनोपम रूपतो ॥ सेवे पूजे समकितिए, देव देवांगना भूपतो ॥४॥

थोय जोडो ॥ ३ जो ॥

॥ प्रह उठी वंदु ऋषभदेव गुणवंत ॥ ए देशी ॥

सिद्ध बुद्धने वंदुं, नीज रूप निहाळी ॥ उपयोगे भावुं, बोधि बीज तीहां भाळी ॥ शुद्ध श्रधा साची, चिद घन भोग संयोग ॥ उपाधि हणतां, परमातम निरोग ॥१॥ रोग शोग दुःख कापे, महा मोह मल भागे ॥ ज्ञान सुभट बळीउ, ध्यान अग्नि तीहां जागे ॥ कर्म काष्टने बाळे, तीहां शितळता वाधे ॥ परमानंद भोगी, सर्व सिद्धता साधे ॥ २ ॥ अरूपी अवीनाशी, अव्याबाध अ-नंत ॥ निरमळ निरंजन ॥ अखंडित महंत ॥ अचल

अनोपम, निराकार शीवसंत ॥ इत्यादि अनंतुं, अनुन्नव ज्ञान लहंत ॥ ३ ॥ योग रोध अयोगी, सैलेशि करण अकंप ॥ आयुष्य अंत ठेदे ; देव देवीना संप ॥ उच्छवनुं कारण, निर्वाण मंगलिक गावे ॥ ज्ञान शीतळ हरखे, ज्योतिमां ज्योति समावे ॥ ४ ॥

॥ थोय जोडो ॥ ४ ॥ थो. ॥

॥ संखेश्वर पासजी पूजीए ॥ ए देशी ॥

वीतराग अरिहंत पूजीए, केवळ नाण दर्शन लीजीए ॥ कर्म कलंक सव परहरी, निकलंक कन्या सिद्ध वधु वरी ॥ १ ॥ न्नेदज्ञानी अनुन्नवी आतमा, निजपर सत्तान्नीन्न महातमा ॥ क्षपक श्रेणी आरोह ध्यानातमा, सवि जैन थया सिद्धातमा ॥ २ ॥ षट्द्रव्य वस्तुने ओळखी, गुण पर्याय स्वन्नाव लक्षण लखी ॥ परपांच अजीव अकारणी, आतम ज्ञानी धर्म धारणी ॥ ३ ॥ एही देव परमातम कीजीए, सेवे सुरनर इंद्र मन रीजीयें ॥ तीहां ज्ञान शितळ जश लीजीए, परमानंद मय रस पीजीए ॥ ४ ॥ इति स्तुति अधिकार संपूर्ण.

॥ अथ स्तवन अधिकार. ॥

स्तवन ॥ १ ॥ लुं ॥ समकितनुं ॥

॥ तुम तजकर राजुल नारतज्या सव घर रे ए देशी ॥

धन्य धन्य दिवसने धन्य घमी ठे आजे ॥ समकित गुण पायो सिद्ध हुओ निज काजे ॥ मिथ्यात्वने हणीओ

भणीओ ज्ञान समाजे ॥ जड चेतन लक्षण भिन्न भिन्नता ठाजे ॥ धन्य धन्य दिवसने ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ चेतन उपयोगे निज स्वभावमां देखे ॥ तब उदिक भावनो भोग रमण उवेखे ॥ इहां मुक्तिपुरनो पंथ वहे सिद्ध लेखे ॥ अविनाशी चेतनराम निरंजन पेखे ॥ धन्य० ॥ २ ॥ निज द्रव्य गुण पर्याय स्वभाव शुद्ध थावे ॥ तीहां मोहमल्ल ओर रागद्वेष दुर जावे ॥ घटअंतर भेद ज्ञान जग्यो शुद्ध भावे ॥ पुनरपि कर्मनो बंध इहां नहीं पावे ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ अनुभव विवेक भयो अध्यातम भावे ॥ चेतन गुण समकित शुद्ध आविरभाव पावे ॥ धन्य धन्य ते समये काळ प्रमोदित गावे ॥ पटराणी समता संग चेतन साथ थावे ॥ ॥ ४ ॥ इम निश्चय समकित परम निधान चित भाव्यो ॥ पामवो छे एहीज सार उमेद मन आव्यो ॥ जे पाम्या छे निरधार भर्मने गमाव्यो ॥ कहे ज्ञान शितळ शुद्ध चेतन तद्रुप पाव्यो ॥ धन्य० ॥ ५ ॥

॥ स्तवन २ जुं ज्ञाननुं ॥

॥ शत्रुंजय दीठो रे ॥ ए देशी ॥

ज्ञानने आत्म स्वरूप जे जाणे, ते निश्चय नय ज्ञानी रे ॥ ए विण सर्व पदारथ जाणे, ते व्यवहार नय ज्ञानी रे ॥ ज्ञान पद सेवो रे ॥ ज्ञान चेतन सद्भाव, आनंद पद लेवो रे ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ ए बे पक्षनो पटंतर जाणो, वीवरीने इहां दाखुं रे ॥ विवेक ग्रही श्रोता जन सुणजो, अनुभव रस शुद्ध चाखुं रे ॥ ज्ञान० ॥ २ ॥ ठाणांग

सूत्रे पेहेले ठाणे, वीर प्रभुनुं वचनरे ॥ एक जाण्यो तेणे सर्वे जाण्युं, निश्चे शुद्धातम धन्यरे ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ आत्म स्वरूप अजाण अनाणी, मिथ्यात्व अणाभोग उदे वर्त्ते रे ॥ बाकी सर्व जाण थइ बेठो, ते नहीं ज्ञानी महंतरे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ए सूत्रे इत्यादिक जो जो, परखी ज्ञानी ग्रहजोरे ॥ अज्ञानी संगत छोरुीने, चेतनराय संग भणजोरे ॥ ज्ञान० ॥५॥ व्यवहार नय नाणी दुभेदे, तेह स्वरूपने भावुं रे ॥ रमण उदयिक जरु दृष्टियें जोतो, तजवो ते चित्त लावुं रे ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ नय व्यवहार बीजो भेद जाणी, वस्तु स्वभावमां देखेरे ॥ उदयिक भावदृष्टि नहीं करता, त्यां साधन शुद्ध लेखे रे ॥ ज्ञान० ॥ ७ ॥ निज उपयोगे परिक्षा कीजे, ज्ञानी संग करीजेरे ॥ अंतरदृष्टि अनुभवी नाणी, तेहनुं वचन सुणीजेरं ॥ ज्ञान० ॥ ८ ॥ ए नाणी संग क्षण नहीं तजवो, परमपूज्य चित्त भणवो रे ॥ आतम ऋद्धि अनंती देखारु, तीहां परमानंद वरवो रे ॥ज्ञान० ॥ ए ॥ परमानंद पद आत्म अभेदी, सहजानंद स्वभावेरे ॥ तीहां मुक्ति छे चेतन तारी, कर्म रहित सद्भावे रे ॥ ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ ए साधन उपयोग नाणमां, रमतां लब्धि जागेरे ॥ ते कारण ज्ञान पूजी वंदी, ज्ञान शीतळ नाण मागे रे ॥ ज्ञान० ॥ ११ ॥

॥ स्तवन ॥ २ जुं ॥ शत्रुंजयनुं ॥

सांभळजो मुनि संयम रागे ॥ ए देशी

जागोने मारा अंतर जामी, शत्रुंजय गीरि चढिये रे ॥

मनुष्य जन्म नव सफळो कीजे, आदि जिणंद पाये पमीये रे॥जागोने मारा अंतर जामी० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ ॥ १ ॥ जागोने चेतन जरू वेंहेचीने, निज स्वरूप निहाळो रे ॥ रत्न त्रयी चेतन गुण प्रगटे, समकित मूळ संजाळो रे ॥ जा० ॥ २ ॥ जात्रा सफळ समकित गुण आदे, संवर निर्जरा वाधे रे ॥ श्रद्धा नासन रमण उपयोगे, परमानंद पद साधे रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ सफळ जन्म शंत्रुजय नेटये, निमित्त उपादान हेतु नेदे रे ॥त्यां विषय कषाय नव वीजक तजीए, नजीए श्री आदि जिणंद रे ॥ जागो ॥४॥ आदि जीणेसर मेरुदेवानंदन, नान्नीराया कुळचंद रे ॥ पूर्व नवाणुं वार शत्रुंजय गीरि, समोसरीया जीनंद्र रे ॥जागो० ॥ ५ ॥ तीर्थपति गीरिराय सेवीने, सिद्धा साधु अनंत रे ॥ ज्ञान शीतळ कहे तीरथ सेवो, गुण निष्पन्न महंत रे ॥ ॥ जा० ॥ ६ ॥

॥ स्तवना ॥ ४ थुं ॥ श्री गीरनारजीनु ॥

॥ देशी ॥ उपर प्रमाणे

वाळ बह्मचारी जिनंद पदधारी, सेवे सुरनर वरइंदारे ॥ गीरनार गीरि नेमि नाथजी विराजे, नेटतां टळे नव फंदारे ॥ बाळ बह्मचारी० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ वाळ ब्रह्मचारी विषय निवारी, निःस्नेही गुण रायारे ॥ सचित्त पुद्गल नोग कर्म क्षीण जाणी, लेवा संयम सहेसावन आयारे ॥ बाळ० ॥ २ ॥ जिणंद पदधारी राग द्वेष निवारी, घाति कर्म क्षयकारीरे ॥ सहसावन केवळनाण

प्रगटावी, कल्याण मंगळ जयकारी रे ॥ वाळ० ॥ ३ ॥ इंद्रादिक सुर असंख्य कोडी आवे, सम वसरण विरचावरे॥ पर्षदाबार मळे तीहां वेगे, देशना जीनजी सुणावे रे ॥ वाळ० ॥ ४ ॥ तहां गणधर पद स्थापे जिनजी, रचे द्वादशांगी सिद्धांतरे ॥ केइक बोधि बीज लाभ पामे, व्रत लीये शांत दांत रे ॥ वाळ० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविका साधु साधवी, संघ चतुर्विध साचो रे ॥ आज्ञा नेमि जिणंदकी धारी, लहे परम पद जाचो रे ॥ वाळ० ॥ ६ ॥ इम तीर्थ स्थापे ते जीनजी, समुद्र विजय कुळचंद रे ॥ संसार सागर पार उतारे, नरनारीना वृंदरे ॥ वाळ० ॥ ७ ॥ गीरनार गीरि नेमि नाथजी विराजे, यात्रा करो नरनारी रे ॥ सुकृत ए सम अवर न दुजो, मिथ्यात्व मोहनीवारी रे ॥ वाळ० ॥ ॥८॥ भेटतां टळे भवफंदा ए साचो, आतमज्ञाने राचो रे॥ शुकल शुकल पर्याय ग्रहीने, शुद्ध परिणतिमां नाचो रे ॥वा०॥ ॥९॥ अयोगी ठाण अंत ग्रहीने, योगातित पद लीधो रे ॥ समश्रेणी ठे पांचमी टुंके, आत्म प्रदेश घन कीधो रे ॥वाळ० ॥ १० ॥ गीरनार गीरिपर नेमि जीणंदकी, कल्याणक त्रण भूमि ठाइरे ॥ ज्ञान शीतळ गुणरागे फरसी, अंतर आतम पाइरे ॥ वाळ० ॥ ११ ॥

॥ स्तवन ५ मुं तारंगाजीनुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ देशी कडखानी ॥

पंथ जीनराजनो अजित महाराजनो, अंतर दृष्टिए दूर दीठो ॥ तेह अनुभव करी, दाखुं नीज हित जाणी,

द्राक्ष साकर थकी अतिय मीठो ॥ पंथ जीनराजनो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ पंथ नीज द्रव्यनी वृत्तियें अनुभवे, द्रव्यपर अनुभव दूर करवो ॥ रमणता चेतन गुण पर्यायमां, साध्य साधन पणो तीहां वरवो ॥ पंथ० ॥ २ ॥ संवर निर्जरा तेहने कीजीए लीजीए रत्नमयी सार मेवो ॥ निर्विकल्प एकत्व अभेदमां, गुण पर्याय स्वभाव लेवो ॥ पंथ० ॥ ३ ॥ शुद्ध परिणतीए चेतना परिणमी, इंद्रि योगादि उपयोग खूटयो ॥ शत्रु मोहादि परिवार संयोगता, आत्म प्रदेश रहेवास त्रूटयो ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ मंगळ कल्याण आनंद पद संग्रही, सादि अनंत भंग सिद्धि ठामी ॥ गुण पर्याय स्वभाव अनंतमां, आनंद लहरी विलसंत पामी ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ परम पद पामवा पंथ ए अनुभव्यो, स्थिर श्रद्धाए निरधार कीधो ॥ तारंग तीर्थे अजित जिन भेटतां, रुदीयें अंतः अमृत पीधो ॥ पंथ० ॥ ६ ॥ कारणे कार्य निष्पत्ति कही साधना, उपयोग भाव सहाय वरतां ॥ ज्ञान शीतळ समकीतादि गुण संपजे, चित्त रमे रहस्य प्रमोद करतां ॥ पंथ० ॥ ७ ॥

॥ स्तवन ॥ ६ ठुं ॥

॥ भोयणी श्री मल्लिनाथजिनुं ॥

मल्लिनाथ शीव साथ सार्थवाह कहीएरे ॥ संघ चलावे सिद्ध तीर्थ पति सहीये रे ॥ संघ चतुर्विध समकिती भवि लहीये रे ॥ अंतर उपयोगवंत चेतन गुण

ग्रहीये रे ॥ मल्लि० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ चोथाथी चउद-मा लगे संघ कहीये रे ॥ श्रावक श्राविका सार पंचम गण वहीएरे ॥ प्रमत्त अप्रमत साधु साधवी त्यागी लही-ये रे ॥ पूरण आज्ञावंत व्यवहार मुख्य रहीये रे ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ उपरांत शुद्ध व्यवहार छे ज्ञानी ध्यानी रे ॥ मुख्यता निश्चय साथ दशम अंत ठाणी रे ॥ त्यांथी यथा-ख्यात संयमी मोह हानी रे ॥ साधन आत्म अभेद अनंत गुण ज्ञानी रे ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ संघ चउभेद समुदायनो प्रवाहेरे ॥ प्रयाणको मल्लिनाथ समाधि स्वभावे रे ॥ मार्गे शत्रु मेहेवासी तीहां आवे रे ॥ सैन्य तणो नही पार अतुल वळ दावे रे ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥ अनादि मिथ्यात अनंतानुवंधि भट वळीआरे ॥ देखी जिनपति साथ भाग्या थइ गळीयारे ॥ शत्रु सैन्य झांखुं थयुं जरा भरीया रे ॥ शुक्ल ध्यान ज्ञान आंचे मोह राय जळीआ रे ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ दृष्टांत एक आपुं भलुं उपयोगे रे ॥ काष्टे उधेइ वळगे जिम संयोगे रे ॥ काष्ट सत्ता प्रगटे जदा तव भागे रे ॥ अग्नि जोर तीहां वाधे उधेइ नही लागे रे ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ उपनय करशुं तेहनो चित्त देइरे ॥ अज्ञान योगे कर्म ग्रहे गुण खोइरे ॥ जीवाजीव सत्ता भिन्न जाणतां जूदाइरे, क्षायक लब्धि प्रगटयां कर्म जळा-इरे ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ चरण यथाख्यात पाम्या अंत ठाण दशमे रे, त्रण कर्मनो घात क्षीण मोह दुवा दशमे रे ॥ शुद्ध परिणति रीझे चेतनराय वशमे रे ॥ अनंत चतुष्टी

ज्योत परमानंद रइमे रे ॥ म० ॥ ८ ॥ सैलेशि करण स्थिर थंज्ञ पुद्गल योग रुंधी रे ॥ योगातीत स्वज्ञाव लहे तंब शुद्धि रे ॥ ज्ञाग एक पोलाण घटे घन ज्ञाग द्वी रे ॥ एक समय समश्रेणी लोकाग्रे सिद्धिरे ॥ मल्लि० ॥ ए ॥ गुणपर्याय स्वज्ञाव अनंत रमंत रे ॥ निज निज व्यक्ति ज्ञिन्न परमानंदवंतरे ॥ आनंद लहरी विलसंत ज्ञंग सादि- नंत रे ॥ निमित्त कारण मल्लिनाथ ज्ञंग सादि संत रे ॥ मल्लि० ॥ १० ॥ सार्थवाह सिद्ध साथ ज्ञाख्यो सिद्धांते रे ॥ गायो निज गुण हेते सुणो सवि संतरे ॥ तरण तारण जिन जहाज निमित्त बळवंतरे ॥ उपादान संयोगे सेवो गुणवंतरे ॥ मल्लि० ॥ ११ ॥ प्रज्ञावतीनो नंद सेवे सुर वृंदरे॥ कुंज्ञ नरपति कुळ चंद पूजे पाय नरिंदरे॥ जन्म महोच्छव सुर इंद्र करे मेरु गीरींदरे ॥ उलट अंग न माय प्रसन्न चित्त चंदरे म० १२ सहस पंचावन आयुवरण नील कायरे॥ पंचवीस धनुष्य प्रमाण, लंछन कळश पायरे ॥ मिथिला नयरीए जन्मीया जीनरायरे ॥ समेतशीखर निर्वाण कर्मथी मुकायरे ॥ मल्लि० ॥ १३ ॥ ओगणीसमो जिनेंद्र चउव्रत धारी रे ॥ छद्मस्थ काळ दीन एक घातिकर्म छारी रे ॥ केवळनाण दर्शण पामीने उपगारी रे ॥ बोधि बीज दातारी शीव सुखकारी रे ॥ मल्लि० ॥ १४ ॥ सार्थवाह सिद्ध साथ यथारथ कीधो रे ॥ आतमरूप नीहाळी अनुज्ञव पीधो रे ॥ ज्ञोयणी नगरमां वीराजे दर्शन लाज्ञ लीधो रे ॥ ज्ञान शीतळ ए साथ मळ्यां काज सिद्धो रे ॥ मल्लि० ॥ १५ ॥

॥ स्तवन ७ मुं श्री ऋषभदेव स्वामीनुं ॥

॥ प्रणमुं पद अढारमुंरे लाल ॥ ए देशी ॥

आदि जिणेश्वर पूजीयेर लाल, स्नान करी पेहेरीये चीररे ॥ केशरीया लाल ॥ जीन मुद्राने निहाळीएरे लाल, अंगे मोर पीछी कीधरे ॥ केशरीया लाल ॥ आदि जिणेश्वर पूजीयेरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ त्रिकरणयोगे स्थिरता करी रे लाल ॥ करीये न अन्य वीचाररे ॥ के० ॥ उपयोग स्वरूपें जोडीयेरे लाल ॥ रमण घटंतर धाररे ॥ के० ॥ आ० ॥ २ ॥ पंचामृतें पखाळीयेंरे लाल ॥ करीये जळ अभिषेकरे ॥ के० ॥ वाळाकुंची रुडी कीजीयेरे लाल जळधारा झाझीनो विवेकरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ३ ॥ अंग लोहणां त्रण कीजीये रे लाल॥ वरास लेप अंगे थायरे॥ के० अत्तर केवडो गुलावशुंरे लाल ॥ पूजीये त्रीभुवनरायरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ४ ॥ धूपदशांग उखेवीये रे लाल ॥ केशर झाझुं घोळी भेळरे ॥ के० ॥ मृगमद कस्तुरी तेहमां रे लाल ॥ अरचो नव अंगे रंगरेलरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुष्प चंपोने वळी मोगरो रे लाल ॥ जाइ जुइने गुलावरे ॥ के० ॥ हार उत्तम ताजा पुष्पना रे लाल ॥ ठवो प्रभु कंठे भरी भावरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ६ ॥ दोय शिखानो कीजे दीवडोरे लाल ॥ पूरीये मांही ताजुं घृतरे ॥ के० ॥ अखंड दीवो प्रभु आगळे रे लाल ॥ राखीये सदा भक्तिवंतरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ७ ॥ अक्षत अणी शुद्ध उजळारे लाल॥ साथीयो कीजे नंदावर्त्त रे ॥ के० ॥ उपर श्रीफळो मूकीने रे लाल ॥

मोक्ष फळ मागो महंतरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ७ नैवेद्य सुखडी बहु जातनी रे लाल ॥ थाळ भरी मुको सनमुखरे ॥के० अणहारी पद जाचीयेरे लाल ॥ लहीये अव्याबाध सुखरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ए ॥ इत्यादि द्रव्यपूजा करीरे लाल ॥ करो नाटक गीत ज्ञानरे ॥ के० ॥ ज्ञान शीतळ भक्ति गुणे रे लाल ॥ लहीये स्वर्ग एक तानरे ॥ के० ॥ आ० ॥१०॥

॥ स्तवन ८ मुं श्री शांतिनाथनुं ॥

मनमोहनजी जगतात वात सुणो जिनराजजी रे ए देशी

अचिरासुत शांति जिणंद, शांति स्वरूपने दाखवे रे ॥ चालो सुणीये वचन रसाळ, मनुष्य जन्म सफळो हुवे रे ॥ अचिरासुत शांति जिणंद ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शांति द्रव्यभाव दुभेद, परथम द्रव्य वखाणतारे ॥ त्याग आश्रव अग्नि विचार, हिंसादि पंच नीवारतारे ॥ अचिरा० ॥ २ ॥ हवे भाव शांति जब पाय, रागद्वेष मोह जडता टळे रे ॥ तीहां लाधे चरण यथाख्यात, वीतराग गणे चेतन चळे रे ॥ अचि० ॥ ३ ॥ एम शांति रूप अनुप, जीन वयणे करी जाणिये रे ॥ ते आपे सिद्ध पद सार, त्यां सुख अनंतु मन आणीये रे ॥ अचि० ॥ ४ ॥ करो भविजन वचन प्रतित, शुद्ध यथारथ एम सद्दहोरे ॥ तेथी पामशो अविचळ ऋद्ध, शांतिपणुं ज्ञान शीतळ ग्रहोरे अचि० ॥ ५ ॥

॥ स्तवन ॥ ९ मुं ॥

॥ श्री कुंथुंनाथजीनुं ॥

॥ ए देशी ॥

कुंथुंनाथ दुःख कापो दयालु धणी, अनंत चतुष्टयी आपो दयालु धणी॥ अव्याबाध सुख आवे ॥द०॥ कर्म आठ क्षय आवे ॥ द० ॥ कुंथुनाथ दुःख कापो ॥द०॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ तरण तारण तुमे साचा ॥द०॥ जाऊसमान सत्य वाचा ॥द०॥ संसार सागर तारो ॥ द० ॥ जन्म मरण भय वारो ॥द०॥ कुंथु० ॥२॥ अजर अमर सिद्धभावे ॥द०॥ निरंजन पदपावे ॥ द० ॥ परमानंद पद सोइ ॥ द० ॥ सादि अनंत भंग होइ ॥ द० ॥ कुंथु० ॥ ३ ॥ एह मनोरथ मारो ॥ द० ॥ निमित्त कारण छे तमारो ॥ द० ॥ कारणे कारज थावे ॥ द० ॥ एम सिद्धांती गावे ॥ द० ॥ कुंथु० ॥ ४ ॥ एम श्रद्धा शुद्ध कीधी ॥ द० ॥ ज्ञान समकित ऋद्धि लीधी ॥ द० ॥ ज्ञान शीतळ नीज भावे ॥ द० ॥ शीव सुख कारज पावे ॥ द० ॥ कुंथु० ॥ ५ ॥

स्तवन ॥ १० ॥ मुं ॥

॥ श्री मल्लिनाथजीनुं ॥

॥ ढाळ ॥ १ ॥ ली

॥ काज सिध्यां सकळ हवे सार ॥ ए देशी ॥

मल्लिनाथजी शिवपंथे चाले, तीहां मोहादि आवीने खाळे ॥ वेहु वळीआ सैन्य सज कीधुं, हथियार हाथमां लीधुं ॥ १ ॥ सामा सामी रोपे रणस्थंभ, लश्कवाने कीधो

आरंभ ॥ सौ सजनुं वीर्य दाखे, तेमां कचाश कोइ न राखे ॥ २ ॥ अन्यो अन्य शत्रु भाव, सज सजना मनने राव ॥ बेहु बाजु सुभट अति बळिया, सामासामी नजीके मळीया ॥ ३ ॥ तीहां मल्लि तीर्थपति बोल्या, शुं करबा मरो भागो ठल्या ॥ तीहां मोहराय खेदे भराणो॥ बोल्यो बेशी रहे तुं छानोमानो ॥ ४ ॥ जो में तने नाच नचाव्यो, जफरूप करीने भमाव्यो ॥ मुज आणामां अनंत काळ वसीयो, त्यांथी तुं आज दीसे छे खसीउ ॥ ५ ॥ पूरवना दिवस तुं भूल्यो, तने कबजे करुंछुं शुं फुल्यो ॥ तुज ऋधि पलकमां पमावुं, हेठमांही हुं तने ठलावुं ॥ ६ ॥ तुज जेवा में कंगाल कीधा, पकडी निगोदने दीधा ॥ लोकाधिपति मुजनाम, त्रण लोक अमारुं गाम ॥ ७ ॥ मुज आज्ञा कोइ न लोपे, लोपे तो चढावुं हुं तोपे ॥ इत्यादि घणा बोल बोल्या, मल्लि वळतुं कहे सुण ठल्या ॥ ८ ॥ तें कह्युं ते सरवे साचुं, तुं रुठयो मुके नही काचुं ॥ तुं निर्दय हृदये कठोर, अभिमानी तुंही छे निठोर ॥ ए ॥ भव स्थिति जेनी न पाकी, तेने दुःख दीये तुं एकाकी ॥ माहारे तो स्थीति हवे पाकी, नही चाले तारुं तुं नापाकी ॥ १० ॥ कोइ कोइनुं कह्युं नही माने, वळी वचन सुणे नही काने ॥ सुभटो जाजा जुजे, पराक्रम जोइ पर्वत ध्रुजे ॥ ११ ॥ रणभूमिये संग्राम थावे, सामासामी शस्त्रो वरसावे ॥ सावचेत आळसु नही कोइ, खान पान दीये पक्ष दोइ ॥ १२ ॥ ए लकाइ अंतरमां थावे, वीरुदावलि वेहु

जण गावे ॥ हवे आगळ जे कांइ थावे, ज्ञान शीतळ कहेशे ते नावे ॥ १३ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ देशी कमखानी ॥

मल्लिनाथ जिनेंद्र देव उगणीसमा, अतुळी वळ कुझे जेम ऊमे फुदो ॥ ज्ञान गुण निर्मलो, स्वरूपे प्रकाशीयो, नासियो जीव पुद्गल जूदो ॥ मल्लिनाथ जिनेंद्र० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शुद्ध श्रद्धा करी, विकलता परहरी, प्रगट समकित जीम गयणे चंदो ॥ नागीयो लागीयो, खम्ग चउधारनो, मिथ्यात्व वंश कीधो निकंदो ॥ म० ॥ ॥ २ ॥ उपशम सुन्नट तव समकित जोमीउं, मोहनो स्थंन्न रण पामे हेठो ॥ कषाय चउ चोकमी सोळ दवावीया, तीहां हुवो आतमा शीतळ जेठो ॥ म० ॥ ३ ॥ शियळ सुन्नट तिहां खेलतो मेलतो, कंदर्प्प चोरने वाण तीखो ॥ ते मुवो त्यां पमयो नूमिपर रमवमे, नविजनो साधना एम शीखो ॥ म० ॥ ४ ॥ वैराग सुन्नट तीहां फुझतो वुझतो, शत्रु सनमुख आगळ आवे ॥ ज्ञान कटार मारे वहु वळ करी, आशादि षट तीहां अंत थावे ॥ म० ॥ ॥ ५ ॥ नाव श्रुत ज्ञान सुन्नट वळ गाजतो ॥ दीपे दीनकर जेम पूर्व दीशि ॥ ए हणे ते कहुं नीड्रादिक सुन्नटने ॥ नाखे एम जगगुरु ए वचन वीशी ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ क्षय उपशम जिहां प्रगट चेतन तीहां, विस्तारे चेतना रुप दाखे ॥ वीर्य तीहां आवीयो, वळ करी मारीयो, चपळ

मनने तीहां रहीने पाखे ॥ म० ॥ ७ ॥ इंद्रि निग्रह सुभट चित्त चोखुं करी, स्थीर उपयोगे तीहां झूझे बुझे ॥ तप तीहां आवियो हाथ देखावीयो, असंयम भूमि पड्यो थरथर धुजे ॥ म० ॥ ८ ॥ धर्म शुकल ध्याइए, तुरंग गति पाइए, ध्यान ए सुभटोमां ज्ञान मोटो ॥ ते हणे आरत रौद्र दोय सुभटने, वचन ए सत्य छे नहीं ए खोटो ॥ म० ॥ ए ॥ भाव संवर सुभट आतम ज्ञानमां, झुझे बुझे अति वीर्य दाखे ॥ ते हणे आश्रव शुभ अशुभने, निरमळ चेतनारूप चाखे ॥ म० ॥ १० ॥ निर्जराभाव सुभट बळ गाजतो, राजतो ज्ञानमां शुद्ध भावे ॥ पूर्व बंध कापतो अजीवने आपतो, मुक्ति पंथ चालतो मंगल गावे ॥ म० ॥ ११ ॥ अनुभव ज्ञान सुभट निज रूपमां, झुझे बुझे निरभय छे मनमां ॥ वीर्य अधिको धरे जडरूप तीहां मरे, निर्मळता करे मूळ रूपमां ॥ म० ॥ १२ ॥ सुभटो इत्यादि अधिक बळे झूझता, सिंह नाद करता ए धोडे ॥ मोह तीहां भागीउ पुंठ देखावीयो, ज्ञान शीतळ फरी युद्ध मांडे ॥ म० ॥ १३ ॥

ढाळ ॥ ३ ॥ जी ॥

करजोडी कहे कामनी ललना ॥ ए देशी. ॥

मल्लिनाथने मोह आवियो, ललना, लालाहो रणभूमिये झुझवा काज ॥ ए युद्ध सांभरे ललना ॥ द्वेष गजेंद्र उपरे ललना, लालाहो बेठो छे मोह राज्य ॥ ए० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ राग केशरी पुत्र साथे लइ ललना, लालाहो

पोते चढी आव्यो त्यांही ॥ ए० ॥ तेना सामा मल्लि जिनपति ललना, लालाहो आवे हरख उछांहि ॥ ए० ॥ २ ॥ श्रद्धा अष्टापद वेसीया ललना, लालाहो साथे अप्रमत्त ज्ञान पुत्र ॥ ए० ॥ नारंग पद्दी सो सचेत छे ललना, लालाहो सुंपे तेने घरसूत्र ॥ ए० ॥ ३ ॥ मल्या सामासामी एकठा ललना, लालाहो तीहां मार्यो मल्लीये मोहराय ॥ए०॥ महा जोरावर जे हुतो ललना, लालाहो ते एक लीलाये हणाय ॥ ए० ॥ ४ ॥ रागद्वेष मुआ ते समे ललना, लालाहो अशुद्ध परिणति त्यां छेदाय ॥ ए० ॥ चरण यथाख्यात पामीया ललना, लालाहो पूरण शुद्ध परिणति थाय ॥ ए० ॥ ५ ॥ वीतराग गुणठाणे वारमे ललना, लालाहो आव्या मल्लि जिणंद ॥ ए० ॥ तीहां शत्रु त्रण सामा आवता ललना, लालाहो तेने मार्या तीहां प्रगटयो आणंद ॥ ए० ॥ ६ ॥ अनंत चतुष्टी प्रगट थइ ललना, लालाहो गुणठाणुं त्यां तेरमुं सार ॥ ए० ॥ देवो समवसरण रचे ललना, लालाहो पर्षदा मीले तीहां वार ॥ ए० ॥ ७ ॥ पाद पीठे मल्लीजी विराजता ललना, लालाहो चउ मुखे देशना दीये सार ॥ ए० ॥ उपजे वीणसे स्थीर रहे ललना, लालाहो सुणी करवो वस्तु विचार ॥ ए० ॥ ८ ॥ ए त्रिचार चिंतक जे थया ललना, लालाहो ते पाम्या वोधने वीज ॥ ए० ॥ ज्ञान वैरागी ते जाणीये ललना, लालाहो व्रत उचरे लावी रीझ ॥ ए० ॥ ९ ॥ केइक ग्रहे व्रत देशथी ललना, लालाहो केइक सर्व विरती थाय ॥ ए० ॥ सर्व विरती ते साधु सा-

धवी ललना, लालाहो देशविरति श्रावक श्राविकाय ॥ ए० ॥ १० ॥ एम संघ चउविध स्थापे मल्लिजी ललना, लालाहो प्रथम स्थापे गणधरराय ॥ ए० ॥ द्वादशांगी सूत्र गणधर रचे ललना, लालाहो लब्धिये पूर्ण पद थाय ॥ ए० ॥ ११ ॥ तीहां तीर्थ स्थापन थयुं ललना, लालाहो ए तीर्थपति मल्लिनाथ ॥ ए० ॥ जिननाम कर्म उदय थयो ललना, लालाहो तेने खेरवे ए जगन्ननो नाथ ॥ ए० ॥ १२ ॥ अंते करण सैलेशी करे ललना, लालाहो तीहां थाय योगनो रोध ॥ ए० ॥ आव्या अयोगी ठाण चउदमे ललना, लालाहो तीहां टाल्यो अघातिनो विरोध ॥ ए० ॥ १३ ॥ शत्रु समुदायनो क्षय थयो ललना, लालाहो त्यां त्यागी उदारिकादी हेरु ॥ ए० ॥ परवत सम ढंकण हतुं ललना, लालाहो ते त्रुटी आज कार्मण तेरु ॥ ए० ॥ १४ ॥ ओरुयुं शरीर तेना मानथी ललना, लालाहो घटे एक त्राग अवगाह ॥ ए० ॥ निवरु घन दोय त्रागे रच्यो ललना, लालाहो ते कहीए अटळ अवगाह ॥ ए० ॥ १५ ॥ एक समय सम श्रेणीये ललना, लालाहो पोत्या सिद्ध लोकंत ॥ ए० ॥ सादि अनंत स्थिति तीहां ललना, लालाहो सिद्ध वधुनो प्यारो ए कंत ॥ ए० ॥ १६ ॥ एम युद्ध अंतररूपे जूझशुं ललना, लालाहो तीहां करशुं शत्रु विनाश ॥ ए० ॥ ए शक्ति मल्लिजी मने आपजो ललना, लालाहो पूरजो ज्ञान शीतळनी आश ॥ ए० ॥ १७ ॥

॥ कळश ॥

ध्यायो ध्यायो रे मैंतो मल्लिजिणंदने ध्यायो, समाइ दाखी त्यां साधना राखी, ए अद्भूत ज्ञान सवायो ॥ स्थिर उपयोगे तुं कुझयो बुझयो, तीहां द्रव्य भाव शत्रु हणायो रे ॥ मैंतो मल्लिजिणंदने ध्यायो ॥ ए आंकणी ॥ ध्यायो ध्यायो रे ध्यान आयोरे, एक दिन छद्मस्थ कहायो ॥ गाथा ॥ १ ॥ मूळ रूप तीहां तद्वत कीधुं, अनुभव ज्ञान संयोग ॥ अप्रमत्तादि श्रेणी आरोही, टाल्या उपाधि थोक रोगरे ॥ मैंतो ॥ २ ॥ क्षायक लब्धि अनंती पाम्या, तेमां नव इहां दाखुं ॥ प्रथम वेदक समकित गुणयोगे, क्षायक समकित भाखुं रे ॥ मैंतो० ॥ ३ ॥ वीजुं क्षायक चारित्र लीधुं, तीहां मोह उनमूलन कीधुं ॥ केवळनाण दर्शण आवरण क्षय, केवळनाण दर्शण लीधुं रे ॥ मैंतो० ॥ ४ ॥ दानादि लब्धि पांच आवे, त्यां अंतराय कर्म क्षय थावे ॥ ए साते गुण तेरमे लाधे, एम नव लब्धि कहावे रे ॥ मैंतो० ॥ ५ ॥ ए लब्धियें अरिहंत कहीये, त्यांथी सिद्धपद लहीए ॥ एम साधना जे कोइ साधे, तेना दास थइ रहीये रे ॥ मैंतो० ॥ ६ ॥ मनुष्य जन्म आज सफळो मानुं, मन स्थिर घरमां आणुं ॥ ज्ञान शीतळ श्रद्धाए भरीयो, ए शीवपंथ साधन टाणुं रे ॥ मैंतो० ॥ ७ ॥

संपूर्ण सर्व गाथा ५०

॥ स्तवन ११. मुं मुनिसुव्रत स्वामीनुं ॥

॥ ढाळ १ ली ॥

प्रथम गोवाळतणा नवेजी ॥ ए देशी ॥

मुनिसुव्रत जिन वीसमाजी, पाळे महाव्रत पांच ॥ ड्रव्य नाव दोय नेदशुंजी, तेमां नहीं खळ खांच ॥ नविकजन वंदो ए जगगुरुराय ॥ सेव्यां सिद्ध पद थाय ॥ नविकजन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ते दाखुं अनुनव करीजी, ग्रहजो नविजन सार ॥ साधन ए सम को नहींजी, आ तमने हितकार ॥ नविक० ॥ २ ॥ प्रथम महाव्रत उच्चरेजी, प्राणातिपात वीरमण ॥ सर्व जीवनुं रक्षण करेजी, न हणे कोश्ना प्राण ॥ नविकजन० ॥ ३ ॥ बीजुं महाव्रत उच्चरेजी, मृषावाद वीरमण ॥ कूडुं वचन बोले नहींजी, ए बाह्य अनिंतर जाण ॥ नविक० ॥ ४ ॥ त्रीजुं महाव्रत उच्चरेजी, अदत्तादान वीरमण ॥ अण दीध्रे लेधे नहींजी, सळी दंत सोधन जाण ॥ नविक० ॥ ५ ॥ चोथुं महाव्रत उच्चरेजी, करे सर्व स्त्रीनो त्याग ॥ रूप कांति निरखे नहींजी, अचिंतक विषय अराग ॥ नविक० ॥ ६ ॥ पांचमुं महाव्रत उच्चरेजी, नवविध परिग्रह त्याग ॥ कोमी पास राखे नहींजी, ए निर्लोनी लीयो वैराग ॥ नविक० ॥ ७ ॥ बहुं व्रत ग्रहे नलुंजी, रात्रि नोजन परिहार ॥ न करे आहार चउ जातनोजी, पचखाण करे चउविहार ॥ नविक० ॥ ८ ॥ ड्रव्य वीरतिए मुनितणीजी, दाखी आतम हेत ॥ ज्ञान शीतळ करी नावशुंजी, नाव वीरति संकेत ॥ नविक० ॥ ए ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ ऋषज्ञजी अमकुं तारोरे ॥ ए दशी ॥

मुनिसुव्रत ज्ञवि ज्ञावमांरे, समजो चतुर सुजाण ॥ ज्ञानादिक शुद्ध चेतनारे, ए जीवना छे ज्ञाव प्राण ॥ सुव्रतमुनि ॥ ज्ञावो निज स्वरूप ॥ ए आंकणी ॥ अनुज्ञव मंदिरमांही, सुव्रतमुनि, ज्ञावो निज स्वरूप ॥ गाथा ॥ १ ॥ ए ज्ञाव प्राण रक्षण जाणीरे, हणे मिथ्यात्व अज्ञान ॥ रागद्वेष मोहादि हणेरे, तीहां प्रगटे केवळज्ञान ॥ सुव्रतमुनि० ॥ २ ॥ मृषावादने टाळवारे, जाणो वस्तु स्वज्ञाव ॥ गुणपर्यायने जाणवारे, ज्ञेद ज्ञान घट लाव ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ३ ॥ अदत्तादान तजवा ज्ञणीरे, ज्ञावे संवर ज्ञाव ॥ आश्रव शुज्ञाशुज्ञ ग्रहे नहींरे, ए उपयोगी मुनिराव ॥ ॥ सुव्रत० ॥ ४ ॥ मैथुन तजशुं ज्ञावथीरे, करी निज परिणति शुद्ध ॥ पर परिणतिने छेदवारे ॥ तत्पर छे ए बुद्ध ॥ ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ५ ॥ परिग्रह ग्रहे नहींरे, ग्रहे मूळ स्वरूप ॥ कर्मबंध तोमे तीहांरे, अनुज्ञवे वस्तु अरूप ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ६ ॥ पुद्गल गुण ज्ञोगी नहींरे, निज गुण ज्ञोगी सदाय ॥ ज्ञानानंदी आतमारे, क्लेश न व्यापे कदाय ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ७ ॥ ए ज्ञाव विरति मुक्ति दियेरे ॥ जगगुरु ज्ञाखे एम ॥ ज्ञान शीतळ ज्ञूले नहींरे, कीधी श्रद्धा प्रतित वळी प्रेम ॥ सुव्रत० ॥ ८ ॥

इति मुनिसुव्रत स्वामीनुं स्तवन.

॥ स्तवन १२ मुं श्री नमिनाथजीनुं ॥

॥ अभिनव ज्ञान भणो मुदारे लाल ॥ ए देशी ॥

नमि जिनपति गुण गाइएरे लाल, पाइए जीव गुण ज्ञानरे ॥ हुं वारी लाल ॥ निज शुद्ध रूप निहाळीएरे लाल, कीजीये उपयोगे ध्यानरे ॥ हुं वारी लाल ॥ नमि जिनपति गुण गाइएरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ पर्यायमय द्रव्य एकतारे लाल, उपजे वीणसे अने ध्रुवरे ॥ हुं वारी० ॥ पर्यायें उपजेने वीणसेरे लाल, द्रव्यें ध्रुव सदीवरे ॥ हुं वारी० ॥ नमि० ॥ २ ॥ ए त्रण लक्षण षट जाणीयेरे लाल, एक जीव पांच अजीवरे ॥ हुंवारी० ॥ स्वभाव पर्याये चउ शुद्धतारे लाल, बे विभावे पुद्गल जीवरे ॥ हुंवारी० ॥ नमि० ॥ ३ ॥ पुद्गल शुद्ध परमाणुउरे लाल, मीले विखरे खंध अशुद्धरे ॥ हुं० ॥ जीव संसारी कर्मबंधथीरे लाल, गति पर्यायें अशुद्धरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥४॥ गति पर्याय ते काया सहीरे लाल, जोग इंद्रिए पर भावरे ॥हुं०॥ तेना संगे उपयोगी चेतनारे लाल, रागद्वेष परिणमे विभावरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥ ५ ॥ ए संसार स्थिर कारण सहीरे लाल, परभाव तेह निमित्तरे ॥ हुंवारी० ॥ उपादान रागद्वेष चेतनारे लाल, तेथी कर्म बंध सदीव अहितरे ॥ हुं ॥ नमि० ॥ ६ ॥ ए परसंगे संसार दाखीयोरे लाल, हवे निज संगे शिवपुर जायरे ॥ हुं० अनुभव योगे वर्णवुंरे लाल, स्थिरता मनवच कायरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥ ७ ॥ जोग इंद्रि द्वारे हुइ चेतनारे लाल, ए उपयोग अशुद्ध अनादरे ॥ हुं०

॥ ते पलटावी स्वरूपे जोमीये रे लाल, त्यां घटंतर अनुभव आल्हादरे ॥हुं.॥नमि.॥८॥ थाय वृद्धि क्षय उपशम ज्ञाननीरे लाल, वीर्य वृद्धि अनंतरे ॥ हुं० ॥ अनुभवे शुद्ध स्वरूपनेरे लाल, लहे परम समाधि महंतरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥ ए ॥ उपाधि जोग सर्व छुटीयो रे लाल, हुवा निर्मळ गुण पर्यायरे ॥ हुं० ॥ उपयोगे प्रवृत्ति थइरे लाल, त्यां परमानंद वरसा-यरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥ १० ॥ ए भेद ज्ञानयोग वर्णव्यो रे लाल, क्षयउपशम भाव ज्ञानरे ॥ हुं० ॥ पर्यायार्थक नय साधनारे लाल, द्रव्यार्थके एक तानरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥ ॥ ११ ॥ इहां अभिन्न द्रव्य गुण पज्जवारे लाल, ज्ञान अ-भेद स्वरूपरे ॥ हुं० ॥ क्षय उपशम मोहनो त्यां छेदीयो रे लाल, उन्मूलन थाय मोहभूपरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥ १२ ॥ अशुद्ध परिणति छेदी शुद्धमां रे लाल, चरण यथाख्यात वासरे ॥ हुं० ॥ वीतराग क्षीण मोह वारमेरं लाल, त्यां त्रण कर्म छुटे पासरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥ १३ ॥ केवलनाण दर्शण प्रगटेरे लाल, अरिहंत तेरमे वासरे ॥ हुं० ॥ दान लाभ भोग उपभोगनोरे लाल, स्वरूपे वीर्य स्फुरणा तासरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥ १४ ॥ ए परमानंद पद मोटकोरे लाल, आयुष अंते योग रोधरे ॥ हुं० ॥ सैलेशि करणे अकंपतारे लाल, अयोगी अकर्मी हुआ सिद्धरे ॥ हुं० नमि० ॥ १५ ॥ ज्योति स्वरूपी ए अरूपतारे लाल, अनंत गुण मणि खाणरे ॥ हुं० ॥ अव्याबाध सुख अविनाशतारे लाल, ज्ञान शीतळ ए सिद्धनां वखाणरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥ १६ ॥

स्तवन ॥ १३ ॥ मुं ॥ श्री नेमिनाथ जीननुं ॥

॥ साधुजी समता आदरो ॥ ए देशी ॥

नेमिनाथजीनी जान नवी सांनळो, आवे परणवा करीं बहु ठाठ मेरे लाल हय गय रथ शणगारीया, पगपाळा हलमल नाठ मेरे लाल ॥ नेमिनाथजीनी जान० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ जादववंश सरवे सज थया, दीपे वस्त्र आनुषण युक्त ॥ मे० ॥ बाळ तरुण वृद्ध आविया, लइ राजऋद्धि नली युक्त ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ २ ॥ कृष्ण नरेंद्र गज उपरे, शोन्ने जेम तारामां चंद्र ॥ मेरे० ॥ तेथी अधिक शोन्ने नेमिजी, रथ बेठा अधिक आणंद ॥ मेरे० ॥ ॥नेमि०॥३॥मणी आदि जमित आनूषणो,राजे कोट केहेम कांकुं कान ॥ मेरे० ॥ वस्त्र अमुलख अंगमां, शेलां मंमिल जामो जरियान ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ दीनकर मुख जोइ आवीयो, हुआ नेमि अधिक तेजवान ॥ मेरे० ॥ मोती अमुलख घणां ठोगले, चावे बीकुं नागरवेल पान ॥ मेरे० ॥ नेमि॥ ॥ ५ ॥ स्त्री वृंद उलटनरे, गावे मंगलिक गीत विनित ॥ मेरे० ॥ मोहित शब्द तीहां वापरे, सुस्वर विकल रंगीत ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ६ ॥ वाजिंत्र वाजे अति घणां, ऊाऊा बंडुकी करे अवाज ॥ मेरे० ॥ उंट घोमे नगारां गमगमे, दारुखानुं उमे रीऊ काज ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ७ ॥ अश्व अनेक खेलावता, गज चढीया महा ऋद्धिवंत ॥ मेरे० ॥ केइक रथमां बेशीया, पगपाळा अनेक न गणंत ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ८ ॥ पालखी मेना अति घणा, तेमां बेठा केइ

पुन्य स्थंभ ॥ मेरे० ॥ समुद्र विजयराय शिवादेवी, नेमि मात तात निरदंभ ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ए ॥ ए जान जोइने दील रीजीयां, नरभव सफळ समजंत ॥ मेरेलाल ॥ इत्यादिक वात अति घणी, एक जीभे न जाय कहंत ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ १० ॥ आव्या उग्रसेन घर आंगणे, जान स्थंभी हरख अपार ॥ मेरे० ॥ ज्ञान शीतळ घट नेमीने, राग रंग पतंग संसार ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ११ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ एक दिवस विषे नेमिकुमर निज मित्र संघाथे आवे ए देशी ॥

आज हरख वशे राजुल सखीयो वृंदे गोखे आवे ॥ नेमि मुख जुए बोले वचन सुणे सखीउं हरख न मावे ॥ ए आंकणी ॥ अंतरंग अमीरस वर साथे, ए परणे मुने एवी तृषा छे ॥ एथी अधिक नहीं जगमां सरज्या छे ॥ आज० ॥ नेमि० ॥ १ ॥ सखीउं कहे ए वरणे काळो, तेने रुपाळो तुमे शुं भाळो ॥ तुमने कीम ए लागें वहालो ॥ आज० ॥ नेमि० ॥ २ ॥ तीहां राजुल सखीयोने कहेवे, काळी कस्तुरी कीकी रेहेवे ॥ एम गुणवंत वस्तु ते काळी हुवे॥आज० ॥ नेमि० ॥ ३ ॥ए रत्न चिंतामणी सरखो छे, करे पूर्ण मनोरथ परख्यो छे ॥ गुण उज्वळ जोइ मन हरख्यो छे ॥ आज० नेमि० ॥ ४ ॥ एणे अवसर पशुआं पोकार करे, ते सुणी नेमिजी विचार करे ॥ तस दुःख टाळी मन व्रत धरे ॥ आज ज्ञान रसे नेम निरागी ॥ अंतर

वैराग ज्ञावे ॥ मुळरूप जुए निज गुण स्थिर उपयोग अनुज्ञव प्रगटावे ॥ ए आंकणी ॥ ५ ॥ इहां वैराग रंग वृद्धि घटमां, रथ वाल्यो तोरणथी झटपटमां ॥ धिक्कार हो संसार कारजमां, ॥ आज ज्ञान० ॥ मूळ० ॥६॥ तव राजुल दुःख ज्वाळा लागी, विलाप करे हुं निरज्ञागी ॥ समजाव्या नहीं समजे रागी ॥ आज० ॥ मूळ० ॥ ७ ॥ घेर आवी वरसी दान दीये, नित्य एक क्रोम आठ लाख ज्नव्य लीये ॥ हाथ धरतां न धरे लाज हीये ॥ आज० ॥मूळ०॥ ८ ॥ तीहां कीर्त्ति जश जग गाजीउं, करुणा सागर जीन राजीउं ॥ दान ज्नव्यने देइ दुःख ज्नाजीउं ॥आज ज्ञान०॥ मूळ० ॥ ए ॥ हवे दिक्षा उच्छवने दाखशुं, ज्ञान शीतळ घटमां राखशुं ॥ जीन ज्नक्ति करुं गुण रागशुं ॥आजज्ञान० ॥ मूळ० ॥ १० ॥

॥ ढाळ ॥ ३ ॥ जी ॥ राग विलावर ॥

॥ जगत प्रज्ञु आगळ ज्नवी वर अक्षत धरीये ॥ ए देशी॥

नेमि निरागी संयम लीये, रंग अंतर मांहि ज्नेद ज्ञान चित्त वासीयो, अनुज्नव स्थिर ज्यांहि हांहां रे ॥ अनुज्नव स्थिर ज्यांही, हांहां रे समकित शुद्ध त्यांही ॥ हांहां रे तीहां मिथ्यात्व नांही, हांहां रे ज्नोग चिदघन मांही॥ हांहां रे॥ उदवेग नहीं क्यांही,हांहां रे एतो उत्सर्ग सांही॥ नेमी नीरागी संयम लीये,रंग अंतर मांही॥ए आंकणी गाथा१॥ ॥उच्छव महोच्छव अति घणो, देव नर करे ज्नावे ॥ समुद्र विजय सर्व जादवा, इंद्र चोसठ आवे ॥ हांहां रे इंद्र चो-

सठ आवे, हांहां रे देव असंख्य बोलावे ॥ हांहां रे सूर्य पूरमां तेडावे, हांहां रे सर्व मंगलिक गावे ॥ हांहां रे घणां वाजां वजावे, हांहां रे तीहां थाक न आवे ॥ नेमि निरागी संयम लीये रंग अंतर मांही ॥ २ ॥ तीर्थोदक वर ओषधि, लावे नीज नीज रंगे ॥ आठ जाति कळश आठने, एक सहस मन चंगे ॥ हांहां रे एक सहस मन चंगे ॥ हांहां रे जळ भरे सौ संगे ॥ हांहां रे लावी उलट अंगे ॥ हांहां रे स्थिर वृत्ति एकंगे ॥ हांहां रे घणी रीझ उमंगे, हांहां रे छे प्रमोद ए भंगे ॥ नेमि निरागी० ॥ ३ ॥ समुद्रविजय पेहेलो करे, पछी सूर अभिषेक ॥ समकित शुद्ध होवे तीहां आवे श्रद्धा विवेक ॥ हांहां रे आवे श्री श्रद्धा विवेक, हांहां रे शुद्ध निज गुण टेक ॥ हांहां रे नहीं परगुण भेक, हांहां रे ध्यान भक्तिनुं एक ॥ हांहां रे तीहां धर्म अनेक, हांहां रे भवि समजो दरेक ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ उत्तरकुरु शिविका बेसे नेमि निरागी, एकसत आठ उपाडता देवनर वडभागी हांहां रे देवनर वडभागी, हांहां रे राजी थइ लीये मागी॥ हांहां रे भक्तिमां लय लागी, हांहां रे घणा गुण नीरागी ॥ हांहां रे चाले पंथे सोभागी, हांहां रे माने पुन्याइ जागी॥ नेमि ॥ ५ ॥ देव देवी नरनारीनी, दृष्टि छे प्रभु सामी ॥ तारतार तुंहीं साहिवा, वड्ये अंतरजामि ॥ हांहां रे वड्ये अंतरजामि, हांहां रे तुंही छे शीवगामी, हांहां रे अरुपी गुणधामी ॥ हांहां रे उपयोग गुण रामी, हांहां रे उपाधि सर्व वामी ॥ हांहां रे तुंहीं जगगुरु स्वामी ॥ नेमि निरागी

॥ ६ ॥ वरघोमेथी उतर्या, सहसावन मोझार॥ श्रावण शुदी छठने दिने, ग्रहे महाव्रत चार ॥ हांहां रे ग्रहे महाव्रत चार ॥ हांहां रे साथे पुरुष हजार ॥ हांहां रे लीये व्रत मनोहार, हांहां रे करे तत्व विचार ॥ हांहां रे वहे शीव पंथ सार ॥ हांहां रे लहे धर्म अपार ॥ नेमि० ॥ ७ ॥ मन पर्यवज्ञान उपन्युं, अप्रमत गुणठाणे ॥ विपुलमति चढती कळा तेनो उपयोग नाणे, हांहां रे तेनो उपयोग नाणे, हांहां रे उपयोग श्रुत नाणे ॥ हांहां रे अनुभव घट आणे, हांहां रे निज पर भेद जाणे ॥ हांहां रे हण्यो मोहज्ञान बाणे, हांहां रे त्रुटयो राग ते टाणे ॥ नेमि निरागी संयम लीये रंग अंतर मांही ॥ ८ ॥ छद्मस्थ चोपन दिन त्रितीया सनातक तीहां थावे ॥ अनंत चतुष्टय पामतां, अरिहंत कहावे ॥ हांहां रे अरिहंत कहावे, हांहां रे तीहां राजुल आवे हांहां रे, वळी शीश नमावे,हांहां रे प्रभुना गुण गावे॥ हांहां रे मेली क्यां शीव जावे, हांहां रे छोड्यां नहीं मुने फावे ॥ नेमि० ॥ ए ॥ दीक्षा दीये तीहां साहेबो, लीये राजुल रंगे ॥ अप्रमत्त ठाण सेवतां हण्यो मोह एकंगे हांहां रे हण्यो मोह एकंगे, हांहां रे तीहां वीर्य अभंगे ॥ हांहां रे छेदे सर्व कर्म चंगे, हांहां रे नव खायक अंगे ॥ हांहां रे वसे शिवपुर संगे, हांहां रे पेहेलां सिद्ध उमंगे ॥ नेमि० १० ॥ सहस वरसनुं आवखुं, पाळी गढ गिरनार ॥ परण्या अपूरव महोच्छवे, शीव सुंदरी प्यार ॥ हांहां रे शीव सुंदरी प्यार, हांहां रे समश्रेणी त्यां धार ॥ हांहां रे

एक समय त्यां वार, हांहां रे लोकंते रहे गार ॥ हांहां रे अव्यावाध हितकार, हांहां रे ज्ञान शीतळ सार ॥ ॥ नेमि० ॥ ११ ॥

॥ कळश. ॥

पाया पायारे नेमि राजुल सिद्ध पद पाया ॥ वेद विषय राग दुर कराया, वीतराग भावमां आया ॥ अनुभव ज्ञान स्वरूपमां लावी, चिदानंद ध्यान ध्यायारे ॥ नेमि राजुल सिद्ध पद पाया ॥ पाया पायारे, मैंतो गायारे, नेमि राजुल सिद्ध पद पाया ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गुण पर्याय एकत्व भावे, अभेद ज्ञानमां आया ॥ उपयोग स्थिर अकृत्यरमणमां, केवळनाण दर्शण पायारे ॥ नेमि० ॥ २ ॥ ए भावे अरिहंत पद लाध्युं, त्यांथी सिद्ध पद साध्युं ॥ संसार वीज निकंदन कीधुं, तीहां सुख अनंतु वाध्युंरे ॥ नेमि० ॥ ३ ॥ नेमि पेहेलां राजुल सिद्ध थावे, स्वामि आज्ञा शीश चढावे ॥ पति अभिप्राये पतिपणुं पामी, सिद्ध वधुकंत कहीने वोलावे रे ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ सिद्ध निरंजन ज्योति स्वरूपी, अचळ अक्षय पद रामी ॥ अकळ अलख तुंही रूपी अरूपी, ज्ञान शीतळ अंतर जामी रे ॥ नेमि० ॥ ५ ॥ संपूर्ण सर्व गाथा ३७ ॥

स्तवन ॥ १४ ॥ मुं ॥ श्री पार्श्वनाथजीनुं ॥

॥ वीर कुंवरनी वातडी कोने कहीए ॥ ए देशी ॥

पार्श्व जीणंदने ध्याइयें, भवी भावे, भाव उपयोग तीहां कहावे॥ शीव साधन ए विण नावे, सत्य समजो एम॥

पार्श्व जिणंदने ध्याइये ज्नविज्नावे॥ए आंकणी ॥ गाथा॥१॥ पारस स्पर्शे लोह कंचन थावे ॥ फरी लोह पणुं नहीं पावे॥ समज्यां दृष्टांत विवेकआवे,आवे ज्ञानने ध्यान॥पा.२॥ शुद्ध स्वज्नाव पारस मणी ते फरसे, तीहां परसंगे उपयोग टळशे ॥ निज उपयोग शुद्धता करशे, एमां नहीं संदेह ॥ पार्श्व० ॥ ३ ॥ उपयोग शुद्ध स्वरूपनो ज्नाव जाणो, गुणपर्याय मांही आणो॥ ज्निन्न व्यक्ति अनंती टाणो, शीवरूप रसाल ॥ पार्श्व० ॥ ४ ॥ आतम ज्ञाननी मुख्यता इहां लाधे, शक्ति व्यक्ति करी शीव साधे ॥ ज्ञान शीतळ सिद्ध आराधे, पामे पद निरवाण ॥ पार्श्व० ॥ ५ ॥

स्तवन ॥ १५ ॥ मुं ॥ श्री वीरस्वामीनुं ॥

मारुं मन लोज्नाणुंजी, मारुं दील लोज्नाणुंजी देखी क्षायक ऋद्धि वीरनी मारुं मनलोज्नाणुंजी ॥ क्षायक ऋद्धि सदगुरू उळखावे, तेहनो राग करावे॥ रागनो प्रेर्यो ज्नावे वीर्य फोरवे, त्यां ग्रंथि ज्नेदि समकित पावे ॥ मारुं मन लोज्नाणुंजी॥ए आंकणी ॥ १ ॥ समकितादि ठाणे शीव पंथे जागे, शुद्धात्म अनुज्नव घटमां ॥ क्षपक श्रेणिए लहे वीर्य अनंतुं, त्यां हणे रागद्वेष मोह ऊटमां ॥ मारुं० ॥ २ ॥ ए क्षीण मोह ठाणे आवे वीतराग ज्नावमां शुक्ल वीजो पायो ध्याता ॥ ज्ञानावरणादि त्रण कर्म त्यां हणीने, लहे केवळ ए लोकालोक ज्ञाता ॥ मारुं० ॥ ३ ॥ क्षायक ऋद्धि अनंती ए देखे, प्रत्यक्ष प्रमाणे घटंतरमां॥ ते ऋद्धिनुं वर्णनन थावे कह्या नव ज्नेद चोथा कर्म ग्रंथमां ॥ मारुं० ॥ ४ ॥

क्षायक समकित वेदक करीने लहे चोथे वा सप्तम ठाणे ॥ क्षायक चरणठाण दसमा अंते, करें उनमूळ मोहनुं ते टाणे ॥ मारुं० ॥ ५ ॥ केवळज्ञानने केवळ दर्शन, दानादिक वळी पांच ॥ ए सत्त गुणठाण द्वादश अंते, सवे क्षायक नव नहीं खांच ॥ मारुं० ॥ ६ ॥ ज्ञानावरणीने दर्शनावरणी, अंतराय सत्ता खुटे॥ तेनो अंत ठाण द्वादश अंते, एम घाति कर्म सवि बुटे॥मा०७॥ए क्षायक ऋद्धि आत्म सत्ताये,अनादि शक्तिये जाणो॥महावीर प्रभुए व्यक्ति भावे करीने, अयोगी अंते अघाति अंत आण्यो ॥ मारुं० ॥ ८ ॥ ए सिद्ध निरंजन समश्रेणीयें लोक शिखर करे वास ॥ त्यां भोगवे अव्यावाध सुख अनंतु, लागे सादि अनंत भंग खास ॥ मारुं० ॥ ९ ॥ ए सुखना रसीया मनोरथ करता, उपयोग भावे रमता ॥ ज्ञान शीतळ हणे मोहनी उपाधि, ते समाधि यें शीव पद वरता ॥ मारुं० ॥ १० ॥

॥ स्तवन १५ मुं श्री वीरप्रभुनुं ॥

॥थारां मेहेलां उपर मेह झरुखे वीजळी हो लाल ए देशी॥

वीर जिनेश्वर देव शासन पति जगधणी हो लाल ॥ शासनपति जगधणी ॥ तुं उपगारी महासंत महंत अनंत गुणी हो लाल ॥ महंत० ॥ ज्ञान ध्यान उपयोग वीर्य वळ एकयता हो लाल ॥ वीर्य० ॥ अनुभवे द्रव्य पर्याय स्वभावनी टेकता हो लाल ॥ स्वभाव० ॥ १ ॥ उदिक भाव नहीं व्यापे व्यापक उपयोमां हो लाल ॥ व्यापक ० ॥ ज्ञान सरूग चउ धार अपूरव खेलमां हो लाल ॥ अपूर्व०

हणीउं महा मोहमल हण्या रागद्वेषने हो लाल ॥हण्या० ॥ टळी परिणति अशुद्ध त्यां शुद्ध प्रवेशने हो लाल ॥ त्यां शुद्ध० ॥ २ ॥ ज्ञान दर्शन अंतराय त्रिकर्म इहां टळे हो लाल ॥ त्रिकर्म० ॥ गुण घातिने अन्नावे अनंत चतुष्टी मळे हो लाल ॥ अनंत० ॥ इत्यादिक घणी रीते साधन पक्ष दाखीये हो लाल ॥ साधन० ॥ नय निक्षेपा प्रमाण संयुक्तादि न्नाषियो हो लाल ॥ संयुक्तादि० ॥ ३ ॥ एम उपगार अनंत सिद्धांते तुमे कर्यो हो लाल ॥सिद्धांते०॥ तुज शासन संयोगे हुं मार्गे चढयो खरो हो लाल ॥ हुं मार्गे० ॥ अन्य दर्शन कुपंथ कुधर्मेन संचरु हो लाल ॥ कुधर्मे० ॥ ज्ञान शितळ जैन न्नावे सिद्ध पदने वरुं हो लाल ॥ सिद्ध पदने० ॥ ४ ॥

स्तवन ॥ १६ मुं ॥

॥ उधवजी संदेशो कहेजो श्यामने ॥ ए देशी. ॥

अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे, क्यारे थइशुं क्षायक लब्धिवंतजो॥ आत्म सत्ताये शक्तिन्नावे अनादिनी, रही छती पर्याये एम न्नाषे गुरुसंतजो॥ अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ क्षायक लब्धि पामवा बे कारण कहुं, चौ न्नेदे मीले जव क्षयोपशमनी सहायजो ॥ परिणामिक न्नाव शुद्ध स्वन्नावे परिणमे, तिहां क्षायक लब्धि पामे चेतनरायजो ॥ अपूर्व ॥ २ ॥ क्षायक लब्धि अनंत न्नेदे एम जाणीये, ते केवळीथी पण वचन अगोचर न कहेवायजो ॥ क्षायक लब्धि नव न्नेदे ग्रंथे

कही, ते घाति कर्मना क्षयथकी प्रगटायजो॥ अपूर्व० ॥३॥ क्षायक समकित पामे ठाण चोथा वा सातमे, तेना वद्धायु क्षायकने अवद्धायु क्षायक दो भेदजो॥ वद्धायु क्षायक लहे शीव सुख त्रीजे चोथे भवे ॥ अवद्धायु क्षायक लहे तद भवे शीव पदजो ॥ अपूर्व० ॥ ४ ॥ क्षयोपशम समकिती वेदक करी क्षायक लहे ॥ ते वेदक समकितनी स्थिति एक समयनी होयजो ॥ सात प्रकृति होय छेद तीहां सत्ता थकी॥ ज्ञान दर्शण दोउ त्यां अप्रतिपाति जोयजो ॥ अपूर्व० ॥ ५ ॥ अवद्धायु क्षायक समकीति क्षपक श्रेणी मांडीने, ठाण दशमा अंते करे सत्ताथी मोहनो विनाशजो॥ राग द्वेष परिणति अशुद्ध टळे तीहां ॥ लहे चरण यथाख्यात करे क्षीण मोह ठाणमां वासजो ॥ अपूर्व० ॥ ६ ॥ ए क्षीण मोह अंते त्रण कर्म साथे हणे,ज्ञानावरणीने दर्शनावरणी अंतरायजो॥ केवळनाण दर्शणने लब्धि पांच क्षायक भावनी, ए गुण प्रगटे त्यां कहीए श्री अरिहंत रायजो॥अपूर्व०॥ ॥ ७ ॥ इहां सयोगी केवळी गुणठाणुं तेरमुं कीजीए ॥ तीहां क्षायक नव लब्धिनी पूरण प्राप्ति थायजो ॥ ए लब्धि जोगे सेहेजे शीव सुख संपजे, अयोगी अंते अघाति हणी सम श्रेणीये सधायजो ॥ अपूर्व० ॥ ८ ॥ ए सिद्ध निरंजन लोकाग्र भागे रह्या ॥ अचळ अविनाशी तीहां सादि अनंत लागे भंगजो ॥ क्षायक ऋद्धि अनंत भेद इहां भोगवे ॥ परमानंद पामे अव्यावाध सुख संगजो ॥ अपूर्व० ॥ ९ ॥ जे समय पामुं शक्तिथी व्यक्तिपणुं ॥

તે સમય હોય અનુમોદવા યોગ્યજો ॥ ક્ષાયક ઋદ્ધિ આવિર્ભાવે પ્રગટે ॥ ત્યાં ભાગે વીરહ થાય શુદ્ધ ચેતના સંયોગજો ॥ અપૂર્વ૦ ॥ ૧૦ ॥ ક્ષાયક લબ્ધિ પામવા મેં ઇચ્છા કરી ॥ તીહાં પુદ્ગલિક ભાવની ઇચ્છા ભાગી જાયજો ॥ પરવસ્તુની મમતા મૂર્છા પરિહરી ॥ ક્ષાયક ગુણ રાગે પ્રશસ્ત રાગ કહાયજો ॥ અપૂર્વ૦ ॥ ૧૧ ॥ ક્ષાયક ઋદ્ધિ ભવ સ્થિતિ પાકે સંપજે ॥ તે ઉદ્યમ જોગે જલદી પાકે એમજો ॥ ઉદ્યમ કરીયે ભાવ નિક્ષેપે ઘટંતરે ॥ ત્યાં અનુભવ જોગે સમાધિ લહતાં ખેમજો ॥ અપૂર્વ૦ ॥ ૧૨ ॥ વિષય વિકાર વેદવામાં આવે નહી ॥ ત્યાં અંતર ક્રિયા અંતર રમણ કહાયજો ॥ જ્ઞાન શીતળ નિજાત્મ ભાવે હોય સાધના ॥ તીહાં શુદ્ધ ઉપયોગે ક્ષાયક ઋદ્ધિ પ્રહાયજો ॥ અપૂર્વ૦ ॥ ૧૩ ॥

॥ સ્તવન ૧૭ મું ઉપદેશીક ॥

ચેતાવું ચેતી લેજોરે એક દિન જરુર ઉઠી જાવું ॥ એ દેશી

સુણજો ભવિજન ભાઇરે, સાધન ભાવ નિક્ષેપે સાચું ॥ ભાવ નિક્ષેપે ગ્રંથિ ભેદ કરતાં, સમકિત ભાવે રાચું ॥ સુણજો ભવિજન ભાઇરે ॥ સાધન૦ ॥ ૧ ॥ ભાવે ધ્યાન તુરંગે નાચું ॥ ભાવે શીવસુખ લહીએ જાચું ॥ એ વીણ સાધન સબ કાચું ॥ સુણજો ભવિજન ॥ એ આંકણી ॥ દ્રવ્ય નિક્ષેપ કહ્યો અના ઉપયોગે, અનુયોગ દ્વાર સિદ્ધાંતે ॥ ભાવ નિક્ષેપ ઉપયોગે દાખ્યો, તે લહો ભવિશાંત દાંતે ॥ સુણજો૦ ॥ ૨ ॥ દ્રવ્ય પ્રાણને ચેતન જાણી, દ્રવ્ય નિક્ષેપે કિરિયા કરતો ॥

जीवा जीव सत्ता भिन्न न जाणे, व्यवहार मार्गे ए बाळ रमतो ॥ सु० ॥ ३ ॥ किरियामां लिंगमां चरण आरोपे, भाव अपेक्षा न राखे ॥ निमित्त उपादान भेद न समजे ते शीव सुख कदीये न चाखे ॥ सु० ॥ ४ ॥ ए द्रव्य निक्षेपो कह्यो ते करतां, संसार वास न छुटे ॥ कर्म बंध करी चौ गति भटके, भाव निक्षेपे संसार खुटे ॥ सु० ॥ ५ ॥ हेय उपादेय बुद्धि लहीने, भाव निक्षेपो भावो ॥ हेय उपाधि पर वस्तु छंडी, उपादेय शुद्धात्म निज ध्यावो ॥ सु० ॥ ६ ॥ ए भाव निक्षेपो शिव हेतु दाख्यो, स्वरूप रमणमां राख्यो ॥ भाव उपशम क्षयोपशम क्षायक, लहो उपयोगे ज्ञानीए भाष्यो ॥ सु० ॥ ७ ॥ क्षायक भावने कार्य मानो, क्षय उपशम कारण जाणो ॥ शक्ति व्यक्ति लहीये ते साधन, ज्ञान शीतळ वचन प्रमाणो ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ इति स्तवन अधिकार संपूर्ण ॥

अथ सज्झाय अधिकार.

॥ सज्झाय ॥ १ ली ॥ समकितनी ॥

॥ ऋषभनो वंशरयणायरो ॥ ए देशी ॥

चेतन समकित आदरो, लक्षण पांच विचारो रे ॥ सम संवेग निरवेदए, अनुकंपा आस्ता धारो रे ॥ चेतन समकित आदरो ॥ ए आंकणी० ॥ गाथा ॥ १ ॥ उपशम लक्षण पेहेलुं भावीए, क्षमायें क्रोधादि हणीये रे ॥ वेर विरोध समाविए, समभावे भवि भजीयें रे ॥ चेतन० ॥२॥ बीजुं लक्षण संवेगीयो, सुरनर सुख दुःख सरखुं रे ॥ वेग

मोक्ष अभिलाषीयो, करम रहित चेतन परखुं रे ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ त्रीजुं लक्षण निर्वेद लहे, चउगति बंधीखानुं भारी रे ॥ अनुत्तर सुख झेर सरीखुं, ग्रहुं अतिइंद्रि छंडु इंद्रिरे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ अनुकंपा लक्षण चोथुं चिंतवे, निजपरमां द्रव्य भावरे ॥ परअनुकंपा दोय भेदथी, समजी करूणा लाव रे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ परदुःख छेदे निज शक्तियें, परप्राण रखोपुं रे ॥ त्रस थावर नही दुभवे, ते द्रव्य अनुकंपा रोपु रे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ भावथी उपदेश धर्म कथा, भेद ज्ञाने देखाडे रे ॥ जीव पुद्गलनी भिन्नता, वस्तु सत्ता जूदी पाडे रे ॥ चेतन० ॥ ७ ॥ गुण पर्याय समजावीए, ज्ञान चेतना दीजे रे ॥ तेथी अनुभव पोते करे, निर्धार थयां दील रीझे रे ॥ चेतन० ॥ ८ ॥ श्रद्धा शुद्ध वस्तु भिन्नता, अनुभवे निज उपयोगे रे ॥ समकित प्रगट करे प्राणीउं, ते भाव अनुकंपा पर जोगे रे ॥ चेतन० ॥ ९ ॥ स्व जोगे हवे भाखशुं, देश विरति सर्व विरति लेवे रे ॥ विषय कषायने परहरे, ते द्रव्य अनुकंपा सेवे रे ॥ चेतन० ॥ १० ॥ रागद्वेष वळी मोहने, छंडी स्वभावमां आवे रे ॥ शक्ति भाव व्यक्ति पणुं लहे, ते भाव अनुकंपा निज थावे रे ॥ चेतन० ॥ ११ ॥ आस्ता लक्षण ग्रहो पांचमुं, करो जिन वचन प्रमाणो रे ॥ जैन भाव समभावमां, देख चेतन राणो रे ॥ चेतन० ॥ १२ ॥ इम पांच लक्षण लाधे आपमां, ते जाणो समकित रे ॥ ज्ञान शीतळ कीधां संपजे, ते चेतन जन्म पवित रे ॥ चेतन० ॥ १३ ॥

सज्झाय ॥ २ ॥ जी ॥ चेतनज्ञाननी ॥

॥ चेतनजी वारणे मत जावोरे ॥ ए देशी ॥

चेतनजी ज्ञान स्वरूपने धारोर, तुमे पर उपयोग निवारो ॥ चेतनजी ज्ञान स्वरूपने धारोरे ॥ ए आंकणी ॥ पूर्व कर्म जनित दश प्राणरे ॥ ते परवस्तु प्रमाणरे ॥ तेना संगे उपयोग जाण ॥ चेतनजी० ॥ १ ॥ ए उपयोग चेतन वस्तुरे ॥ परसंगे जमता लहंतुरे ॥ रागद्वेष अज्ञान कहंतु ॥ चेतनजी० ॥ २ ॥ ए जूल अनादिनी तुजमांरे, तेथी कर्त्ता जोगता पुदगळमांरे ॥ बांधे कर्म वर्गणा चेतनमां ॥ चेतनजी० ॥ ३ ॥ तेथी चउगति जटकण लाग्यो रे, मूळरूप कीहां नहीं जाग्योरे ॥ सुकृत साधन सव ताग्यो ॥चेतनजी०॥४॥ तेथी दुखीयो अनादि संसारी रे॥ अहं ममत्व करी जूल जारीरे ॥ हवे गइ वाजी ल्यो सुधारी ॥ चेतनजी० ॥ ५ ॥ सदगुरूनी सेवा करीयेरे ॥ करी विनय श्रवण अनुसरीयेरे ॥ तेथी ज्ञान ऋद्धिने वरीये॥ चेतनजी० ॥ ६ ॥ जे अवसर चेतन ज्ञानीरे ॥ पूर्व रीत जुए स्थिर ध्यानीरे ॥ परसंगे अनंती हानी ॥ चेतनजी० ॥ ७ ॥ ज्ञान वीर्य एकता कीधीरे ॥ पुदगल परिणमन तजी दीधीरे ॥ उपयोग गुणस्वरूपमां लीधी ॥ चेतनजी० ॥ ८ ॥ शुद्ध अनुजवी आतम धर्मी रे, शक्ति जाव व्यक्ति परिणमी रे ॥ पूज्य अरिहंत थया शीवरंमी ॥ चेतनजी० ॥ ए ॥ गुण घाति चउनो विनाशरे ॥ तीहां अनंत धर्म अवकाशरे ॥ कीधो क्षायक जावमां वास ॥ चेतनजी० ॥ १० ॥ आयुष

अंते योगरोध थावेरे, तीहां चेतन अयोगी ठाण पावेरे॥ अंते अघाति चउ थाय अन्नावे ॥ चेतन० ॥ ११ ॥ एही सिद्ध सनातक वंदुंरे ॥ मूळरूप जोइ आनंदुंरे ॥ ज्ञान शीतळ करी कर्म निकंदु ॥ चेतनजी० ॥ ॥ १२ ॥ संपूर्ण. ॥

॥ सज्जाय ३ जी मुनिपदनी ॥

॥ ऋषन्ननो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

रुडुं मुनिपद मुज मन वस्युं, समकित मूळ ज्ञान पाइरे ॥ उलट घणो मुज अंगमां, ए वीण सर्व दुःख दा-यीरे ॥ रुडुं मुनिपद मुज मन वस्युं ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शब्दनये मुनिपद संपजे, परसंग त्याग विन्नागरे ॥ अलख निरंजन अनुन्नवे, स्थिर रमण उपयोगरे ॥ रुडुं मुनिपद० ॥ २ ॥ श्रुतज्ञान उपयोगवंत जे, ते जीव एम बोलीजेरे ॥ अना उपयोग तन मन्न ते, नहीं जीव ए अ-जीव कहीजेरे ॥ रुडुं० ॥ ३ ॥ शब्द अर्थनी पूर्णता, जे वस्तु गत धर्म रे ॥ शुद्ध सत्ता प्रगटे ते साधना, ए जीन वचननो मर्म रे ॥ रुडुं० ॥ ४ ॥ ए विण कार्य सरे नहीं, समजो चतुर विवेकरे ॥ अंतर दृष्टियें संपजे, ग्रहां निज स्वन्नाव टेकरे ॥ रुडुं० ॥ ५ ॥ स्वन्नाव धर्मे जे मुनि थया, नित्य प्रणमुं तस पायरे ॥ अनुमोदुं तस धर्मने, विनय करुं जो मीले रायरे ॥ रुडुं० ॥ ६ ॥ धन्य धन्य तस अवतारने, धन्य धन्य तस दरशनरे ॥ ज्ञान शीतळ कहे लीजीये, मुनिपद ते दीन धन्यरे ॥ रुडुं० ॥ ७ ॥

सज्जाय ॥ ४ ॥ थी ॥ विजयशेठ अने विजया राणीनो ॥

देशी उपर प्रमाणे

वीर जिनेश्वर पाय नमी, नमी अप्रमत्त राय रे ॥ विजयशेठ राणी विजया, गुण गातां हरख न मायरे ॥ धन्य धन्य ए शियळ सोहामणां ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ भरतक्षेत्र दक्षिण दिशे,समुद्र तीरे वच्छ देशरे॥त्यां विजय शेठ वसे समकिती, निरविषय रंग वेशरे ॥ धन्य० ॥ २ ॥ कृष्ण पक्षे विरति हुवा, स्त्री भोग त्याग करशुंरे ॥ वाळपणे निश्चे एम कीयो, वेद विषय परिहरशुंरे ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ तिहां नामे विजयारूपे भली, समकिती कन्या वाळरे॥ गुण रागे गुरु सनमुखे, गहुंली करी ठवे मणीलालरे ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ गुरूने मोतीए वधावती, कहेती व्रत उचरावोरे ॥ शुकल पक्षे चोथुं सद्गुरु, व्रत दीये जग चावो रे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ पूर्व कर्म संबंधी, ए वेहुनो विवाह करी तातरे ॥ शुभ लग्ने परणावीयां, द्रव्य खरची जमाडी नातरे ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ तव विजया शणगार सजी, अवसरे पेउ पासे आवेरे ॥ तेने देखी शेठ हरख धरी, बोले वचन मन भावेरे॥ धन्य० ॥ ७ ॥ शेठ कहे कृष्ण पक्षनो, त्याग विषय व्रत मुजरे ॥ त्रण दिवस रह्या तेहना, पछें करशुं भोग तुजरे ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ तव विजया विलखी थइ, चिंतवे चित्त मोझार रे ॥ शेठ कहे तुं शी चिंता करे, दीन त्रण जतां शी वाररे॥ धन्य० ॥ ९ ॥ विजया कहे मीठे बोलडे, शुक्ल पक्षे व्रत मुज रे ॥ गुरु पासे वाळ वये लीयो, ते केम सेवुं हुं स्वामी तुज रे ॥

॥ धन्य० ॥ १० ॥ उभय पक्षे अमे पाळशुं, पेहेरी शियळ सन्नाह रे ॥ काम बाण लागे नहीं, ज्ञान योगे टाळुं वेद दाह रे ॥ धन्य० ॥ ११ ॥ तमे अवर नारी परणीने, सेवो शुक्ल पक्षे तेह रे ॥ कृष्ण पक्षे विरति रहो, त्याग विषय सेवा एह रे ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ एम विजया मुख वचन ए, मधुर साकर जेम द्राख रे ॥ सांभळी शेठ आगळ कहे, ज्ञान शितळ सुणी शियळ राख रे ॥ धन्य० ॥ १३ ॥

॥ ढाळ ॥ २ ॥ जी ॥

॥ श्रुतशुं रंग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

शेठ शियळ दृढ रंग अनोपम, निर्विष निर्मळ काया रे ॥ शुरवीर काम कंदर्प हणवा, श्रुत ज्ञानी मांहि ए सवायारे ॥ शियळशुं रंग लाग्यो० ॥ रंग लाग्यो रे चोळ मजीठ ॥ शियळशुं रंग लाग्यो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ ॥ १ ॥ बीजी नारी न परणुं न भोगवुं, विषय काळकुट विष सरखुं रे ॥ एम समजी उभय पक्ष पाळी, निर्विष शिळ गुणे हरखुं रे ॥ शियळशुं रंग लाग्यो० ॥ २ ॥ सदा सर्वदा विषय न सेवुं, त्रिकरण योगे व्रत वहालुं रे ॥ मात पिताने ए वात न जणावुं, जाणे तब दिक्षा लइ पाळुं रे ॥ शियळ० ॥ ३ ॥ एम अभिग्रह बेहु एक वृत्तिये, लीये शुद्ध शिळ परिणामेरे ॥ त्यागी वैरागी ए जीव गुण रागी, चढी भाव चरण गण पामे रे ॥ शियळ० ॥ ४ ॥ क्षण क्षण वरते निज उपयोगे, अनुभवे निज पर भिन्नरे ॥ भाव शियळसो पुद्गल त्यागे, परशुं विभागी तद लीन्नरे ॥

॥ शियळ० ॥ ५ ॥ तद्गत लीन्न वेहु एक सज्याए, सुत्रे मध्य खड्ग व्रत धारारे ॥ धैर्यवंत वीर्यवंत ज्ञानी, नरनारी संगी संग न्यारारे ॥ शियळ० ॥ ६ ॥ एक आसने वेद विषय हणीने, सुए वेसे वोले व्रत राखे रे ॥ ते कारणे केइ व्रत धर पडीया, न पड्या ते अधिक ज्ञानी न्राखे रे ॥ ॥ शियळ० ॥ ७ ॥ अचळ शियळ रत्न ए अमुलख, गाम गाम नहीं नहीं छाजे रे ॥ विजय शेठ विजीया राणी वेहुने, अंगे शिळ रत्न विराजे रे ॥ शियळ० ॥ ॥ ८ ॥ एम शिळवते प्रमोद झझो, ज्ञान शीतळ शुद्ध न्रावे रे ॥ विषय विकार न व्यापे अंगे, ते चेतनराम कहावे रे ॥ शियळ शुं रंग लाग्यो० ॥ ए ॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥ देशी एकवीसानी ॥

विमळ केवळीरे, चंपायें आवी समोसर्या ॥ मुनि समुदायरे, सहस चोराशीयें परवर्या ॥ तीहां श्रावक रे, जीनदास वीरति सही ॥ करे वंदनारे, मुनिपति मुनिनो विनय तहीं ॥ त्रुटक ॥ दीये देशना विमळ केवळी, मुनि पद ळखावता ॥ एक ज्ञानी ते मुनि कहीए, बीजा ज्ञानी निश्रा पावता ॥ ए वे विण त्रीजो मुनि न कह्यो, जिनपतिए जिन शासने ॥ तेवा मुनिने विनयें वांदतां, छोडे कर्मबंध पासने ॥ १ ॥ ए मुनिनेरे, आहार पाणी आदें श्रावक दीये ॥ खप पूरतुं रे दोष वर्जीत शुद्ध ते लीये ॥ आग्रह करीरे, अधिक देवानी इच्छा करे ॥ तेना फळनी रे, वंछा

कदीए ते ना करे ॥ त्रुटक० ॥ ना करे वंछा शुन्न फळ केरी, शुन्न कर्मे शुद्ध न कोइरे ॥ शुन्न कर्म ए पुन्य प्रकृति दीये शातामें उदये जोइरे ॥ ते पापस्थान दश पंचमुं रति, पाप दाता ए सही ॥ पुन्य न्नोगवतां पाप आवे, ते कारण पुन्य नलुं नहीं ॥ २ ॥ एम सांन्नळी रे, अज्ञानी ते बोले इश्युं ॥ सुपात्रनेरे, दान देइ न इच्छे फळ कश्युं ॥ एम जोतां रे, सुपात्र निरथक हुउं ॥ फळ दातारे, सुपात्र तो सुत्रे कह्या जुउं ॥ त्रुटक० ॥ सुपात्र तो सुत्रे कह्या छे, बोधि बीज दाता सही ॥ दिक्षा दाता चरण प्रख्याता, आश्रव पंच त्यागी लही ॥ निर्जरा हेतु तप गुण दाता, शीवसुख हेतु ए न्नला ॥ इच्छा रहित विनय जोगे, दान देइ शुन्ना शुन्नथी टव्या ॥ ३ ॥ एम सांन्नळी रे, जीनदास विनति करे ॥ मुज घरे मुनिरे, सहस चोरासी पारणुं करे ॥ ए विनतिरे साहेब मारी मानजो ॥ मनोरथ फळेरे, गुण रागे न्नक्ति जाणजो ॥ त्रुटक० ॥ वळतुं केवळज्ञानी बोले, एम वाततो नहीं बने ॥ सहस चोरासी सूझतुं लेवे, आहार पाणी कीहां क्यां कने ॥ एटलो आहारादिक एक ठामे, सुझतो कदी निपजे नहीं ॥ तुज मनोरथ पूरवा दाखुं, फळ एटलुं होवे सही ॥ ४ ॥ वच्छ देशेरे, शेठ विजय राणी विजया ॥ न्नावयति शुद्धरे, ग्रहस्थी बे ज्ञाने न्निजीया ॥ शियळ शुद्धरे, अदून्नूत अचळ डगे नहीं ॥ उत्कृष्टारे, ए सम अवर न जग मही ॥ त्रुटक० ॥ ए बेहुने उलट न्नर देवो, न्नोजन न्नलो रस स्वाद ए ॥ न्नक्ति करीने रंग

रीजें, गुणगावो करी नाद ए ॥ तेथी फळ लहो एटलुं कहे केवळी भगवान ए ॥ ते सांभळी जीनदास जावे, ज्ञान शीतळ एक तान ए ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ४ थी ॥

॥ धन्य लोक नगर धन्य वेळारे, मन मोहन सुंदिर मेळा ए देशी ॥

जीनदास श्रावक सधाव्या, जीन वचने वच्छ देश आव्या॥ विजय शेठने विजया राणी, देखी मळी कहे उलट आणी रे॥ स्वामी धन्य तुं शियळ सोभागी, धन्य मार्फी जनित गुणरागीरे स्वामी धन्य तुं शीयळ सोभागी० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ नमी प्रणमे भक्ति भावे, प्रमोदित आनंद पावे ॥ गुण वृद्धि लहे गुण गावे, भाव यति गणे तुं सोहावे रे ॥ ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ सहस चोराशी मुनिने देवे, आहार पाणी सूझतुं ए लेवे ॥ बहु माने देतां फळ थावे, एटलुं फळ तुजशुं पावे रे ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥ एम विमळ केवळी भाख्युं, ते वचन में घटमां राख्युं ॥ मुज मनोरथ पूरो स्वामी, जमो बेहु कही शीरनामी रे ॥ स्वामी० ॥ ४ ॥ ए मनोरथ पूरवा हेते, जमे भोजन धर्म संकेते ॥ विजय शेठने विजया राणी, दीए एटलुं फळ हीत आणी रे ॥ ॥ स्वामी० ॥ ५ ॥ जीनदासे पूरुं फळ लीधुं, सतकार विनय घणुं कीधुं ॥ गुण गावे वचन विवेके, पूछे मात तात बे विशेके रे ॥ स्वामी० ॥ ६ ॥ जीनदास शियळ वखाणे, भाष्यो केवळीये ते प्रमाणे ॥ तेथी मात ताते वात जाणी,

पुत्र वधु जोडी गुण खाणी रे ॥ स्वामी० ॥ ७ ॥ इहां अभिग्रह पुरो थावे, लीए चारित्र चढता भावे ॥ विजय शेठने विजया राणी, प्रतिबंधन करे गुण खाणी रे ॥ स्वामी० ॥ ८ ॥ छंडी ग्रहवास कंचन माया, तजी चोकडी त्रण कषाया ॥ मिथ्यात्व त्रण भेदने वामे, क्षायक समकित त्यां पामे रे ॥ स्वामी० ॥ ए ॥ भाव मति श्रुत ज्ञान शुद्धि जागे, टळे पर अनुभव विभागे ॥ तीहां उपयोग स्थिर थावे, शुद्धात्म अंतर ध्यावे रे ॥ स्वामी० ॥ १० ॥ विजय शेठने विजया राणी, त्यागी हुवां एसो भाव आणी ॥ ज्ञान शीतळ ए केवळी पासे, लेइ दीक्षा शीव गति जाशे रे ॥ स्वामी० ॥ ११ ॥

॥ ढाळ ५ मी ॥

केवळज्ञानी जगगुरु पासे, दिक्षा चारित्र लीधुं रे ॥ विजयशेठ विजयाराणीए, सावद्य पच्चख्खाण कीधुं रे ॥ चारित्र ए रुडुं ॥ रुडुं रमण निज गुण स्थिर ॥ चारित्र ए रुडुं ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ पंचमहाव्रत उचरीयां हिंसा मृषा अदत्तरे ॥ मैथुन परिग्रह त्यागी सर्वथी, ग्रही आत्म सत्ता ज्ञान गतरे ॥ चारित्र० ॥ २ ॥ अनात्म सत्ता उपाधि तजीने, द्रव्य भाव चारित्र लीधुं रे ॥ तेथी चउगति भ्रमणने टाळी, अपुनर्भव शीवसुख लीधुं रे ॥ चारित्र० ॥ ३ ॥ शुभा शुभ दोय निर्वद्य नांही, निर्वद्य एक समदृष्टिरे ॥ रागद्वेष हणे तीहां थावे, समभाव शक्ति उत्कृष्टिरे ॥ चारित्र० ॥ ४ ॥ ते शक्तिये केवळ पामे, चउ गुण घाति

हणीने रे ॥ ए भावे अरिहंत सिद्ध थावे, अंते योग रोध करीने रे ॥ चारित्र० ॥ ५ ॥ अघाति चउनो क्षय इहां थावे, रूपातित सिद्ध भावेरे ॥ एक भाग पोलारनो ठंकी, बे भागे प्रदेश समावे रे ॥ चारित्र० ॥ ६ ॥ समश्रेणीए सिद्धि वरियां, विजयशेठ विजय राणी रे ॥ लोकंते अवगाहना वीराजे, अनंत धर्मनी ए खाणी रे ॥ चारित्र० ॥ ७ ॥ ए सिध्यां सादि अनंतमे भांगे, अकृत्य अनुभव वृत्तिरे ॥ निज गुण पर्याय ऐक्यता, न तजे लक्षण आकृतिरे ॥ चारित्र० ॥ ८ ॥ निज द्रव्यें ध्रुवता स्थिर सिद्धमां, ज्ञान शीतळ कृत ज्ञानरे ॥ सिद्ध राय ज्ञान अकृत आपो, तो रूपातित करुं ध्यानरे ॥ चारित्र० ॥ ए ॥

॥ कळश. ॥

॥ त्रिजगद्भासन ॥ ए देशी ॥

एम शियळ सुध्धुं, त्रिकरण योगे, उभय पक्षे पाळिये ॥ जाव जीव निश्चळ वृत्तिये, देवगति निहाळीये ॥ १ ॥ शियळे देव सानिध्य करे, शियळे शितळ आगरे॥ शियळे संकट भय हरे, फूलमाळ होय विषधर नागरे ॥ २ ॥ द्रव्य शियळ ए पुन्य कारण, शिव कारण शिळ भावथी ॥ पुद्गल त्याग अनुभव योगे, भावो शिळ आत्मार्थी ॥ ३ ॥ भाव शीयळ एक अनुभव ज्ञाने, निज पर भिन्न होवे सही ॥ शुद्ध पर्याये रमण अनुभव, जोगें सिद्धगति ग्रही ॥४॥ विजय शेठने विजया राणी, शियळ अक्षग पाळता ॥ सावद्य त्याग समदृष्टि ज्ञाने, सिद्धगति

पंथ चालता ॥ ५ ॥ ए दंपतिना गुण गाया, अनुभव उपयोग भावथी ॥ तेह तणी पांच ढाळो कीधी, गुण रागे प्रमोदथी ॥ ६ ॥ मुज मनोरथ सफळ कीधो, अनुमोदना फळ में लह्यो ॥ ज्ञान शीतळ एम गुण रागे, रमण करतां मन स्थिर रह्यो ॥ ७ ॥ आ सज्झाय जे भणशे गणशे, सुणशे निश्चळ चित्तथी ॥ ज्ञान शितळ आतम ज्ञान जोगे, गुण वृद्धि विनितथी ॥ ८ ॥

संपूर्ण ॥ सर्व गाथा ॥ ५५ ॥

॥ सज्झाय ५ मी अनाथ सनाथ विचारनी ॥

॥ ऋषभनो वंश रयणायरो ॥ ए देशी ॥

चतुर सनेही सांभळो, अनाथ सनाथ विचार रे ॥ द्रव्य खेत्र काळ भावथी, कहुं ते करो निरधार रे ॥ चतुर सनेही सांभळो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ द्रव्य अनाथ जडता तीहां, जीव अज्ञानी मिथ्यात्वी रे ॥ अशुद्ध उद्यमी ए बहिरातमा, अनादि भविने अभवी रे ॥ चतुर० ॥ २ ॥ खेत्र अनाथ बाह्य खेतमां, क्षुधा तृषादि काया गत दुःखरे ॥ मन ममताये नही तृपति, आशा अधुरि त्यां आवे नहीं सुखरे ॥ चतुर० ॥ ३ ॥ काळ अनाथ जरा मरण ए, चवन जन्म अति दुःखरे ॥ लाग्यां चउगति संसारमां, केके आवे एनी भागी नहीं भुखरे ॥ चतुर० ॥ ४ ॥ भाव अनाथ विभाव ए, रागद्वेष दोय त्रीजो मोह रे ॥ विषय कषाय मिथ्यात्व छे, ए संसार मूळ बीज तेहरे ॥ चतुर० ॥५॥ संसार चउगति अनाथ छे, तेनो दाता मिथ्या

मोह अनाथरे ॥ एने ग्रहे ते जीव अनाथ छे, तेनो बेली नहीं सनाथरे ॥ चतुर० ॥ ६ ॥ द्रव्य अनाथ दाता अज्ञानए, खेत्र अनाथ क्षय उपशम हानी रे ॥ काळ अनाथ दाता मिथ्यात्व छे, नाव अनाथ परिणति अशुद्ध प्राणीरे ॥ चतुर० ॥ ७ ॥ तेने हणयां सनाथ त्रण लोकनो, जेहणे ते सही थाय रे ॥ एम जाणी नविजन क्षय करो, गुरु ज्ञान खड्ग हाथ लाय रे ॥ चतुर० ॥ ८ ॥ ए विण अवरे क्षय नही, क्षय होय जो आतम ज्ञान रे ॥ तो घटंतर प्रकाश करे, ए चोरो तीहां नागे एम मान्य रे ॥ चतुर० ॥ ए ॥ ज्ञान योगे सनाथ आतमा, धर्म कार्य वंत थाय रे ॥ तेह चउन्नेदे दाखवुं, उतकृष्टे परमातमरायरे ॥ चतुर० ॥ १० ॥ द्रव्य सनाथ दो नेदे कहुं, सम्यक दर्शन ज्ञानरे ॥ धर्म उद्यमी अंतर आतमा, लहे नवि केइ एम मान्य रे ॥ चतुर० ॥ ११ ॥ खेत्र सनाथ अंतर खेत्रमां, अनुनव नुवने वास रे ॥ दृष्टि स्वन्नाव पर्यायमां, तीहां नहीं आश्रव अवकाशरे ॥ चतुर० ॥ १२ ॥ काळ सनाथ अप्रमत्त वृद्धिये, क्षपकश्रेणी मंझायरे ॥ ते नर अमर शीवपद वरे, अयोगी अंते छुटे कायरे ॥ चतुर० ॥ १३ ॥ नाव सनाथ शुद्ध परिणतियें, चरण यथाख्यात वीतरागरे ॥ रागद्वेष मोह सवि टळे, संसार निरवीज शीवमागरे ॥ ॥ चतुर० ॥ १४ ॥ त्रण नेदो जो नावपणुं लहे, तोहोय तद्नव सिद्ध राय रे ॥ नहीं तो संसार स्थिति रहे, उत्कुष्टी जघन्य कहायरे ॥ चतुर० ॥ १५ ॥ पढतां अरथ

पुद्गल वर्त्तना, नहि तो सात आठ नव थाय रे ॥ जघन्य त्रीजे नवे शीव लहे, त्यां अव्याबाध सुख सदाय रे ॥ ॥ चतुर० ॥ १६ ॥ द्रव्य सनाथ दाता ग्रंथि नेद ए, क्षेत्र सनाथ क्षय उपशम वृद्धि रे ॥ काळ सनाथ दाता उपयोग नाव ठे, नाव सनाथ अनुनव शुद्धि रे ॥ चतुर० ॥ १७ ॥ एम अनाथ सनाथ विचारीने, अनाथ नावने हणीया रे ॥ अनाथी मुनितस नाम ठे, सनाथ ए ज्ञान गुणे दरिया रे ॥ ॥ चतुर० ॥ १८ ॥ त्रण सनाथ कारणरूप ठे, नावसनाथ कार्य अनुप रे ॥ अनाथ पद दुःखनुं मूळ ठे, सुख मूळ सनाथ नूपरे ॥ चतुर० ॥ १९ ॥ सनाथ पद धारीने करुं वंदना, प्रणमुं तेहना पायरे ॥ गुण गाउं अंतरंगशुं, अनुमोद वारंवार थाय रे, ॥ चतुर० ॥ २० ॥ त्रण सनाथ दोय गति पामता, देवनी एक बीजी सिद्ध रे ॥ नावमां ए आवे तो संपजे, नहीं तो लहे देवनी ए ऋद्ध रे ॥ चतुर० ॥ २१ ॥ नही नाव सनाथ त्यां संसार ठे, त्रण सनाथ संसार अल्प रे ॥ बहुल संसार अनाथमां, द्रव्य अनाथ मिथ्यात्व जल्प रे ॥ चतुर० ॥ २२ ॥ अनंत पुद्गल परावर्त्तनो, मालिक अनादि मिथ्यात्व रे ॥ एथी बुटयां संसार अल्प ठे, पामे समकित लहे गुण सत्वरे ॥ चतुर० ॥ २३ ॥ अनाथ उपादान मोह ठे, ठे वळी रागने द्वेष रे ॥ सनाथ उपादान जीव गुण ठे, ठे जीव पर्याय प्रदेश रे ॥ चतुर० ॥ ॥ २४ ॥ बाह्य दृष्टियें धर्म अनाथ ठे, अंतरदृष्टियें धर्म सनाथ रे ॥ बाह्य दृष्टि संसार साथ ठे, अंतरदृष्टि शीव

साथ रे ॥ चतुर० ॥ २५ ॥ व्यवहार वर्त्तना ते बाह्य छे, शुन्नाशुन्न जोग त्रण वृत्तिरे ॥ आश्रव करणी छे ए सही, धर्म कहे ए अनाथ आकृति रे ॥ चतुर० ॥ २६ ॥ शब्द वर्त्तना अंतरंगमां, अनुन्नवे उपयोग स्थिर रे ॥ स्वरूप रमण शुद्ध न्नावथी, गुण वृद्धि होय लहे स्फुरणा वीर रे ॥ ॥ चतुर० ॥ २७ ॥ सोही सनाथ पद न्नावीयें, न्नेद ज्ञान लावी घट मांही रे ॥ सप्रविन्नाग तीहां संपजे, हेय जाणी छंके पर त्यांही रे ॥ चतुर० ॥ २८ ॥ आदर एक शुद्ध स्वरूपनो, ध्याता ध्येय ध्यान एकत्व रे ॥ ध्येय शुद्ध द्रव्यार्थक ए, ध्याता पर्याय धर्म महत्त्व रे ॥ चतुर० ॥२९॥ ध्यान शुक्ल एकता अन्नेदता, पर्याय धर्म द्रव्य मांहि रे ॥ न्निन्न गवेषण इहां टळे, मिळे परिणति शुद्ध अशुद्ध नांही रे ॥ चतुर० ॥ ३० ॥ इहां मोहनुं उन्मूलन थयुं, टल्या रागने द्वेष दोयरे ॥ क्षय उपशम न्नाव इहां टल्यो, लहे मुनि यथाख्यात सोही रे ॥ चतुर० ॥ ३१ ॥ न्नाव सनाथ तस कीजीये, संसार निरबीज वंत रे ॥ वीतराग गुणठाण बारमें, त्रण कर्म हणे महा संत रे ॥ चतुर० ॥ ३२ ॥ केवळनाण दर्शण प्रगटे, प्रगटे क्षायक लब्धि पांचरे ॥ दान लान्न न्नोग उपन्नोग ए, वीर्य स्फुरणा अनंत न खांचरे ॥ चतुर० ॥ ३३ ॥ ए परमानंद पद मोटको, अरिहंत तेरमे वासरे ॥ आयु अंते योग रोध करे, अयोगी ठाणे सिद्ध पास रे ॥ चतुर० ॥ ३४ ॥ अघाति चउ कर्मथी टल्या, छुटी वर्गणा कारमणरे ॥ छुटी वळी मनुष्यगति इहां, छुटयुं चउगति न्नमण रे ॥

चतुर० ॥ ३५ ॥ आत्म असंख्य प्रदेशनो, निवम घन दोय ज्ञागे थाय रे ॥ एक ज्ञाग पोलाणनो घटे, बुटयुं शरीर तेहथी गणाय रे ॥ चतुर० ॥ ३६ ॥ ए घन सिद्धनी अवगाहना, लोक शिखर करे वास रे ॥ समश्रेणीये एक समयमां, ज्योतमां ज्योतनो समास रे ॥ चतुर० ॥ ३७ ॥ रुपातित सिद्ध महरायने, सादि अनंत ज्ञंग कहिये रे ॥ सिद्ध गति अनादि अनंत ठे, एसी अक्षय पदवी लहीये रे ॥ चतुर० ॥ ३८ ॥ अकृत अनुज्ञववंत ठे, अनंत केवळ नाण दर्शन्न रे ॥ चारित्र वीर्य अनंत ठे, ए प्रत्यक्ष प्रमाणे मानुं धन्न रे ॥ चतुर० ॥ ३ए ॥, सोहि सनाथ व्यक्ति धर्मना, अव्याबाध सुखवंत रे ॥ अलख निरंजन अचळ ए, परमानंद ज्ञोगी महंत रे ॥ चतुर० ॥ ४० ॥ एवंज्ञूत नय पूर्णता, सनाथ विचारे गवेषी रे ॥ ज्ञान शीतळ कहे पामीये, शुद्धात्म अनुज्ञव पेखी रे ॥ चतुर० ॥ ४१ ॥

॥ सज्जाय ॥ ६ ठी ॥ मधु बिंदवानी ॥

एक दिवस विषे नेमि कुंवर निज मित्र संघातें आवे ॥

॥ ए देशी ॥

संसार वने चउगति ज्ञव ज्रमण जीवने डुःख मोटुं॥ अनुज्ञव विना, धर्म साधन करीए ते सर्वे ठोटुं ॥ ए आंकणी ॥ मधु बिंदु दृष्टांत चित्त धरीये, अघोर वन चउगतिमां फरीये, तीहां वनगज मारे ते फरीये, संसार वने० ॥ १ ॥ जीव आगळ गज पाठळ दोमे, वमनीचे कूप दीठो दोमे ॥ तेमां लटके वमवाइ दो जोमे, ॥ संसार० ॥ २ ॥

दृष्टि नीची करे कुप खाडे, अहि च्यार अजगर एक मुख फाडे ॥ नय लाग्यो ऊरध मुख चीस पाडे ॥संसार० ॥३॥ कापे मुषक दो वडवाइ जोवे, श्याम उज्जळ वर्ण जीवित खोवे, वड पाडण गज गर्जित होवे, ॥ संसार० ॥ ४ ॥ वड कंपे ऊनो स्थिर खडे, मधपूडे वेठेली त्यां मखीयां ऊडे ॥ अंगे वळगे ते डुःखथी रडे ॥ संसार वने० ॥ ५ ॥ ए मधपूडो तीहां फाटीयो, मध झरे पडे विंदु नाके लीयो ॥ चाटी स्वाद लहंतां दुःखटळीयो ॥ संसार वने० ॥ ६ ॥ एणे समे गगन विमानमां, विद्याधर पत्नी आणंदमां ॥ वेसी जावे इच्छीत स्थानमां, संसारवने० ॥ ७ ॥ एणे दीठो कूपे जीव दुखीयो, कहे विद्याधरी काढी करो सुखीयो, एने लावो इहां ए न रहे नूखियो, संसारवने० ॥ ८ ॥ कहे विद्याधर तुं सुण प्यारी, ए वचन न माने हितकारी ॥ दुर जातां काळकूप नहीं सारी, संसार वने० ॥ ए ॥ पुनरपि वोले तिहां कने, विद्याधर उतरे. स्थिर मने. ॥ कहे आवी वेसो नाइ विमाने, ॥ संसारवने० ॥ १० ॥ ए वचन न माने विकळ नारी, कहे विंदु लइ आवुं मन ठारी, ऊंचुं जुए ए मधपुडे मुख धारी, संसार वन० ॥ ११ ॥ एम पुनरपि विंदु आवे, लइ चाटे स्वादें मन नावे ॥ नीकळे नहीं दुख नुली जावे ॥ संसारवने० ॥ १२ ॥ एने मुकी विद्याधर जावे, कह्यो नय उपनय दाखुं नावे ॥ तीहां ज्ञान शीतळ आनंद पावे ॥ संसारवने० ॥ १३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥ साधुजी समता आदरो ॥ ए देशी ॥

चेतनजी शुद्ध अनुभव करो, तीहां निज पर भिन्नता थाय मेरे लाल ॥ टळे परसंगीपणुं, उपयोग स्वरूपे प्रगटाय मेरे लाल ॥ चेतनजी शुद्ध अनुभव करो ॥ आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ ए साधन शीवपंथनुं कह्युं, एथी चउगति छुटे संसार ॥ मेरे लाल०॥ द्रव्य भाव नोकर्मने हणी, थाय सिद्धि वधु भरथार ॥ मेरे लाल ॥ चेतनजी० ॥ २ ॥ हवे उपनय अर्थ मूळ ढाळनो, कहुं समजो चतुर सुजाण ॥ मेरे० ॥ वन चउगति सोइ मोटकुं, पुनर्भव भ्रमण प्रमाण ॥ मे० ॥ चे० ॥ ३ ॥ दुःख अशाता कीजीये, गज ते काळ मारण हार ॥ मेरे० ॥ वड ते आयुष भाखीयुं, कूप काय जोग इंद्रि संसार ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ४ ॥ वडवाइ श्वासोश्वास छे, अहि चार कषाय कहाय ॥ मेरे० ॥ अजगर मोह ने किजीये, मूषक पक्ष शुक्ल कृष्णाय ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ५ ॥ मखीयां कुटुंब परिवार ते, वळग्युं अनुकुळ प्रतिकूळ ॥ मेरे० ॥ खेद क्लेश करी काळ निरगमे, ए तो जाणीये पासानुं शुळ ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ६ ॥ मधु बिंदु विषय सुख जाणीये, पंचइंद्रि विषय अभंग ॥ मेरे० ॥ रागद्वेष एहथी वधे, तेने माने सुख बेठो रंग ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ७ ॥ विद्याधर सोही सद्गुरु, गगन निरालंब ध्यान तरं ॥ मेरे० ॥ विमान ते धर्म जाणीये, पतनी ते सुबुद्धि हितकर ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ८ ॥ जावे इच्छित ते मुक्तिपुरी, दीठा सावद्य

कूपे डुःखी जीव ॥ मेरे० ॥ सुबुद्धि कहे काढो दया करी, लावो निर्वद्य विमाने करो शीव ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ए ॥ आतम ज्ञानी विद्याधर कहे, ए नहीं माने मुज केहेण ॥ मेरे० ॥ ध्यान तुरंगे जावुं वेगशुं, फोगट कुण रेवे रेण ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १० ॥ पुनर पतनी प्रेर्यो थको, ध्यान घोकेथी उतरे ते स्थान ॥ मेरे० ॥ कहे संसार कूप थकी नीकळो, वेसो ज्ञान वैराग ते विमान ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ११ ॥ ए माने नहीं विकल घणो, परिग्रह जोग विषयनी मांही ॥ मेरे० ॥ सद्गुरु तीहां समजावता, दुर्गति संसार राग त्यांही ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १२ ॥ ते कारण तजीए प्रेमथी, जेम कांचळी उतारे सर्प ॥ मेरे० ॥ फरी मनमां नवी लावीए, एक ग्रहीये संयम महा तप ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १३ ॥ ए वचन सुणे इंद्रि गुणे, न चिंतवे हृदयनी मांही ॥ मेरे० ॥ हिताहित समजे नहीं, गुरु उपदेश गुण नहीं त्यांही ॥मेरे० ॥ चे० १४ ॥ फरी स्वर्गनां सुख गुरु दाखवे, कहे पामो तजीने संसार ॥ मेरे० ॥ देवांगना ऋद्धि लांवे आयुषे, करो जोग दिक्षा लेइ जीव तार ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १५ ॥ ए वचन सुणी मन चिंतवे, मीठुं लाग्युं मोहित थयुं मन ॥ मेरे० ॥ संसार राग कूप नवी टळे, मोह वळग्यो न छुटे जेम जन्न ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १६ ॥ कहे आगळ संसार जोगशुं, हाल जोगवुं अनुकूळ सुख ॥ मेरे० ॥ दुःख नजरे नथी आवतुं, मिथ्यात्वी माने सुख ए तो दुःख ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १७ ॥ एम समजी ध्यान घोके चढी, गुरु गया जाव

अध्यात्म त्यांही ॥ मेरे० ॥ अक्रुत्य अनुनव पामीया, हुइ व्यक्ति अनंत गुण मांही ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १७ ॥ तेमां मुख्यता केवळज्ञाननी, सद्नूत शुद्ध क्षायक तेह ॥ मेरे० ॥ परमातम पद ए मोटको, तीहां जली गइ कर्म खेह ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १ए ॥ निरंजन सिद्ध निराकार ए, परमानंद ज्योति अनंत ॥ मेरे० ॥ अव्याबाध सुख अनुनवे, अविनाशी अचळ शीवकंत ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ २ ॥ तुंही अलख अगोचर माहरे, कहे ज्ञान शीतल सुणो सिद्ध ॥ मेरे० ॥ ते दुःख साले ठे अति घणुं, दुःख जाय जब देखुं तुज ऋद्ध ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ २१ ॥

॥ कळश ॥

एम हरखे गायो, ज्ञान पायो, मधुबिंदु विचारए ॥ तेह तणी दो ढाळो कीधी, समजी लहो नव पार ए ॥ १ ॥ संसार दुखनुं मूळ ठे, हानि सुखनी थाय ए ॥ ते कारण अंतर्दृष्टियें, तजीये संसार रागए ॥ २ ॥ आतमज्ञानी गुरु जोइने, दिक्षा लियो नवि हित ए॥ ज्ञान शितळ निजद्रव्य नावे, आणंद लहो सिद्ध खेत ए ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥ सर्व ॥ ३७ ॥

॥ सज्जाय ॥ ७ ॥ मी माळा आरोपणनी ॥

॥ तपशुं रंग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

समकित मूळ गुण माळा आरोपण, गुरु निर्ग्रंथ निश्रायें थाय रे ॥ उपधान वहीने पेहे रे, ते श्रावक श्राविका कहाय रे ॥ माळा आरोपण रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ माळा

मूळ भेद पंच परमेष्ठि, उत्तर गुण एक सत आठ रे ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि पद त्रीजे, उपाध्याय साधु गुण कंठ पाठ रे ॥ माळा० ॥ २ ॥ अरिहंत प्रथम परमेष्ठि, गुण वार उज्ज्वल वरणे रे ॥ तीहां घाति चउ कर्म हणीने, अनंत चतुष्टी प्रगट निरणे रे ॥ माळा० ॥ ३ ॥ सिद्ध पद परमेष्ठि बीजा, आठगुणे रक्त वरणे रे ॥ कार्मण कर्म रहित पुद्गलथी, मूळ रुप प्रगट लीयो शरणे रे ॥ माळा० ॥ ४ ॥ आचार्य परमेष्ठि त्रीजा, छत्रीस गुणे पीत वरणे रे ॥ षट् दर्शन शास्त्रने जाणे, सही संयम श्री तस परणे रे माळा० ॥ उपाध्याय परमेष्ठि चोथा, पंचवीश गुणे नील वरणें रे॥ द्वादशांगी सिद्धांतनी पेटी, भणे भणावे खपी जो रहे शरणे रे ॥मा०६॥ साधु ते पंचम परमेष्ठि, सतवीस गुणे श्याम वरणे रे॥ निर्दोषी मूळ व्रत सदाये, दोष लागे तो उत्तर गुण हणेरे॥ माळा० ॥ ७ ॥ आचार्य उपाध्यायने साधु, अप्रमत्त ठाणे पद पावे रे ॥ प्रमाद ठाणे आवे नहीं तो, श्रेणी मांडी अरिहंत सिद्ध थावे रे ॥ माळा ॥ ८ ॥ पंच परमेष्ठि गुण प्रमाणे, माळामां कीधा सही गुच्छारे ॥ द्वादश उज्वळ आठ रक्त ए, पीत छत्रीस खील्या रुडा अतुच्छारे॥ माळा० ॥ ९ ॥ नीला पंचवीश श्याम सत्तावीस, एम पंचवरणी माळा रे ॥ एक सत्तने आठ गुच्छानी, शोभे अद्भूत पेहेरी धर्म लालारे॥ माळा० ॥ १० ॥ माळा गुण घट अंतर मांहि, अनुभव भुवने आवे रे ॥ समभाव वृत्तिये तद्गत खेले, गुणगत उपयोग परिणमावेरे॥ माळा० ॥११॥ उच्छव महो-

ભવ અધિકો ઘટમાં, અનહદ વાજાં વાજેરે ॥ સહસ સૂર્યોદય તેજે તપતા, ત્યાં અનુભવ જ્ઞાની વિરાજેરે ॥માળા० ॥ ૧૨ ॥ ઇત્યાદિ ગુણ ઘટંતરમાં આવે, નય વ્યવહાર નિશ્ચે બેહુ ભાવેરે ॥ વ્યવહારે ઉપાધિ હણતાં, નિશ્ચય તદૂગત ગુણ પ્રગટાવેરે ॥ માળા० ॥ ૧૩ ॥ બાહ્ય કલ્પ કરણી વ્યવહારે, દેખી મૂઢ રંજન થાવે રે ॥ અંતર કરણી રંજન ચતુર નર, એમ સિદ્ધાંતી સહી ગાવે રે ॥ માળા० ॥ ૧૪ ॥ અંતર ગુણ માળા જે પેહેરે, હું તસ પ્રણમું પાયારે ॥ તેથી જ્ઞાન શીતળતા લહીયે, ગુણ ગાતાં ગુણ વૃદ્ધિયે સવાયારે ॥માળા०॥૧૫

॥ સજ્ઝાય ૮ મી લઘુતા વિચારની ॥

॥ ચતુર નર સામાયક નય ધારો ॥ એ દેશી ॥

ચતુર નર લઘુતા વૃત્તિ પેખો, લઘુતાએ સુખીયો ગુરુતાએ દુઃખીયો, જીવ જગતમાં દેખો ચતુરનર ॥ લઘુતાવૃત્તિ પેખો ॥ એ આંકણી ॥ ગાથા ॥ ૧ ॥ લઘુતાએ ઉપશમ આવે, મોહ પ્રકૃતિ દબાવે ॥ તીહાં સમકિત ચારિત્ર લહીએ, એ શીવ સુખ કારણ થાવે ॥ ચતુર० ॥ ૨ ॥ ગુરુતામાં માનનો વાસો, મદ મોટપમાં ભરાણો ॥ વાલ્યો ન વળે પથ્થર થંભો, એમ માન ન ગોમે જાણો ॥ ચતુર० ॥ ૩ ॥ મોટપ કરતાં ભોટપ થાવે, દુર્ગતિ દીનતા પાવે ॥ એસો જાણી મોટપ મેલો, એમ સિદ્ધાંતી સહી ગાવે ॥ ચતુર० ॥ ૪ ॥ લઘુતા કરતાં વિનય આવે, બોધિ બીજ તીહાં પાવે ॥ વિનય રહિતને ગુણ ન થાવે, ગુરુવાઇ અનમ્ર કહાવે ॥ ચતુર० ॥ ૫ ॥ લઘુતા ચારિત્રનું અંગ, ચતુર ગ્રહો તુમે ભાઇ ॥

मोह अंग मोटपने टालो, ए पाप प्रकृति दुःखदाइ ॥चतुर० ॥ ६ ॥ उपशम भावे परमां पेसे, परथी छुटे नांहि॥ ते कारण उपशम आदरीये, लहीए निज घर लघुता त्यांहि ॥ चतुर० ॥ ७ ॥ उपाधि रोकण अति बळीयो, उपशम भाव कहावे ॥ उपाधि एक ध्वंस करणकुं, ज्ञान वझो आगु थावे ॥ चतुर० ॥ ८ ॥ उपशम श्रेणीये उपशम आगु, ठाण एकादशमे अटके॥ अंतर महुरत एकज रहेवे, तीहांथि उदय आवीने पटके ॥ चतुर० ॥ ए ॥ क्षपक श्रेणीये ज्ञान आगु, उपशम पाछळ लागु ॥ उपशमे उदय उपाधि अव्यापक, उपाधि हणे ज्ञान जागु ॥ चतुर० ॥ १० ॥ घाति कर्म उपाधि खुटे, सत्ता उदय न लाधे ॥अरिहंत सजोगी एही, आयु छेके योग रोध साधे ॥ चतुर० ॥ ११ ॥अघाति चउ कर्म अभावे, सिद्ध सनातक थावे ॥ ज्ञान शीतळ ए निरंजन निर्मळ, समश्रेणीये सिद्ध सधावे ॥चतुर०॥१२॥

- सज्झाय ॥ ९ ॥ मी ॥ आयु अथिरनी ॥

॥ ऋषभनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी. ॥

आयुष्य तुटयाने सांधो को नहीं, चतुर चित्तमां चेतोरे ॥ काळ क्षण क्षण आयु छेदतो, छेल्ली क्षणे मरण देतो रे ॥ आयुष्य त्रुटयाने सांधो को नही ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ ते कारण प्रमाद परहरो, ग्रहो स्वरूप उपयोगरे ॥ ज्ञान दर्शनादि तीहां संपजे, करे सकाम निर्जरा निरोगरे ॥ आयु० ॥ २ ॥ मिथ्यात्व कषाय जीहां टळे, टळे अज्ञान अंतरायरे ॥ रागद्वेष मोह सवि टळे, तीहां क्षीण

मोह वीतराग थाय रे ॥ आयु० ॥ ३ ॥ ए निरोगी पुनरपि मरे नहीं, न जन्मे चउगति संसाररे ॥ केवळनाण दर्शण लही, अमरपद सिद्ध निरधाररे ॥ आयु० ॥ ४ ॥ एम आयुष अथिर विचारतां, अप्रमत्त ठाण न छोडेरे ॥ क्षपक श्रेणि अपूर्वे मांडीने, शुक्लध्याने कर्म सवि तोडेरे ॥ आयु० ॥ ५ ॥ जन्म जरा मरण काळथी, कह्यो छुटवानो उपायरे ॥ ज्ञान शीतळ करी जे लहे, ते जीवन मुक्त कहायरे ॥ आयु० ॥ ६ ॥

॥ इति सज्झाय अधिकार संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री गुरु भक्तिनो रास लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥

प्रणमुं श्री गुरु रायने, बोधि बीज दातार ॥ शिव सुख हेतु ए भला, मोह विदारण हार ॥ १ ॥ गुरु भक्ति गुण गाइशुं, रास रचुं मनोहार ॥ ढाळ बंध रचना करुं, त्यां प्रमोद भावना सार ॥ २ ॥ गुरुगुण रत्न चिंतामणी, गुरु वच हे रसकूप ॥ गुरु ज्ञान पंथ शीवनो, गुरु अनुभव शीव रूप ॥ ३ ॥ गुरु दर्शन पूरव दिशी, गुरु मुख पुनमचंद ॥ गुरु विनय मूळ धर्मनुं, गुरु शीव सुखकंद ॥ ४ ॥ गुरु आज्ञा पारस मणी, गुरु शिक्षा सुर कुंभ ॥ गुरु रागथी सिद्धि ऋद्धि, गुरु स्मरण चित्त शुभ ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ॥ १ ॥ ली ॥

समुद्र विजय कुळ चंदलो जीन वंदिये ॥ ए देशी ॥

वस्तु सत्ताना जाण रे ॥ गुरु वंदीये ॥ हुकम मुनि

जसनाम सदगुरु वंदीए ॥ ओळखावे वस्तु प्रते ॥ गुरु० ॥ सत्ता सहित हित काम॥ सदगुरु० ॥१॥ गुण पर्याय भाजन सही॥ गुरु० ॥ एक रुप त्रण काळ ॥ सदगुरु० ॥ तेह द्रव्य निज जातिनो ॥ गुरु० जश नहि भेद विचार ॥ सदगुरु० ॥ २ ॥ धर्म कहीए गुण स्वभावे ॥गुरु०॥ कर्म भावी पर्याय ॥ सदगुरु० ॥ भिन्न अभिन्न त्रिविध सदा ॥गुरु०॥ एक पदारथ पाय ॥ सदगुरु० ॥ ३ ॥ उपजे वीणसे स्थीर रहे ॥ गुरु० ॥ ए छे वस्तु वखाण ॥ सदगुरु० ॥ उपजवुं विणसवुं ते सही ॥ गुरुवंदीये ॥ पर्याय धर्म ते जाण ॥ सदगुरु० ॥ ४ ॥ स्थिरपणो तीहां द्रव्यनो ॥ गुरु० ॥ पलटे नहीं निरधार ॥ सदगुरु० ॥ अवगाहना सर्व द्रव्यनी ॥ गुरु० ॥ गुण पर्याय प्रदेश धार ॥ सदगुरु० ॥ ५ ॥ तेहीज सत्ता द्रव्यनी ॥ गुरु० ॥ वीणसे नहीं त्रण काळ ॥सदगुरु०॥ द्रव्यें द्रव्य मिले नहीं ॥गुरु०॥ असहाय अनादि निहाळ ॥ सदगुरु० ॥ ६ ॥ निज सत्तामय द्रव्य छे ॥ गुरु० ॥ परसत्ता अहं न कदाय ॥ सदगुरु० ॥ द्रव्यरुप छति कार्यनी ॥ गुरु० ॥ तिरोभाव शक्ति सदाय ॥ सदगुरु० ॥ ७ ॥ आविरभावे निपजे ॥ गुरु० ॥ व्यक्ति गुण पर्याय ॥ सदगुरु० ॥ कार्य कारण निज द्रव्य छे ॥ ॥ गुरु० ॥ परद्रव्य अकारण अकार्य ॥ सद० ॥ ८ ॥ छति पणे स्व द्रव्य छे ॥ गुरु० ॥ अछति पणे परद्रव्य ॥ सद० ॥ एम अस्ति वे वस्तुनी ॥ गुरु० ॥ रही छे सर्व द्रव्य ॥ सदगुरु० ॥ ए ॥ द्रव्य स्वभावे नित्य छे ॥ गुरु० ॥ पर्याय

स्वज्ञावे अनित्य ॥ सदगुरु० ॥ नित्य अनित्य एक वस्तुमां ॥ गुरु० ॥ ज्ञाषे ज्ञानी विनित ॥ सद० ॥ १० ॥ स्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाळथी ॥ गुरु० ॥ स्वज्ञाव सहित चार सत्य ॥ सदगुरु० ॥ परद्रव्य परखेत्र परकाळथी ॥ गुरु० ॥ परज्ञाव ए चार असत्य ॥ सद० ॥ ११ ॥ द्रव्य पदारथ एक ठे ॥ ॥ गुरु० ॥ तेमां गुण पर्याय अनेक ॥ सद० ॥ गुण पर्यायमां एक ठे ॥ गुरु० ॥ द्रव्य पणुं ते ठेक ॥ सदगुरु० ॥ १२ ॥ शक्ति ज्ञाव अव्यक्तव्य ठे ॥ गुरु० ॥ वक्तव्य व्यक्ति ज्ञाव ॥ ॥ सदगुरु० ॥ अज्ञव्य स्वज्ञाव पलटे नहीं ॥ गुरु० ॥ पलटे ज्ञव्य स्वज्ञाव ॥ सद० ॥ १३ ॥ पर्यायार्थक ज्ञेद वस्तु ठे ॥ ॥ गुरु० ॥ द्रव्यार्थक अज्ञेद ॥ सदगुरु० ॥ उज्ञय धर्मी द्रव्य ठे ॥ गुरु० अविरोधि अठेद ॥ सद० ॥ १४ ॥ एम स्याद्वाद लक्षण मयी ॥ गुरु० ॥ द्रव्य सत्ता गुणनी खाण ॥ सद० ॥ इत्यादिक वहु ज्ञेदथी गुरु० ॥ वस्तु सत्ता उंळखाण ॥ सद० ॥१५॥ ते वस्तु षट् ज्ञेद ठे ॥ गुरु० ॥ एक जीव अजीव पांच ज्ञेद ॥ सद० ॥ एक रुपी चार अरुपी ॥ गुरु० ॥ तेने वरणवतां अखेद ॥ सद० ॥१६॥ आ ढाळने पूरण करी ॥ गुरु० ॥ ज्ञेद कहेशुं बीजी ढाळ मांही ॥ सद० उलट अंगे अति घणो ॥ गुरु० ॥ ज्ञान शीतळ उठांही सद० ॥ १७ ॥

दुहा.

वस्तु सत्ता गुण दाखीयो, दाख्यो स्याद्वाद धर्म ॥
द्रव्य पर्यायने जाणतां, टळे मिथ्यामति ज्रर्म ॥ १ ॥

ढाळ ॥ २ ॥ जी

॥ देशी चंद्रावळानी ॥

हुकम मुनिसर वंदीये रे षट् द्रव्यना जाण ॥ सत्ता गुण पर्यायनेरे, जाणवा दिनकर जाण ॥ त्रुटक ॥ जाणवा दिनकर जाण स्वभावे, उपयोग जोमे न विभावे ॥ तेहीज आतमज्ञानी कहीए, ए विण अवर न ज्ञानी लहीए॥ वंदो भविजन एह ॥ ए आंकणी० ॥ १ ॥ धर्मास्तिकाय पहेलो कह्योरे, बीजो अधर्मास्तिकाय ॥ आकाशास्ति त्रीजो कह्योरे, चोथो काळ कहाय ॥ त्रुटक ॥ चोथो काळ कह्यो उपचारे, छता पणो तेमां न विचारे ॥ पांचमो द्रव्य पुद्गलास्ति कहीए, छठो द्रव्यजीवास्ति लहीये ॥ वंदो० ॥ २ ॥ षट् द्रव्य नाम दाखीयां रे, हवे कहुं तास विचार ॥ प्रथमना त्रण द्रव्यनो रे, साधर्मिकपणो धार ॥ त्रुटक ॥ साधर्मीकपणो धारते दाखुं, अरूपी अचेतन अक्रिय भाखुं ॥ ए त्रण गुण त्रण द्रव्यमां सरखा, एक गुणे भिन्न धरमे परख्या ॥ वंदो० ॥ ३ ॥ गति हेतु धरमास्ति छेरे, स्थिति अधर्मास्ति काय ॥ अवकाश धर्मी आकाश छे रे, एम भिन्न धर्मी कहाय ॥ त्रुटक० ॥ एम भिन्न धर्मी कहाय स्वभावी, एक गुणे ते चित्तमां लावी ॥ पर्याय चार हवें ते दाखुं, उपयोग स्थिर ठामे राखुं ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ खंध देश प्रदेश छेरे, अगुरु लघु संयुक्त ॥ ए पर्याय चार दाखीयारे, ते समजवा जुक्त ॥त्रुटक० ते समजवा जुक्त ते सारो, धर्म अधर्म खंध लोकमां धारो॥

आकाश खंध लोकालोक त्यांहि, अलोक अंत कह्यो नहीं क्यांही ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ उर्ध्व अधो तिर्च्छादिके रे, कल्पित देश कहाय ॥ धर्म अधर्म बे द्रव्यमां रे, असंख्य प्रदेश समाय ॥ त्रुटक० ॥ असंख्य प्रदेश समाय लोकमां, आकाश द्रव्य रह्यो लोकालोकमां ॥ अनंत प्रदेशी ते खंध कहाय, अगुरु लघु चोथो पर्याय ॥ वंदो० ॥ ६ ॥ चोथो द्रव्य ते काळछेरे, अवस्तु रूप जेह ॥ ते मान्यो उपचारथीरे, दाखुं तस गुण गेह ॥ त्रुटक० ॥ दाखुं तस गुण गेह ते चार, अरूपी अचेतन अक्रिय धार ॥ नवा पुराण वर्त्तना लक्षण, काळ गुण ए कहे विचक्षण ॥ वंदो०॥ ७ ॥ काळ पर्याय चार दाखवुं रे, पेहेलो अतित अनंत ॥ अनागत अनंत छे रे, वर्त्तमान समय लहंत ॥ त्रुटक० ॥ वर्त्तमान समय लहंत अळगो, बीजो समय तेने नहीं वळग्यो ॥ अगुरु लघु चोथो पर्याय, काळ द्रव्य मांहि ते समाय ॥ वंदो० ॥ ८ ॥ अजीव अरूपी वर्णव्यारे, चार द्रव्य संयोग॥ जीव पुद्गल बाकी रह्या रे, ते दाखुं उपयोग ॥ त्रुटक० ॥ ते दाखुं उपयोग लगावी, त्रीजी ढाळमां ते भाव लावी ॥ ढाळनी इहां थइ पूरणता, ज्ञान शीतळ उपयोगनी लीनता ॥ वंदो० ॥ ९ ॥

दुहा.

अजीव अरूपी दाखीया, चार द्रव्य संयुक्त ॥
जीव पुद्गल बाकी रह्या, ते दाखुं भली जुक्त ॥ १ ॥

ढाळ ॥ ३ ॥ जी.

॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनिसर वंदीये रे, जाणवा पुद्गल जीव ॥ हित उपगारी अति ज्ञलारे, अधिक ज्ञानी ए शीव ॥ जगतगुरु वंदियेरे ॥ परमानंदनो ए कंद ॥ जगत० ॥ ए आंकणी गाथा ॥ १ ॥ पुद्गलनी आठ वर्गणा रे, तेणे चेतन वंधाय॥ चेतन निज गुण नवि लहेरे, दाखुं उपयोग लाय ॥ जगत० ॥ २ ॥ उदारिक वर्गणा पेहेली कहीरे, वीजी वैक्रिय जाण ॥ त्रीजी आहारक वर्गणारे, चोथी तेजस वखाण ॥ जगत० ॥ ३ ॥ ज्ञाषा वर्गणा पांचमी रे, श्वासोश्वास छट्टी कहेवाय ॥ मनोवर्गणा सातमीरे, आठमी कार्मण थाय ॥ जगत० ॥ ४ ॥ प्रथमनी चार वर्गणारे, वादर कही जीन राय ॥ पाछलनी चार वर्गणारे, ते सूक्ष्म चित्त लाय ॥ जगत० ॥ ५ ॥ वादरमां गुण वीसछेरे, वरण पांच रस पांच ॥ दोय गंध फरस आठछेरे, ए वीस गुण नहीं खांच ॥ जगत० ॥ ६ ॥ सूक्ष्ममां सोळ गुणछेरे, हिण फरस छे चार ॥ ते डुखदाता जीवनेरे, वंधन जाळ विचार ॥ जगत० ॥ ७ ॥ अविनाशी चेतनछे रे, परमानंद स्वरूप ॥ अनंतज्ञान दर्शण ज्ञर्यो रे, अनंत चरण वीर्य रूप ॥ जगत० ॥ ८ ॥ अव्यावाध अनंतछेरे, अमूरती अरूप ॥ अटळ अवगाह अगुरु लघुरे, तेहीज धर्म प्ररुप ॥ जगत० ॥ ९ ॥ ए धर्म चेतननुं रे, धरमी आतमाराम ॥ तेने हणे ते दाखवुं रे, कार्मण तेहनुं नाम ॥ जगत० ॥ १० ॥ कार्मण ते आठ कर्मछेरे, घाति

चेतन धर्म ॥ पुद्गल भोगी चेतन थयो रे, दाखुं तेहनो मर्म ॥जगत०॥११॥ ज्ञान घाति ज्ञानावरणी रे, दर्शनावरणी हणे दरशन ॥ चारित्र घाति मोहछेरे, अंतराय पांच टळे प्रसन्न ॥ जगत० ॥ १२ ॥ लब्धि पांच क्षायक भावनी रे, दान लाभ भोग उपभोग ॥ वीर्य गुण प्रगटे चेतनारे, तेनो घाति अंतराय रोग ॥जगत०॥१३॥ अव्याबाध वेदनी हणेरे, अमूर्त्ति हणे नाम कर्म ॥ उदारिकादिक सात वर्गणारे, रचना पुद्गल धर्म ॥ जगत० ॥ १४ ॥ तेहीज नाम करम थकी रे, चेतन पुद्गल रूप ॥ अटळ अवगाह आयु हणेरे, गोत्र हणे अगुरु लघु भूप ॥ जगत० ॥ १५ ॥ एम विनाश पुद्गल थकी रे, चेतन धर्मे विघन ॥ तेथी चेतन पुद्गल संगेरे, मिलण विखरण सलग्न ॥ जगत० ॥ १६ ॥ परसंगे संसारी थयो रे, चउगति भटकण चाल ॥ आतम घातिए वर्णव्यो रे, पुद्गल रूप निहाळ ॥ जगत० ॥ १७ ॥ ॥ टाळे परसंगी पणुं रे, अनुभवे चेतन धर्म ॥ ज्ञान शीतळ शीवपद वरे रे, हणि कार्मण आठ कर्म ॥ जगत० ॥ १८ ॥

दुहा.

पुद्गलने जीव दाखिया, ए बेहुनो अनादि संबंध
ते जोगे संसार स्थिर छे, तजतां आत्म अबंध ॥१॥

॥ ढाळ ॥ ४ चोथी ॥

॥ तप शुं रंग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

गुणी जीन वंदो मुनि समकिती, हुकम मुनि जस नामरे ॥ समकित गुण निश्चळ करवाने, उपगारी गुण

धामरे ॥ गुणीजन वंदो रे ॥ वंदो वंदो रे स्थविर ज्ञगवान ॥ डुरित निकंदो रे ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ वस्तुने वस्तुपणे राखे, तेहीज समकित धर्म रे ॥ अवस्तुने वस्तु माने, ते मिथ्या अधर्म रे ॥ गुणीजन० ॥ २ ॥ वस्तु ड्रव्य षट शास्त्रे ज्ञाष्या, धर्म अधर्म आकाश रे ॥ काळ पुद्गल पांच अजीव अचेतन, एक जीव चेतन्नरे ॥ गुणीजन० ॥ ॥ ३ ॥ ते चेतन सत्ताये जोतां, सिद्धनो साधर्मी रे ॥ गुण पर्याय स्वज्ञाव छे सरखा, निर्मळ छे अकर्मी रे ॥ ॥ गुणीजन० ॥ ४ ॥ ए वचन छे संग्रह नयनुं, शक्ति ज्ञाव अपेक्षी रे ॥ सिद्ध संसारीमां अंतर नांहि, त्रणकाळ शुद्ध लक्षी रे ॥ गुणीजन० ॥ ५ ॥ चेतन वस्तु चेतन ज्ञावे, वस्तुपणे सद्दहीए रे ॥ तेहीज समकित शास्त्रे दाख्युं, ज्ञाख्युं जीनेंद्र ते कहीये रे ॥ गुणीजन० ॥ ६ ॥ अवस्तुने वस्तु माने, तेह ज्ञाव हवे दाखुं रे ॥ कर्म जनित ज्ञाव पामीने, माने जीव ते ज्ञाखुं रे ॥ गुणीजन० ॥ ७ ॥ उद-यिक ज्ञावनी योगता जोइ, वस्तु पोतानी माने रे ॥ ममता तृष्णा राखे काजी, रंग धरे एक ताने रे ॥ गुणीजन० ॥ ८ ॥ ते वस्तुने वस्तुपणे छे, पुद्गल द्रव्यना धरमी रे ॥ तेने पोते जीव माने छे, ते मिथ्या अधरमी रे ॥ गुणीजन० ॥ ॥ ए ॥ मिथ्यात्व समकित ज्ञेद यथारथ, द्रव्य स्वज्ञावे दाख्या रे ॥ जीव स्वज्ञावे धर्म सद्दहीए, ते समकित एम शाख्या रे ॥ गुणीजन० ॥ १० ॥ विना विमानीक आयु न बांधे, कर्मग्रंथे समकिती रे ॥ समकिती देव मनुष्यनुं बांधे,

रोकी तिर्यंच नरक गतिरे ॥ गुणी जन वंदो रे ॥ ११ ॥
नरक तिर्यंचनो बंध मिथ्यात्वे, तीहां दुःखना दरिया रे ॥
एम जाणी मिथ्यात्वने हणीयो, तेणे बे द्वार बंध करीयारे॥
॥गुणी० ॥ १२ ॥ पुद्गलीक भावे धर्म करे छे, तप जप
कीरीया झाझी रे ॥ तेथी मिथ्यात्व कृश न थावे, भमणाये
भूल्यो बाजी रे ॥ गुणी ॥ १३ ॥ श्रद्धा ज्ञान निर्मळ उप-
योगे, निज स्वरूपे वर्त्ते रे ॥ रंग चोळ मजीठना सरखो,
उपद्रवे नव पलटे रे ॥ गुणी० ॥ १४ ॥ कदापि आवरण
उदयागत, मिथ्यात्व पाछुं आवे रे ॥ तो श्रद्धा विपरीत क-
रावे, अज्ञान थाय ज्ञान जावे रे ॥ गुणी० ॥ १५ ॥ थोडा
काळे ते क्षय थावे, संवेग ज्ञान स्वभावे रे ॥ ज्ञान वीर्य
उपयोग लगावी, हणशे कर्म विभाव रे॥ गुणीजन० ॥१६॥
इहां संसार विनाश करीने, सिद्ध हुवो निजरूप रे॥ सादि
अनंतो काळ आनंदमें, वर्त्ते चेतन भूप रे ॥ गुणीजन० ॥
॥ १७ ॥ ए दशा समरे जे मुनिश्वर, तेहीज आतम अ-
र्थी रे ॥ तेने त्रण काळ वांदुछुं, ज्ञान शीतळ शुद्ध घरथी
रे ॥ गुणी० ॥१८॥

॥ दुहा ॥

वस्तुने वस्तु पणे, जाणे त्यां लहे समकित ॥
अवस्तु वस्तु कहे, ते मिथ्या भमभीत ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ ५ ॥

॥ मेंदी रंग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

वंदो भवियां मुनि संवेगी, हुकम मुनी दृढ रंगी रे ॥

संवेग रंग तरंग वतावे, शुद्धातम गुण संगी रे ॥ संवेग रंग लाग्यो ॥ रंग लाग्यो चोळ मजीठ ॥ संवेग रंग लाग्यो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ संवेग समकित एकज कहीए, त्रण नेद मूळ दाखुं रे ॥ क्षय उपशम उपशमने क्षायक, उपयोग गुण तीहां राखुं रे ॥ संवेग० ॥ २ ॥ चेतन कर्म अनादि संबंधे, एक पणे न्निन्न सत्ता रे ॥ जीव सत्तामां जीव रह्यो छे, कर्म वर्गणा पुद्गलतारे ॥ संवेग० ॥ ३ ॥ ते कर्म मूळ आठ न्नेदे, चेतन गुणने हणता रे॥ तेमां मोह अति बळवंतो, लोकाधिपति विरुद धरता रे ॥संवेग० ॥४॥ तेना पुत्र वळी पांच अटारा, चेतन गुणना घाति रे ॥ अंतराय ज्ञाना दर्शनावरणी, तीहां आवे लइ कातीरे ॥संवेग०॥ ॥ ५ ॥ ए सर्वे नाव शत्रु तेमां, मिथ्यात्व अति अटारारे ॥ पापनो बाप दुखनो दाता, जाणीए झेरनो पटारो रे॥ संवेग० ॥ ६ ॥ अनादि मिथ्यात्वी चेतन, ते समकित केम पामे रे॥ सदगुरु संगे विनय विवेके, दृष्टि करे गुरु सामे रे ॥संवेग०७॥ सद्गुरु ज्ञानी न्नेद वतावे, जीव अने पुद्गलनोरे जीव पुद्गल गुण न्यारा दाखे, तीहां चेतन गुणमां मळनो रे ॥ संवेग० ॥ ८ ॥ चेतन गुणमां रंग लगावी, उपयोग विस्तारे रे ॥ ज्ञान ध्यान वीर्य शक्तिये, मिथ्यात्व झेर उतारे रे॥संवेग०॥९॥ झेर रहित मिथ्यात्व हुवो जव, ते समकित क्षय उपशमरे ॥ उत्तर न्नेद विचित्र प्रकारे, आवे जावे वार असंख्यरे ॥ संवेग० ॥ १० ॥ छासठ सागर झाझी स्थिति, उत्कृष्टी सिद्धांतेरे ॥ जघन्य अंतर महुरत रहेवे, क्षय उपशम सात

प्रकृतिरे ॥ संवेग० ॥ ११ ॥ अनादि मिथ्यात्वी समकित, क्षय उपशमने पामेरे ॥ सूत्र सिद्धांते वचन छे एस्यो, प्रथम चेतन रामरे ॥ संवेग० ॥ १२ ॥ ए क्षय उपशम भाव देखाड्यो, दृष्टांते समजावुंरे ॥ फेर रहित मिथ्यात्व बताव्यो, खसखसमां फेर न पावुंरे ॥ संवेग० ॥ १३ ॥ सत्ता जोतां फेर पटारो, खसखसनो एक दाणोरे ॥ ते दृष्टांते विवेके समजो, शुं करे चेतन राणोरे ॥ संवेग० ॥ १४ ॥ उपशम क्षायक छठी ढाळमां, आ ढाळनी इहां थइ पूरणतारे ॥ चेतन गुण उपयोगे भावी, त्यां ज्ञान शीतळनी शुद्धतारे ॥ संवेग० ॥ १५ ॥

दुहा.

समकित मोहनी उदयमां, ते क्षयोपशम समकित ॥
चोथा ठाणथी वृद्धिये, चढे सातमे थिर चित्त ॥ १ ॥

॥ ढाळ ६ ठी ॥

॥ सांभळजो मुनि संयम रागे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनीश्वर ज्ञानी ध्यानी, उपशम समकित दाखेरे ॥ ते सुणवाने चालो गुणिजन, सिद्धांत साक्षी राखेरे ॥ हुकम० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आ संसार भव अटवी भमतां, चारगति विसामोरे ॥ अनंत पुद्गल परावर्त्त कीधां, नाव्यां एके कामोरे ॥ हुकम० ॥२॥ कार्य अवसर संसार थाके, अर्द्ध पुद्गलना नाकेरे ॥ सद्गुरु संग मले चेतनने, तत्व रुचि तिहां जागेरे ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ आतम गुण अनुभव स्थिर आवे, रंग चोल लय पावेरे ॥

राचे नाचे चेतन गुणमां, अकृत्य सहज स्वज्ञावेरे ॥ हुकम० ॥ ४ ॥ पुद्गल अनुज्ञव त्याग करीने, अनुज्ञव चेतन धर्मेरे ॥ शुद्ध स्वरूप अनुज्ञव समज्ञावे, ते समकित उपशमरे ॥ ॥ हुकम० ॥ ५ ॥ अंतर महुरत मूळ स्वरूपे, चेतन रस अढळक पीधोरे ॥ परमानंद पदनुं परतानुं, वंछित कारज सिधो रे ॥ हुकम० ॥ ६ ॥ अनंतानुं चउ मिथ्यात्व साथे, ए पांचनो उपशम रे ॥ उदयागत विपाक न आपे, तीहां वळीयो एकदम रे ॥ हुकम० ॥ ७ ॥ स्थिति काळ पूरणना जोगे, उपशम ज्ञाव विनाशी रे ॥ उदयागत मिथ्यात्व हुओ जव, पूर्व रीत तपासी रे ॥ हुकम० ॥ ८ ॥ पमतां सास्वादन स्थिर रहेवे, क्षीर वमन स्वाद लेवे रे ॥ षट आवलि काळ प्रमाणे, मिथ्यात्वे अनंत काळ सेवे रे ॥ ॥ हुकम० ॥ ए ॥ अनंत काळ मिथ्यात्वे रहेवे, अनंत कर्म दळ लेवे रे ॥ स्थिति सागर कोमाकोमी उपर, न वधे सिद्धांत एम केहेवे रे ॥ हुकम० ॥ १० ॥ उपशम सास्वादन आवे तो, पांच वार जीव पावे रे ॥ त्यार पछी ते क्षायक ज्ञावे, एम सिद्धान्ती गावे रे ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ अनादि मिथ्यात्वी परथम, उपशम समकित पामे रे ॥ कर्मग्रंथादिक एम बोले, मिथ्यात्व मळ तीहां वामे रे ॥ ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ उपशम ज्ञाव मने एम सुझ्यो, ज्ञानी कहे ते साचुं रे ॥ अशुद्ध देखो ते शुद्ध करजो, ते वाते घणुं राचुं रे ॥ हुकम० ॥ १३ ॥ उपशम ज्ञाव ते मूळ स्वरूपे, अनुज्ञव महुरत अंत रे ॥ उदवेगता इहां नहीं

लाधे, ज्ञान शीतळ एकंतरे ॥ हुकम० ॥ १४ ॥

॥ दुहा ॥

मिथ्यात्व उदय अज्ञावथी, लहे उपशम समकित ॥
स्थिति महुरत पूरण थये, पमे एम परतित ॥ १ ॥
पमतां क्षयोपशम लहे, सास्वादन कोइ ॥
क्षयोपशम चोथे टके, सास्वादन बीजे सोइ ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ ७ मी ॥

॥ कपट होवे अति उजळुं रे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनीश्वर वंदिये रे, क्षायक समकित वंत ॥ तेह ज्ञावने पामवा रे, उपगारी ए संत रे ॥ प्राणी वंदो ए जगगुरु राय ॥ ए परमानंदनो कंद रे प्राणी ॥ वंदो ए जग गुरु राय ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ क्षायक समकित जव लहे रे, चेतना तजे परधर्म ॥ परधर्मे वळगी रहे रे, जाणो तेहनो मर्म रे प्राणी ॥ वंदो० ॥ २ ॥ पर ते पुदगल ड्रव्यछे रे, धर्म तेना पर्याय ॥ शब्द रूप रस गंधछे रे, फरसादिक गवाय रे प्राणी ॥वंदो० ॥ ३ ॥ एह धरम पुदगल विषे रे, नहीं छे चेतन मांही ॥ तेने ज्ञजे छे चेतना रे, ते दाखुं छुं आंही रे प्राणी ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ श्रोत चेतना शब्दने ज्ञजे रे, चक्षु ज्ञजे वरणने घाट ॥ रस चेतना रसने ज्ञजेरे, घ्राणे गंधनी वाट रे ॥ प्राणी० ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ फरस चेतना फरसने ज्ञजे रे, ए पुदगलना पर्याय ॥ तेने ज्ञजे छे आतमा रे, ते अधर्म छे न्याय रे ॥ प्राणी ॥वंदो०॥ ॥ ६ ॥ पांच इंद्री पुदगलछे रे, जाणंग गुण तेही चेतन ॥

एम व्हेंचण ज्ञाने करी रे, जजे अरूपी रतन्न रे प्राणी ॥ वंदो० ॥ ७ ॥ इहां विजाग न्यारापणुं रे, नहीं पुदगलनो संग॥अंतर करणे अनुजवे रे,तीहां कायकनो रंगरे ॥प्राणी० वं०ঢ॥धर्मी चेतन तेहछेरे,नहीं अधर्मनो प्रवेश॥कायक समकित इहां लह्योरे, हणी मिथ्यात्व नहीं द्वेषरे ॥ प्राणी० ॥ ए ॥ तेना मित्र अनंतानुवंधिरे, चउ मराणा साथ ॥ ए सात प्रकृति क्षय थइरे, टल्यो अनाथ थयो नाथरे प्राणी० ॥ वंदो० ॥ १० ॥ मिथ्यात्व त्रण जेदथी टल्योरे, सत्ता मूळ उच्छेद ॥ समकित पद निर्जय हुउरे, जाखुं उत्तर दोय जेदरे॥. प्राणी० ॥ वंदो० ॥ ११ ॥ स्वपर जाग वेंच्या पेहेलां रे, आयुष्य वांध्युं होय जेह ॥ खंरू श्रेणी पेहेलो जेदएरे, श्रेणी न मांरू तेहरे प्राणी ॥ वंदो० ॥ १२ ॥ सागरोपम तेत्रीस जाजो वसेरे, चउगति संसार जाव ॥ त्रण चार जव ते करेरे, जव स्थिति पाक्यानो दावरे प्राणी ॥ वंदो० ॥ १३ ॥ अखंरू श्रेणी वीजो जेदछेरे, मांरू श्रेणी तरत ॥ कायक जाव दशा जजेरे, एकत्व जावमां ठरत रे प्राणी ॥ वंदो ॥ १४ ॥ तीहां हणे मोहरायने रे, सत्ता मूळ विनाश ॥ अशुद्ध परिणति छेदीने रे, शुद्ध परिणतिमां वास रे प्राणी ॥ वंदो० ॥१५॥ चरण यथाख्यात पामीया रे, पाम्या वीतराग जाव ॥ त्रण कर्म तीहां हएया रे, ए चउघाति अजाव रे, प्राणी ॥ वंदो० ॥ १६ ॥ केवळ ज्ञान प्रगटे तीहां रे, केवळ दर्शन साथ ॥ लब्धि पांच कायक जावनी रे, ए त्रण जुवननो नाथ रे प्राणी ॥ ॥ वंदो० ॥ १७ ॥

गुणठाणुं तीहां तेरमुं रे, वसे उणां पूरव कोड ॥ जघन्य अतंर महुरत रहे रे, आयुष्य खुटे जब ओड रे ॥ प्राणी० ॥ ॥ वंदो० ॥ १८ ॥ आयुकर्म पूरण थयो रे, तीहां हुउ योगनो रोध ॥ चार कर्म अघाति टल्यां रे, टल्यो पुद्गलनो विरोध रे ॥ प्राणी० ॥ वंदो० ॥ १९ ॥ रूपातित पद पामीयारे, समश्रेणिये हुवा सिद्ध॥ ते सिद्धने करुं वंदनारे, ज्ञान शितळनी ए ऋद्ध रे ॥ प्राणी० ॥ वंदो० ॥ २० ॥

॥ दुहा ॥

वेदक करी क्षायक लहे, चोथे वा सातमे ठाण ॥
सात प्रकृति त्यां टळे, आत्म सत्ताथी प्रमाण ॥ १ ॥

॥ ढाळ ८ मी. ॥

॥ राग सारंग ॥

हुकम मुनि महाराज, जगत गुरु हुकम मुनि महाराज ॥ सत भय भंजन, निरभय रंजन, शक्ति निजातम आजे ॥ उपयोग स्वभावे करतां, अति इंद्रिय बळ गाजे ॥ जगत गुरु० ॥ वंदु गीतारथ राज ॥ जगतगुरु हुकम मुनि महाराज ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आ भव परभव मरण वेदना, अनरक्षक अनगुप्त ॥ अकस्मात ए सात भयोने, भेदे ज्ञानी युक्त॥ जगतगुरु० ॥ २ ॥ आ भव भय ते नवविध परिग्रह, वियोग चिंता कहीए ॥ ते भय निवारण मंत्र, निर्भय निजगुण रहीए ॥ जगत० ॥ ३ ॥ निज गुण ज्ञाने स्वपर भिन्न कीजे, आतमा अनंत गुण भरीयो ॥ ते अविनाशी वस्तु अमारी, परवस्तु परहरीउ

॥ जगत० ॥ ४ ॥ परभव भय ते मुज आत्माने, दुर्गति जावुं पडशे ॥ ते चिंता निवारण मंत्रे, जन्म मरण जरा टळशे ॥ जगत० ॥ ५ ॥ ज्ञान कळा निज घटमां लावी, असंख्य प्रदेशमां वसीए ॥ ए गतिये मुक्ति लहीए, चउ गति संसार खसीये ॥ जगत० ॥ ६ ॥ मरण प्राण रहित भय चिंता, हणवा मंत्रने भणीए ॥ अमर थइने कोइ रह्या नहीं, तीर्थंकर अतुल बळ गणीए ॥ जगत० ॥ ७ ॥ ज्ञानादिक गुण भाव प्राण जीव, शाश्वत अविचळ रुपे ॥ त्रण काळमां विनाश हुवे नही, एम जिनेंद्र प्ररुपे ॥ ॥ जगत० ॥ ८ ॥ वेदना भय रोगादिक कारण, कष्ट आशाता आपे ॥ ते भय निवारण मंत्रे भाखे, पूर्व कृत मुज पापे ॥ जगत० ॥९॥ आतमज्ञाने पर भागे व्हेंचीने, शुद्ध स्वरूपने हुं वेदुं ॥ त्यां परमानंद योगनो भोगी, वेदनी कर्म तीहां छेदुं ॥ जगत० ॥ १० ॥ अनरक्षक भय चिंता जागी, मुज रक्षण कोण करशे ॥ ए भय निवारण मंत्र आराधी, चेतन वीर्यने वरशे ॥ जगत० ॥ ११ ॥ द्रव्य स्वभावे त्रणे काले, असहायी जीव ॥ रक्षकभक्षक कोइ न लाधे, सत्ता स्वरूपमय शीव ॥ जगत० ॥ १२ ॥ अनगुप्त भय चोरनी चिंता, सदा सरवदा मनमां ॥ ते भय निवारण मंत्र जपीने, साहासिक धीर एक तनमां ॥जगत० ॥ १३ ॥ ज्ञानादिक गुण पर्याय लक्ष्मी, मुज घर मांहि अनादि ॥ ते धननो कोइ चोर न दीसे, टाळो अनगुप्त भयादि ॥ जगत० ॥ १४ ॥ अकस्मात भय चिंता जागे,

अण चिंतव्युं शुं थाशे ॥ ए चिंता निवारण मंत्रे, सर्व भय मुज जाशे ॥ जगत० ॥१५॥ आदि अंत जेहनो, नहीं होवे नहीं कोइ परनो संगी॥ तीहां भयने शोक न आवे, अखंड आनंदमय रंगी ॥ जगत० ॥ १६ ॥ एम अनुभव ज्ञाननी शक्ति, भय शोकादि छेदे ॥ निर्भय चेतन मूळ स्वरूपे, रमण आनंदमय वेदे ॥ जगत० ॥ १४ ॥ उदयिक भाव पोतानो माने, तीहां भयनो वासो ॥ भेद ज्ञान घट अंतर जागे, तीहां निर्भय पद खाशो ॥ जगत० ॥ १७ ॥ भयनुं स्थानक मिथ्यात्व मोहनी, संसार वास न छुटे ॥ निर्भय स्थानक सम्यक ज्ञानी, क्षीणमां संसार वास तुटे ॥जगत०॥ १९॥ एम जाणी संवेग रंग करवो, अनुभवी वस्तु धर्म ॥ ज्ञान शीतळ उपयोग रमणमां, मुक्ति वरे हणी कर्म ॥ जगत० ॥ २० ॥

॥ दुहा. ॥

सप्त भय ज्ञाने टळे, टळे पर ममता खास ॥
पर पोतानुं मानतां, लहे दुरगति वास ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ ९ मी ॥

तीरथनी आशातना नवि करीये ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनिसर वांदवा भवी जइए, विनय गुणमां रहीए ॥ गुरु सनमुख दृष्टि वहीये, चित्त करीये स्थिर ॥ हुकम मुनीसर वांदवा भवी जइए ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ उपयोगी गुरु अवसरने जाणे, उपदेश करे ते टाणे॥ उग्यो अंतर दिनकर भाणे, छवे वचन रसाळ ॥ हुकम० ॥

॥ २ ॥ प्रश्न कर्युं गुरुरायने अति प्यारुं, मुनिपद जाणवुं सारुं ॥ उपदेश करो हुं धारुं, छंकुं संसार ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ मुनिपद छे मोटको पांच नेदे, परथम मिथ्यात्वने छेदे ॥ पामे समकित निर्वेदे, लीये सदगुरु पास ॥ हूकम० ॥४॥ अध्यातम पक्ष ग्रहीने इहां दाखुं, प्रथम सामायक नाखुं॥ आतम गुण रमणता चाखुं, सहज समाधि मांही॥हुकम० ॥ ५ ॥ परमाद योगे समाधि अवराणी, तेने छेदे जे प्राणी॥ समाधि स्थापे गुणखाणी, उपयोग विशेष ॥ हुकम० ॥६॥ छेदो स्थापन चारित्र ए वीजुं, आतम शुद्ध थाय त्यां रीजुं॥ दाखुं हवे चारित्र त्रीजुं, तीहां वीर्य विशेष ॥ हुकम०॥७॥ परिहार विषय कषायनो इहां थावे, चेतन विशुद्धिमां आवे ॥ परिहार विशुद्धि कहावे, ए त्रीजो नेद ॥ हुकम मुनिसर० ॥ ७ ॥ गुणठाणुं छठुं सातमुं इहां सुधी, चोथो नेद कहुं नली बुद्धि ॥ श्रेणी आरोह विशुद्धि, उपयोगीक नाव ॥ हुकम० ॥ ए ॥ निरालंबी आतमा श्रेणी मांके, आठमेथी चमवा घोमे ॥ परसंगी पणे सव छांमे, शीवपुर प्रयाण ॥ हुकम मुनि० ॥ १० ॥ कर्म प्रकृति थोकमा इहां टाले, उपाधि सघळी वाळे ॥ अरुपी रूप निहाळे, चिदानंद नगवान ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ विशुद्ध नावे चढतां ठाण पामे, सूक्ष्म संपराय ते नामे ॥ अणु लोन उदयगत सामे, ए चोथो नेद ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ यथाख्यात ते पांचमुं हवे नणीये, मूळथी मोहरायने हणीए ॥ क्षायक चारित्र ते गणीए, हणी रागने द्वेष ॥ हुकम० ॥ १३ ॥ ए पांच नेद

मुनिवरा अढी द्वीपे, नाण दरशण तेजे दीपे ॥ विचरे उपयोग समीपे, वंदु वार हजार ॥ हुकम० ॥ १४ ॥ ए मुनिरायनी योग्यता जब लाधे, प्रमोद अतिशय वाधे ॥ वस्तु धर्म कारज साधे, करे हित उपकार ॥ हुकम०॥१५॥ उपगारी ए मोटका दुःख वारे, संसार समुद्रथी तारे ॥ चेतननुं कारज सारे, आपे शीतळ ज्ञान ॥ हुकम०॥ १६ ॥

॥ दुहा ॥

मुनिपद पंच भेदथी, पूरण कार्य यथाख्यात ॥
क्षपक श्रेणीये संपजे, अव्याबाध प्रख्यात ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ १० ॥ मी ॥

॥मोह्या मोह्यारे त्रिभुवन लोक मुनि गुण देखीने॥ ए देशी॥

वंदो वंदो रे भविक जीव सर्व, हुकम मुनि ज्ञानी ॥ ज्ञानी शुद्ध स्वरूप उपयोगी, अनुभवे वस्तु तेहरे ॥ जीव पुद्गल सत्ता भिन्न अलगी, गुण पर्याय भिन्न तेह ॥ हुकम मुनि ज्ञानी ॥ ए आंकणी० ॥ गाथा ॥ १ ॥ जीव सत्ता मूळ स्वरूपे, निर्मळ सिद्ध समानरे ॥ कर्म जनित पक्षथी जीव, दाखे ते अज्ञान ॥ हुकम० ॥ २ ॥ वेदयोग बळ त्रीक प्रत्येके, भेद त्रण त्रण धार रे ॥ गति संज्ञा कषाय प्रत्येके, भेद थाय चार चार ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ शरीर संस्थान इंद्रि निंद्रा, प्रत्येके पांच पांच भेदरे ॥ पर्याप्ति लेश्या संघयण, ए त्रणेना षट् षट् भेद ॥ हुकम० ॥ ४ ॥ वर्ण रस गंध स्पर्श प्रत्येके, पांच पांच बे आठ रे ॥ जन्म जरा ने मरण पुनरपि, ए संसारनो ठाठ ॥ हुकम० ॥ ५ ॥

दश प्राण आयुष्य योनि, श्वास उश्वास वळी रोगरे ॥ शुन्नाशुन्न क्रिया वहु न्नेदे, सुख दुःख वळी शोग ॥ हुकम० ॥ ६ ॥ अंग उपांग उंच नीच कुळ जाति, सुस्वर दुःस्वररे ॥ त्रस स्थावर प्रत्येक साधारण, सूक्ष्मने वादर ॥ हुकम० ॥ ७ ॥ अवगाहना वहु विध जीवनी, रूप कुरूप वळी देहरे ॥ क्षुधा तृषा वळी पीके जाजी, जठरा अग्नि ठे तेह ॥ हुकम० ॥ ८ ॥ आहारने निहार करवो, परिणमे सर्वे अंग रे ॥ उदयिक न्नाव सघळो इहां ठे, जीवनो तेह ए- कंग ॥ हुकम० ॥ ए ॥ इत्यादिक वस्तु ठे जाजी, ते नहीं जीव स्वरूपरे ॥ कर्म वंध योगता ए लाधी, पूर्वकृत ए रूप ॥ हुकम० ॥ १० ॥ ए सत्ता सघळी पुद्गलनी, न्नाषी ठे जीन न्नूपरे ॥ कर्म न्नावी पर्याय प्ररुप्या, ठे नहीं जीव ए रूप ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ विनाशी न्नाव पुद्गलमां कहीए, अविनाशी चेतनरे ॥ ते वे एकपणे कीम थावे, कीहां काच ने रतन ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ पुद्गलनी आठे वर्गणा, ते देखे पर वस्तुरे ॥ एम परन्नाग व्हेंचण करीने, अनुन्नवे जीव ए सत्य ॥ हुकम० ॥ १३ ॥ गुण पर्याय स्वन्नाव रमणमां, एकत्व वितर्क पावरे ॥ समन्नावे विकल्पने हणीउं, तीहां सनातक न्नाव ॥ हुकम० ॥ १४ ॥ आयुष्य अंते लहे सम- श्रेणियें, रूपातित पद सिद्धरे ॥ असंख्य प्रदेश निर्मळ नि- रंजन, ज्ञान शीतळमय ऋद्ध ॥ हुकम० ॥ १५ ॥

॥ दुहा. ॥

उदयिक न्नावे संपजे, ते नहीं जीव स्वरूप ॥

जीव स्वरूप सत्ता विषे, सिद्ध निरंजन रूप ॥ १ ॥

॥ ढाळ ११ मी ॥

॥ देशी उपर प्रमाणे ॥

वंदो वंदो रे भविक जीव सर्व, हुकम मुनिराया ॥ राज्य करे छे चेतनपुरनुं, गुण पर्याय निज वास रे ॥ मोह राय आज्ञा नहीं धारे, निर्भय निज गुण तास ॥ हूकम-मुनिराया ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अनंत ऋद्धि चेतनपुर भरीयो, नहीं चोरनो रहे वासरे ॥ उपयोग भाव सुभट अति बळीयो, नहीं चोरनो अवकाश ॥ हूकम०२॥ मिथ्यात्व अव्रत कषाय जोग, मूळ चारना उत्तर भेद रे ॥ पांच बार पचीशने पंदर, ए चोर सत्तावन भेद ॥हूकम०॥ ॥ ३ ॥ तेमां अधिक अतुल अभिमानी, बळीयो मिथ्यात्व चांच रे ॥ चेतनरायनुं राज्य पचावी, हेरुयो जरुछे पांच ॥ हूकम० ॥ ४ ॥ तेमां एक हेरु मजबूत छे, कार्मण नामे फार रे ॥ अनंत पुदगल परावर्त्त करतां, त्रुटे नहीं निरधार ॥ हूकम० ॥५॥ चेतन गुण वीर्य शक्तियें, पाडशे मिथ्यात्व तेरु रे ॥ त्यार पछी पुदगल अर्द्धमांही, त्रुटशे कार्मण हेरु ॥ हूकम० ॥ ६ ॥ अव्रत कषाय जोग ए त्रणे, बळीया मिथ्यात्व संग रे ॥ मिथ्यात्व नाश थयां बळहीणा, बळीयो चेतन रंग ॥ हूकम० ॥ ७ ॥ उपयोग भावे वीर्य फोरवी, हणशे सरवे चोर रे ॥ राज्य करे तीहां निर्भय दावे, सर बंधी बहू जोर ॥ हूकम० ॥ ८ ॥ वीर्य अनंत ज्ञान उपयोगी, स्फुरणा गुण पर्याय रे ॥ व्यक्ति

ભેદે ધર્મ અનંતો, આનંદ લ્હેર તે પાય ॥ હુકમ० ॥ ૯ ॥
ઠકુરાઇ શુદ્ધ ચેતન તદરુપે, તીહાં ચેતનનું રાજ્ય રે ॥ એ
રાજ્યના ભોગી મુનિશ્વર, રાજ મળે સરે કાજ ॥ હુકમ० ॥
॥ ૧૦ ॥ મુનિશ્વર મોટા ચેતનરૂપે, પરમાનંદ સ્વરૂપ રે ॥
અવિનાશી પદ પૂરણ તેહનું, જ્ઞાન શીતળ નિજભૂપ
॥ હુકમ० ॥ ૧૧ ॥

॥ દુહા ॥

તદરૂપ લીન યોગમાં, અનુભવ રમણિ થાય ॥
ઉપાધિ અળગી ટળે, ત્યાં ચેતન રાજ્ય કહાય ॥ ૧ ॥

॥ ઢાળ ॥ ૧૨ મી ॥

॥ ભવિ તુમે વંદો રે સૂરિશ્વર ગચ્છરાયા ॥ એ દેશી ॥

ભવિ તુમે વંદો રે હુકમ મુનિ ગુણરાયા ॥ અનંત ગુણ ભરીયો છે ચેતન, તેહ સ્વરૂપને પાયા ॥ ભવિ તુમે० ॥ એ આંકણી ॥ ગાથા ॥ ૧ ॥ અનંત ગુણમાં મુખ્ય જ્ઞાન છે, એ વિણ જડતા દાખી ॥ જ્ઞાન દીપક ઉપયોગ અનુભવ શુદ્ધ, તીહાં ચેતન બુદ્ધિ રાખી ॥ ભવિ० ॥ ૨ ॥ જ્ઞાન શક્તિ ચેતન નિશ્રાયે, તીહાં સમકિત ઠાણ પામે ॥ તે જ્ઞાન જ્ઞાનમાં ગણીએ, બાકી અજ્ઞાન નામે ॥ ભવિ० ॥ ૩ ॥ સમ્યક જ્ઞાનને સમ્યક દર્શન, દોય મિત્ર સંગ પ્યારો ॥ અનંત ગુણ રત્નની પેઢી, જુવે જ્ઞાન મનોહારો ॥ ભવિ० ॥ ૪ ॥ ગુણ પર્યાય સ્વભાવ અનંતા, લક્ષણ અનંતાં દાખ્યાં ॥ તે અનંત વ્યક્તિ નિજ ધર્મે અનંત ધર્મ જ્ઞાને ચાખ્યાં ॥ ભવિ० ॥ ૫ ॥ અનંતાનંદ લ્હેર અનુભવમાં, ઉપયોગ સ્થિર

लगावे ॥ समभाव वृत्ति चेतनमां, ज्योति अनंत जगावे ॥ भवि० ॥ ६ ॥ एम ज्ञान शक्तिये चेतन, शीवपद क्षणमां पामे ॥ अनंत धर्म आत्मिक अनुभव शुद्ध, ते गुण रायनुं कामे ॥ भवि० ॥ ७ ॥ एवा मुनिगुण समरण करतां, भजतां कोड कल्याण ॥ दर्शन पुन्योदये थावे, दुर्लभ उपदेश टाणे ॥ भवि० ॥ ८ ॥ हुकम मुनिसर मुज उपगारी, ते गुण नित्य संभारुं ॥ ज्ञान शीतळ कहे पूजुं वंदुं, मुज आतमने प्यारुं ॥ भवि० ॥ ए ॥

॥ दुहा. ॥

ज्ञानादि गुण संपदा, अनुभवे तद्रूप ॥
परम समाधि जे लहे, ते कहीए गुण भूप ॥ १ ॥

॥ ढाळ १२ मी ॥

हुकम मुनिश्वर भावे वंदिये, गीतारथ गुण खाण ॥ सुगुरुजी ॥ आश्रव अनाश्रव चेतन केम हुवे, ते दाखो चतुर सुजाण ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम मुनिसर भावे वंदिये ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आश्रव लक्षण दोभेदे कह्युं, द्रव्य भाव आश्रव ॥ सुगुरुजी ॥ तेथी चेतन चउगति वासीयो, जमीउं पुद्गल द्रव्य ॥ सुगुरुजी० ॥ हुकम० ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी प्रमुख कर्म वर्गणा, जीव प्रदेश ग्रासे ॥ सुगुरुजी ॥ द्रव्य आश्रव ते शास्त्रे दाखीयो, ते छुटे शीव पद थाशे ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ भावित आश्रव भाव शत्रुपणे, रागद्वेष मोह जागे ॥ सुगुरुजी ॥ तेथी द्रवित आश्रव संपजे, जीव धर्म तीहां भागे ॥ सुगुरुजी ॥

हुकम० ॥ ४ ॥ इणि विध आश्रव दो भेदे ग्रहे, ते चेतन आश्रवी ॥ सुगुरुजी ॥ हवे अनाश्रव चेतन दाखवुं, आश्रवनी हांणि करवी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ५ ॥ जीहां शुद्धि परसंगीपणुं, तीहां चेतन परधर्मी॥ सुगुरुजी ॥ रागद्वेष मोह जागृति तीहां अहं ममत्व अधर्मी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ६ ॥ ए पद्धति मिथ्यात्व मोहनी, तीहां आश्रव अवकाश ॥ सुगुरुजी ॥ तेने हणवो रे सद्गुरु ज्ञानथी, संवेग अनुभव जास ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ७ ॥ संवेग ते परभाग टाळवो, अनुभव आतम ज्ञान ॥ सुगुरुजी ॥ चिदानंद वंदन तीहां संपजे, उपयोगिक प्रधान ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ८ ॥ ए पद्धति सम संवेगनी, अंतर संवर भावि ॥ सुगुरुजी ॥ ज्ञान कळा चेतनमय अनुभवी, शुद्ध स्वरूप मय लावी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ए ॥ जीवन मुक्त एही परमात्मा, आश्रव भाव विनाशी ॥ सुगुरुजी ॥ द्रवित भावित दोय भेदने हणी, थया निराश्रव वाशी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ १० ॥ आश्रव भाव रह्यो परभावमां, स्वभावे थाय विनाश ॥ सुगुरुजी ॥ निज स्वभाव ग्रहे निज चेतना, तीहां अनाश्रव खास ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ आश्रव भावे स्थिर संसार छे, अनाश्रव शिवपद आपे ॥ सुगुरुजी ॥ आत्मज्ञानी उपयोगी थइ, आश्रव भावने कापे, ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ निराश्रवी नाम जेणे ग्रह्युं, पूजुं तेहना पाय ॥ सुगुरुजी ॥ अनुमोदुं हुं शुद्ध स्वभावने, त्यां ज्ञान शितळ शुद्ध थाय॥

सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ १३ ॥

॥ दुहा ॥

आश्रव आवे परपणे, शुन्नाशुन्न कर्म तेह ॥
संवर न्नावे टाळीये, त्यां निजगुण वृत्ति गेह ॥१॥

॥ ढाळ ॥ १४ मी ॥

॥ देशी ॥ एकवीसानी ॥

हुकम मुनिश्वर रे, वंदु विनय गुणमां रही ॥ क्रियावंत रे ए सम अवर दुजो नही ॥ ते दाखुं रे, नवन्नेदे क्रिया करे, निजात्मा रे, शुद्ध स्वन्नाव तीहां वरे ॥ त्रुटक श्रवण किर्त्तन बीजी, निंदा लघुता वांदवुं ॥ सेवा समता ध्यान एकता, ए नव बोले अनुन्नवुं ॥ विस्तारे सवंग रुचि, उपयोग, स्थिर न्नावमां ॥ तीहां कारज नीपजे, चेतन मूळ स्वन्नावमां ॥ १ ॥ पेहेली किरिया रे, श्रवण गुरु मुखेथी करे ॥ गुरु ज्ञाने रे जीव पुद्गळ जूदा ठरे ॥ जीवनो गुण रे, ज्ञान चेतना दाखीयो ॥ पुद्गळनो रे, अचेतन गुण न्नाखीयो ॥ त्रुटक ॥ एम न्निन्न धरमी, जीव न्यारो, पुदगलमां खुती रह्यो ॥ पुद्गलने पोतानो मान्यो, त्यां मिथ्यात्व चेतन लह्यो ॥ कारण कारज पुदगल साथे, अनादि संबंध ए ॥ तेथी दुखीयो चउगति न्नटके, करे कर्मनो बंध ए॥२॥ बीजी किरिया रे, किरतन जीव गुणनुं करे ॥ निजात्मा रे, त्यां पर व्हेंचीने परहरे ॥ चेतन गुण रे, ज्ञानदीपक प्रगटे तदा ॥ शुद्ध धर्मी रे, मिथ्यात्व ग्रहे नही कदा ॥ त्रुटक ॥ समकित शुद्ध तीहां पामे, गुण श्रेणीमां रमे ॥ अनंत गुण

पर्याय धर्मे, व्यक्ति पणे होय त्यां जमे ॥ जूख ज्ञागे सुख साधे, वीर्यवळ वृद्धि करे ॥ समज्ञावे ज्ञावे ए चेतन, अनंत कर्मंतीहां निर्जरे ॥ ३ ॥ त्रीजी किरियारे, निंदा करे पुद्गलनी ॥ तेना संगे रे, वृद्धि राग द्वेषनी॥ तेथी चेतनरे, अचेतन सरखो हुउं ॥ वेपारी रे इंद्रि पोषण ते जुओ ॥ त्रुटक ॥ तीहां सेवे पापस्थानक, अष्टादश दृढ चित्तए ॥ पाप वांधे व्यासी ज्ञेदे, नावे दुखनो अंत ए ॥ नरक निगोदमांही वास्यो, असंख्य अनंतो काळ ए ॥ ते फळ पाम्यो अज्ञान जोगे, निंदा करुं ज्ञान संग ए ॥ ४ ॥ चोथी किरिया रे, लघुता ज्ञावे जीवनी ॥ तुं गुण हीण रे, आशा करे पुद्गलनी॥ लोज्ञी लालची रे, सेवक तुं मोहरायनो ॥ अपराधी रे, अरुची वचन जीनरायनो ॥ त्रुटक ॥ कुदेवने कुधर्म कुगुरु, पक्ष ग्राहक तुं थयो ॥ मिथ्यात्व रंगी, मद जंगी फेर वेर घणो कीयो ॥ ॥ क्लेश ज्ञुक्ता संतोष तेमां, अपलक्षण निधान ए॥ मावुं करतां रीझ पामे, ते लघुता ठाम ए ॥ ५ ॥ किरिया पांचमी रे, वांदवुं उपयोग स्थिर करी ॥ सिद्ध सरखो रे, परमानंद पदने वरी ॥ मूळ रुपेरे, निरंजन निराकार ए ॥ अविनाशी रे, अनंत गुणज्ञंमार ए ॥ त्रुटक ॥ अनंत गुण पर्याय व्यक्ति, आविर्ज्ञाव:हुए जदा ॥ धर्म अनंतु तीहां लाधे, परमातम थावे तदा ॥ ए कार्य पूरण चेतननुं, मुज मनमां इच्छा घणी ॥ ते रूपनो आरोप करीने, वांदुवुं त्रीज्ञुवन धणी ॥ ६ ॥ छट्टी किरियारे, सेवे शुद्ध रूपे थइ

॥ निज पदमां रे, ज्ञान ध्यान रंग ते मची ॥ मूळ रूपे रे, धर्म अनंतो रह्यो जदा ॥ तेमां वसीये रे, ते सेवा पूजा तदा ॥ त्रुटक ॥ अनंत गुण पर्याय धारे, तेनो संग छोडे नही ॥ परद्रव्य पद्म अग्राहक, चेतन धर्म रह्यो नही ॥ आनंद वृद्धि व्यक्ति फूरणा, लहेर छे उपयोगमां ॥ ते सेवा में जाणी प्यारी, प्रमोद छे मुज अंगमां ॥ ७ ॥ किरिया सातमी रे, चेतन शमता नावमां ॥ पंथ शोधे रे, इर्या समिति अदोषमां ॥ पुद्गलमां रे, प्रवेश ते सावद्य कह्यो ॥ निजद्रव्यमां रे, प्रवेश ते निर्वद्य लह्यो ॥ त्रुटक ॥ नाषा समिति विवेक करवो, पुद्गल पांचमी वर्गणा ॥ ते वस्तु नही आपणी, निजगुण नास मुज लक्षणा ॥ एषणा समिति त्रीजी, आहार लेवो निर्वद्य ए ॥ केवळ ज्ञानी सावद्य देखे, निर्वद्य निज गुण मांहि ए ॥ ८ ॥ चोथी समितिरे, आदान निखेपणमां कही ॥ आदानते रे, चेतन गुण लेवे सही ॥ निषेपण रे, परवस्तु पुद्गलनुं ॥ इम कीजे रे, ग्रहण निज खेपण परनुं ॥ त्रुटक ॥ पारिठ वणिया पांचमी, समिति चेतन रक्षणा ॥ रागद्वेष विनाव सरवे, तजवि कार्मण वर्गणा ॥ ए समिति शीवपद आपे, मळ रहित चेतन करे ॥ ते दिवस मंगलिकनी माळा, परमानंद पदने वरे ॥ ए ॥ किरिया आठमी रे, ध्यान करे स्वनावमां, चेतन गुण रे, निर्मळ शक्ति नावमां॥ मुज व्यक्तिरे, परसंगे परने नजुं ॥ ते अघटित रे, परधर्मीपणो तजुं ॥ त्रुटक ॥ निजद्रव्य स्वनाव धर्मे, उपयोग स्थिर

रमणता ॥ अचपळ नावे शक्ति जोके, तोके विन्नाव पर अंगता ॥ तीहां चेतन धर्मनी व्यक्ति, स्फूरणा गुण पर्यायमां ॥ परमानंद पद नोग नोगी, अपूर्व नाव ए ध्यानमां ॥ १० ॥ किरिया नवमी रे, एक्यता चेतन न्नावमां ॥ डुविधा हणी रे, वरते शुद्ध स्वन्नावमां ॥ समन्नावे रे, ध्याता ध्येय ध्यान एकता, नेद हणीयो रे, ग्रहण कीयो अन्नेदता ॥ त्रुटक ॥ अनंत गुण पर्याय व्यक्ति, अनंत धर्म प्रगटपणे ॥ मूळरूपे सहेज स्वन्नावे, परिणमन एक्यतापणे॥ न्नारे पीळो चीकणो, व्यक्ति कंचनमां रही॥ परिणमन एकत्व रूपे, कदी न्निन्न परे नही ॥ ११ ॥ इम नव विध रे, किरिया करे जे मुनिवरा॥ ते ज्ञानी रे, नव न्नमणाने परहर्या ॥ संसारथी रे, बुटया कर्मपास ठेदीने ॥ तेने वंदुं रे, गुणरागे आणंदीने ॥ त्रुटक ॥ गुणराग आनंद जाजो, मुज आतमने तारवा ॥ एवा मुनिसर नित्य नमुं, कर्म रोगने वारवा ॥ ए नाव उपयोगे लाधे, नेद ज्ञान प्रगटे जदा ॥ ज्ञान शीतळ आतम गुण एक्यता, कारज सिद्ध करे तदा ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

नव विध किरिया योगथी, चारित्र गुण कहाय ॥
उपयोग नावे जे लहे, ते संयम ठाण पाय ॥ १ ॥

॥ ढाळ १५ मी ॥

॥ सांनळरे तुं सजनी मोरी रजनी क्यां रमी आवीजी ए देशी ॥

हुकम मुनिश्वर आतम ज्ञानी, परमातम पद ध्या-

वेजी ॥ अंतर आतम उपयोग अंतर, चेतन रसमां रमावे ॥ मुनिपद वंदोजी ॥ जव जव संचित पाप ॥ मूळथी निकंदोजी ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अनुजव ज्ञानी चक्षु अंतर, वस्तु धर्मने निहाळेजी ॥ निराकार निरंजन निर्मळ, अलख रूप तीहां जाळे ॥ मुनि० ॥ २ ॥ अरूपी ज्ञान घन ज्योति परमानंदनो कंदजी ॥ शांत सुधारस जलनिधि सरीखो निरखतां आनंद ॥ मुनि० ॥३॥ अविनाशी अचळ अखंकित, परम रहस्यनो धामजी ॥ अव्याबाध सुख अनंतु, पुरुसोतम जस नाम ॥ मुनि० ॥ ॥ ४ ॥ चिदानंद जगदीश्वर अरिहा, तीर्थंकर जगवानजी॥ वीतराग विमळवंत योति, परमदेव प्रधान ॥ मुनि० ॥५॥ शुद्ध बुद्ध अनंत अक्षय अज, अकळ अमळ अजेदीजी ॥ अकर्मा अ बंधक अनुदय, अनुदरिक अजेदी ॥ मुनि॥६॥ अजोगी अरोगी अजोगी, अगम अकंप अवेदीजी ॥ अशरीरी अकषायी असखायी, अलेशी अखेदी ॥मुनि०॥७॥ अणाहारी अण अवगाही, अगुरु लघुपरिणामीजी ॥ अति इंद्रिय अप्राणी अयोनि, अ संसारी अनामि॥मु०॥८॥ अमर अनाश्रित अविरुद्ध अशोकी, अनाश्रव असंगीजी ॥ अनंत गुण पर्यायनुं जाजन, परमातम पद जंगी ॥मुनि०॥ ॥९॥ निजातम परमातम सरीखो, आतम ज्ञाने जाणेजी ॥ तेह स्वरुपने स्थिर उपयोगे, अनुजवे ध्यान टाणे ॥मुनि० ॥ १० ॥ निज स्वरुपमां मगन सदीवए, समजावे सुखशाताजी ॥ उदयिक जाव अव्यापक हुवे जब, ज्ञानशीतळ

शुद्ध माता ॥मुनि० ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥

धर्म शुकल दोय ध्यानमां, आतम रमणता पाय ॥
उपाधि उन्मूल करी, परमातम सम थाय ॥ १ ॥

॥ ढाल १६ मी ॥

॥ हो पेउ पंखीडा ॥ ए देशी ॥

हो गुरुजी प्यारा हुकम मुनि महाराजजो ॥ हुं छुं सेवक अंतर दृष्टि ताहरोरे लोल ॥ हो गुरुजी प्यारा क्षण न विसारुं तुजजो, हितवंच्छकछे उपगारी तुं माहरोरे लोल ॥ १ ॥ हो० धर्म अर्थ काम मोक्षजो, पुरुषारथ अंग जाणवा मुज मन उलस्यो रे लोल ॥ हो० ते दाखो विस्तारजो, श्रवण करवा उमंग चित्तमां विलस्योरे लोल ॥ २ ॥ हो० मूरख माने धर्मजो, पोतीका कुळ आचार करणी तेहने रे लोल ॥ हो० पंडित माने धर्मजो, वस्तुनो स्वभाव धर्म छे एहने रे ॥ ३ ॥ हो० अज्ञानी कहे अर्थजो, नव विध परिग्रह रक्षण तेहीज अर्थ छे रे लोल ॥ हो० ज्ञानी कहे छे अर्थ जो, षट द्रव्य वस्तु दर्शाव ते गर्थछे रे लोल ॥ ४ ॥ हो० दुर्बुद्धि कहे कामजो, स्त्री पुरुष संजोग भोग ते कामछेरे लोल ॥ हो० सुबुद्धि कहे कामजो, अभिलाष चित्त इच्छा तेहीज कामछेरे लोल ॥ ५ ॥ हो० ॥ मूरख अजाण कहे मोक्ष जो, स्वर्ग मांहि इंद्रनुं स्थान ते मोक्ष छेरे लोल ॥ हो० पंडित दाखे मोक्षजो, कर्म रहित हुओ चेतन तेहीज मोक्षछेरे लोल ॥ ६ ॥ हो० ॥ चउभेदे कयुं

वखाणजो, ते वचन सत्य मुज मनमां रुच्युं सही रे लोल ॥ हो० ॥ अज्ञानी दुर बुद्धि मूर्ख जो, मतिमंद हीण बुद्धिवंत कल्पना ग्रही रे लोल ॥ हो० ॥ ज्ञानी सुबुद्धि पंडित जो, ग्रहण करे सर्वांगी वचन सत्य तेहनुं रे लोल ॥ हो० ॥ पुरुषार्थ चउ अंगजो, साधे कार्य ज्ञान शीतळ होय जेहनुं रे लोल ॥ ८ ॥

॥ दुहा ॥

धर्म अर्थ काम मोक्षए, पुरुषारथ चउ अंग ॥
धर्म वस्तु स्वभाव ए, अर्थ रत्न त्रयी संग ॥ १ ॥
अभिलाषा काम कीजीए, अजरामर मोक्ष तेह ॥
कर्म अभावे संपजे, परमानंद पद एह ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ १७ मी ॥

॥ नरसी मेहेता भगतहरीना जूनागढना रहेवासी॥ ए देशी॥

गुरु गुणे मोटा ज्ञानी ध्यानी हुकम मुनिश्वरने वंदो ॥ विनयादिक गुण अंगे लावी, सुणो उपदेश टळे भव फंदो ॥ गुरु गुणे मोटा० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ उपदेश करता मिथ्यात्व हणता, अनंतानुं चौ अंत करता ॥ अनंत पुद्गल परावर्त्त खुटे, संसार अर्द्ध पुद्गल हिणता ॥ गुरु० ॥ २ ॥ धर्म दान दीए चेतन गुणनुं, अचेतन गुण मूळथी छेदे ॥ भाव संवर मय साधन दाखे, तीहां चेतन ग्रंथी भेदे ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ बोधि बीज अणारोप रोपे, रत्न त्रयी साधन वाको ॥ अंतरंग अनुभव एकताळी, अप्रमत्त गुण हे ताको ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ समभावे भावित हुउ चेतन,

शीव रमणी तेमवा आवे ॥ सादि अनंत काळ अजर अमर पद, जन्म मरण ते क्षय पावे ॥ गुरु० ॥ ५ ॥ एम उपगार निमित्त सद्गुरुनो, न वळे भवोभव दास थयां ॥ भव कोमाकोमि अनुकुळ सेवा, करतां सर्व उपाय जीहां ॥ गुरु० ॥ ६ ॥ ए उपगारी गुण न वीसरे, समकित रत्न मुज हाथ दियो ॥ गुरु गुण गाउं आनंद पावुं, ज्ञान शीतळ उपयोग लीयो ॥ गुरु० ॥ ७ ॥

॥ दुहा. ॥

पुष्ट निमित्त गुरु कह्या, तत्वबोध दीये दान ॥
पाहाणने पल्लव आणवा, उपदेश करे एक तान ॥१॥

॥ ढाल ॥ १८ मी ॥

॥ ए गुरु वाल्हो रे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनीश्वर वंदिये रे, आतमज्ञानी ध्यानी रे वाहिर अंतर परमने रे, उळखावे अमानी रे, सदगुरुज्ञानी रे ॥ हणीओ चपळ स्वभाव, स्थिरपद ध्यानी रे ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आतम बुद्धि कायादिकेरे, वहिरातम अघरुप रे ॥ कायादिकनो साक्षी रे, अंतर आतम स्वरूप रे ॥ सदगुरु० ॥ २ ॥ पूरण ज्ञानानंदनो रे, समाधि मय तदरूप रे ॥ पावन गुण मणि आगरु रे, ते परमातम भूप रे ॥ सदगुरु० ॥ ३ ॥ अहं करता परभावनो रे, वहिरातम दुर्गुण गेह रे ॥ कर्त्ता शुद्ध स्वभावनोरे, अंतर आतम तेह रे ॥ सदगुरु० ॥४॥ वहिरातम भाव छोमवो रे, ग्रहवो अंतर आतम रे ॥ परमातमनुं ध्यान करुं रे, तिहां विक-

रुप होय केम रे ॥ सदगुरु० ॥ ५ ॥ बहिरातम आतम वेरी रे, अंतर आतम मित्र रे ॥ बहिरातम कर्म बांधतो रे, अंतरातम छोडे विचित्र रे ॥ सदगुरु० ॥ ६ ॥ अनुमोडुं अंतर आतमा रे, संवर निर्जराभावे रे ॥ मोक्ष तत्वने साधतो रे, ज्ञान शीतळ शुद्ध स्वभावे रे ॥ सदगुरु० ॥ ७ ॥

॥ दुहा ॥

बाहिर अंतर परम ए, आत्म परिणति तिन्न ॥
देहादिक आतम भ्रमी, बहिरातम बहु दिन्न ॥ १ ॥
साक्षि कायादि योगनो, अंतर आतमरुप ॥
ज्ञायक भावे केवळी, ते परमातम भूप ॥ २ ॥

॥ ढाळ १९ ॥ मी ॥

॥ नाथ निरंजन देव ए प्यारो, कुंथुं नाथ वंदो प्यारे

॥ ए देशी ॥

गीतारथ गुणे दिनकर सरीखा, हुकम मुनि वंदो प्यारे ॥ दर्शण करतां समकित वरवुं, मिथ्यात भर्म तजवो भारे ॥ गीतारथ गुणे० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ सप्तनये धर्म उपदेश करता, अनेकांत पक्ष अनुसरता ॥ द्रव्य पर्याय वस्तुने भणता, स्याद्वाद गुणमां ठरता ॥ गीतारथ० ॥ २ ॥ नैगम संग्रह व्यवहार किरिया, ऋजुसूत्र नयने वरता ॥ त्यां सुधी समकित नही पामे, मिथ्या संग सा्मन करता ॥ गीतारथ० ॥ ३ ॥ शब्दनये समकित गुण पामे, तिहां विरति भावे रमता ॥ संभिरुढ केवळनाण दरशण, एवंभूत शीवपद वरता ॥ गीता० ॥ ४ ॥

योग प्रवृत्ति साधन मिथ्या, समकित साधन उपयोगे ॥ वस्तु अरूपी धर्म अरूपी, जोगातित पद निज जोगे ॥ गीता० ॥ ५ ॥ एसो बोध आपे गीतारथ, जड चेतन भिन्न ओळखावे ॥ जड तज्यां चेतन निजरूपे, ज्ञान शितळ शीवपद प्यावे ॥ गीता० ॥ ६ ॥

॥ दुहा. ॥

बोध सही नय ज्ञानमां, जाणो द्रव्य पर्याय ॥
स्याद्वाद धर्म संपजे, एम भाखे जीनराय ॥ १ ॥
ए विण स्यादवाद नही, स्याद्वाद वस्तु मांही ॥
स्व पर विभागे लहे, अनुभव प्रगटे त्यांही ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ २० ॥ मी ॥

॥ प्रथम गोवाळा तणे भवेजी ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनिसर वांदिएजी, जीन शासन शणगार ॥ स्वपर समय ज्ञाता भलोजी, ए सम भावी अणगार ॥ भविकजन वंदो ए अणगार ॥ धर्मदान दातार ॥ भविकजन वंदो ए अणगार ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शुद्धातम अनुभव सदाजी, ते स्व समयविलास ॥ परवडी छाया पडेजी, तेपर समय निवास ॥ भविक० ॥ २ ॥ स्वसमय स्व वस्तु छेजी, पर समय पर वस्त ॥ स्व वस्तु धर्म अनुभवेजी ॥ छाया जळ दर्पण गस्य ॥ भविक० ॥३॥ गुण पर्याय अनंतछेजी, व्यक्ति अनंतीरे भिन्न ॥ तस अनुभव शुद्धातमाजी, स्व समय धर्मे लिन्न ॥ भविक० ॥ ४ ॥ शुद्धातम अनुभव जीहांजी, तीहां विकल्प नही कोइ ॥

निर्विकल्प रस पीजीएजी, अनंत गुण एकता सोइ ॥ ज्ञविक० ॥ ५ ॥ शुद्धातम अनुज्ञवजीहांजी, तीहां मुक्ति निरधार ॥ कर्म रहित हुवो आतमाजी, तीहां लहे सिद्ध पदसार ॥ ज्ञविक० ॥ ६ ॥ शुद्धातम अनुज्ञव लहेजी, त्यां साधन पूरण साध्य॥परमानंद रस पीजीयेजी, त्याग मोहादि कीजे उपाध्य ॥ ज्ञविक० ॥ ७ ॥ शुद्धातम अनुज्ञव जीहांजी, तेहीज ध्यान प्रमाण ॥ मुक्ति दाता एहछेजी, शीवपुरनुं परियाण ॥ ज्ञविक० ॥ ८ ॥ क्षपक श्रेणीये शुद्धातमाजी, अनुज्ञवे गुण पर्याय ॥ एकत्व ज्ञाव सर्व व्यक्तिनोजी, त्यां एक समये अनुज्ञव थाय ॥ ज्ञविक० ॥९॥ तीहां केवळ ज्ञान उपजेजी, केवळ दर्शन साथ ॥ चरण यथाख्यात मूळमांजी, लब्धि पांच तीहां हाथ ॥ ज्ञविक० ॥ १० ॥ शुद्धातम अनुज्ञव जीहांजी, तेहीज छे जैन ज्ञाव ॥ जैन धर्मते कीजीयेजी, चेतन मूळ स्वज्ञाव ॥ ज्ञविक० ॥ ११ ॥ स्व समय धर्म पामीयेजी, पर समय करी त्याग ॥ पर समये अनुज्ञव गयोजी, तीहां स्व समयनो लाग ॥ ज्ञविक० ॥ १२ ॥ स्व समय धर्म साधताजी, अनुज्ञवे चेतन शुद्ध ॥ तेहने माहरी वंदनाजी, ज्ञान शीतळ जस बुद्ध ॥ ॥ ज्ञविक० ॥ १३ ॥

॥ कळश ॥

॥ ज्ञव्यो ज्ञव्यो रे मुज साहेब जगनो ज्ञव्यो ॥ ए देशी ॥

ज्ञव्यो ज्ञव्यो रे उपगारी गुरू मुज ज्ञव्यो ॥ हित बुद्धियें उपदेश कीधो, युक्तिये समजाव्यो ॥ शंका कंखा

छेद करीने, भ्रम तिमिर गमाव्यो रे ॥ उपगारी गुरू मुज त्रुठयो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मधुर ध्वनीये उपदेश करता, वचन रसाळनी माळा ॥ श्रोता सुणतां तृप्त न थावे, बोध पामे तीहां बाळारे ॥ उपगारी० ॥ २ ॥ चेतन शुद्ध स्वरूप उपदेशी, तत्वनी रुचि करावे ॥ दृष्टांत हेतु युक्ति लगावी, चेतन गुण चारो चरावेरे ॥ उपगारी० ॥ ३ ॥ मिथ्यात्व मोह छे अति अटारो, संसार अनंत रखवाळो ॥ जीव अजीव सरखा करी मूके, तेने सद्गुरू मारे ज्ञालो रे ॥ उपगारी० ॥ ४ ॥ मिथ्यात्व मोहनो अंत हुवो जब, चेतन समकित पामे ॥ ते गुण रत्न चिंतामणी सरखो,लहे अनुभव उपाधि तिहां वामेरे ॥ उपगारी० ॥ ५ ॥ ए पसाय सद्गुरूए कीधो, रत्न अमुलख दीधो ॥ ते वदलो वळे नहीं कबहु, उपगार अनंतो कीधोरे ॥ उपगारी० ॥ ६ ॥ गुरू गुण गातां तृषा न भाजे, उलट अंग न मावे ॥ वचन जोग थाके नहीं कबहु, मन गुरू गुणमां रमावेरे ॥ उपगारी० ॥ ॥ ७ ॥ रत्न चिंतामणी करतां अधिका, गुरू उपगारी कहीए ॥ अनंत जन्म मरण दुःख टाळे, तेनो पारु शो वहीएरे ॥ उपगारी० ॥ ८ ॥ सद्गुरू सर्व खेत्रे नवी होवे, कोइक अवसर लाभे ॥ वचन जोगथी थाय परीक्षा, चेतन उळख्यां थाय निरभ्रेरे ॥ उपगारी० ॥ ए ॥ निर्भय स्थानक छे नहीं बीजुं, एक सद्गुरूनुं साचुं ॥ वचन जूठ छंडीने जइए, बोधि बीज तीहां जाचुंरे ॥ उपगारी० ॥ १० ॥ सदगुरू कल्प वृक्षथी अधिका, याचना अर्थने पूरे ॥ ते

माटे मागो अकर्म पद, कर्म जाळ सवि चुरे रे॥ उपगारी० ॥ ११ ॥ एथी अधिक अरथ नहीं दुजो, परम अरथने पाम्यो ॥ सदगुरू संग अति उपगारी, परमानंद पद जाम्यो रे ॥ उपगारी० ॥१२॥ गुरू उपदेश सुणी इहां दाख्यो, मंदमति मुज भारी ॥ गुरु कृपाथी रचना कीधी, बाळजीव उपगारी रे ॥ उपगारी० ॥ १३ ॥ नग्र विजापुर घरमां वसियो, गुरू भक्तियें रास रचायो॥ सुरचंद मुजनाम भलेरु उद्योत शीतळ घट आयो रे ॥ उपगारी० ॥ १४ ॥ ओगणीसत सुडताळीस वर्षे, श्रावण कृष्ण पक्षायो ॥ गुरूभक्ति रास पूरण त्रीजे,शुभ योग लक्षायो रे॥उप०॥१५॥ गुरूभक्तिये आ रास जे कोइ गाशे, सुणशे स्थिर उपयोगे ॥ भावार्थ अंतरमां लावे, तिहां शुद्ध परिणति होय भोगेरे॥उपगारी॥१६॥ मुज मनोरथ सफळ हुओ आज, भक्तियें पूरण रास कीधो ॥ संसार कार्यने अळगां मुकी, गुरूभक्तियें चित्त लीधो रे॥ उपगारी ॥ १७ ॥ मुज अंगे उलट अति झाझो, एक तान स्थिर ध्यान ॥ चित्त रमावुं प्रत्येक ढाळे, ज्ञान शीतळ करूं पान रे ॥ उपगारी० ॥ १८ ॥

॥ इति श्री गुरू भक्तिनो रास संपूर्ण ॥

॥ सर्व गाथा ॥ ३०५ ॥

शुद्धि पत्रक.

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२	७	भाजेर	भाजेरे
५	१९	छाजेर	छाजेरे
६	१५	शरीरमम	शरीरंमम
१८	५	कपायोन	कषायोने
१८	८	अहंशरीर	अहंशरीरी
२०	११	कारण	कारणे
२०	१५	भर्योहे	भर्यो है
२४	३	ध्याव	ध्यावे
२५	२	आतमधाराने	आतमधाराते
२५	५	थयेलीने	थयेलीते
२६	१८	लोको	लोका
२७	७	रुप	रुपो
२९	१३	आवरणयोग	आवरणयोगे
३१	१	शांत	शतं
३२	९	ते सर्प	ते सर्व
३२	१५	जीनआगमए	जीनआगमेए
३४	८	संयोगछे	संयोगेछे
३६	५	कल्पन	कल्पनं
३६	७	पुत्रादिकने	पुत्रादिकते
३६	११	स्वजांत नथी	स्वजाति नथी
३७	४	जाय	जाया
३७	९	मांहेलीकोर	मांहेलीकोरे
३७	१४	नय	नये
३७	१९	नय	नये
३७	१८	अनंता	अनंतां
३८	१६	अन	अने
४०	२०	भेद कह्या	भेद कहेवा पडे
४१	८	नथ्थि	नाथ्थिय
४१	१४	सुभ	शुभव्यवहारे
४१	२०	संयोग	संयोगे
४२	२२	भावने	भावते
४३	९	जोग छे	जोगे छे
४३	१८	कर्णनी	कर्मनी
४६	६	उपाधिओग	उपाधिओगे
४६	२०	उपाधिना	उपाधिनो
४७	१०	साधुना	साधुनो
४७	१४	याग	योग
४८	५	लुगडांनोककडो	लुगडानोककडो
४९	१	लेवा कल्पे नहीं	लेवो कल्पे नहीं
५२	२२	विस्तार	विस्तारे
५५	१६	अंगभिर	अगंभीर
५६	११	संचयं	संचय
५८	२३	तोड	तोडे
६१	२	सुभूमना	सुभूमनापिता
६४	८	सागरमा	सागरमां
६४	१५	पोत	पोते
६५	६	छठ्ठलक्षण	छठ्ठुं लक्षण
६५	१९	तेनोभोगी	तेनीभोगी
६७	१	भयमा जाय	भयमां जाय
६७	१३	दुष्ट	दुष्टा
६७	१७	तेम पशुने	पशु तेमने
७१	१४	विवेक	विवेके
७३	५	ए तेना वे भेद	तेना वे भेद
७३	१४	समकितिमोहनी	समकित मोहनी
७५	२२	संतांष	संतोष

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
७८	१८	कोर	कोरे
८१	४	पोत न थाय	पोते न थाय
८३	४	उपशम	क्षयउपशम
८४	१०	अवनुभ	अनुभव
८५	४	स्पर्शीतबोध	स्पर्शीबोध
८५	१२	स्वखरुपे	स्वरुपे
९४	१३	अनुभव	अनुभव
९५	१४	तेछतां	तेछतां
९९	४	जोगमोक्ष	जोगेमोक्ष
१००	१७	बीजांभेद	बीजोभेद
१००	१९	अभदेपक्ष	अभेदपक्ष
१०१	५	परिणति	परिणातिये
१०१	१०	अत्दाने	आत्माने
१०३	१	एघातिकर्मअघाती	एघातिअघातिकर्म
१०३	७	रस	रसे
१०४	३	परभव	परभवे
१०४	१०	विच्छेछे	विच्छेदछे
१०४	१२	तेमोक्षसुख	त्समोक्षसुख
१०४	१३	मोक्षनां	मोक्षना
१०४	२१	जेपदने	जेपदतेने
१०६	२२	भणंवु	भणवुं
१०९	२	स्वरुप	स्वरुपे
११५	११	भाग	भागे
११६	१९	एद्रव्यंठुं	एद्रव्यतुं
११७	२	नहीनही	नहीनहीअसत्य
१२२	३	नेपरिणमे	नपारिणमे
१२३	२०	नाखीभिन्नपडे	नोखीभिन्नपडे
१२६	६	पाप	पाय
१२६	२०	नसाध्युं	नसांध्युं
१२७	५	दुभेद	दुभेदे
१२७	१२	उपयोग	उपयोगे
१२८	२	सुभसंता	सुभसंताजी
१२९	७	मानियोर	मानियोरे
१३०	१	वर्त्तमाननोर	वर्त्तमाननोरे
१३०	६	मोटकोर	मोटकोरे
१३१	२१	फरसे	फरंस
१३३	१	जाण	जाणंग
१३४	२	देखे अनुभवे	न देखे अनुभवे
१३४	१८	सांभलोर	सांभलोरे
१३४	१९	मीलयोर	मीलयोरे
१३४	२०	पूरवपरेर	पूरवपरेरे
१३४	२२	बीजोर	बीजोरे
१३५	३	टालीगर्व	टालीमोटपगर्व
१३५	४	दीयेर	दीयेरे
१३५	६	लीयेर	लीयेरे
१३६	५	कह्योर	कह्योरे
१३६	१८	खंधछेर	खंधछेरे
१३७	११	जोग	जोगे
१३८	१२	करीयेर	करीयेरे
१३८	१३	कहीयेर	कहीयेरे
१४२	४	पांचभेद	पांचभेदे
१४२	७	तीहांसुख	तीहांसुखसात
१४२	११	पुछीनेर	पुछीनेरे
१४३	६	समोर	समोरे
१४३	२०	वधेर	वधेरे
१४६	१२	स्त्रीवेद	स्त्रीवेदे
१४८	१	कायारे	कायरे
१४९	१३	॥ १७ ॥	॥ १० ॥
१४९	१५	घाती	चारित्रघाती

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१५०	१६	सुखआयुपकर्म	आयुपकर्म
१५१	९	सरीरनोरे	सरीरनारे
१५१	१४	नीजात्मनारे	नीजात्मानारे
१५१	२३	परिणमावीनेर	परिणमावीनेरे
१५३	१६	सपजेर	संपजेरे
१५३	१६	अतीशयव्रत	अतिशयवंत
१५४	१९	सर्वलोकग्रह	सर्वलोकग्रहे
१५४	२२	पकडायरे	मनायरे
१५७	४	उदये कह्युं	उदय कह्युं
१६०	१०	वीजां	वीजा
१६१	९	काया	काय
१६१	२१	अंगे	अंग
१६२	९	कर्मनाम	नामकर्म
१६३	९	रचनाकारणे ते करुं	रचनाकरुं ते कारणे
१६५	२	नव	नय
१६८	१२	छतिपर्याय	छतिपर्याये
१६८	१३	नयज्ञान	नयज्ञाने
१६८	२२	लहेरे	करीने लहेरे
१७०	८	जो करेरे	जे करेरे
१७१	१४	खपावोर	खपावोरे
१७२	७	ठाणंगेर	ठाणंगेरे
१७३	१५	द्रव्यभावे	द्रव्यभाव
१७३	१६	भाव	भावे
१७५	३	दिसरे	दसरे
१७६	४	द्रव्य	द्रव्ये
१७७	२	शासनरे	शासनेरे
१७७	५	वलावीनेर	वलावीनेरे
१७७	९	परिणम्योर	परिणम्योरे
१७७	१४	कीजीयेर	कीजीयेरे
१७७	२०	पामीयेर	पामीयेरे
१७९	२	मादव	मद्दव
१८१	३	सितळनी	सीतळनीज
१८२	९	उपयोग	उपयोगे
१८४	१६	कर्मवज्ज	कर्मवज्र
१८५	२	असुभ	एसुभ
१८५	१९	पुन्यपांप	पुन्यपाप
१८५	२१	द्रव्यभावे	द्रव्यभाव
१८६	८	गुणगुणता	गुणगुणगत
१८७	१४	चउवीशे	चउवीश
१८८	४	अनंतकारणे	अनंतर कारण
१८९	१०	भवहारे	भवहारे
१८९	१३	निवारयाण	निवारणाय
१९०	१२	सिद्धा	सिद्ध
१९१	२	पुन्य	पुन्ये
१९२	१५	एकांता ६	एकांतम० ६॥
१९२	१७	पास ॥७	पास ॥म०॥ ७
१९३	२१	मुनिधर्म	मुत्तिधर्म
१९६	९	करेर	करेरे
१९६	२२	वांचछेर	वाचछेरे
१९७	१९	उंपयोग	उपयोगे
१९८	३	पूजियेर	पूजियेरे
१९९	७	साथे	साथ
२००	५	निरजराकरीयेर	सकामनिरजराकरीयेरे
२००	११	गुणीने	गुणीते
२०२	१९	चालीए	चालीयेए
२०४	१३	प्रथथ	प्रथम
२०६	३	मांहेरसाल	माहारसाळ
२०६	८	पर्याय	पर्याये
२०७	२१	वीसरे	वीसरो
२०८	३	गुणीपर्याय	गुणपर्याय

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२१०	७	संसारमांहे	संसारमां ए
२११	३	पीधोर	पीधोरे
२११	५	छांडेर	छांडेरे
२११	९	सुणावेर	सुणावेरे
११२	१	विराजेर	विराजेरे
२१७	८	शब्दनय	शब्दनये
२१७	१२	पुरनाशीयो	दुरनाशीयो
२१८	१३	वश्योर	वश्योरे
२१९	२१	सुद्धजी	सुद्धिजी
२२०	६	ठरता	ठरताजी
२२१	१८	अन्यसदाय	अन्यसहाय
२२३	६	दानदेतो	दानदेता
२२३	६	निजलेतो	निजलेता
२२६	७	मोहनमेर	मोहनमेरे
२२६	८	गुरुमेर	गुरुमेरे
२२७	१५	दीपतो	दीपता
२२७	१८	शत्रुविनाश	सर्वशत्रुविनाश
२२९	१२	भावे	भाव
२२९	२०	निरागी	निरोगी
२२९	२०	कहुंतारा	कहुंतारी
२३०	९	ठाम	ठाण
२३१	४	फळमुक्ति	विरतिफलमुक्ति
२३१	८	सत्ताभिन्न	सत्ताभिन्नाभिन्न-करी
२३२	२४	निरंजन	निरंजनं
२३३	१०	ए ॥ ५ ॥	॥ ५ ॥ ए
२३४	१८	शीतळने	शीतळते
२३५	१०	निजातमे	निजातम
२३५	२२	साथे	साधे
२३७	१८	ज्ञानने	ज्ञाने
२३८	९	जाणी	नाणी
२३८	१३	सुणीजेर	सुणीजेरे
२३९	८	भेथ्ये	भेटे
२३९	११	जीनंद्ररे	जीनेंद्ररे
२४०	२	विरचावरे	विरचावेरे
२४०	२३	जाणी	भणी
२४१	५	रत्नमयी	रत्नत्रयी
२४२	९	कोमल्लिनाथ	करे मल्लिनाथ
२४४	३	पूजीयेर	पूजीयेरे
२४६	६	क्षय आवे	क्षय पावे
२४७	१०	छलावुं	घलावुं
२५३	१४	दीवेलेधेनहींजी	दीधेलेवेनहींजी
२५४	२	ए दशो	ए देशी
२५५	८	वीणसेरलाल	वीणसेरेलाल
२५५	९	लक्षण	लक्षणे
२५६	१४	वारमेरलाल	वारमेरेलाल
२५७	८	मेर०॥	मेरे०॥
२५७	१४	मुखजोइआ-वीयो	मुखजोवाआवी-यो
२५८	६	मेर०॥	मेरे०॥
२५८	११	वरसाथे	वरसाछे
२५८	१४	सरज्याछे	सरस्याछे
२५८	१५	॥नेमि०॥१॥	॥राजुल०॥१॥
२५८	१७	॥नेमि०॥२॥	॥राजुल०॥२॥
२५८	१९	॥नेमि०॥३॥	॥राजुल०॥३॥
२५८	२१	॥नेमि०॥४॥	॥राजुल०॥४॥
२५८	२३	नेम	नेमि
२५८	२१	नेमनिरागी	नेमिनिरागी

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२५९	१	जुए	जुवे
२५९	५	समजाण्या	समजाव्यां
२६०	९	एभंगे	अभंगे
२६०	११	श्रीश्रद्धा	श्रद्धा
२६०	१७	नीरागी	नारागी
२६१	१८	तुंहीरुपीअरुपी	तुंही रुपी नहीं अरुपी
२६३	४	फरसे	स्पर्से
२६४	२३	सडग	खडग
२६५	६	दाखीये	दाखीयो
२६६	२	चोथा	चोथे
२६६	२१	भेद	भेदे
२६७	१५	लेजोर	लेजोरे
२६८	१७	वंशरणायरो	वंशरयणायरो
२६९	२१	देख	देखे
२७०	२	जावोर	जावोरे
२७०	३	धारोर	धारोरे
२७०	१४	करीयेर	करीयेरे
२७०	१६	जुए	जुवे
२७२	१४	पूर्वकर्मसंवंधी	पूरवकर्मसंवंधथी
२७२	१६	आवेर	आवेरे
२७२	१७	भावेर	भावेरे
२७५	१७	कीहांक्यां	कहोक्यां
२७८	३	भावेर	भावेरे
२८०	४	मिथ्यात्वछे	प्रमादछे
२८२	१५	सोहीरे	सोयरे
२८४	१८	वन०॥११॥	वने०॥११॥
२८७	१८	॥३७॥	गाथा ॥३७॥
२८९	२३	लघुता	लघुता
२९२	३	काळ	कार
२९४	४	जाण	भाण
२९५	१८	ढाळनी	आ ढाळनी
२९७	३	दरशन	दरशंन
२९७	४	प्रसन्न	प्रसंन्न
२९७	११	विघन	विघंन
२९८	६	चेतन्नरे	चेतंन्नरे
२९८	१८	ते वस्तुने	ते वस्तुते
२९८	२३	कर्सग्रंथे	कर्मग्रंथे
३००	१२	अटारारे	अटारोरे
३०१	१९	विसामोर	विसामोरे
३०२	३	उपशमरे	उपशंमरे
३०२	७	उपशमरे	उपशंमरे
३०२	८	एकदमरे	एकदंमरे
३०३	५	सास्वादनकोइ	लहेसास्वादनकोइ
३०३	८	कपठ होवे	कपुर होवे
३०४	१	रतन्नरे	रतंन्नरे
३०४	५	प्रणी०॥ ९ ॥	प्राणी०॥वं०॥९॥
३०४	२०	हण्यारे	हण्यांरे
३०५	२१	मंत्र	मंत्रे
३०६	११	आशाता	अशाता
३०६	१२	परभागे	परभाग
३०८	१६	पणे	पणो
३१०	१४	चेतनरे	चेतंनरे
३१०	१५	रतन	रतंन
३१०	१६	परवस्तुरे	परवस्तरे
३१२	२०	पेढी	पेटी
३१७	१	तेमची	तेमयी
३१७	४	नही	तही
३२०	१५	एहनेरे	एहनेरेलोल